सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की सुरति से ओत प्रोत ग्रंथों की सूची

क्र:	ग्रंथों के नाम	प्रकाशन वर्ष
1	भजन संग्रह–1 (प्रथम पुस्तक)	2013
2	भजन संग्रह–2 अमर सुरति से भरे भजन	2015
3	भजन संग्रह–3 सतगुरू जी की अमर सुरति से भरे भजन	2017
4	भजन संग्रह–4 साधकों द्वारा श्रद्धा सुमन	2017
5	अमर साग़र	2017
6	परमहंस सुरति महिमां	2019
7	**Secret Of Permament Liberation (English)** मोक्ष का भेद ग्रंथ (अंग्रेज़ी में)	2020
8	आनंद साग़र – वे नाम सुरति धारा	2022
9	गीता अमृत सार – वे नाम सुरति धारा	2022
10	अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष	2022
11	वे नाम सुरति धारा	2022

अगामी प्रकाषित होने वाले ग्रंथ

1 अनुराग़ साग़र
2 साहिब सतगुरू जी के अनुभव और सफरनामें
3 साहिब सतगुरू जी के कर कमलों द्वारा लिखित ग्रंथ

काल भगवन के खेल से बचो, बचावनहार एको सतगुरू 'वे नाम'

कर्ता पुरख

’वे नाम परमहंस जी’ कहत हैं :—

’’ ना मैं कर्त्ता — ना कोई कर्त्ता
जो किया साहिब किया — सोहि कारणहार
हम तो केवल दास हैं — साहिब ही तारनहार
जो कुछ करें — उनकी मोज है
जो भी होता — सब अच्छा होत है
साहिब ही करन — करावनहार
हम तो केवल दासा — उनके सेवादार
वो ही तारनहार — करावे भव से पार
वे नाम भी तो — उन्हीं का नाम है
उन्हीं से कर लो प्यार — उन्हीं से कर लो प्यार’’

—0—

आनंद सागर

भुमिका

साहिब कबीर जी इस धरा पर साहिब सतपुरूष जी की सत्ता की महिमां को जग जीवों में पुनः स्थापित करने वाले प्रथम संत सतगुरू हुऐ हैं। जगत वासी मानव अपने अल्पकालिक भौतिक जगत स्वार्थों के वशिभूत निज आत्म रूपी सत्ता को तो भूल ही चुके हैं, इसी के संग संग जगत वासी अपने आत्मां के मूल परमपिता परमात्मां (जिन्हें सहज मार्ग के पूर्ण संत सतगुरू साहिब/सतपुरूष जी कह के संबोधित करते हैं) को भी प्रायः भूल चुके हैं। अपने मूल से कट कर सभी जीवात्मां कर्मों धर्मों, सम्प्रदायः, जात–पात व और भी ना जाने कितने विभागों में विभक्त होने के उपरांत भी एक दूसरे के प्रति द्वैष भाव से जिये जा रहे हैं।

कबीर साहिब जी ने जीवन भर सभी जीवों को मन माया से मुक्त होकर निज हंसा रूप जानने की प्रेरणा अपने प्रवचनों व दोहों में करते रहे। उन्होंने सभी जगत जीवों को अपने उपदेशों में मन माया (मन = निरंकार, माया = आद्यशक्ति) के स्वामी निरंकार भगवान की मोहनी भ्रम युक्त भक्तियों से मुक्ति दिलाने हेतु तथा साहिब सतपुरूष जी की सुरति भक्ति महिमां से जगत जीवों को जोड़ने का काम किया। संक्षेप में कहें तो इस धरा पर सहज सतमार्ग/परा भक्ति को पुनर्जिवित करने वाले कबीर साहिब जी संतों के महासंत संत शिरोमणि 'साहिब कबीर' नाम से विख्यात हुऐ। वे अपने प्रवचनों और वाणी में सहज सत्यमार्ग के सतगुरू से विदेह दात ग्रहण करके मोक्ष पथ पर चलने की प्रेरणा देते रहे। परन्तु मन माया व निरंकार भगवन के मोहनी माया भ्रम जाल से मुक्त होने की बात भी निरंतर करते रहे।

साहिब कबीर जी ने ''साहिब सतपुरूष जी'' की सुरति महिमां का गुणगान भरपूर गाया। कबीर साहिब जी को किताबी ज्ञान नहीं था परन्तु वे परम सुरतिवान होने से समस्त ज्ञान विज्ञान के ज्ञाता थे। उनके प्रवचनों को उन्हीं के अनुयायियों ने कलमबद्ध किया, अधिकांशतः उनकी वाणी को उनके इस जगत से प्रस्थान के उपरांत कलमबद्ध किया। परन्तु कलमबद्ध करने वालों से अनेकों त्रुटियां भी हो गईं जिससे सारा मानव समाज निरंकार सत्ता व साहिब सतपुरूष जी की सत्ता में भेद समझ ना पाया और मोक्ष पथ से भटक गया। इसी कारण साहिब कबीर जी जिन आडम्भरों व कुरीतियों का जीवन भर विरोध करते रहे जैसे मूर्ति पूजा, मंदिर मस्जिद व धामों की स्थापना। परन्तु उनके अनुयायियों और मानने वालों ने उनकी मृत्यु के उपरांत उनकी मूर्तियां स्थापित करके अनेकों अनेकों मंदिर बनवा दिये जिससे साहिब कबीर जी की सहज भक्ति पथ की संपूर्ण महिमां धूमिल हो गई जिस कारण उनके मानव जीवन उत्थान के समस्त प्रयासों को नक्कार ही दिया गया। महान साहिब कबीर जी की **कबीर भक्ति धारा** प्रायः विलुप्त हो

कर रह गई, ठीक इसी तरहं सहज सत्तमार्ग के अनेकों संत सतगुरूओं के दोहों में भी जो जो त्रुटियां रह गईं वो वर्तमान काल के पूर्ण संत सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी ने उन त्रुटियों को दूर कर के सहज सत्तमार्ग के सभी संतों की महिमां को और भी महिमां मंडित किया।

समस्त संसार में समय समय पर सहज सत्यमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू इस धरा पर सदा विद्यमान रहे हैं। वर्तमान काल में सहज सत्यमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू साहिब 'वे नाम' परमहंस जी इस धरा पर सहज सत्य भक्ति मार्ग की प्रथा को निरंतर आगे बड़ा रहे हैं। साहिब सतपुरूष जी के मुख़ारबिंद से सीधे सुरति द्वारा दात ग्रहण करने वाले सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी, साहिब कबीर जी के उपरांत केवल एकमात्र पूर्ण संत सतगुरू हुऐ हैं, जिन्होंने ये विदेह दात ''साहिब सतपुरूष जी'' से दौ बार सुरति सूं ग्रहण की। दौ बार सार सब्द विदेह दात साहिब सतपुरूष जी से ग्रहण करने वाले सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी सहज सतमार्ग के एकमात्र पूर्ण सतगुरू वर्तमान काल में इस धरा पर विराजमान हैं। जिन्होंने अनेक जगत मानवों को मन माया से मुक्त करके मोक्ष प्रदान किया। सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी ने अपनी दिवंगत 71 पीढ़ियों को दीक्षा प्रदान करके उन्हें भी मोक्ष प्रदान किया। इस धरा को तज कर स्वर्गवासी श्रेष्ठ आत्मांऐं जिनमें संत धर्मदास जी, फ़कीर संत राबिया जी, साधिका शशी प्रभा जी, संत ओशो जी के ईलावा माता शांति देवी जी, माता राजदुलारी जी, भाई रमेश जी साहिब सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी की कृपा से मोक्ष को प्राप्त करके इस आवागमण के चक्कर से मुक्त हो गये। वर्तमान काल/युग को **'वे नाम' सुरति धारा** के नाम से जाना जायेगा जिसका प्रवाह वर्तमान काल से लेकर अनंत काल तक चलायेमान रहेगा। सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी ने साहिब कबीर जी की वाणी और दोहों को पुनः शुद्ध करके कलमबद्ध करने का बीड़ा उठाया है। इसी श्रृंखला में 'आनंद सागर' प्रथम ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। अगामी काल में इसके अगले भाग भी प्रकाशित होंगे।

सभी आध्यात्मिक जिज्ञासु पाठकजनों से कर बद्ध निवेदन है कि **'वे नाम' सुरति धारा** ग्रंथ का अध्ययन कर के साहिब 'वे नाम' जी की अमरवाणी के संग संग साहिब कबीर जी का सहज सत्यमार्ग में साहिब सतपुरूष जी की सत्ता को पुनः स्थापित करने के महान अमर कार्य को अधिक से अधिक जान कर स्वयं भी अनुग्रहित हों और इस का आगे प्रचार पसार करके औरों को भी कृतार्थ करें।

—0—

अमर सुरति संदेश

हे जगत की प्यारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । ये सत सुरति अरम प्रेम भरा ग्रंथ सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखा गया और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किया गया है। मूलतः यह दोहो का संग्रह किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म का ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु जगत समस्त मानवो को समर्पित है। आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में उस ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज सत्तगुरू परमहँस जी की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर सतगुरुओं की शरणी में आकर भी निज स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही श्रदा भाव से युक्त स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू परमहँस जी की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगत में संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

बिन सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू की शरणी आये तथा उनसे विदेह नाम दात ग्रहण किये बिना कोई भी जीव संशय, भय व माया भ्रम से मुक्त हो ही नहीं सकता। तो आओ वर्तमान युग में सहज मार्ग के एकमात्र पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की शरण में चलें और त्रिलोकि के मोहनी माया जाल से मुक्त हो कर आवागमन से छुटकारा पायें।

अनमोल रतन

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

वे नाम ने सतपुरूष सूं दात है पाई,
जाके बल आत्म हंसा बन जाई।
ये मूल नाम सार सब्द कहाई,
लिखा ना जाई पड़ा ना जाई।
अक्का नाम वह दात कहलाई,
जाके बल हंसा निजघर जाई।
ता से पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाई,
जन्म मरन की कैद मिट जाई।
बहुरि हंसा गर्भ वासा ना पाई,
सब हंसा संग रास रचाई।
अमर लोक बिन धरती पानी वासा पाई,
हर पल साहिब के दर्शन पाई।
यत्न सूं कोई ये दात ना पाई,
बिन परमहँस कोई नांहि पाई ।

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

—0—

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :—

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास—दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

—0—

ग्रंथ सारणी

नोट :—

साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' के अग़ामी आने वाले ग्रंथ 'साहिब जी के सफरनामें', 'अल्प मुक़्ति से पूर्ण मोक्ष की ओर', 'आनंद सागर', गीता अमृत सार, 'वे नाम सुरति धारा' व अनुराग़ साग़र प्रमुख हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं और इसके साथ–साथ पाठकों व जिज्ञासुओं के लिए 'पराभक्ति पर आधारित', सहज सत मार्ग की भक्ति महिमां से भरपूर ग्रंथ 'अमर साग़र', 'परमहंस सुरति महिमां' और सुरति अमृत से ओत प्रोत 'साहिब सतगुरू परमहंस जी' द्वारा रचित भजनों की तीन पुस्तकें तथा अंग्रेज़ी भाषा में भी एक अदभुत ग्रंथ ''मोक्ष का भेद **(Secret of Permanent Liberation)**'' पूर्वतः ही प्रकाशित कीये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त अन्य और भी ग्रंथों की रचना अग़ामी काल में शीघ्र ही की जानी हैं।

कलयुग के इस वर्तमान काल में बिना सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आये तथा उनसे ''वे नाम'' सब्द दात पाये बिन पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। इसलिये हे हंसाथियो साहिब सतपुरूष जी की सत सुरति से ओत प्रोत ''वे नाम परमहंस जी'' द्वारा रचित इन नवीन ग्रंथों को श्रद्धा पूर्वक पढ़ें व श्रवण करें।

—0—

सतगुरू सतनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब

आनंद सागर

अंदर साहिबन द्वार

उल्टा दीप जगमगा करे, हर क्षण हर द्वार।
लाखों सूरज जगमग करे, अंदर जौती भण्डार।
बिन सतगुरू जाने नहीं, सार सूं खुलें सब द्वार।
आठ चक्र का भेद यह, तेरे अंदर पूर्ण विस्तार।
हर चक्र जगमगा ही रहा, पल पल देत पुकार।
आओ अंदर सैल करो, मीन पपील चाल तैयार।
सात सुन्न सात महासुन्न, देखो मन जाल तैयार।
छठे चक्र निराकार का, सहस्त्रार प्यारा दरबार।
चारों ओर जगमग करे, वी (वी) शक्ल का द्वार।
मीन चाल सूं पूर्ण–संत पार करें, सहस्त्रार द्वार।
अंदर धरती नांहि, केवल द्रव्य सा पसार।
बिन पूर्ण सतगुरू कोई साधक, कर सके ना पार।
अब जन्म मरन सूं लेखा छूटा, श्वेत पत्र आया हाथ।
सतगुरू संग तैरते देखा, सफेद पत्र सुरति के द्वार।
निराकार सौंप दिया दास, सतपुरूष को नियम अनुसार।
दास ने प्रणाम किया, देखा काले रूप में सुन्न अनुसार।
सतगुरू रूप में सतपुरूष संग साथ, किया प्रणाम श्रद्धा अनुसार।
एक माह सुरति सूं गोष्ठी करी, तब दीक्षा पाई नियम अनुसार।
सतगुरू रूप में साहिबन दरशे, जा पहुंचा साहिबन दरबार।
परमपुरूष सूं दात को पायो, साहिबन आदेश सूं शुरू कियो प्रचार।
दास हूं मैं दास कहाऊं, सतपुरूष प्यारे की महिमां गाऊं।
सब जीवों में दात मैं बाटूं, सब्द सुरति सूं जग को जगाऊं।
जग जीव माया ना छोड़ें, सब सोयों को साहिब महिमां सुनाऊं।
हंसा तो साहिब अंश हैं प्यारे, सब को साहिब मिलन की राह बताऊं।
निज को जानो सतपुरूष प्यारो, छोड़ो त्रिलोकि सतलोक ले जाऊं।
छोड़ो हंसो ये काल पसारा, निज देश चलो हंस लोक हमारा।।

—0—

आनंद सागर

1 सतलोक भेद सभी जग को, बतला दिया साहिबन प्यारे ने ।
जो जाग गये सो पायेंगे, सतगुरू संग निजघर जायेंगे ।
ये भेद दिया वे नाम प्यारे ने, जो सतगुरू शरणी आऐंगे वो निजघर पाऐंगे।।

2 कोटि जन्म का पथ था, सतगुरू पल में दिया पहुंचाय ।
त्रिलोकि की माया तोड़ कर, सतपुरूष सूं दियो मिलाय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत्तगुरू माया भ्रम तोड़ साहिब देत मिलाय।।

3 सतगुरू मोर सूरमा, कसकर मारा बाण ।
नाम अकेला रह गया, पायो पद निर्वाण ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं मिले निर्वाण।।

4 जब तक 'मै' अहम ना जावे, कैसे सतगुरू शरणी पावे।
बिन सतगुरू प्रेम ना उपझे, प्रेम में मन माया ना समावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, 'मै' तजे बिन कोई प्रेमी ना बन पावे।।

क जब मैं था तब सतगुरू नांहि, अब सतगुरू हैं मैं नांहि ।
प्रेम गली अति सांकरी, ता में दो ना समाहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, अहम तजे बिन प्रेम जागे नांहि।।

क सतगुरू समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह ।
बिलगाये बिलगे नहीं, एक रूप दो देह ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पूर्ण समर्पण बिन कबहु ना जागे नेह।।

क सार नाम पाय सत्य जो बीरा, संग रहुं मैं दास कबीरा ।
आठों पहर नाम में सुरति, हर पल देखे सतगुरू की सुरति ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार नाम रस पान सूं पायो संग कबीर।।

क तन मन दिया तो भला किया, सिर का उतरा भार ।
जो कोई कहे सो मैं दिया, बहुत सहे सिर मार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, अहम तजे बिन मिले ना साहिबन दीदार।।

5 सार रस पान करे जो वीरा, कमर्ण कटे मिटे सब पीरा ।
काल जाल ताको छू ना पावे, हंस बने छूटे माया शरीरा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम रस पान सूं छूटे जग पीरा।।

6 देखा देखी सब कहें, भौर भयो सतगुरू नामा ।
अर्ध रात को जागसी, सुरति बसे सतनाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन मोह तजे कैसे मिले सतनाम।।

क सतगुरू मानस कर माने, चरणामृत को पान ।
ते नर नरके जायेंगे, जन्म जन्म में स्वान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी बिन छूटे ना शमशान।।

क सतगुरू आज्ञा ले आवही, सतगुरू आज्ञा ही ले जाही ।
कहें साहिब तां दास को, तीन लौक डर नांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी सूं तीन लोक सूं पार।।

क तीन लोक में काल सतावे, ताको सब जग ध्यान लगावे ।
निराकार जेहि वेद बखाने, सोई काल कोई मरम ना जाने ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मन भक्ति से काल समाहिं।।

7 सबै जीव सतपुरूष के आहिं, यम दे धोखा जाल बनाहीं ।
मन माया का जाल यह धोखा, इस काल कोई मरम ना जानी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष सब में जानी।।

8 तीन लोक से भिन्न पसारा, अमरलोक सतगुरू का न्यारा ।
तीन लोक प्रलय कराई, चौथा लोक अमर है भाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मृत्यु लोक छोड़ चल अमरलोक भाई।।

न आठ अटा की अटारी मज़ारा, देखा पुरूष न्यारा ।
निराकार आकार न ज्योति, नहीं वह वेद विचारा ।
औंकार कर्ता नहीं कोई, नहीं वहां काल पसारा ।
वह साहिब सब संत प्रकाश, और पाखंड है सारा ।
सतगुरू चीन्ह दीन्ह यह मार्ग, नानक नज़र निहारा ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ना उतरे पार।।

9 चारों दिशा भरमावता, कबहु ना लगता पार ।
सो फेरा सब मिटि गया, सतगुरू के उपकार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं पार।।

10 जग में युक्ति अनूप है, साधक संग सतगुरू नाम ।
ता में सुरति अनूप है, सतगुरू मिले तो काम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संग सूं मिले सतनाम।।

11 बिन सतगुरू सुमिरे नहीं, वह सब मन का नाम ।
भवसागर की त्रास से, सतगुरू जहाज से काम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं बनें सब काम।।

12 सतगुरू महिमां अनंत है, अनंत करें उपकार ।
लोचन अनंत उधारिया, अनंत दिखावन हार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां अनंत सूं पार।।

13 सतगुरू सुरति ज्ञान है, जो कोई माने परतीत ।
कर्म भ्रम सब त्याग के, चले सो भव जल जोत ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू प्रीत सूं उतरो पार।।

14 सतगुरू शरण ना आवही, फिरी फिरी होय अकाज ।
ते नर नरके जायेगा, काल तिहुं पुर राज ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा बिन छूटे ना नर्क द्वार।।

15 साहिब देत पुकार हैं, पानी याह बताय ।
ताकूं सतगुरू का करे, जो औघट डूबे जाय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू प्रीति सूं पार उतरा जाय।।

16 सतगुरू सम कोई है नांहि, सात द्वीप नौ खण्ड ।
तीन लोक न पाईये, अरू इक इस ब्रह्माण्ड ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू शरणी जीव भौगे दण्ड।।

17 सतगुरू सांचा सूरमा, नख शिख मारा पुर ।
बाहिर घाव न दीखई, अंदर चकनाचूर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, 'मै' मिटे तो पाओ हजूर।।

18 केते पढ़ि गुनि पचि गुए, योग यज्ञ तप दान ।
बिन सतगुरू पावे नहीं, कौटिन करे ध्यान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू ना मिले निर्वाण।।

19 सतगुरू की माने नहीं, अपनी कहे बनाय ।
कहें साहिब क्या कीजिए, और मता मन माय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू जीव मन तरंग बह जाए।।

20 मन दिया तो सब दिया, मन के संग शरीर ।
अब देने को क्या रहा, मन जाय संग शरीर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अहम मिटे तो सतगुरू ले चलें प्रलय पार।।

21 सतगुरू तो सत भाव है, जो सार सब्द दे जाए ।
धन्य शीष धन्य भाग तिहीं, जो मोक्ष दात को पाए ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दात दे जीव पार कराऐं।।

22 सतगुरू हमसे रीझ के, कहियो एक प्रसंग ।
बरसे बादल प्रेम को, भीजी गयो सब अंग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू रीझे तो साहिब अंग संग।।

23 सतगुरू मिला तब जानिये, जब मन मैला खो जाये ।
भ्रम का भांडा तोड़ि के, सार नाम में सुरति होये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं कर्म भ्रम सब जाये।।

24 मैं पड़ा था काल जाल में, लो वेद के साथ ।
बात बात में सतगुरू मिले, दीपक दीन्हा हाथ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं जीव भव जल पार।।

25 जेहि खोजत ब्रह्मां थके, सुर नर मुनि अरू देव ।
कहें साहिब सुन साधवा, करूं सतगुरू की सेव ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार जग उरजावे सतगुरू आन छुड़ावे।।

26 सतगुरू को मानुष कर जानते, चरणामृत की पान ।
ऐसा जीव अति दुख पावे, बड़ा अभागा उसे तूं जान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू साहिबन रूप उन्हीं का करो ध्यान।।

27 सतगुरू पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत ।
वह लोहा कंचन करे, यह करि लेय उसे महंत ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणागत बने संत।।

28 सतगुरू साहिबन रूप हैं, सब कुछ उनके पास ।
सतगुरू सुरति प्रताप सूं, छूटे मन माया का साथ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति छुड़ाये कर्मण साथ।।

29 बिन सतगुरू कोई ना तरे, रहे मृत्यु लोक झक मार ।
मन माया आशा तृष्णा में, डूबा रहे कबहु ना उतरे पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू तारें पार।।

30 वे नाम साहिबन सुरति रूप, साधक सुरति सूं पार ।
छूटे मन माया तरंग, जब सतगुरू सुरति संग साथ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति ले चले पार।।

31 सतगुरू को, साहिबन रूप ही जानो ।
इन को नहीं, मानुष कर मानों ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सतगुरू ईक समान।।

द दादू नाम साहिबन का, जो कोई लेवे ओट ।
उसको कबहूं नहीं लगती, कालपुरूष की चोट ।
ये भेद दादु दयाल जी देते हैं, सतगुरू शरणी काटे जन्म मरन की चोट।।

32 साहिबा साधो शब्द सब्द में भेद है, विरला जन जाने कोये ।
एक शब्द में सब जग फंसा, मन सूं सुमिरे सब (हर) को ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द जग उरझावे सार पार लगावे।।

33 सब्द संतों की सुरति है, जानो सुरति सूं आत्म प्रकाश ।
मूल सब्द निर्मल करे, मोह माया सूं पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार रस पिये जो वीरा तीन लोक सूं पार।।

34 सच्चा लौक जाने बिना, भूला बैठा संसार ।
सत्य लौक जानो जग वासियो, ता को भेद सूं पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंस सतलोक सूं आया सतलोक अपरम्पार।।

35 प्यारो सतपुरूष, चोथे राम दा की पाना ।
सार नाम मन सूं पुटना, सुरति में लाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं पार हो जाना।।

36 सार नाम सूं भर, तारे लाखों जीव भव पार ।
आत्म सूं हंसा करे, ले चले अमरलोक द्वार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति करे भव पार।।

37 सार सब्द स्वाति बूंद को, जानो अति महान ।
मन माया तरंग मिट जाऐ, सब्द मोक्ष दात महान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं पाओ निजधाम।।

38 सीप स्वाति बूंद को, मोती करती आन ।
सार नाम सूं सतगुरू, साधक करे आप समान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू करें आप समान।।

39 बिन सार सब्द, सब शब्द बे दाम ।
सब्द पल छिन संग ले चले, निजघर निजधाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं ले चलें निजधाम।।

40 साहिब चोथे राम जी व्यापक, हर वस्तु हर जीव समाना ।
प्रेमी बन पाईयो, बिन प्रेम कैसे मिले प्रमाणा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेमी ही पाय सब्द पैमाना।।

41 ईक अहिल्या तारी राम ने, ले संग पहुंचे भरतपुर धाम ।
चोथे राम नाम ने तारे, लाखों जीव पायों निजधाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चोथे राम ही साहिबन जान।।

42 सार सुरति प्रेम रस, बरसे सतगुरू धाम ।
छिन पल में संग ले चले, निजघर निजधाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं पाओ निजधाम।।

43 जब ही प्रेम सुरति, घट भीतर जागे ।
हर थां हर जीव में, एक वे ही लागे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर जीव में चोथे राम।।

क पहले अमर नाम (सार नाम) साहिबन दियो, चेतन सुरति सूं प्रकाश ।
कबीर साहिब पहले दिया धर्म दास, मूल नाम सूं मन का नाश ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन मूल नाम नांहि संशय नाश।।

44 सतगुरू समान जग दाता नहीं, साधक श्रद्धा समान ।
तीन लोक की संपदा, सतगुरू देते दान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू प्रीत ही है महान।।

45 राम कृष्ण सूं को बड़ा, तिन भी तो गुरू कीन ।
निरंकार निज जग रहियो, गुरू आज्ञा अधीन ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सतगुरू अधीन।।

46 सतगुरू दर्शन कीजिये, वोहि तारन हार ।
आसुओं का मोह ज्यूं, बहुत करे उपकार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दर्श सूं उतरे जीव पार।।

47 सतगुरू के उपदेश को, सुनियो (एक) सुरति साथ ।
तन मन पल में शांत हो, मूल सब्द सुमरिये सुरति साथ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं पल में मन हो शांत।।

48 तुमरी नाव बिन केवट खड़ी, उठें लहरें विकार ।
बिन सतगुरू नहीं पार चले, कोन विधि उतरे पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू प्रीत सूं छूटे यम द्वार।।

49 सुखे काठ ज्यों धुन लागे, लोहा काई खाये ।
बिन परतीत सतगुरू मत करो, काल संग रहयो लिपटाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति में ही समाये।।

र कहें साहिब सुन लो रामानंद जी, एक बात हमारी ।
निरख परख चेला कीजे, यही सीख हमारी ।
ये भेद रामानंद जी देते हैं, कोई बिरला ही प्रेम पुजारी।।

द सोहि ज्ञानी पुरूष है, सतगुरू सत्य कबीर ।
रज बीरज पैदा नहीं, श्वांसा नहीं शरीर ।
ये भेद दादु जी देते है, जाकि आसा मिटे सोहि संत कबीर।।

50 सोहि पूर्ण सतगुरू है, जिन पायो साहिबन दीदार ।
गर्भ सूं पैदा नहीं, सार सुरति पायो शरीर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, परमहंस सुरति पायो शरीर।।

51 सबही संत ब्ख़ान करें, जानो निज का देश ।
हंसा निजघर अमरलोक है, नहीं तीन लोक यह देश ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि है पराया देश।।

52 संतो ज्ञान कौन से कहिये, एक साहिब हमारा ।
कौन ध्यान विज्ञान कौन है, वह अक्षर से न्यारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विज्ञान से परे परमपुरूष प्यारा।।

53 कौन नाम अनामी कहिए, को कहिये अवतारा ।
मुक्ति नाम काहे सूं कहिये, कोई जागा मिले प्यारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन अहम तजे ना मिले मुक्ति द्वारा।।

54 विदेह सब्द कहां से आया, कौन लाया इसे प्यारा ।
कौन देश से हंसा आया, कौन साहिब है प्यारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं पायो साहिबन प्यारा।।

55 सृष्टि् में ओहम सोहम ररंकार, धुणों की होत झंकार ।
मन ही सूं ये हो रहा, गुप्त रहे निरंकार सरकार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद नाद ही निरंकार।।

56 मन का वासा सत्य सब्द सूं, बाहिर ये जग उसी का खेल पसार ।
पांच तत्व तीन गुण, काम क्रौध लौभ मोह अहंकार पसार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग में ज्ञान ईन्द्री महां विस्तार।।

57 ज्योति स्वरूप देव निरंझन, रचयो खेल पसार ।
कालपुरूष अलख निरंझन, चारों वेद है सार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल निरंझन गुण वेद सार।।

58 माया भ्रम में दुनियां उलझी, जाने ना अक्का सब्द सार ।
पांच तीन यह साज पसारा, न्यारा सब्द विदेही सार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काया स्नेहि जाने ना सब्द सार।।

59 आत्म सुरति मूल ठिकाना जाने, सतलोक निज द्वार ।
कोई काया ब्रह्माण्ड में खोजे, कोई सुन्न पसार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति करावे भवसागर पार।।

60 बिन संतन कोई कैसे पावे, फिर फिर काया धार ।
सार सब्द में रम ना पावे, फिर कैसे हो भवसागर पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द भवसागर तारनहार।।

61 शांत जोहरी भेद बतावे, घट घट ओ लखावे ।
सुरति मस्तानी सब्द समानी, निज देश ले जावे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं हंसा निजघर को जावे।।

62 कौटि ज्ञान सूं बिन पसारा, सार नाम जिन जाना ।
सार सुरति सूं हंसा उभरे, लेई हंसा पहचाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति संग हंस लोक है जाना।।

63 हंसा अजर अमर है भाई, मृत होत शरीर ।
वे नाम शरणी आई के, बनो सुरति वीर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू छुड़ावे पीर।।

क आदि अंत तब ना होता, नांहि बोल शरीर ।
सब्द सरूपी बीरवा, तहां हम बसे कबीर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द सुरति काटे माया पीर।।

64 मूर्ख संतन की ओट ना आवे, ना सुने सुविचार ।
बारम्बार जन्म वो पावे, कष्ट सहे छोड़े ना व्यभचार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू ना कष्ट उपचार।।

क मूरख सब्द ना मानहि, धर्म ना सुने विचार ।
सत सब्द नहीं जब पाया, जावें यम द्वार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति छुडावे यम द्वार।।

65 वे नाम कृपा अति अनंत, जग का करें उपकार ।
बिन सतगुरू शरणी, कोई जीव ना उतरे पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू करावें पार।।

क सतगुरू महिमां अनंत है, अनंत करें उपकार ।
लोचन अनंत उधाड़िया, अनंत दिखावनहार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू महिमां अपरम्पार।।

66 आत्मां अमर सत्य नित्य आनंदमयी, अनश्वर लोक की वासी ।
सच्चे सतगुरू सूं होत है, निज लोक की वापिसी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंसा सतलोक का वासी।।

67 हंसा अजर अमर अविनाशी, हंस लोक का वासी ।
त्रिलोकि माया में रमा, निज भूला अमरलोक वासी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज जानो तो कटे चौरासी।।

68 अविनाशी तत्व अवचनीय, मन वाणी इन्द्रियों सूं पार ।
सहानुभूति सूं बौध तूं जान, विज्ञान समझ सूं पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, समर्पण सूं सार सुरति धार।।

69 जो निज को लेता जान है, वह उसे भी लेता जान ।
स्वयं मिटा मन मिटा, आत्म विलीन विराट महान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मोह मिटा तो आत्म हंसा जान।।

क जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी ।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना, यह तथ्य कबीरा जानी ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया मिटे तो निजघर जानी।।

70 सांचे सतगुरू के पक्ष में, मन को दे ठहराय ।
चंचल से निश्चय भया, नांहि आवे नांहि जाय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं मन मिट जाय।।

71 मूल दीक्षा संग साधक, हर पल संत चित लाए ।
धन्य भाग्य वो हंस के, नाम दात जो पाए ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कोई बड़भागी ही दात पाए।।

72 बिना सब्द संधि बिन, काहु ना पाई बास ।
संधि नाम हंसा गहे, करे काल नांहि त्रास ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति मिटावे काल फांस।।

73 सात शून्य सात ही कमल, सात सुरति स्थान ।
इक्कीस ब्रह्माण्ड लग, काल निरंझन ज्ञान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि दाता निरंझन महान।।

74 गुप्त भयो है संग सबके, मन निरंझन जानिये ।
मन ही साकार मन ही निराकार, मन ही निरंझन जानिये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन माया सबै एको जानिये।।

75 आप ही कांटा तोल तराजू, आप ही तोलन हार ।
हर एक को भर भर देवे, यों का त्यूं सब माल ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं सबै मालामाल।।

76 मन का खेल जाने नहीं, मन का करे ध्यान ।
अथाह सागर ब्रह्माण्ड ये, कैसे करे पलान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग फंसा इन्सान।।

77 लाखों जन्म सूं सोया पड़ा, कैसे खुलेगी नींद ।
जिस ने सुलाया अब तक तुझे, उसी सूं कैसे खुलेगी नींद ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू खुले ना नींद।।

78 यह जग सारा मन रूप है, माया सूं बंधा संसार ।
आत्म ज्ञान कैसे मिले, बिन टूटे मन की तार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन ही रोके मोक्ष द्वार ।।

79 सभी मन को कोसे जा रहे, और उसी का ही करते ध्यान ।
मन सूं मन कैसे कटे, आत्म ज्ञान की कर पहचान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, देव भक्ति मन भक्ति जान।।

80 तेरा वैरी कोई है नहीं, तेरा वैरी तूं आप ।
तुझे खेलन आता नहीं, मन को कोसे आप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया भावे तो दोषी आप।।

81 मन मंझा खिलाड़ी जान तूं, पर तूं तो खिलाड़ी अन्जान ।
निज को तूं बस जान ले, फिर देख तूं कौन महान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चंचल मन वश आत्म जान।।

82 पूर्ण संत पहचान कर, सार दात पा ले महान ।
अब तूं आत्म रूप है, सुरति योग ध्यान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति पहचान।।

83 अब तूं पूर्ण होश में, सतपुरूष की दात पहचान ।
अब मन सूं खेलना आरम्भ कर, सुरति का तान तूं बान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां जान।।

84 देख मन कैसे खड़ा, तेरा दास बन महान ।
देख सतगुरू का मन दास, ले उसे पहचान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां महान।।

85 अब जग कोई वैरी है नहीं, हर ओर साहिब पहचान ।
वैर शब्द को सब्द से दूर करे, प्रेम की जोत जग महान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब हर जीव में वासा जान।।

86 वैर शब्द अच्छा नहीं, इस की ना कोई पहचान ।
जो कोई बोले इस शब्द को, उसे भी कहो महान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, वैर की देते पहचान।।

87 वैर बेगाना मिट जाएगा, सतगुरू शरणी आन ।
वह भी इक दिन आयेगा, जब करेगा सब्द ध्यान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं पाओ निरवाण।।

88 मेरा वैरी कोई है नहीं, पूर्ण जग फूल समान ।
हर ओर प्रेम बिखेर दो, तुझे लगेंगे सभी महान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम ही साहिबन जान।।

89 शब्द सूं झगड़ा नित होत है, शब्द को दो मिटा ।
अब तो हर ओर साहिब जी खड़े, उन्हीं का नाम तूं ध्या ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शब्द तज सतगुरू शरणी जा।।

90 मत मन को वैरी तूं जान, तेरे दुखों को सहता आप ।
तूं तो आत्म रूप है, तन रूप में तेरे किये सहता आप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भौगता कर्ता मन निरंकार आप।।

91 वही आता वही मर रहा, तो क्यूं दुखी महाराज ।
तूं तो सोया है पड़ा, जाग तो देख ये राज़ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे मिले न गुप्त राज।।

92 बिन जागे बुरा हर कोई दिखे, कैसे नींद में हो पहचान ।
नींद भी अति घेरी में, कैसे हो सत्य की पहचान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जागें तो हो पहचान।।

93 आप ही केवट आप ही नाव, आप ही चलावन हार ।
जो कोई पावे सार सब्द को, पल में उतरे पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं उतरो पार।।

94 आप ही कांटा तोल तराजू, आप ही तोलन हार ।
जो को पावे मूल सब्द को, पल में भव जल पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द तारे पार।।

95 जन्म जन्म करनी का लेखा, यम प्रालब्ध बनाये।
करनी तो भरनी पड़े, कबहु छूट ना पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कर्म लेख ना मिट पाये।।

न धर्म राय दरि कागद फारे, जन नानक लेखा समझा ।
अब भी रहे दुखी जग अंदर, जे दुख कणि न समझा ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, दुख का मूल कोई ना समझा।।

क सोना काई नांहि लागे, लोहा घुन ना खाय ।
बुरा भला जो सतगुरू भुगत, कबहूं नरक न जाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी सूं माया तजि जाये।।

96 सुख और दुख कर्मण का लेखा, जीव तड़पे भुगते जाये।
मन और काल की पूजा सूं, तड़पन छूट ना पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन जाल सबै भरमाये।।

क समय और रोशनी कौन छानै, पल्टू साहिब की गति न्यारी ।
साहिब की गति साहिब जाने, बिन नामे ना पहचाने ।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, बिन नामे कोई ना साहिब पहचाने।।

97 आरम्भ हमारा अनहद में, अमर लोक विश्राम ।
दात मिले जब मूल नाम की, सतगुरू कृपा सूं निजधाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं अनहद पार निर्वाण।।

98 साहिब सर्वत्र स्वतंत्र रूप, बंधन रहित उन्हें तूं जान ।
जीव कर्म ज्ञान उपासना, मन माया सूं बंधा तूं जान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन माया सूं परे साहिबन तूं जान।।

99 जग में दुख सुख, सभी हैं जानते प्यारो ।
दुख तो सभी के संग, सुख में पाओ सतगुरू प्यारो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दुख हर लेत प्यारो।।

100 सतपुरूष जिन जानिया, सतगुरू उन्हें ही जान ।
निजधाम वासा करें, काल सूं रहा ना काम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सतगुरू एको जान।।

101 संतन संगति जो करे, निज सुरति चेतन हो जाये।
अब जग का संग ना करे, सतगुरू सुरति में समाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेतन सुरति सूं बेगमपुर जाये।।

ध सतपुरूष संतन संग रहें, निजधाम उनका देश ।
धर्म दास तहं वासा संतन का, ईक संग उस देश ।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, संतन शरण सुरति देश।।

102 साहिब की भक्ति करे जो कोई, भव से छूटे जन्म ना होई ।
जीवित मरे भव जल तरे, कौटिन में बिरला कोई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, 'मै' मिटे तो पार हो जाई।।

103 सार सब्द को जो कोई गहे, सोई उतरे पार ।
सतगुरू अनमोल रत्न है न्यारा, महिमां अपरम्पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं उतरो पार।।

104 पिण्ड ब्रह्मण्ड के पार है, सत्यपुरूष निजधाम ।
जोहि खोजत श्रद्धा लिए, घट मांहि वे धाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुंरू श्रद्धा सूं मिले परमधाम।।

105 सार सुरति प्रेम रस, सतगुरू अमृत पान।
मान अभिमान जो तजे, सतगुरू प्यार जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान मिटे तो निज तूं जान।।

क हेरत हेरत है सखी, रहा कबीर हेराय ।
सिंधु समाना बिन्दु में, सो कत हेरा जाय ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति सूं मन माया पार जाय।।

106 शिष्य समर्पण सतगुरू शरणी, शिष्य सतगुरू एको जानो।
जग को दिखें दो देह, सुरति प्रवाह सतगुरू ही जानो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शिष्य सुरति एको जानो।।

क खो जाना विराट है होना, छोटा ही बन जाना ।
छोटा होना विराट बनाए, इसी में सुख समाना ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, 'मै' तजे तो दुख सुख एक समाना।।

107 अनुभव आत्म ज्ञान की, जो कोई पूछे बात ।
सो गूंगा गुड़ खाई के, कहे कौन मुख स्वाद ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार दात सूं बने सब बात।।

108 मैं कौन और परमात्म कौन, ध्याण में केवल एक ।
भक्ति अर्थ केवल एक है, बूंद सागर सूं एक ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान तजे कोई बिरला एक।।

109 कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूंढे वन मांहि।
साहिब तो हर श्वांस में, खोजत बाहर जांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति श्वांस समाहिं।।

क कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग खोजे उसे हर ओर ।
ऐसे घट घट सांइया, मूर्ख जानत दूर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, अज्ञानी भटके चहुं ओर।।

110 स्वांस स्वांस में साहिबन वासा, हर स्वांस में उसे पहचान ।
क्रिया कर्म सूं लेन देन नाहीं, सतगुरू की कर पहचान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, श्वांसा सुरति करावे पहचान।।

111 वै घर की सुद्धि कोई ना बतावे, जहां सूं हंसा का हुआ है आन ।
धर्म शास्त्र मिल झगड़ा कीना, सत्यपुरूष की ना की पहचान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं ही साहिबन तूं जान।।

112 जन्म मरन सूं रहित है, मेरा साहिब तूं जान ।
यह भेद दिया सतगुरू ने, उसी का कर तूं ध्यान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ध्यान सूं मिले साहिब महान।।

113 सतगुरू कृपा निधान, जीवों का करे आहव्ान।
आओ प्यारो दात को पा लो, चलो चलें निजधाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम ही सब्द महान।।

क सतगुरू देत पुकार हैं, चल हंसा अमरपुर देस ।
अमरपुर निजघर तेरा, क्यूं पड़ा काल के देस ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सुरति सूं मिले निज देस।।

114 साहिब का घर दूर है, जहां तक सुरति डौर ।
सुरति डौर पर बैठ जा, फिर देख ले साहिबन ज़ोर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू हाथ सुरति डौर।।

115 अष्ट्म चक्र सतपुरूष का वासा, तां पर हंसा पावे वासा ।
सुरत कमल जब साधक जाए, सार सब्द के ध्यान में वासा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरत कमल में सतगुरू वासा।।

116 चल हंसा तूं अमरलोक में, अमर लोक ठिकाना ।
यह समय जब बीत गया ते, फिर पैसी पछताना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं है तर जाना।।

117 समर्पण रसरि प्रेम की, सबको मीत बनाये।
प्रेम बिन स्वार्थ जो करे, सोहि भगत कहाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रीत–विरह प्रेम जगाये।।

क रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाये ।
टूटे तो फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाये ।
ये भेद रहीम जी देते हैं, प्रेम संदेह सहा ना जाये।।

118 जीव जंत तथा मानवा, सब में आत्म वास।
हत्या करि जीव खाये, फिर प्रेत योनि में वास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेत योनि में अति हा्स।।

क जीव ना मारो बापुरा, सब के ऐको प्राण ।
हत्या कबहुं ना छूटती, कौटिन सुनो पुराण ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सबै साहिबन तूं जान।।

119 देवी देवल जगत में, कौटिक पूजे कोये ।
सतगुरू की पूजा किये, सबकी पूजा होये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू तरे ना कोये।।

120 सत आचार सत विचार, सत में सत समाऐ।
सत सब्द जब समाऐ, भवसागर पार हो जाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत सुरति पार कराऐ।।

क सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके ह्रदय सांच है, ताके ह्रदय आप ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साधक संग साहिबन आप।।

121 जीव सोया जन्मों जन्मों से, माया में मरि जाऐ।
देवी देव मन पूजा सूं, कबहुं मोक्ष ना पाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन पूजा जग भरमाऐ।।

क कबीरा सोकर क्या करे, उठ और उठ कर जाग ।
जिनके संग से बिछड़ा, वा ही के संग लाग ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जहां सतगुरू तहां जाग।।

122 जन्म मरन से रहित है, मेरा साहिब सोई ।
बलिहारी उस पीव के, जिन सिरजा सब कोई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया रहित मेरा पीव सोई।।

123 मूल नाम निज सार है, सब सारन का सार ।
जो कोई पावे इस नाम को, सोई हंस हमार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम स्नेही पाए साहिबन दरबार ।।

124 मूल नाम निज सार है, सिमरो बारम्बार।
जो पावे सोहि बचई, नहीं तो काल पसार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मूल नाम छूड़ाऐ काल पसार।।

125 चश्में दिल सूं देख तूं, क्या क्या तमाशे हो रहे ।
सुरति जागे सतगुरू मिले, अब मन माया ना रहे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साधक सुरति सतगुरू रमे।।

137 'मै' 'मेरी' अहम अभिमान, जीव में अवगुण समाये।
मन माया फंसा जीव अभागा, कबहु तर ना पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग सबै बह जायें।।

क कामी नर बहुते तरे, क्रौधी तरे अनंत ।
लोभी जीव नां तरे, इसी में अटके अनंत ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, काम क्रौध परिकाष्ठा लोभ आनंद।।

138 बहु बंधन में है फंसा, जग का हर जीव ।
मन जाल सूं बाहिर आवे, लागे जब सार नाम तीर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग ना धारे धीर।।

139 काम क्रौध और लोभ, यह सब मोह की सेना ।
मूल नाम सुरति सूं अब, संतन शरण ही रहना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मूल सुरति में ही रहना।।

140 सतगुरू समाये शिष्य में, शिष्य जब सुरति में ।
दोनों इक मिक हो गये, एक रूप दो देह में ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साधक सतगुरू रमें सुरति में।।

141 तन मन दिया तो भला किया, सिर का उतरा भार ।
सार सुरति संग हो गया, सतगुरू सूं जुड़ गई तार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू काटी मन माया तार।।

142 सतगुरू साधक स्नेही, साधक रहे सदा आज्ञा मांहि।
काल पुरूष तब क्या करि, जब सतगुरू शरणी मांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी पार लगाहि।।

क सतगुरू आज्ञा ले आवही, सतगुरू आज्ञा ले जाहवी ।
कहें साहिब तब दास को, तीन लौक डर नांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू जीव पार लगाहिं।।

143 जब तन मन वचन थिर, सुरति निरति थिर होए ।
कहें साहिब वा पलक को, कल्प नां पावे कोए ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, थिर सुरति जीव पार लगाए।।

144 कौटिन काल के दिये नाम हैं, तिन सूं मुक्ति नां होये ।
मूल नाम सतपुरूष का गुप्त है, जाने जो पूर्ण सतगुरू होये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल शब्द जग भरमाये।।

145 सार नाम स्नेही, जग बिसरे सुरति समाये।
घर रहे या बाहिर जाये, रहे सब्द तारि लगाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति भव पार कराये।।

146 चेतन सुरति जग ना भाये, सतगुरू आन समाये।
सतगुरू सुरति जो मन भाये, जीव परमानंद पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू साहिब मिलाये।।

क जा मरने से जग डरे, मेरे मन आनंद।
कब मरहुं कब पाउंहू, पूर्ण परमानंद।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मन छूटे तो भीतर परमानंद।।

147 काम क्रौध वासना तजि ना जाये, जीव रहे मलीन।
मानव करता नीच कर्म को, रहे मन माया अधीन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काम वासना में जीव मलीन।।

क पाप कर्मों से है रहता, जिसका मन मलीन ।
उसको सपने में भी, सतगुरू नज़र आते नहीं ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मन ही ले जावे माया अधीन।।

148 सब में साहिबन वास है, मत मारो कोई जीव।
जीव मार के खावे है, कभी ना मिलेंगे पीव।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मांसाहारी को मिल ना पीव।।

क जीव ना मारो बापुरा, सब में बसे प्राण ।
हत्या कभी ना छूटती, कौटि सुनो प्राण ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, कबहु ना हरो प्राण।।

149 प्रालब्ध कर्म का लेखा प्राणी, जन्म मरण में लाएगा।
बिन सतगुरू शरणी जाये, आवागमण ना छुट पाएगा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू लेख मिट ना पाएगा।।

क धर्म राय जब लेखा मांगे, क्या मुख लै के जाएगा ।
आज ही सतगुरू पा ले प्यारे, नहीं तो कल पछताएगा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जीव बिन सतगुरू पछताएगा।।

150 सतगुरू सुरति सूं साधक को, करे आप समान।
सतगुरू तीनों को ईक धारा करे, तीनों एक समान।।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू पारस जान।।

क सतगुरू शिष्य और सतपुरूष, मिल कीनी भक्ति विवेक ।
तीनों मिल त्रिधारा बनी, आगे गंगा एक ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू करें सबको एक ।।

151 बिन मूल नाम सच ना उभरे, झूठ सब व्योपार ।
जाकी सुरति सार नाम में, उसी का सच्चा व्योवहार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सतलोक पसार।।

152 सच जागे तो तप जागे, प्रेम भी उपझे साथ ।
जा की सुरति सांच है, ताकि सुरति में आप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम सुरति में साहिबन आप।।

153 सुमिरन सुरति की रीत है, सतगुरू में दे लगाये ।
अब सतगुरू की भक्ति कर, सुरति में ले बैठाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं सतगुरू में समायें।।

154 नौ द्वारे संसार सब, दसवां गेगी साध ।
एक दश खिड़की बनी, जानत पूर्ण संत ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ग्यारवें द्वार का पता देते हैं।।

क चिंता केवल सार नाम की, और ना चितवे दास ।
जो कछु सुमिरे अक्का नाम बिन, सोई काल की फांस ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द ही काटे काल की फांस।।

155 मन भावन सभी करें, मन सभी को बहा ले जाये।
निरंकार की लख पूजा करें, मन सूं छुट ना पायें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग सूं जीव छूट ना पायें।।

क मन से हारे हार है, सुरति के जीते जीत ।
कहे साहिब सतगुरू पाये, सुरति ही की प्रतीत ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति सूं छूटे जगत प्रतीत।।

156 सतपुरूष की सुरति, संतन के संग साथ ।
हर ओर सूं सुरति मोड़, सतपुरूष ही संग साथ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं पाओ साबिन साथ।।

157 सतगुरू सत्य मूल नाम सत्य, आप सत्य जे होय ।
तीन सत्य जब एक हों, विष सूं अमृत होय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत उपझे तो मन मिट जाये।।

158 सत सुरति संतन औढ़न लीनी, जग सूं दूरी बनाये।
जो जीव मन माया तजे, वोहि संत शरण आ पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतसुरति सतगुरू सूं पाये।।

क ज्ञान चदरिया जिसने लीनी, मैली कर धर लीनी ।
एक साहिब जतन से लीनी, और भी स्वच्छ कर दीनी ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिबन प्रेम स्वच्छ बनाये।।

159 सतगुरू सुरति साहिबन समाई, संत कृपा सूं पाई।
जीव को काल जाल भरमाई, संत को सुरति पार लगाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं भवसागर तर जाई।।

क साहिबन सुरति पंछी भयो, उड़ कर चली आकाश ।
सतपुरूष सूं जा मिली, सब कुछ तेरे पास ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति जागे तो साहिबन पास।।

160 सतगुरू सुरति में बसें, सिमरण में दरसें बारम्बार।
ऐसी अवस्था साधक धार ले, पल में पाये सच्ची सरकार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दरस ही तारनहार।।

क सतगुरू का दर्शन कीजिए, दिन में कईं कईं बार ।
कंई कंई बार ना कर सके, करिये दो ही बार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू करावें साहिब दीदार।।

161 इंगला पिंगला सम करो, खुलें सुष्मिन द्वार।
उल्टा जाप जपि कर, वे नाम पायो साहिब दीदार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुष्मिना खुले तो हों दीदार।।

क इड़ा विनशे पिंगला विनसे, विनसे सुष्मिन नाड़ी ।
कहें साहिब सूनो हे गोरख, कहें लगावें ताड़ी ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सम श्वांसा सूं खुले सुष्मिन नाड़ी।।

162 सात द्वीप नौ खण्ड में, सतगुरू सूं बड़ा ना कोये ।
कर्ता कोई ना कर सके, सतगुरू करे सो होय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सूं सुरति चेतन होये।।

163 साहिब ते नर अंध है, गुरू को कहते और ।
सतपुरूष रूठें तो ठौर है, सतगुरू रूठें नांहि ठौर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गुरू रूठें तो मिले यम द्वार।।

164 सतगुरू गूंगे सतगुरू बांवरे, उनके रहिये दास ।
जे वे भेजें नर्क में, तो सतलौक की रखिये आस ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू जहां राखें तांहि राखें आस।।

165 पूर्ण सतगुरू पाईके, सतगुरू पे राखें आस।
ये जग मन माया भया, अब इससे छूटी आस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग तजो तो सतगुरू पास।।

न नानक जो सतगुरू सेवे अपना, हौं तिस बलिहारी जांऊ ।
सतगुरू छोड़ औरन भक्ति करे, अब उसे क्या समझाऊं ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, सोयो को कैसे जगाऊं।।

166 सतगुरू शरणागति छाड़ी करि, करे भरोसा और ।
सुख सम्मति की क्या चले, नहीं नरक में ठौर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बिन मिले ना कहिं ठौर।।

167 जीवन का मैनें सौंप दिया, सब भार सतगुरू हाथों में ।
उद्धार पतन अब मेरा है, दातार तुम्हारे हाथों में ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सबका उद्धार समर्पण में।।

168 जा गुरू ते भ्रम ना मिटे, भ्रांति ना जीव की जाये ।
सो गुरू झूठा जानिये, त्यागत देर ना लाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू ही पार लगाये।।

169 खेलना हो तो खेलिये, पक्का होकर खेल ।
कच्ची सरसों पेर के, खली भया ना तेल ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण समर्पण ही करावे मेल।।

170 कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग खोजे वन मांहि ।
साहिबन बसें श्वांस श्वांस, जीव जानत नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सब्द मांहि।।

171 बिन देखे निज धाम की, बात करे सो कूर ।
आप ही खार ही खात है, बेचन फिरे कपूर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अज्ञानी सत सूं कौसों दूर।।

172 मृत्यु बुलावा भेजया, संत तजें पल में शरीर।
संत तो सुरति में रहें, होवें कभी ना अधीर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन को भेदे ना काल तीर।।

173 अक्षय पुरूष इक पेड़ है, निरंझन पात फूल विस्तार ।
त्रिदेव भये जग प्यारे, जीव भूला सतपुरूष दरबार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब में रमे साहिबन सरकार।।

क सतपुरूष बुलावा भेजिया, दीये कबीरा रोय ।
जो खुस बिच साध संगा के, सो निजधाम ना होय ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संत संगत सूं साहिबन वासा होये।।

174 निरंकार–त्रिलोकि भ्रमावे, कर्म फल जाका पसार।
मायाधारी त्रिलोकि फंसें, हंसा सतलोक दरबार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया छूटे तो साहिबन दरबार।।

क सतपुरूष एक वृक्ष हैं, निरंझन उनके डार ।
त्रिदेव शाखा भये, पात फूल संसार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, हर थां साहिबन सुरति पसार।।

175 अगुण कहूं तो झूठ है, सगुण कहा ना जाई ।
अगुण सगुण के बीच में, साहिब रहे लुभाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गुण भेद दें बताई।।

176 बिन पावन की राह है, बिन बस्ती का देश ।
बिन पिण्ड को पुरूष है, साहिबन दिया संदेश ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंसा सुरति पाये साहिब संदेश।।

177 जोत स्वरूपी पुरूष हैं, बिन आकार में आकार रूप ।
जहां चाहें रूप बने, जहां चाहें वै रूप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन वासा हर रंग रूप ।।

178 वेद हमारा भेद है, हम वेदन के मांही ।
जोन भेद में साहिब मिलें, वेदन जानत नांहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन वाणी वेदन की नांहि।।

179 शब्द सब्द बहु अंतरा, सार सब्द सुरति दीजिये ।
कहें साहिब जहां सार सब्द नांहि, धृग जीवन सो जीविये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द सब जग सोय।।

180 महांशुन्य विषमी घाटी, बिन सतगुरू नहीं पार ।
मूल नाम की दात को पाकर, पल में उतरो पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कृपा नांहि उद्धार।।

181 मैं कहता हूं अंदर की आंख को देखो, सच्ची बात महान ।
तूं कहता केवल कागद की लेखी, सतगुरू की ना करी पहचान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हो अंतरमुखि संतन महिमां जान।।

182 जा लोक माया नहीं, नहीं रूप अरूप ।
पुहुप वास सौं पातला, ऐसा तत्व अनूप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बतावें सतलोक रूप।।

183 चल हंसा तूं देश हमारे, साहिब देत पुकार हैं ।
सत्य तो केवल अमर लोक है, झूठा ये संसार है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण साहिबन दरबार है।।

184 इक जाना तो, सब कुछ जाना।
बहु जाने तो, माया में खो जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब तुम्हें है पाना।।

क साहिब एक ना जानिया, बहु जाना क्या होय ।
एक ही ते सब होत है, सबते एक ना होय ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू जीव पार ना होय।।

185 साहिब मेरा एक है, दूजा कहा ना जाय ।
एक ही ते सब होत है, सबते एक ना होय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन ही मूल होय।।

186 हम तो लखा तीनों लोक में, पाया ना संदेश ।
सार सब्द जाने बिना, कैसे जानों सच्चा देश ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द साहिबन संदेश।।

187 बचूने जग रांचया, साहिब का घर पार ।
आखिर छूटे जगत से, किसका करे दीदार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि सूं परे साहिब द्वार।।

188 साहिब देत पुकार हैं, जगत बना है मन सूं ।
चल हंसा सतलोक को, सुरति तोड़ संसार सूं ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, रमो सतगुरू सुरति सूं।।

189 सतगुरू सुरति करे पुकार, आओ चलें निजघर द्वार।
चढ़ कर सतगुरू नाम जहाज, त्रिलोकि से हो जाओ पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं उतरो भवजल पार।।

क चल हंसा सतलोक को, चड़ो नाम जहाज ।
यह संसार काल का देश, कर्म का जाल पसार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, त्रिलोकि माया काल विस्तार।।

190 जो पहुंचा जानेगा वो ही, कहन सुनन से न्यारा है ।
ब्रह्मा विष्णु महेश ना तहवां, सच्चा देस हमारा है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि सूं परे हंसा देस हमारा है।।

191 लख यत्न करे जे कोई, यम सूं बचे ना कोई।
सतगुरू करे सो होई, बिन सतगुरू तरे ना कोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं ही भव पार होई।।

क बिन सतगुरू पावे नहीं कोई, कौटिन करे उपाये ।
सार सब्द की दात बिन, मन छूटन का नहीं उपाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द ही आन मन छुड़ाये।।

192 अदा कर खुद खज़ाने से, छुड़ा ले अपने बंदे को ।
जो कुछ पास है तेरे, करता मोह अंधा बंदे को ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, छोड़ इस माया धंधे को ।।

193 अस्थिर तीनों लोक काल के, बने मिटे कई कई बार।
काम क्रौध लोभ मद् सूं मन है, कैसे नर उतरे पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन माया तजे कैसे उतरें पार।।

क सिद्ध साधक और योगी यति, आगे खोज ना पाये रत्ती ।
जाय निरंझन मांहि समावे, आगे का कोई भेद ना पावे ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, काल निरंझन सुन्न भरमावे।।

194 जन्म जन्म सूं मन की लागी, दुख दे पीड़ा आन।
जब अमृत सब्द की दात मिली, मन तरंग मिटी आन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द मिटावे अहम और आन।।

क पिण्ड ब्रह्माण्ड वेद कितेव, पांच तत्व के पार ।
सतलोक यहां पुरूष विदेही, वह साहिब करतार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, वेदन सूं पार सतपुरूष दरबार।।

195 नाम विदेही जब मिले, अंदर खुलें कपाट ।
दया संत सतगुरू बिना, को बतलावे बाट ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतनाम महिमां अति विराट।।

196 अमृत सब्द में साहिबन वासा, अनुभव सूं उपझे विश्वासा।
जाकी जागे सच्ची जिज्ञासा, वोहि जाये सतगुरू पासा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेतन सुरति सूं पाओ सतगुरू वासा।।

क शब्द शब्द सब कोई कहे, वह तो सब्द विदेह ।
जीवहा पर आवे नहीं, निरख परख के ले ।
ये भेद कबीर जी जी देते हैं, सुरत सब्द तूं ले।।

197 जाके ह्रदय विरह बसत है, ताके खुलें निज भाग।
वोही प्यारा सतगुरू पाता, जाके जागें संपूर्ण भाग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं जागें पूर्ण भाग।।

क सार सब्द निःअक्षर जान, गहे नाम तेहि बिसराये नाहीं ।
सार सब्द जो प्राणी पावे, सतलोक में जा समावे ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, फिर कबहु जग ना आवे।।

198 सागर तट पर हर पल ईक ऋतु, सर्दी गर्मी सूं पार जहान।
सार सब्द सूं भेद ना दिखता, अमृत दात की महिमां महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द करे सबै समान।।

क काया नाम सबही गुण गावें, विदेह नाम कोइ बिरला पावे ।
विदेह नाम पावेगा सोई, जिसका सदगुरू सांचा होई ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, काया नाम सूं तरे ना कोई।।

199 ज्यों नैनन में पुतली, त्यों मालिक घट मांहि ।
मूर्ख नर जाने नाहीं, बाहर ढूंढन जाही ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन अंदर ही समाहि।।

200 जा कारण जग ढूंढिया, सो तो घट ही मांहि ।
परदा दिया माया भ्रम का, ताते सूझे कछु नांहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया मोह जीव भरमांहि।।

201 जन्म मरन से रहित है, मेरा साहिब सोय ।
बलिहारी उस पीव को, जिन सिरजा सब कोय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू जैसा ना कोय।।

202 चल हंसा तूं देश हमारे, साहिब देत पुकार हैं ।
आनंद तो केवल अमरलोक में, दुख सूं भरा संसार है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक सच्चा दरबार है।।

203 चलना तो है दूर, मुसाफिर काहे सोवे रे ।
कंई जन्म से सोया पड़ा है, अब तो जागो रे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अब उठ निंद्रा त्यागो रे।।

204 तीन गुणन की भक्ति में, भूल पड़यो संसार ।
कहें साहिब निज नाम बिन, कैसे उतरे पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्दे भटके फिरे संसार।।

205 सार नाम पकड़ों सुरति सूं, फूटे घघरी काम क्रौध की धार।
पारस सब्द दात जब तेरे पास रे, तीन लोक सूं पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द उतारे पार।।

क साहिब सुरति तो एक है, भावें जहां लगाये ।
भावें सतगुरू का ध्यान कर, भावें विषय कमाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जहां ताकि सुरति वहीं तूं जाये।।

206 जाके हृदय सतगुरू बसत हैं, सुरति सूं सतगुरू संग साथ।
हंसा रूप सुरति करे, ले चले अमरपुर संग साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं साहिबन साथ।।

क जा गुरू सूं भ्रम ना मिटे, भ्रांति ना सुरति सूं जाय ।
सो गुरू पूर्ण ना जानिये, त्यागत देर ना लगाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पूर्ण संत ही पार लगाये।।

207 गुरवा तो सस्ता भया, पैसा करे वह लाख ।
राम नाम धन बेच के, शिष्य बनावन की आस ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जगत गुरू तजें ना माया आस।।

208 सतगुरू बिचारा क्या करे, सब्द ना रहता सुरति के संग ।
कहें साहिब मैली गजी, कैसे पकड़े रंग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया तजो तो चढ़े साहिबन रंग।।

209 सतगुरू की माने नहीं, अपनी चाल पर जाये ।
कहें साहिब क्या कीजिये, और भ्रम बढ़ जाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू समर्पण सबै भ्रम मिटाये।।

210 निज स्वार्थ के कारने, सतगुरू शरणी आये ।
बिन स्वार्थ सतगुरू सेविये, सतगुरू संग सहाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण श्रद्धा ही पार लगाये।।

211 माया कुमाला मिले, रहे सोया दिन रात ।
निप्रेही निरधार के, सहायक सतगुरू आप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम ही सतगुरू आप।।

212 श्रम ही ते सब होत है, जे जागा कोई होये ।
श्रम ते खोदत कूप ज्यों, नीर तब प्रगट होये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन श्रम भूख ना मिट पाये।।

213 साहिबा मन मरकट भया, अब ना सके भरमाये ।
सतनाम की दात सूं, मन–यम दास बन जायें ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतनाम मन तरंग मिटाये।।

214 सतगुरू सूं प्रीती कर पहले, फिर सुमिरो सार नाम ।
हार जब जाये मन सुरति से, चढ़ा दे गगन में ध्यान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रीत सुरति सूं लागे ध्यान

215 नाम की महिमां सतलोक में, जहां हंसों का वास ।
तीन लोक जै–जै कार करें, सार नाम का जाप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम का चहुं लोक प्रताप।।

216 सगल द्वार को छाड़ि के, आओ वे नाम के द्वार ।
दास सेवादार है, आठों पहर पहरेदार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सेवा में सच्ची सरकार।।

217 साहिब संदेसा दे रहे, सतलोक हमरा देस ।
देवी देव भी हार कर, करें वे नाम की सेव ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन की तीन लोक करें सेव।।

218 मन तो पल में झुक जात है, जे तूं जागन को तैयार ।
बिन कारण मन को दोष दे रहे, नाम सूं जीतो तो पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम ही उतारे भव पार।।

219 वेद क्तेव सब भूली बैठा, जब मिला नाम जहाज ।
बलिहारी सतगुरन को, जिन के दर्श सूं होत जमाल ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन सुरति करें कमाल।।

220 यह धुन है धुर लौक अधर की, कोई पकड़े संत सिपाई ।
जाग नाम की दात सूं, अब छोड़ काल सूं लिव लाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे जग तजा ना जाई।।

221 जो मैं किया सो मैं पाया, दोष ना दूं अवर जनां ।
वरते सब कुछ तेरा भाणा, अब जब संग मिला तो जाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जो बोओ सो पाओ संतन सूं ये जाना।।

222 सार नाम महां रस मीठा, नाम सूं सुरति तृप्ते ।
मन रूपी मुंह जोर हाथी, नाम सूं वश हो जाते ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सूं महांकाल वश हो जाते।।

223 मन खिन खिन भरम भरम बहु धावे, सुरति मिले ना चैन ।
सतगुरू अंकस सब्द दारू धारियो, घट मंदिर में चैन ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सुरति मिले कबहु ना चैन।।

224 मन रूपी सांप तो, सतगुरू रूपी गरूड़ जान ।
मुक्त करें सार नाम सूं, ले चलें अमर पुर धाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सुं पहुंचो निजधाम।।

225 सब्द चीनो मन निर्मल होवे, सुरति सूं करे गुणगान ।
सतगुरू सुरति आपो आप पछाने, निज घर लेत पहचान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति कराये बेगमपुर पहचान।।

226 जिन्हीं मार मन डाला, उन्हीं को सूरमा जान ।
वे इस लोक के नाहीं, अमर लोक के लो जान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन जीतें तो पावें पद निर्वाण।।

227 सतगुरू के उपदेश का, सुनियो एक विचार ।
जिसे सतगुरू मिलता नाहीं, वह जाता यम द्वार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी छुड़ावे यम द्वार।।

228 यम द्वार में दूत सब, करत खेचा तानी ।
उनसूं कबहूं ना छूटता, फिरते चारों खानी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भटकें चारों योनि यम खानी।।

229 चार खानी में भ्रमता, कबहुं ना पाता पार ।
सौ सौ फेरा मिट गया, सतगुरू किया उपकार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू छूटे ना यम द्वार।।

230 सुमिरन की सुधि यूं करो, ज्यूं घाघर पनिहार ।
होले डोले सुरति में, कहें साहिब विचार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति ही साहिब आधार।।

231 पंच शब्द जब पुरूष उच्चारा, काल निरंझन भये अवतारा ।
हर ओर माया जाल पसारा, ताते जीवन अति दुश्वारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार ध्यावे मिले ना मोक्ष द्वारा।।

232 निराकार निरंझन सताहरां असंख्य चौकड़ी का, राज है त्रिलोकि सार ।
चार असंख्य चौकड़ी करी पार है, तेरहं असंख्य चौकड़ी सिर सवार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, समझाऐं निरंकार काल–सीमा विस्तार।।

233 जीवरा अंश पुरूष का आया, आदि अंत कोई जानत नांहि ।
वही जानत जिन सतगुरू पाया, अमर लोक दुख सुख नांहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई जानत नांहि।।

234 कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निगुण में समाये ।
अटपट चाल साहिब की, मौसे कही ना जाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन महिमां ब्खाई ना जाये।।

235 जगत है रैन का सपना, नहीं यहां कोई अपना ।
अपने तो निजधाम हैं रहते, भूले सब कुछ अपना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज जानें तो सबै अपना।।

236 ज्युं सपना सच लागत है, त्रिलोकि लागे सच समान।
माया भ्रम में जीव फंसा है, भूला निज की पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भ्रम में फंसा सारा जहान।।

न ज्यों सपना पेखना, जग रचना तूं जान ।
इस में कुछ सांचो नांहि, नानक सच्ची मान ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, जग झूठा तूं जान।।

237 जग के हर जीव में, साहिबन अंश ही बसता है।
प्रेम उपझे जा घट भीतर, साहिब उसी में बसता है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम ही मोक्ष का रस्ता है।।

238 यह घट मंदिर प्रेम का, मत कोई पैठो धाये ।
जो कोई पैठे धाये के, बिन सिर सेती जाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रीत प्रेम ही अहम तजाये।।

239 संतो शब्दे शब्द बखाना, सब्द कोई ना जाना।
शब्द फांस फंसे सब कोई, शब्द नहीं पहचाना ।
जो जिनकी अराधना कीनी, तिनका तहुं ठिकाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द से ही मूल ठिकाना।।

240 प्रथम पूर्ण पुरूष पुरातन, पांच शब्द उच्चारा ।
सोंह सत्त ज्योति निरंझन कहिये, ररंकार औंकारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द हैं निरंकार प्यारा।।

241 कोई कोई आत्म सब्द विचारे, पूर्ण संत करें सम्भाल।
सार सब्द सुरति में डालें, छूटें कर्म काल झंजाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति छुड़ाये माया झंजाल।।

न शब्दे धरती शब्द आकाश, शब्दे शब्द भया प्रकाश ।
सकल सृष्टि है शब्द के पाछे, नानक शब्द घट घट आछे ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, निरंकार माया सबै भरमाना।।

242 शब्द काल कलंदर कहिये, शब्द भरम पुकारा ।
शब्द पूर्ण प्रकाश मेटि के, मूंदे बैठे द्वारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार मूंदा सुश्मिन द्वारा।।

243 शब्दे निगुण शब्दे सगुण, शब्दे वेद बखाना ।
शब्दे पुनि काया के भीतर, करि बैठे अस्थाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं रचा पिण्ड वेद पुराणा।।

244 ज्योति निरंझन चाचरी मुद्रा, सो है नैनन मांहि ।
तांहि जो ध्यान लगाये, योगी तेज है पाहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चाचरी मुद्रा ध्यानी सुन्न लोक समाहि।।

245 रंग रंग में जो रहे, लाखों जीव संसार ।
एक रंग में संत रहे, विरले इस संसार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया रंग रंगा संसार।।

246 शब्द सूं कुछ मिलता नहीं, फिर आवे संसार ।
समझ परे जब ध्यान धरे, पल में उतरे पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द सूं मिले ना मोक्ष द्वार।।

247 शब्द औंकार भूचरी मुद्रा, त्रिकुटि है अस्थान ।
योगेश्वर ताको पहचान, चांद सूर्य सा जान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार सुन्न रूप जान।।

248 वे नाम बांटे साहिबन चहुं ओर, पावे प्रेम स्नेहि।
जाके ह्रदय सतगुरू बसें, ताके साहिबन स्नेहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू छुड़ावें मानुष देहि।।

द दादू नाम साहिब का, जो कोई लेवे औट ।
उसको कबहुं ना लगती, काल पुरूष की चौट ।
ये भेद दादू दयाल जी देते हैं, सब्द छुड़ावे मन की औट।।

249 सार सब्द सतगुरू से पाया, क्षर अक्षर से पारा ।
तब पक्का सतगुरू का बच्चा, तब भया रे न्यारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साधक सांचा साहिबन प्यारा।।

250 सोंह से वायु सत्त से पृथ्वी, ज्योति निरंझन से अग्नि ।
ररंकार सूं आकाश भया, औंकार सूं भया रे पानी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द पंच तत्व बखानी।।

251 सोंह शब्द अगोचरी मुद्रा, भंवर गुफ़ा अस्थाना ।
योगेश्वर ताको पहचाना, सुन अनहद की ताना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अगोचरी मुद्रा अनहद जा समाना।।

252 सार सब्द सुरति में डालें, सुरति ले जाये सत धाम।
हंसा बन सुख सागर पहुंचो, सतगुरू संग निजधाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति पहुंचाये निजधाम।।

क जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मरि जाये ।
सुरति समानी सब्द में, वाको काल ना खाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सुरति क्रूर काल खा जाये।।

253 सब्द ज्ञानी, महां ज्ञानी अति अभिमानी।
सार सब्द सतगुरू बिन, मन माया में रहे ज्ञानी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द बिन सबै अभिमानी।।

254 शब्द शब्द जग जपे, जन्म मरन ना छुट पाये।
शब्द चौरासी फंद रे, कोई भी ना बच पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, क्षर अक्षर सबै भरमाये।।

255 पंच शब्द जग गुरू भरमावें, स्वर्ग सुन्न में जा समावें।
बिन सतगुरू सब्द के, आवा–गमण ना छुट पावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द भव पार करावे।।

256 ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, पड़े कर्म के भेस।
युगन युगन आई साहिबन जगावें, दें सार सब्द उपदेस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिदेव तड़पें काल के देस।।

क शब्द शब्द सब कोई कहे, वो तो सब्द विदेह ।
जीव्हा पर आवे नहीं, निरख परख के ले ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द सुरति सूं ले।।

257 सार नाम जिन जानेया, उनके पूर्ण भाग ।
सतपुरूष को जानसी, सतगुरू बन जगावे भाग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं जागें भाग।।

258 रस गगन गुफा में अजर झरे, बिन बाजा झंकार ।
ये सब मन की उपासना, बड़ावे मन झंकार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव नाचें मन तरंग झंकार।।

259 अमरलोक हंसों का प्यारा, वही है सबका निजघर प्यारा।
जो कोई सतगुरू शरणी पाये, निज को जाने वोहि जाननहारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सतलोक सतगुरू का प्यारा।।

ध धर्म दास तहं बास हमारा, निराकार ना पावे पारा ।
ताकी भक्ति करे जो कोई, मन ते छूटे पल में पारा ।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सत सुरति मन माया सूं पारा।।

260 मन चीन्हे राखे एको ठांई, जीवित मरन हो जाई।
नाम पाये प्रीत लग जाये, आवागमण छुट जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, दात मिले तो भव पार हो जाई।।

क एक पुरूष है सबसे न्यारा, सब घट व्यापक अगम अपारा ।
ताकि भक्ति महा निस्तारा, भक्ति करे सो उतरे पारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सहज भक्ति करे निस्तारा।।

261 सतपुरूष के हैं सब हंसा प्यारे, सब घट व्यापक साहिब प्यारा।
सतगुरू भक्ति सूं हो निस्तारा, सतगुरू भक्ति सूं उतरो पारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, घट घट समांहि साहिबन प्यारा।।

क सत्यपुरूष हैं सब से न्यारे, सब घट व्यापक अगम अपारा ।
ताकी भक्ति महां निस्तारा, भक्ति करे सो उतरे पारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू भक्ति साहिबन प्यारा।।

262 सार सब्द जो चित लाई, मन तजे पार हो जाई।
तीन लोक से छुट जाई, चौथे लोक जा समाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द चौथे लोक पहुंचाई।।

क सार सब्द को जो जो गहे, सोई उतरे पार ।
पिंड ब्रह्मण्ड के पार है, सत्यपुरूष निजधाम ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द सुरति निजधाम।।

263 कोई ना रहे, एक पुरूष लोक रहेगा ।
आवे जो वहां से, खबर उसकी कहेगा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण संत सतलोक गहेगा।।

264 बिन देखे उस देश की, बात करे सो कूर ।
आप तो खर ही खात है, बेचत फिरे कपूर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, फिर मोक्ष तो अति दूर।।

265 शिव देवी देव और नारद जी, पड़े कर्म फंद क्लेश।
भ्रम छोड़े बिन सब्द ना लागे, मिटे ना माया क्लेश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द कैसे मिटे भ्रम द्वेष।।

क ना तीर्थ में ना मूरत में, ना एकान्त निवास में ।
ना मन्दिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, वह तो बसे घट भीतर में।।

266 सार सब्द सुरति रम डाले, छूटे जग के काज।
हंसा बन सुख सागर पहुंचें, सतगुरू संग साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं उतरो पार।।

क ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में ।
ना मैं क्रिया क्रम में रहता, नांहि योग सन्यास में ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मैं तो बसूं तेरे घट में।।

267 ना मैं भृकुटि भंवर गुफ़ा में रहता, नांहि नाभी के पास में ।
खोजी होय तुरंत मिल जाऊं, एक पल की तलाश में ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, 'मै' तजे तो साहिबन तेरे पास में।।

268 जन्म जन्म सूं जीव सोया पड़ा, गहरी नींद पड़ी।
सपने भी माया के लेता, अंधी सुरति नींद पड़ी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म नींद सोई पड़ी।।

क नांहि प्राण में नहीं पिंड में, नां ब्रह्मण्ड आकाश में ।
कहयों साहिब सुनो भाई साधो, सब स्वासों के स्वांस में ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिबन तेरे विश्वास में।।

269 परमपुरूष अपने ही उर पायो, जिन खोजा तिन पायो ।
बाहिर खोजो तो पत्थर कंकर, अंदर सूं मोती पायो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब प्रेम प्रीत सूं पायो।।

270 ज्यों तिरिया सपने सुत खोयो, सपने में अकुलायो ।
जाग पड़ी पलंग पर पायो, ना कहीं गयो ना आयो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग सपना जीव समझ ना पायो।।

271 मृग नाभि बसे कस्तूरी, बन बन खोजत जायो ।
उल्टी सुगंध नाभी को लीनी, स्थिर होये सकुचायो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन एकाग्रता कुछ हाथ ना आयो।।

272 कहें साहिब भई है वह गति, ज्यों गूंगे गुड़ खायो ।
ताका स्वाद कहे कहु कैसे, मन ही मन सकुचायो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति भेद संत बतायो।।

273 शब्द शब्द बहु अंतरा, सार सब्द सुरति लीजिये ।
कहें साहिब जी जहां सार सब्द नांहि, धृग श्वांसा लीजिये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया ज्ञान तज सार रस पीजिये।।

274 जगत झंजाल सब झूठ की सुरति, हो जा इन सूं पार।
जिसके बल सूं पार है जाना, वोहि बीच मझधार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जगत गुरूआ मोक्ष का नांहि आधार।।

क जहां रात ना दिन है, वहां नहीं सूरज चंदा ।
यक मूरत सारे, ना खुदा वन्द ना बंदा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, वहां रहे प्रेम में हर बंदा।।

275 इस मंज़िल नज़दीक नहीं, है काल का फंदा ।
सोहंग सत्त तहां ना कोई, वहां पुरूष आनंद ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, महां काल सूं पार साहिब परमानंद।।

276 जिस लोक सूं परम हंस पधारे, वहां सुख आनंद ।
पृथ्वी पर रहकर हंसा करे, सैल करे आनंद ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंस लोक पूर्ण परमानंद।।

277 निकल जब प्राण जावेंगे, कोई नहीं काम आवेंगे ।
झूठे जग में सब कुछ झूठा, केवल एक संत ही काम आवेंगे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत ही पार लगावेंगे।।

278 निरख मत भूल तन गोश, जगत में जीवना योश ।
सदा जिन जानी ये देही, जिसका रहना अति दोष ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, दुख सुख कर्मों का दोष।।

279 वही जागे प्राणी हैं, जिन सुरति सतनाम से जोड़ी ।
कहें साहिब अविनाषी, कटे यम काल की बेड़ी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम स्नेहि की टूटे यम बेड़ी।।

280 कहत साहिब जी सुनो भाई साधो, जगत बना है मन सूं ।
मन ही है जगत का राजा, आत्म नचावे मन तरंग सूं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव बहे मन तरंग सूं।।

281 पृथ्वी चन्द्र सूर्य आकाश, स्वप्न पंच में प्रपंच स्वप्न ।
तन मन त्रिलोकि माया, प्रलय में मिटे स्वप्न समान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सारी त्रिलोकि नश्वर जान।।

282 स्वर्ग और नर्क बीच बसे, सोऊ स्वपन है ।
तन मन धन स्वप्न है, आत्म परमात्म स्वपन है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग जीवना स्वपन समान है।।

283 आत्मां परमात्मां स्वपन, रूप सूं अरूप हैं ।
जानो मृत्यु काल स्वपन, बिन गुरू जग सपना है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीवन खुली आंख का सपना है।।

284 जग की कथा सब छोड़ छाड़ के, सतगुरू तारें पार।
निज सरूप बिन जाने कोई, कैसे उतरें पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज जानो तो उतरो पार।।

क कहत साहिब सुन गोरख, एक वचन हमारा ।
स्वपन से परे, सत्य सत्य रूप अति प्यारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जग सपना लागे अति प्यारा।।

285 सोई सतनाम सतलोक, जहां सूं आये हंसा प्यारा ।
नहीं कहुं आवे नहीं कहुं जावे, सत रूप अति न्यारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत ही सत में समाये न्यारा।।

286 काम क्रौध मद् लोभ ना जाये, सबै मन आधार।
विरह विराग श्रद्धा को धार के, सार नाम सूं पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम छुड़ाये मन पसार।।

क चल हंसा सतलोक, छोड़ो माया संसारा ।
तहां नहीं यम क्लेशा, रचना बाहर बेगमपुर प्यारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, चल हंसा सतलोक प्यारा।।

287 आद्य् शक्ति निराकार तहां ना, नां ब्रह्मां विष्णु महेश ।
काल जाल तहां ना कोई, वह परम पुरूष का सच्चा देश ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार माया सूं परे परमपुरूष देश।।

288 जो पहुंचा जानेगा वोही, कहन सुनन से न्यारा ।
रचना बाहिर वो अस्थाना, कैसे करो विखाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक हो आये संत करें बखाना।।

289 प्रेम को सुरति में डाल दें, चित चंचल नाम सार।
शील संतोष क्षमा अहिंसा, सेवा जहाज सूं पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन सेवा सूं पार।।

क सिद्ध साधक और योगी यति, आगे खोज ना पायें रति ।
जाय निरंझन मांहि समावे, आगे का कुछ भेद ना पावे रति।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिबन भेद पायें ना यति।।

290 भव तरन का अवसर आयो, जाग कर होश में आओ।
बहु जन्म के पूर्व पुण्य से, मानुष देह तन चोला पायो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मानुष चोला अनमोल है पायो ।।

क काया नाम सब ही गुण गावे, विदेह नाम बिरला पावे कोई।
विदेह नाम पावेगा सोई, जा का सदगुरू सांचा होई ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पूर्ण गुरू सूं मिल पूर्ण होई।।

291 बावन अक्षर में संसार, निःअक्षर सूं सतलौक न्यारा ।
सोई नाम सूं महां निस्तारा, जो पावे सो उतरे पारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खर अक्षर फंसा संसारा।।

292 सुनो हंस गहो पद सांचो, ध्यान विदेह में रहि हो रांचो ।
यह भेद सतगुरू बतलाया, सब को विदेह ध्यान समझाया ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत सब्द सूं सतलोक पहुंचाया।।

293 सतगुरू कृपा संत समागम, चरणों में संग समायो।
वे नाम सतगुरू कृपा कीनी, सुरति जोत जगायो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू साहिबन आन मिलायो ।।

द पिण्ड ब्रह्मण्ड और वेद कितेब, पांच तत्व के पारा ।
सतलोक यहां पुरूष विदेही, वह साहिब करतारा ।
ये भेद दादु दयाल जी देते हैं, सतलोक ज्ञान विज्ञान सूं पारा।।

294 नाम विदेही जब मिले, अंदर खुले कपाट ।
दया संत सतगुरू बिना, कौ बतलावे बाट ।
तुलसी दास हाथ रस जी कहते हैं, भीतर सतलोक घाट।।

295 यह पिंजरा नहीं तेरा हंसा, ना ये हंसा धाम ।
सतगुरू सुरति हंसा करे, पल में पहुंचो निजधाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं मिले निजधाम।।

296 वे नाम काल जाल का पिंजरा, माया है इक रसरी।
सबे जीव माया रसरी बांधे, महां काल भरमाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल निरंझन जीव भरमाई।।

न ज्यों सपना वेखना, जग रचना तिम जान ।
इस में कछु सांचा नहीं, नानक सांची मान ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, झूठा जग सपन समान।।

297 चश्में दिल से देख तूं, क्या क्या तमाशे हो रहे ।
दिल सतां क्या क्या है तेरे, दिल सताने के लिए ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया रचि जीव भरमाने के लिए ।।

298 युग युग सूं जग सोया पड़ा, कोई ना रहा अपने में ।
सदा खाता और सोता सदा, एक संत ही अपने में ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब जगत सोया सपने में।।

299 संतो ये जग बेगाना देश है, बिन सतगुरू जग अपना कुछ है नांहि ।
संत पुकारें सतलोक चलो, त्रिलोकि स्वपन बिन कुछ है नांहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे त्रिलोकि छूटे है नांहि।।

300 सार नाम सूं सतगुरू जगायो, सुरति सूं गुण गायो।
सतगुरू सच्ची राह चलायो, भव सागर सूं आन छूड़ायो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू भव पार लगायो ।।

301 सात शुन्य सात ही द्वीप, सात सुरत स्थान ।
इक्कीस ब्रह्माण्ड लग, निरंकार पुरूष ज्ञान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं इक्कीस लोक जान।।

क ''सत्तगुरू साहिब जी की महिमां वर्णन :–

नांहि तुम भूमि पवन आकाश – नांहि तुम सूरज चांद प्रकाश ।
साहिब कबहुं मरें ना जन्में – जा की जात गोत्र कछु नांहि ।
महिमां वर्णी ना जाये सुपाही – सदा अखंडित अगम अपारो ।
नांहि तुम पांच तत्व गुण तीनों – नांहि तुम सृष्टि् माया दीनो ।
नांहि तूं कृष्ण कंस बल रावण – नांहि तूं रघुपति न अहि रावण ।
नांहि तूं सर्गुण सकल पसारा – नांहि तूं धरे दशो अवतारा ।
नांहि तूं सरस्वति यमुना गंगा – नांहि तूं सागर सिंध तरंगा ।
कर्ता तूं बन के बाजी लाई – औंकार से सृष्टि् उपझाई ।
कृतम धरती कृतम आकाश – कृतम चांद और सूर्य प्रकाश ।
बाजी ब्रह्मा विष्णू महेशा – बाजी इन्द्र देव सकल गणेश ।
बाजी का ये सकल पसारा – बाजी मांहि रहा संसारा ।
कहें साहिब सब बाजी मांहि – सार सब्द को जानत नांहि ।
सार सब्द है जीव उतारा – सुरति सूं जीव उतरे पारा।
जो कोई सतगुरू शरणी आई – वोहि साहिबन प्रीत पाई।।''

302 सुनो रे भाई, मोक्ष की दात सार नामा।
मन माया वश आत्म सुरति, जगाई सार नामा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम सुरति समाना।।

303 सब जीव हंसा प्रेम प्यारे, निजघर दर्शण पायो।
महिमां साहिब वर्णन सूं बाहिरा, शब्द ना मिल पायो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन महिमां बखाई ना जायो।।

क साधो भजो सार नाम को, छूटी जगत सूं नेह ।
यह जग अपना है नांहि, माया में फंसे सब कोय ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सब्द छूटे ना मोह कोय ।।

304 अंग अंग चमके ज्योत सरूपी, लाखों सूर्य शरमाये।
साहिबन प्रीति हर जीव सूं, जोत में जोत समाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, श्वांस श्वांस में साहिबन हैं समाये।।

ध पिंड नांहि ब्रह्माण्ड नांहि, नहीं लोक आकाश ।
अनन्त लोक ते भिन्न है, धर्मन करो विचार ।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, त्रिलोक सूं पार साहिबन द्वार।।

305 अक्षय होय निःअक्षर गहे, अक्षर है उपदेश ।
अक्षय जोर चढ़ जाय, जीव अक्षर राज के देश ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर सूं पाओ साहिबन देस।।

क अवधु बेगम देश हमारा, बिन सूरज जहां होत उजियारा ।
वेद कितेव पार नहीं पावत, कहन सुनन से है न्यारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतलोक वर्णन सूं बाहिरा।।

306 पढ़े गुणे सीखे सुने, मिटे ना संशय शूल ।
कहें साहिब कासे कहें, यही है दुख का मूल ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खर ज्ञान जग दुखों का मूल ।।

307 धरति नांहि अंबर नांहि, वह देस तीन लोक सूं पारा।
हर हंसा अंग साहिबन जानो, सुरति सूं देत पुकारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष हंसा प्रीतम प्यारा ।।

क कबीर पढ़ना दूर कर, पुस्तक देयो बहाये ।
बावन अक्षर छोड़ कर, निःअक्षर लौ लाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निःअक्षर पाके सब दो बहाये ।।

308 पंडित और मसालची, दोनों सूजे नांही ।
औरन को उजारा करें, आप अंधेरे मांहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कथा सुनि कबहु तरा ना जाहि ।।

309 ब्राहमण है गुरू जगत का, कर्म भ्रम को खाये ।
उरझ पुरझ के मर गया, चारों वेदों माये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ब्रह्म गुरूओं ने जीव भरमाये ।।

310 पंडित छाड़ो पर्व, छाड़ो वेद पुराण ।
जीव ब्रह्म के पार है, सार सब्द निर्वाण ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ब्रह्म ज्ञान सूं परे सब्द सुरति महान ।।

311 काम क्रौध लोभ अहंकारा, इन्हें जो मारे संत है सोई ।
बिना संत सुगम नहीं भाई, सत स्वरूप अति कठिनाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग तजें तोहि संत कहाई ।।

312 हार जीत मान अपमाना, ऐसे रहित साधु निर्वाण ।
शील संतोष दया कर भाऊं, क्षमा गरीबी साधु दयावान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन मरे तो ही साधु जान ।।

313 जीव दया कर राखो भई, एक सब्द सकल घट छाई ।
जो पावे मन सूं सुरति निकसावे, पांच तत्व की देह मन जाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब में साहिबन अंश हंसा समाई ।।

314 मीन मांस मद कबहुं ना खाई, अंकुर भक्ष्य सदा रहे पाई ।
नशा पिये से मुक्ति ना होई, बुद्धि नष्ट जावे सोई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मांस नशे सूं बुद्धि नष्ट होई ।।

315 भांग अफीम तमाकू गांझा, मादक शराब ये करे शदाई।
ये सब अमल तजे जो कोई, सार सब्द पावे नर सोई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नशाधारी सब्द दात कबहुं ना पाई ।।

316 यह संसार नाव कागज की, बूंद पड़े गल जाना है ।
बिन सतगुरू इस जग अंदर, रहना नहीं देश विराना है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग तज कर घर जाना है ।।

317 सार नाम सूं अमृत वर्षा, सुरति पार लगाये।
बूंद बिछड़ी आद की, सागर में जा समाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सूं मोक्ष पा जाये।।

क इसके आगे भेद हमारा, जानेगा कोई जानन हारा ।
कहें साहिब जानेगा वोहि, जिस पर कृपा सतगुरू की होई ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू कृपा जा साहिबन मिलाई ।।

318 सात द्वीप नौ खंड तहां ना, नां जाना कोई हंसा।
धुंधकार वहां सुन्न है नांहि, नां कोई पानी बहता।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल पसार वहां नांहि रमता।।

क दान दिये धन ना घटे, नदी नां घटे नीर ।
अपनी आंखों देख ले, कह गये साहिब कबीर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, दान सूं छूटें अहम के तीर ।।

319 सुनो भाई साधो महिमां अपरम्पारा, सतगुरू तारन हारा।
प्यारो मानो कहा हमारा, सार नाम जहाज सूं होत पारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू जीव को तारनहारा।।

क मांगन मरन समान है, मत मांगो कोई भीख ।
मांगन से मरना भला, यही सतगुरू की सीख ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मत मांगो माया भीख ।।

320 दस अवतार वहां कछु ना, नांहि पिण्ड प्रकाशा।
सूर्य चांद तारे वहां ना, ईक सी ऋतु उस पारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक वर्णन सूं बाहिरा।।

क सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल ।
जो कोई पावे इस राज़ को, उसका बेड़ा पार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति सूं उतरो पार ।।

321 ना कोई चलता ना कोई हिलता, नांहि मीन पपील की चाल।
बिन बादल तहां वर्षा होती, सुरति चलती विहंगम चाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक में चलती सुरति चाल।।

क कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग खोजे बन मांहि ।
ऐसे घट घट सांईया, मूरख जानत नांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया वश कुछ सूजत नांहि ।।

322 वस्तु कहीं ढूंढे कहिं, केहि विधी आवे हाथ ।
कहें साहिब भेदी लिया, पल में देत लखात ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन भेदी संत साहिब मिलात ।।

323 मोरा मन मानों, सुरति सैल असमानी ।
जब जब सैल करी मीरां ने, मीन पपील मार्ग को जानी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन सूं सारी त्रिलोकि जानी ।।

324 जब लग पीड़ पराई जानो, प्रेम ना उपझे कोये।
कोटि बंदगी कर्म धर्म तूं कर ले, छूटे ना बंधन कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सुरति तरे ना कोये।।

क जाका गुरू है अंधा, चेला खरा निरंध ।
अंधा अंधे पे लिया, पड़ा काल के फंद ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जगत गुरू बांटें माया फंद ।।

325 सिद्ध साध त्रिदेवादि ले, पांच शब्द में अटके ।
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मुंह लटके ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार भगत जन्म मरन में अटके ।।

326 जैसे दूध मथे देई माखन, बिन मथे भेद न पावे ।
जब घी हाथ में आये, भेद सत्त भक्ति का पावे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सिमरन माया नींद ना जावे।।

327 दुनियां सुष्मिना नाड़ी भेद ना जाने, सच्चा ज्ञान नांहि ।
ईड़ा के घर पिंगला जाई, सतगुरू मिले सुखमन और नांहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी ही सुख समांहि ।।

328 स्वांस सुरति के मध्य में, कबहुं न न्यारा होय ।
ऐसा साक्षी रूप है, सुरति निरति से जोय ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन गुरू सुरति निरति ईक ना होय ।।

329 मान सरोवर हंस निवासा, बगला तहां नहीं करहि वासा ।
हंसा चुन चुन मोती खाये, निज घर में जा वासा पाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मानसरोवर मन तज हंसा घर को जावे।।

330 सुरति में विरह ना जागे, बाहर को करें पुकार।
यही तो भटकन जीव का, कैसे खुलें मोक्ष किवाड़।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति ही खोले मोक्ष द्वार।।

क करे करावे आपे आप, मानुष के कछु नहीं हाथ ।
जो कहे कि मैं कुछ करता, फिर फिर गर्भ योनि में फिरता ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निरंकार सबै करे जीव के कुछ नहीं हाथ ।।

331 सुरति का सब जीव में वासा, तासे जीव जंत चेतन प्रवाह।
मन वश सुरति प्रवाह, मन तजे वो जिसे पिया मिलन की चाह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सच्ची प्रीत सूं मिले राह ।।

र सर्व धर्म फरमात यह, ईश्वर सामर्थ सत्य ।
किहि विधि प्रभु रीझाई, कोई ना जाने सत्य ।
ये भेद रे दास जी देते हैं, सबै धर्म निरंकार भजे ना जाने सत्य ।।

332 साहिब कृपा सुरति अमृत बरसे, सतगुरू संतन दरबार।
कर्म धर्म में जीव फंसा, संत छोड़ जाये यम द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग जीव ना जाने सच्ची सरकार ।।

ध कहें साहिब धर्म दास से, पंडित कौटि पच्चीस ।
वाचक भक्त के सम नहीं, तुला एको शीष ।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, पंडित वाचक ना जाने जगदीश।।

333 जात धर्म मत बीच में लाओ, जो आवे उसे लगाये पार ।
मनुष्य जात धर्म प्यारो, जो जाने सो उतरो पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत नीच ऊंच ना जानी सबै उतारे पार।।

334 ऊंच नीच जो मानी, भक्ति सूं कौसों दूर।
अहम मान में डूबा रहे, जम जम फिर मरे मगरूर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान मन भक्ति सूं कौसों दूर।।

335 जब लग नाता जाति का, तब लग भक्ति ना होय ।
नाता तोड़ साहिब भजे, भक्त कहावे सोये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अहम तजे तो भक्ति होये।।

र बड़े गये बड़े अपने, रोम रोम अहंकार ।
सतगुरू के परिचय बिना, चारों बरन चमार ।
ये भेद रे दास जी देते हैं, बिन सतगुरू फंसे माया की मार।।

336 हर घट में सुरति वास, जीव जग चेतन फिरे।
सुरति सूं संग तजि कर, प्राणी माया में ढूबा मरे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति संभाल तो तरे ।।

क बिन सतगुरू पावे नहीं, कोई कौटिन करे उपाये ।
शीश उतारी धरती धरे रे, उपर धरि ले पाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मान तजे तो सतगुरू शरणी पाये ।।

337 नाम गहे निर्भय रहो, सत्य लोक सहजे जाये ।
सतगुरू सूं सब्द जो पाया, नाम जहाज सूं सहजे जाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सुरति भव पार ले जाये ।।

338 सुरति सब्द सहज समावे, सहज समाधि परम पद पावे ।
सतगुरू मूरत दर्शण पावे, सुंरत कमल निज साथ ले जावे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं हंसा निजघर जावे ।।

339 आत्म तो इक सुरति है, जीव को सुरति चेतन करे।
जीव सुरति माया में फंसी, जम जम के फिर मरे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति संभाले कबहु ना मरे ।।

क सब जग झूठा जान के, सतगुरू की करो तलाश ।
सार सब्द को पा लिया, तो हर दम तेरे साथ ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द सुरति में सतगुरू वास ।।

340 बलिहारी पुरूष परिचित ताहि, जो है सच्चा परखनहार ।
सार सब्द की दात सूं, हंसा उतरे पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू उतारे पार ।।

341 सब्द सुरति सूं इक पल नहीं छूटे, जोड़ो तार सूं उतरो पार ।
ऐसी दात सतपुरूष की, जिस की महिमां अपार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति साहिबन कृपा अपार ।।

342 जप तप करते ना थके, परमपुरूष यश गावे संत ।
अब निज धर्म पुराण छूटे, ऐसो पूर्ण भक्ति सिद्धांत ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, धर्म ग्रंथ ना बतावें साहिब वृतांत।।

343 मोह को जब लग त्यागत नांहि, तब लग नाहिं वैराग ।
जो सुरति में वैराग नहीं, तो समाधि नहीं लाग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मोह तज वैरागी समाधि लाग।।

344 निजधाम रंग रूप संग एक है, एकहि सकल पसार ।
निजधाम जान सोई एक है, दूजा यह संसार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निजधाम इक सम रंग बरंग संसार ।।

345 देखे सुने कहे सबै, आपही रूप अपार ।
आप ना चीन्हे आप कहे, भूला सब संसार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया रमे ना जाने निज संसार ।।

346 जो कछु गिनती आवही, ताको है सब नाश ।
परै न गिन किन गोनिये, ऐसा सब्द प्रकाश ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति अजर अमर प्रकाश ।।

347 नहिं उत्पति नहीं प्रलय, नहीं आवे नहीं जाये ।
नहीं गिनती अनगिनत वह, बूझ के सब्द समाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन महिमां कहि ना जावे ।।

348 गुरू धोबी शिष्य कापड़ा, स्मिरण साबुन तूं जान ।
मन माया सब मैल नसाई, सुरत नाम बड़ई जान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द बिन मन मैला जान ।।

क गुरू धोबी शिष्य कापड़ा, साबुन सृजनहार।
सुरत सिला पे धोईये, निखरे रंग अपार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, गुरू माया सूं तारें पार।।

349 साहिब कमाई अपनी, कभी ना निष्फल होये ।
सात समुंद्र आड़ा पड़े, सब मिले सुख उपझाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सिमरन दुख भगाये।।

क सतपुरूष में जाये समाना, हंस पुरूष एक ही कर जाना ।
दुतिया धोखा मिट तब गयऊ, एक रूप में एक सम एऊ ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिब सूं सब उपझे अंततः साहिब समाई ।।

350 एक नाम कहुं सेवहुं, आवागमण मिट जाये ।
सतगुरू में हरदम ध्याण लगाओ, अपनी 'मै' खो जाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति पार ले जाये ।।

351 अनहद की धुन भंवर गुफा में, अति घनघौर मचाये ।
बाजे बजें अनेक भांति के, सुन के मन ललचाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद धुन में साध भरमाये ।।

352 ये सब काल जाल का फंदा, मन कलपित ठहराया है ।
वोहि जीव मन जाल सूं छूटे, अक्का नाम जिन पाया है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सुरति कोई मन तज ना पाया है ।।

353 बिन सत्य पहुंचे नहीं, सत्य लोक निज देश ।
निःअक्षर निज पावहो, मिटे है सकल अंदेश ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द बिन मिटे ना संशय द्वेष ।।

354 निःअक्षर निज पावहो, मिटे है सकल अंदेश ।
निःअक्षर जाने बिना, घर ही में परदेस ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति बिन जग लागे निज देस ।।

355 तीन लोक हैं देह में, रोम रोम मन ध्यान ।
बिन सतगुरू नहीं पाईये, सत शरण निजधाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी निजधाम ।।

356 आत्म तो ईक सुरति है, जीव को चेतन करे।
जीव सुरति फंसी माया में, जम जम के फिर मरे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति जीव माया सूं तरे।।

क यम बंधन सब काटि के, हंस लगावहु तीर ।
धन्य भाग्य वह हंस के, कहि नाम कबीर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया तजे तो कहावे कबीर ।।

357 सदगुरू हमसे रीझ के, कहा एक प्रसंग ।
बरसा बादल प्रेम का, भीज गया सब अंग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं बसे सुरति संग ।।

358 लय बिन गान, ईश बिन ध्यान ।
सतगुरू बिन, नहीं होवे पूर्ण ज्ञान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू ना हो ध्यान।।

359 जो करे नित सदगुरू का संग, उसकी महिमां अपार ।
कबहुं ना पकड़े काल उसे, पल में पहुंचे वह उस पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संग जीव तरे भव पार ।।

360 आदि अंत का भेद बखाना, सुरत कमल सतगुरू स्थान ।
सार सब्द नित ध्याण में जाकर, उल्टा करो स्वांसा ध्याण ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सिमरण सूं सतगुरू लोक स्थान।।

361 आत्म कुंवारी हो जाये तो, साहिब सूं मिले बारम्बार।
दोनों ईक मिक हो जाते जब, बहति प्रेम की धार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कुंवारी सुहागन बने पाये साहिबन दीदार।।

प साहिब के घर कौन कमी, किसी बात की ईच्छा नहीं ।
पलटु जो दुख सुख लाख पड़े, नाम सुधा रस चाखिये ।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, नाम धुन प्रीत प्रेम जग जाये।।

362 हर घट हंसा प्रेम का सागर, मन का कोई घट नांहि।
साधो शुभ दिन शुभ घड़ी वह, सुरति प्रेम बिन कुछ नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सुरति प्रेम मांहि।।

त साहिब के दास कहाईये प्यारो, जगत की आस ना राखिये ।
समरथ स्वामी जब पाया, जगत से दीन ना भाखिये ।
ये भेद तुलसी दास हाथरस जी देते हैं, सबै अपना दुख भाखिये ।।

363 सुरति निरति जब एक हों, मूल सुरति बन जाये।
उल्टि स्वांसा जब हो चले, तन मन सुन्न हो जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, उल्टा जाप भेद दे बतायें।।

र आरम्भ हमारा अनहद में, अमर लोक बिसराम ।
तीन लोक जीवित तज दिये, विदेह नाम सूं बिसराम ।
ये भेद रे दास जी देते हैं, मिले निर्लम्भ राम प्रीत निजधाम ।।

364 ध्यान विधि हंसा आज्ञा चक्र में, दर्श किया सरकार।
सतगुरू संग ले चलें अपने, सुरत कमल दरबार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरत कमल सतगुरू दरबार।।

365 सतगुरू शरणी आई के, सतगुरू आज्ञा में सदा रहाई।
सतगुरू मेहर जब बरसे, पल में साहिबन मिल जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू में साहिबन समाई।।

म हेरत हेरत हे सखी, रहया साहिब हिराई ।
बूंद समानी समुंद्र में, सो कत हेरी जाई ।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, सतगुरू में ही साहिबन समाई ।।

366 पूरव दिसा हरि को वासा, पश्चिम अलह मुकामा ।
सुरति में खोजूं सुरति ही पाऊं, ईसी में साहिब समाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति दिसा साहिब ठिकाना ।।

367 लाखों सूर्य गगन मंडल में, चन्द कंई करोड़।
बिन सतगुरू सुरति चानन के, दुख के बादल घनघौर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं कटे दुखों की डौर ।।

न जे सउ चंदा उगवाहि, सूरज चड़हि हज़ार ।
ऐेत चानन होदियां, गुरू बिन गुर घौर अंधकार ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, बिन गुरू छाया अंधकार ।।

368 आसन साधे आप में, आपा डौर खोये ।
कहें साहिब सो योगी, सहजे निर्मल होये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज जानें तो निर्मल होये।।

369 कहें साहिब विचार के, निःअक्षर का भेद ।
निःअक्षर जो पावही, सोई हंसा अछेद ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति जाने हंसा भेद।।

370 नहिं उत्पति नहीं प्रलय, नहीं आवे नहीं जावे ।
नहीं गिनती अनगिनत वह, बूझ के सब्द समाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सतपुरूष समाये ।।

371 बिन सतगुरू नर फिरत भुलाना, यह तुम जानो बात ।
खोजत फिरत ना मिलत ठिकाना, अंदर से जागो आप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कभी ना जागो आप ।।

372 तीन लोक में मन ही विराजे, तांहि ना जानत पंडित काजी ।
सार सुरति भेद जब मिले, तभी चीन्हत पंडित काजी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरत सब्द बिन मन भ्रम ना मिट पाई।।

373 हरि कृपा जो होय तो, काल का ना छूटे संग ।
कहें साहिब सतगुरू कृपा बिन, मन सूं ना छूटे संग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कृपा माया ही लागे अंग ।।

374 सतगुरू कृपा से हंसा कहावे, अनिल पंछि होवे सतलोक सिधावे ।
पर ये काज बिन जतन ना होई, बिन ईक नाम निज लोक ना जावे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं जीव सतलोक जावे ।।

375 यही बढ़ाई सब्द की, जैसे चुम्भक भयो ।
बिना सब्द नहीं उभरे, केता करे उपाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द मल तजा ना जाये ।।

376 सब आये इस एक से, डाल पात फल फूल ।
साहिबा पीछे क्या रहा, राह पकड़ी जब मूल ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू में सतपुरूष समूल ।।

377 जागन में सोवन करे, सोवन में लो लाये ।
सुरति डौर लागी रहे, तार टूट नहीं पाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेतन सुरति जीव जगाये ।।

378 प्रेम में प्रेमी, निज को दें भुलाये।
हे मूर्ख मानवा, गुरू सूं प्रेम करना ना आये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गुरू प्रीत आवागमण छुड़ाये ।।

क घट का परदा खोल कर, सन्मुख दे दीदार ।
बाल स्नेही सांईया, आवा अंत सूं बाहिर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया मिटे तो साहिबन दीदार ।।

379 किसी को बुरा मत कहिये, सब में साहिबन वास।
सतगुरू सुरति जब बरसी, तब जाना ये दास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब में साहिबन वास ।।

380 साहिबा इस जग में नर अन्ध है, सतगुरू को जाने और ।
सतपुरूष रूठें तां ठौर है, सतगुरू रूठें नांहि ठौर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष बसें सतगुरू ठौर ।।

381 बलिहारी गुरू आपने, घड़ी घड़ी सो सो बार ।
मानुष से देवता किया, करत ना लागी बार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन गुरू कोई ना उतारे पार ।।

382 बिन सतगुरू नर फिरत भुलाना, कैसे मिले ठिकाना ।
खोजत फिरत अंदर और बाहिर, कहीं ना मिलत ठिकाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सदा सतगुरू समाना ।।

383 सुरति में रचयो संसार, सुरति का है खेल ये सारा ।
सुरति सदा आनंद बड़ावे, सुरति सूं दुख नासे सारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति का हर थां पसारा ।।

384 जन्म जन्म सूं माया में लिपटा, लाखों दुख सताये।
माया तज सतगुरू शरणी आ, भाग तेरे जग जायें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सोये भाग जगाये ।।

क साहिबा सो कर क्या करे, उठ और उठ कर जाग ।
जिन के संग से बिछड़ा, वा ही के संग लाग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रभात बेला पी मिलन को जाग ।।

385 मन मान जीव ना त्यागे, तभी जन्म मरन वे पाई।
सतगुरू संग जीव सहाई, परले पार ले जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी आवागमण मिटाई।।

क पारस में अरू संतन में, तूं बड़ो ही अंतरो जान ।
वह लोहा कंचन करे, सतगुरू कर लें आप समान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू बृहगां मत्त सूं करें आप समान ।।

386 सतगुरू साधक तिनको जानो, जो सतगुरू वचन बजाई।
ऐसे साधक का मन मान मिटा, भव तज निजघर जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति वचन में समाई ।।

क सतगुरू को कीजे दण्डवत, कोटि कोटि प्रणाम ।
कीट ना जाने भृंग को, सतगुरू करलें आप समान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं जीव हो सुरतिवान ।।

387 गुरू शिष्य जब दो थे, भीतर भक्ति जागे नांहि।
दो देह जब ईक हुऐ, अब सुरति साहिब समाहिं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान मिटे तो भक्ति जागहि ।।

क जब मैं था तो सतगुरू नहीं, अब सतगुरू मैं नांहि ।
प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो ना समाहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मन मिटे तो सतगुरू कृपा समाहि ।।

388 सुरति फंसी जग जाल में, तभी मरि मरि जाये।
सतगुरू सुरति चेतन करें, जन्म मरन मिट जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति पार लगाये ।।

क सुरति संभाले काज है, तूं मत भरम भुलाये ।
बिन सुरति जो भी पास है, काल का ग्रास बनाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरत सब्द सूं काल मिट जाये ।।

389 बिन नामे हृदय शुद्ध ना होई, लाख जतन करे जे कोई ।
सतगुरू मिलें तो सार नाम मिले, जिस की महिमां जाने ना कोई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा बिन मन माया ना जाई ।।

390 कूट वचन सतगुरू के, तिरोहित करें अभिमान।
तन्द्रा वृति नींद से जगाई के, साधक का करें कल्याण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सच्चा हितेषी तूं जान ।।

क सतगुरू मेरा सूरमा, कसकर मारा बाण ।
मन माया सब छूट गया, तांहि पाओ पद निर्वाण ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी दिलावे निर्वाण ।।

391 सार नाम छाड़ी के, करे यह शब्द की आस ।
ते नर नरके जायेंगे, सत्य भाषे रे दास ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं मन हो दास ।।

392 सिया राम नाम है, जन्म मरन का मूल ।
निरालंभ राम है, सबे हंसों का मूल ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरालंभ राम सबों का मूल।।

तह ब्रह्म राम तें नाम, बड़ बर दायक वरदानी ।
राम चरित सत कौटि माहुं, लिये महेस जिय जानी ।
ये भेद हाथरस जी देते हैं, निरंकार राम नाम तीन लोक समानी ।।

393 कहो कहां लागी नाम बड़ाई, राम ना सकहिं नाम गुण गाई ।
नाम की महिमां राम सूं बड़कर, यह नर जग में जान ना पाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरालंभ राम मोक्ष बल दाई ।।

394 कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा ।
गृह छोड़ भये सन्यासी, कोउ ना पावन पारा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द कोई ना उतरा पारा ।।

395 मरन के नाम सूं जग डरे, यहि तो दुख का मूल।
बिन मरे इसे पावे नांहि, कौटिन जन्म की भूल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मोह ना तजना दुख का मूल ।।

क जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कुछ लेन ना देन ।
पर जागन का नाम ना लेता, मन माया की है सब देन ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, स्वार्थ तरंग माया भ्रम की देन ।।

396 अनहद शब्द में, घौर शब्द झंकार है ।
लागे रहें सिद्धि साधु, ना पावत पार है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनदह वाणी–लोक की नाद है।।

397 सन्तों सो सतगुरू मोही भावे, जो आवागमण मिटावे ।
द्वार ना मूंदे पवन ना रोके, ना अनहद उलझावे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सहाये अनहद पार ले जावे ।।

398 मन ही निरंझन सबै नचावे, करे उसी का ध्याण ।
सार नाम सतगुरू सूं मिले तो, करे चरणन प्रणाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू देवें सब्द महान ।।

399 हर प्राणी, अंश सतपुरूष का आही ।
यह भेद इस जग में, विरला कोई जानही ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू साहिबन भेद बताही ।।

400 एक ही निजधाम है प्यारो, सार नाम की तार।
सार नाम में सब समाया, डूब के जाते पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सूं उतरो पार ।।

क जब तक गुरू मिले नहीं सांचा, तब तक करो गुरू दस पांचा ।
सच्चे सतगुरू का सब्द पहचानो, उसका हर वचन सोचो और जांचो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अक्का सब्द लेखन सूं परे सांचो ।।

401 सतगुरू की महिमां अनंत है, कोई बिरला जाने भेद ।
अपना सब कुछ खो देता, खुद बनता तुमरा वेद ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंसा लोक का संतन सूं पाओ भेद ।।

402 संत इतना भी कर देते, इक जीव बचाने को ।
आधा कर निज ख़जाने से, छुड़ा लें अपने साधक को ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया जाल सतगुरू आवें छुड़ावन को ।।

403 सतगुरू की दात अनमोल है, मोक्ष पद पा जाये।
वे नाम सजीवन नाम हैं, हंसा को घर ले जायें ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, वे नाम सब्द ही साहिब मिलाये ।।

404 सुरति निरति मन पवन, मिल के बने ईक तार।
अब कुछ भी और नां चाहें, सब सारन का सार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द ही उतारे पार ।।

क कौटि नाम इस संसार में, तिनते मुक्ति ना होय ।
मूल नाम जो गुप्त है, जाने बिरला कोय ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मल नाम ग्रंथ ना जाने कोये ।।

405 सब्द सुरति जब बन जाये, साहिबन संग निज आप।
अब घट खाली हो गया, साधो साहिबन भरा छिन आप।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरतिवान के मिटें सब संताप ।।

क चल हंसा सतलोक को, साहिब देत पुकार ।
सत्य केवल अमरलोक है, झूठा सब संसार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिबन सतगुरू मिल चलें हंसा द्वार ।।

406 चलना तो तुझे दूर मुसाफिर, काहे तूं सोवे रे ।
यह समय जब बीत गया तो, कोन तुझे पुकारे रे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मानव जीवन ही तारणहारा रे ।।

407 कोई रहे ना रहे, सतपुरूष लोक सदा रहेगा ।
आवे जो कोई वहां से, खबर साहिब की लावेगा ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही साहिब मिलावेगा ।।

408 नाम बिन ह्रदय शुद्ध नां होई, कौटिन यत्न करे जे कोई ।
सार नाम सूं मन भी छूटे, यह सब काम यत्न सूं ना होई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा ही मन माया छुड़ाई ।।

409 साहिब के संसार में, कर्ता केवल एक संत हैं ।
कर्ता केवल साहिब हैं, हुक़्म में उनके साहिब हैं ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सतगुरू ईक मिक हैं ।।

410 सतगुरू को कीजे दण्डवत, कौटि कौटि प्रणाम ।
संत ना भेजें जगत में, कैसे हो सत्य का ज्ञान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत ही बतायें साहिब प्रमाण ।।

411 बिन सतगुरू के, साधक सूं कुछ ना होई ।
सतगुरू शरणी आई के, कृपा पाये कोई कोई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू हुक्म में रहे कोई कोई ।।

412 जो किया मन किया, आत्म मन तरंग अधीन।
मन तरंग तब मिटी, जब सतगुरू कृपा कीन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू आत्म हंसा कीन ।।

क मनवा ना कुछ किया ना कर सका, नां करने योग शरीर ।
जो कुछ किया सतगुरू किया, कहे कबीर कबीर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मानव काया निर्जीव चेतन करें कबीर ।।

413 बिन सतगुरू कृपा, तरे ना कोई।
पूर्ण समर्पण जो करे, सांचा साध सोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गुरू साधक दोनों ईक होई ।।

क आखिर ये तन खाक मिलेगा, ना मिलत मगरूरी में ।
मन लागो मोर भार, सतनाम की सुरति में ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं मन हुजूरी में ।।

414 जब चलो निजलोक को, सभी शौक दो त्याग ।
हंसा रूप सतगुरू बनाई, होवे तन मन सूं त्याग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत कृपा सूं होवे मन माया त्याग ।।

415 भृंग कीट ज्यूं भृंगी करे, ले चले संगा उड़ाई ।
भृंग कीट अब एक रूप, ले चले संग उड़ाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सहज मार्ग ले जाई ।।

416 सब्द सुरति का देखो कमाल, जन्म जन्म का कटा माया जाल।
बिन पायल बिन घुंघरूं के, जीव चले छम छम चाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति चले अदभुत चाल ।।

क सुरति के दण्ड से, घेर मन पवन एक साथ ।
फिर उल्टा चल पड़ा, घर अधर में ध्याण ।
कहै कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म और मरण को भ्रम मान ।

417 उल्टा जाप जपा तब जाना, बालमीकी भये ब्रह्म समाना ।
यह सब काम सुरति सूं होवें, चले सांसा एक समाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति संभले काज चढ़ें परवाना ।।

418 कहां से स्वांसा उठत है, कहां को है जाये ।
शून्य से स्वांसा उठत है, नाभी दल में आये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्वांस सधे साहिबन पा जायें ।।

419 हाथ पांव इसके नाहीं, सब्द ना पकड़ा जाये ।
रंग रूप इसके नाहीं, सुरति से पकड़ा जाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं सिमरा जाये ।।

420 जम जम के जग मुआ, माया तजा ना कोये।
बिन गुरू सब्द ना पावे, बिन सब्द तरना ना होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं तरे बिरला कोये ।।

क मरते मरते जग मुआ, मरन ना जाना कोये ।
ऐसी मरनी ना मुआ, बहुरि ना मरना होये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, शरीर मरे आत्म मरना ना होये ।।

421 माया लार सबै ललचाये, कोई छुट ना पाये।
बिन पूर्ण सतगुरू शरणी, जीव नर्क ही पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू नर्क सूं लें बचाये ।।

क बहु बंधन सूं बांधिया, एक विचारा जीव ।
जीव बेचारा क्या करे, जे ना छुड़वे पीव ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू बिन कौ मिलावे पीव ।।

422 भक्ति सूं प्रेम प्रकटे, छूटे मान अभिमान।
मान तजें सतगुरू मिलें, जीवन सफल तूं जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा मोक्ष तूं जान ।।

प अरे हां रे पल्टू, ज्ञान भूमि के बीच में ।
चलत है उल्टी स्वांसा, चलत है उल्टी स्वांसा ।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, सांसा सधे तो सुरति में ।।

423 बिन अंग करे सब कामा, बिन यत्न निजधाम समायें।
सुरति में जब सतगुरू समाये, हंसा हो निजघर जायें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति संग निजघर पायें ।।

र सार नाम सूं उपजत सत्य है, झूठ के कटते पर ।
जब सुरति में सत्य आ गया, तब साहिब भजो हर पल ।
ये भेद रे दास जी देते हैं, सार नाम सुरति में रहो हर पल ।।

424 मांस खाना छोड़ दे, जीव की लगे आहि।
दूजों को तड़पाई कर, प्रेत योनि अति कष्ट पाहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मांसाहारी कबहु सुख ना पाहि ।।

क मांसाहारी मानवा, प्रत्यक्ष राक्षस जान ।
ताकी संगत मत करो, होय भक्ति में हान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मांसाहारी मानवा संवेदनहीन जान ।।

425 माया में क्या रमा रे, सब्द सुरति रम जा।
तज के माया अहम रे, सतगुरू शरणी तूं आ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया जाल छोड़ी के सतगुरू शरणी आ ।।

क खेलना हो तो खेलिये, पक्का होकर खेल ।
कच्ची सरसों पेर के, खड़ी भया ना तेल ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू फंसे माया दलदल ।।

426 मन माया में मग्न, रहता जग मे जीव।
ताका भ्रम ना छूटे, सपनों में भी नां दिखे पीव।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन माया छूटे मिले ना पीव ।।

क बुरे कर्म से है रहता, जिस का मन मलीन ।
सपनों में भी उसे, साहिब नज़र आते नां ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मायाधारी कभी छूटे नां ।।

427 पवन को पलट कर, शून्य में साधा घर ।
शून्य में सतगुरू दर्शन करे, ले चलें सुरत कमल द्वार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्वांसा सधे तो सतगुरू सुरति दरबार ।।

428 कहें साहिब पूर्ण सतगुरू कृपा सूं, त्रिकुटि में कियो दीदार ।
संग में अपने ले चलें, निज के ही दरबार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दर्श ही साहिबन दीदार ।।

429 गगन की गुफा को, पवन सूं कर लें साफ़ ।
पल ही में देख लूं, पावन सतगुरू दरबार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुशिमना पार साहिबन दरबार ।।

430 बीज मिट कर, माटी से गुलज़ार होता है।
जीव सतगुरू शरणी आकर, भव सूं पार होता है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, 'मै' मिटे तो सतगुरू मिलाप होता है ।।

431 'मै' 'मेरी' अहम तजे बिन, मन माया ना तजि जाये।
तर्क वितर्क छोड़े बिन, सार दात ना मिल पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन पूर्ण समर्पण मोक्ष ना मिल पाये ।।

प पल्टू पहले मर रहा, पीछे मुआ जगत ।
मृतक होय के पावे साहिब को, छूटे ये जगत ।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, 'मै' मरे तो साहिब मिली जात ।।

432 देव पूजा सूं आवागमण है, स्वर्ग भौग फिर जग आई।
सतगुरू सब्द सिमरण कर, तेरा आवागमण कट जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सिमरण सूं कबहु गर्भ ना आई ।।

दद देवी देवल जगत में, कौटिक जे पूजे कोये ।
सतगुरू में सुरति करे, सबकी पूजा होये ।
ये भेद देवी दयाल जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं बात बन जाये ।।

433 गरीबी भली अमीरी से, सुरति सूं भीतर माला माल।
जग पदार्थ छूट जाऐंगे, नर्क भटकोगे हो कंगाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति करे धमाल ।।

क सुरति डालो मेरे साधको, सार सब्द में ।
भली बुरी सबकी सुन लीजे, कर गुज़ारन ग़रीबी में ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिबन सुरति संग रहो हर पल अमीरी में।।

434 गुरू सत, सार नाम सत, जे आपे सत हो जायें।
तीन सत जब एक हों, विष सूं अमृत हो जाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तीन मिल त्रिधारा बनी सुरति ईक हो जाये ।।

435 सार सब्द सुरति में डालो, ना लिखो ना मुख से करो उचार।
मन माया का विषय नांहि, सिमरण सूं मिले साहिबन दीदार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति ही करावे पार। ।।

क सार सुरति में सुरति डाल, मुख सूं ही ना उचार ।
उसका काल क्या करे, जो आठों पहर हुशियार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सुरति बचाये काल की मार ।।

436 कमर को सीधा रख के बैठना, इसका कर विचार ।
हिड़ा पिंगला सम हो जावें, सुश्मिन खोले बिन विचार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति घट भीतर साहिबन सार।।

437 स्वांस स्वांस स्मिरन चले, सुरति सतगुरू साथ ।
त्रिकुटि द्वार पल में खोले, पल में सतगुरू साथ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्वांसा सधे तो सतगुरू साथ ।।

438 मन की तरंग मार लो तो, हो गया भजन ।
आदत बुरी सुधार लो तो, हो गया भजन ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बाहिर तजो भीतर साहिबन ।।

439 सोया जीव ना जाने प्रेम को, करता जग की बात।
अंदर सूं मन में प्रेम ना, करता जीवन घात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन प्रेम बने ना बात।।

क सकल पसारा मेट कर, सतगुरू में देय समाय ।
कहें साहिब धर्म दास से, अगम पंथ लगाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी पार लगाये ।।

440 प्रेम निशानी मोत की, मर कर करो इसे पार।
बिन मरे प्रेम नांहि, मरते ही प्रेम की तार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम ही ले चले भव पार।।

क सुमिरन सुरति की रीत है, भांवें जहां लगाये ।
भांवें सतगुरू की भक्ति कर, भांवें विषय कमाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति जगत माया भरमाये ।।

441 सार दात पाये बिन, मन का छूटे ना साथ।
आत्म नां हंसा हो सके, प्रेम की कैसी बिसात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं प्रेम बरसात।।

क चिंता तो सार नाम की, और चितवे बिन आस ।
जो कछु विचारे नाम बिन, सोई काल की फांस ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सब्द काटे काल की फांस ।।

442 प्रेम बिन मरन ना हो सके, सार नाम बिन बने ना बात।
मरिये तो मर जाईये, तन छूटे तो हो मिलन की बात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति जग सूं छूटे पल में पाओ दात।।

क मन से हारे हार है, मन से जीते जीत ।
कहें साहिब सतगुरू पाये, सुरति के परतीत ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू प्रेम सूं हो मन जीत ।।

443 सतपुरूष को पावसी, संतन चरणन सुरति देह ।
सार नाम में सुरति डाल कर, पल में छूटे नेह ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं छूटे जग नेह ।।

444 बाहिर ना दिखलाईये, अंदर कीजिये हेत ।
बाहर तो कुछ है नहीं, अंदर सुरति प्रीत ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं जागे प्रीत ।।

445 सिमरन में सब्द ध्याना, सुरति में संतन संग।
सब्द सतगुरू साहिब रूप, सतगुरू रूप साहिबन संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू साहिब सब्द तीनो ईक रंग।।

क सतगुरू आज्ञा निरखते रहे, जैसे मणिहि भुजंग ।
कहें साहिब धर्मदास सूं, ये गुरू मुख के अंग ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति स्नेही सतगुरू संग ।।

446 सब्द ही सेवे सुरति सूं, सो गुरूमुख कहलाई ।
खाक हो सतगुरू चरण में, मोक्ष पद मिल जाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी 'मै' मिट जाई ।।

447 जब तक तन में हंस रहाई, सतगुरू की चरणी जाई ।
जीवत ही सब हो सके, नहीं तो पड़े जाल दुख दाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीते जी मोक्ष मिले मरके यमपुर जाई ।।

448 मुझे है काम सतगुरू से, दुनियां रूठे तो रूठने दे ।
ये सब झूठे नाते हैं, यह टूटें तो टूटने दे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मोह बंधन छोड़ो अब सतनाम रमने दे ।।

449 मन तरंग में सबै भूले, जग सूं करें नेह।
सतगुरू सुरति सार सूं, मिटे जगत सूं नेह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति मिटावे जग सूं नेह।।

क नाम वंत बहुत मिले, हमवंत अनेक ।
कहें साहिब धर्मदास सूं, गुरू वंता कोई एक ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, गुरू तो बेअंत पूर्ण सतगुरू कोई एक ।।

450 जब तक विरह ना उपझे प्यारे, तब लग प्रेम पनपे नांहि।
जब तक सुरति प्रेम ना सींचरे, नैनन अश्रु नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम तड़प बिन नैनन अश्रु नाहीं।।

क सतगुरू सेवें कटें दुख संताप, अंदर के खुलें किवाड़ ।
सतगुरू सब्द निरखत रहे, पल में पहुंचें पार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सिमरें जा पहुंचे दरबार ।।

451 सार नाम सूं प्रीति करें, जैसे नाद कुरंग।
उसमें ऐसे डूब मरो, जैसे चातक स्वाति बूंद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम सूं कटे माया रंग।।

क सतगुरू समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह ।
बिलगये बिलगे नहीं, एक रूप दो देह ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति सूं मिले सत पथ राह ।।

452 प्रेम सागर अथाह है, डूब के करियो पार।
जो डूब गया सो पा गया, बिन डूबे विच मजेदार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति ही प्रेम विचार।।

क गुरू का कहा मान सब लीजे, सत्य असत्य विचार मत कीजे ।
गुरू रूप सतपुरूष सहाई, सतगुरू चरणामृत रज रज पीजे ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं मन तरंग तजें ।।

453 माला लकड़ पूजा पत्थर, तीरथ हैं सब पानी ।
कहें साहिब सुनो भाई साधो, चारों वेद कहानी ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, वेद भी बखाऐं निरंकार कहानी ।।

454 नैनन सूं अश्विन की धारा, देती महां प्रेम संदेस।
विरह अश्विन बहति धारा, है प्रीत प्रेम संदेस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विरह अश्रू प्रेम संदेस ।।

तह खश खश के दाने में, शहर साहिब का बसता है ।
कस करे नैनों के तिल में, वहीं से उसका रस्ता है ।
ये भेद तुलसीदास हाथरस जी देते हैं, सहज भक्ति ही ईक रस्ता है ।।

455 सतगुरू बिन भव निधि, तर पाये ना कोई ।
बस शिव महेश जे होई, जीव कबहु पार ना होई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिदेव भक्ति सूं पार ना जाई ।।

456 मन मंदिर मस्जिद गिरजे गुरूद्वारे, निरंकार द्वारे हैं सारे।
जाकि सुरति सतगुरू चरणन समाई, ताको खुले साहिबन द्वारे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू ना साहिबन द्वारे।।

क तूं मौको कहां ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में ।
ना मैं देवल, ना में मस्जिद, नांहि काबे कैलाश में ।
भंवर गुफा में मैं ना रहता, नहीं अनहद के वास में ।
खोजी होय तुरंत मिल जाऊं, ईक पल की तालाश में ।
कहत साहिब सुनो भाई साधो, हर स्वासों के स्वांस में ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मैं तो हर पल तेरे पास में ।।

457 साहिबा कलयुग आ गया, संत ना पूजे कोये ।
कामी क्रौधी आलसी ठग, इनकी पूजा होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कलयुग संतन पूजा ना होये ।।

458 जगत प्यारो ईक सपना, भ्रम वश लागे अपना रे भाई ।
बिन सतगुरू शरणी जाई, मोक्ष दात सूं वंचित रह जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई पार ना जाई ।।

न ज्यों सपना पेखना, जग रचना तिम जाना ।
इसमें कुछ सांचो नहीं, नानक सांची मान ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, माया संसार सांचा नांहि जान ।।

459 प्रेम बिन कुछ है नांहि, प्रेम ही प्रेम चहुं ओर।
तुम कमल समान खिलो तो, कीचड़ से ऊपर की ओर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, समर्पण सूं मिले प्रेम की डौर ।।

क ये घट मन्दिर प्रेम का, मन कोई पैठो धाये ।
जो कोई पैठे धाय के, बिन सिर सेति जाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, प्रेमी होये तो अहम मिट जाये ।।

460 तुम सूं तुम ही खो गये, केसे ऊपझे प्रेम की तान।
प्रेम ही सीढ़ी हंसा होना, चढ़ो तो सुन लो तान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति प्रेम हंसा इसे जान ।।

न शब्दे धरती शब्द आकाश, शब्दे शब्द भया प्रकाश ।
सकल सृष्टि है शब्द के पाछे, नानक शब्द घटा घट आछे ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, शब्द सब्द अंतर तूं जाने ।।

461 प्रेम तो ऐसी दात है प्यारो, सब्द में ये समाये।
ये तो सुरति बहति धारा, मन मुख सूं कहि ना जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम सुरति धारा बखाई ना जाये ।।

462 सतगुरू समान दाता नहीं, बांटें मोक्ष की दात।
जीव तो लेवे कांच के टुकड़े, छोड़ अनमोल दात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव ना जागे बिन सतगुरू सुरति दात ।।

क सतगुरू समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान ।
तीन लोक की संपदा, सो साहिबन दीन्ही दान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं इसे जान ।।

463 सतगुरू सुरति अमृत बरसे, माया मल बहि जाये।
सतगुरू शरणी जो साधक, माया सूं पार हो जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी आवागमण छुड़ाये ।।

क सतगुरू की आज्ञा आवई, सतगुरू की आज्ञा जाये ।
कहे साहिब सो संत है, आवागमण नशाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी माया छुड़ाये ।।

464 लाखों जन्म का लेखा ले के, जीव सभी जायें यम द्वार।
तन मन धन सतगुरू को दीजिये, जन्म जन्म का उतरे भार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू करें भव पार।।

क तन मन ताको दीजिये, जाको विषया नांहि ।
आपा सब ही डारी के, राखे साहिबन मांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, तन तजे तो साहिबन मांहि ।।

465 जग जीव मन तरंग भयो, सुने ना कोई संतन बात।
संतन बात जो चित लाये, उसके जागे पूर्ण भाग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू हुक्म बजाओ दिन रात।।

क साहिबन ये नर अंध है, सतगुरू को कहते और ।
साहिब रूठें तो ठौर है, सतगुरू रूठें नाहीं ठौर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू मिले नांहि ठौर ।।

466 सतगुरू बिन ज्ञान ना उपझे, सतगुरू बिन मिले ना मोक्ष ।
सतगुरू बिन लखे ना सत्य को, सतगुरू बिन मिटे ना दोष ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शरणागत के मिटें सब दोष ।।

467 सतगुरू दरस गति चन्द्रमां, सेवक नैन चकौर ।
आठ पहर निरखत रहे, सुरति सूं सतगुरू की ओर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दरस दरसें हर ओर।।

468 सतगुरू शरणी जाईके, मिटे सबै भ्रम संदेह।
सतगुरू सुरति ऐसी दीनी, बरसे प्रेम प्रीत नेह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं बरसे प्रेम नेह।।

क कहें साहिब तजि भ्रम को, सार नाम में ध्यान ।
तजि अंह संतन चरण गहुं, जग सूं लेन ना देन ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सुरति सूं तजें सबै अभिमान ।।

469 सतगुरू सूं सब्द जो लीजिये, मन दीजिये दान ।
मन माया अब बहि गये, सार नाम में ध्यान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द ही मिटावे मन और मान ।।

470 सतगुरू साहिब दोऊ एक हैं, दूजा सब आकार ।
निज मेटे नाम भजें, तब पावें दीदार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खुदी मिटे तो हों साहिब दीदार ।।

प सुन्न गगन में उठत हैं, सो सब बोल में आवे ।
निःसब्दी वह बोले नाहीं, सुरति में सार सब्द कहावे ।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, सार सब्द निःसब्द कहावे।।

471 निःसब्द नाम को जानकर, दूजा देई बहाये ।
सुरति में नाम को डाल कर, पूर्ण मोक्ष को पाये ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति साधो तो सब पा जाये ।।

472 सतगुरू सत्संग सार रस पाओ, जन्म जन्म की प्यास भुजाओ।
उनके नेत्र सतपुरूष समाई, संतन दर्श सूं भव पार हो जाओ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दर्श सूं साहिब पा जाओ।।

क सतगुरू को अखंड ब्रह्मा कर माने, इन्हें नहीं जाने मानुष कर ।
इनकी महिमां अपरम्पार, इन्हीं सूं मिले साहिब दरबार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सतपुरूष मिलावनहार ।।

473 तीन लोक से परे, चौथे लोक को लो जान ।
वह ही सच्चा देस हमारा, ताकि महिमां ले जान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंसा नगरी महिमां तूं जान ।।

474 साहिब चौथे लोक के, सो ही रक्षक हमारे ।
काल निरंझन तीन लोक के, सो ही भक्षक हमारे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भक्षक सूं रक्षें साहिब प्यारे ।।

475 जो रक्षक तिन का ध्यान, करे बिरला कोई कोई ।
जो भक्षक तीन लोक में, उनका ध्यान करे हर कोई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, देव सबै पूजें साहिब भजें कोई कोई ।।

476 चलो जीवो निजघर अपने, वे नाम देत पुकार।
जो ना सुने उनकी बात को, भटकें यम द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ना तारे पार।।

क चल हंसा देश हमारे, साहिब देत पुकार हैं ।
सत तो केवल अमर लोक हैं, झूठा सब संसार है ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निजघर ही सत झूठा काल द्वार है ।।

477 ये जग लागे मीठा सपना, झूठा काल पसार है ।
युगन युगन सूं सोया पड़ा, सपना भी लागे अपना है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग है ईक मीठा सपना।।

क चलना तो है दूर मुसाफिर, काहे तूं सोवे रे ।
सोया तो खोया यह, रीत पुरानी होवे रे ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया मोहिणी ने जीव भरमाया रे ।।

478 नां कहीं गये, नां कहीं आये।
नां कहीं अटके, नां कहीं भटके।
नां सुन्न अपनाया, नां जाप भरमाया।
नां अनहद उलझे, नां बैकुण्ठ जा समाया।
घर में रहा, घर में ही सब कुछ पाया।
समुंद ही बूंद में, आ कर के समाया।
बस यहीं बैठे बैठे, निज मूल सुरति सूं।
निज मूल रूप में, साहिब में जा समाया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब मिले तो परमहंस कहाया।।

क उस पार ईक नगर बसत है, बरसत अमृत धारा हो ।
कहें साहिब जी सुनो धर्म दासा, लखो पुरूष दरबारा हो ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, त्रिलोकि सूं पार साहिबन दरबारा हो ।।

क तहं के गये बहुरि न आवे – ऐसा देस हमारा है ।
अवधू बेगमपुर देस – निज देस हमारा है ।
वेद कितेब पार नहीं पावत – कहन सुनन से न्यारा है ।
बिन बादल जहां बिजुरी चमके – बिन सूरज उजियारा है ।
बिना सीप जहां मोती उपजे – बिन मुख सुरति धारा है ।
ज्योति लगाये ब्रह्मा जहां दरशे – आगे अग़म अपारा है ।
कहें साहिब तहां रहनि हमारी – बूझे गुरूमुख प्यारा है ।।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निजलोक अमरपुर सभी हंसों का प्यारा है ।।

479 तीन लोक सूं पार, सुरति नगर पसार ।
तीन लोक माया जाल भये, चोथा हंसा घर द्वार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया तजे तो सुरति धार ।।

480 त्रिलोक मिटे, निरंकार भी मिट जाऐगा।
हंसा सुरति रहे, सतलोक अजर अमर रहेगा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक सांचा सदा रहेगा ।।

क कोई ना रहे, एक पुरूष लोक रहेगा ।
आवे जो वहां से, सो खबर उसकी कहेगा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संत सतलोक खबर देवेगा ।।

481 सर्गुण निर्गुण से परे, सत्य भक्ति का देस ।
जो कोई पावे निःसब्द को, पहुंचे सतगुरू के देस ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःसब्द सुरति सूं पावें सतगुरू देस ।।

482 चाह मिटी चिंता मिटी, रहनि बसे सुरति मांहि।
तन मिटता है तो मिट जाये, सुरति संतन मांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेतन सुरति पार ले जाहि।।

क संत ना चाहें मुक्ति को, नांहि पदार्थ चार ।
नहीं पदार्थ चार, मुक्ति संतन की चेरी ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संतन भौतिक पदार्थ सूं पार ।।

483 सार सब्द सुरति बसा, छूटे मन तरंग।
उठत बैठत सुरति सब्द में, साहिब तिनके संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं साहिबन संग।।

क जहां भौग तहां योग विनाष, छोड़ो भौग करो ध्यान ।
सतगुरू पा कर, पाओ निःसब्द का दान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निःसब्द दान अत्यंत महान ।।

484 काल भक्ति निरंकार समाये, जो पंच शब्द उच्चारा।
ऋषि मुणि सिद्ध और योगी, पहुंचे सुन्न दरबारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द कभी ना पार उतारा।।

क प्रथम पूर्ण पुरूष पुरातन, पांच शब्द उच्चारा ।
सोंह सत्त ज्योति निरंझन कहिये, ररंकार औंकारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पंच नाम सूं पाओ सुन्न द्वारा ।।

485 शब्द सर्गुण शब्द ही निर्गुण, पंच शब्द निरंकार प्यारा।
पंच शब्द पुनिः काया धारी, विदेह सब्द सतगुरू प्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विदेह सब्द सूं पूर्ण मोक्ष द्वारा।।

क शब्द ही सर्गुण शब्द ही निर्गुण, शब्द ही वेद ब्खाना ।
शब्द ही पुनिः काया के भीतर, कर बैठा अस्थाना ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, वेदन करत शब्द ब्खाना ।।

486 जो जन जाको भजत हैं, पहुंचें तिस के देस।
सतगुरू को जो ध्यावत हैं, पहुंचें निज के देस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू काटे काल कर्म क्लेस ।।

क जो जाकी उपासना कीना, उसको कहुं ठिकाना ।
काया बाहिर सब्द साहिब का, अमर पुर ठिकाना ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जीते जी मोक्ष पद है पाना ।।

487 चाचरी मुद्रा महिमां, गौरख योगी जी ने जाना।
तांहि ध्यान गौरख योगी, महां तेज सुन्न समाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चाचरी मुद्रा सूं सुन्न समाना।।

क ज्योति निरंझन चाचरी मुद्रा, सो है नैनन मांहि ।
तांहि को जाना गौरख योगी, महां तेज है तांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निरंकार में सुरति समाहिं ।।

488 अगोचरी मुद्रा सोहम शब्द, त्रिकुटि में ध्याना।
शुकदेव ता में ध्याना, पायो महासुन्न स्थाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सोहम शब्द सूं महां सुन्न स्थाना।।

क सोंह शब्द अगोचरी मुद्रा, भंवर गुफा अस्थाना ।
शुकदेव ताको पहिचाना, सुनी अनहद की ताना ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, अगोचरी मुद्रा सुनाये अनहद ताना ।।

489 जीव मरे साधु मरे, ध्यानी भी मर जाये।
सुरति रमे सार सब्द में, आवागमण मिट जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शब्द ज्ञानी सबै मरें, सब्द ही पार लगाये।।

क जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाये ।
सुरति समानी सब्द में, वाको काल ना खाये ।
ये भेद वे कबीर जी देते हैं, सुरति ही काल पार ले जाये ।।

490 भूचरी मुद्रा महिमां, वेद व्यास ब्रह्म ऋषि जाना।
वेद व्यास ता में करि ध्याना, महां प्रकाश लेई जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भूचरी मुद्रा का भेद लेई जाना।।

क ऊँ औंकार भूचरी मुद्रा, त्रिकुटि है अस्थाना ।
व्यासदेव ताको पहिचाना, चांद सूरज सो जाना ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, भूचरी मुद्रा वेद व्यास पहचाना ।।

491 सत सब्द सो उनमुनि मुद्रा, सोई आकाश स्नेही ।
तामे झिलमिल ज्योति दिखावे, जाना जनक विदेही ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, उनमुनि मुद्रा जनक विदेही पाई।।

492 ररंकार खेचरी मुद्रा, दसवां द्वार ठिकाना ।
ब्रह्मा विष्णू महेश्वर देवा, ररंकार पहचाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खेचरी मुद्रा त्रिदेव लेई पहचाना ।।

493 पंच शब्द और पांचो मुद्रा, सोई निश्चय माना ।
आगे पूर्ण पुरूष पुरातन, तिन की खबर ना जाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द मुद्राओं से परे सतलोक ठिकाना ।।

494 ज्योति निरंझन चाचरी मुद्रा, अखियन भीतर मांहि।
तहां ध्यान करा गौरख योगी, सुन्न में जा समाहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुन्न में जा समाहि।।

495 दशम द्वारे महल में, जीव सम्मोहन में भरमाई।
आत्म अजर अमर अविनाशी, काया मरि मरि जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काया तज निज को जान तूं भाई।।

क नौ द्वारे संसार सब, दसवां योगी साध ।
एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजाना ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, ग्यारवां छोड़ बाकी दसों द्वारे भरमाना ।।

496 मन ही निरंझन मन ही औंकार, मन ही है करतार ।
सुष्मिना में बैठ कर, सुरति निरति की जोड़ तार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति तोड़े मन की तार ।।

र सार नाम छाड़ी के, करे आन की आस ।
ते नर नरके जायेंगे, सत्य आपे रे दास ।
ये भेद रवि दास जी देते हैं, बिन सार दात जीव नर्क करे निवास ।।

497 सतगुरू ऐसा अंग हैं, जो करत साहिबन काम ।
उन बिन मोक्ष मिलता नहीं, चाहे लाखों जन्म करो ध्यान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी पाओ निर्वाण ।।

498 प्रेमी खोजत मैं थका, जग में प्रेमी ना कोये।
सब काम वासना रमे फिरें, आत्म प्रेमी मिले ना कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन वासना छोड़े भक्ति ना होये।।

क प्रेमी खोजत मैं फिरूं, प्रेमी मिला ना कोये ।
जा सो कहिये भेद की, सो फिर बैरी होये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जग जीव कबहु प्रेमी ना होये ।।

499 स्वार्थी जीव माने नांहि, तृष्णा छोड़ ना पाये।
बिन तृष्णा डौरी टूटे, जन्म मरन ना कट पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तृष्णा जन्म मरन में ले जाये।।

क काल का जीव माने नहीं, मैं कौटिन कहुं समझाये ।
मैं खींचत हूं सतलोक को, जीव बंधा यमपुर जाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सोया जीव यमपुर ही रह जाये ।।

500 मूल नाम निज सार है, सब सारन के सार ।
जो कोई पावे नाम को, सोई हंस हमार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम दात ही है मोक्ष आधार ।।

501 मूल नाम निज सार है, कहें पुकार पुकार ।
जो पावे सो पार है, नहीं तो काल द्वार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सार नाम कोई ना उतरा पार।। ।।

502 मूल नाम प्रगट नहीं करिये, इस की महिमां अपार ।
मूल नाम सूं जीव उभारा, काया नाम प्रगट संसार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मूल नाम कराये भव जल पार ।।

503 मूल नाम जाके घट आवे, सो हंसा सतलोक सिधावे ।
सतगुरू बिन दात ना पावे, ताही को काल ग्रास बनावे ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू नाम कृपा पार लगावे ।।

504 सार सुरति जागते, मन मोह हुआ नास।
काल फंद कट गया, माया भ्रम का नास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति सूं मन माया का नास ।।

क ज्युं ही नाम ह्रदय धरा, भयो पाप का नास ।
जैसे चिंगी आग की, पड़े पुराने घास ।।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सुरति मिटे जग की आस ।।

505 मन थिर हो सुरति में रमे, अब जीव हुआ बेपरवाह।
डौरी थामी सतगुरू ने, उनकी न जाने कोई थाह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ले चलें सत मार्ग राह ।।

द जब लगि यह मन थिर नहीं, सब लगि परस ना होई ।
दादू मनवा थिर भया, सहजि मिलेगा सोई ।
ये भेद दादू जी देते हैं, मन मिटे तो साहिब समाई ।।

506 ध्यान सुरति में जब रमें, मन माया बह जाई।
काल निरंझन यत्न करे, अब आत्म ना बंध पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ध्यान सुरति पार ले जाई ।।

द हस्ती छुड़ा मन फिरे, क्यों ही बंध्या ना जाई ।
बहुत महावत पचि गये, दादू कुछ ना बसाई ।।
ये भेद दादू जी देते हैं, मन तरंग सूं संत लें बचाई ।।

507 माया आलिंगन जीव फंसा, काम वासना उलझाई।
सुरति तो मन तरंग में, जीव मुक्त कैसे हो पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया रमा जीव कोई थाह ना पाई ।।

द बिन अवलंबन क्यूं रहे, मन चंचल चली जाई ।
अस्थिर मनवा तो रहे, सुमिरन सेति लाई।
ये भेद दादू जी देते हैं, मन तरंग सुमिरन सूं छुट पाई ।।

508 मनवा सतगुरू शरणी लागा, छुटे मोह माया तरंग ।
सतगुरू सुरति रंग चढ़यो, अब ना चढ़े माया रंग ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेतन सुरति तो साहिब अंग संग ।।

द मन निर्मल थिर होत है, राम नाम आनंद ।
दादू दर्शन पाईये, पूर्ण परमानंद ।।
ये भेद दादू जी देते हैं, मन थिर कर पाओ परम आनंद ।।

509 मन ही करावन हार है, आत्म का चले नां ज़ोर।
मन काया निर्जीव माया, आत्म सुरति सूं नाचे हर ओर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म सुरति बंधी मन डौर ।।

न मन जीते, जग जीत ।
मन हारे सब हार।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, मन के मते हज़ार ।।

510 मन भावन सबै भाया, मन माया सबै भरमाई।
मन तरंग जग भरमाया, सार सुरति मन तरंग मिटाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सूं माया मिट जाई ।।

क मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।
कह कबीर साहिब पाइये, मन ही की परतीत ।।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जागो तो हो संत सूं प्रीत ।।

511 सब्द सूं मन वश होवे, मन तरंग मिट जाई।
पूर्ण संत सूं सब्द मिले, सब्द सिमर निजधाम जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द में निजधाम समाई ।।

द कह दरिया मन कैद करूं, जो चाहो सतनाम ।
कर्म काटि नर निजपुर, जाये बसे निजधाम ।।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, निजधाम दिलावे सतनाम ।।

512 सतगुरू के कूट वचन, जन्म जन्म मल मिटाई।
सुरति में जब सतगुरू बसे, तांहि मोक्ष मिल पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संग निजघर जा पाई ।।

क सतगुरू सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा मांहि ।
कहें कबीर तां दास को, तीन लोक डर नांहि ।।
ये भेद कबीर जी देते हैं, रहिये हर पल सतगुरू आज्ञा मांहि।।

513 सतगुरू समान कोई दाता नहीं, जिस की करो तुम सेव ।
सतगुरू चरण नित ध्यान धरो, तन सुरति सूं करो सेव ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ध्यान ही जानो सच्ची सेव ।।

514 सतगुरू सब्द सूं मन मारो, उनकी सेव सूं काज सवारो ।
तुमरा काज सतगुरू आज्ञा, वचन पे सुरति डाल कर सेवो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द सुरति से सेवा ।।

515 सतगुरू सम जग रक्षक नाहीं, कुल कुटुम्भ जानो तुम बंधन ।
सतगुरू सब्द में सुरति समाहिं, तां सूं छूटें दुख के बंधन ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, रक्षक ही काटे मोह माया बंधन ।।

516 बांग सुनि जग जागे ना भाई, मुल्लां अरबी समझाये।
पौथी ज्ञान पढ़ पंडत भये, महां काल सबै भरमाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खर अक्षर में जीव भरमाये ।।

प छिमा सोल की अलफ़ी पहनी, ज्ञान लंगोटि लगाई ।
दया की टोपी सर पर दे के, और अधिक बनि आई ।।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, अक्षर ज्ञान जग भरमाई ।।

517 कामी क्रौधी लौभी, मन अंग जीव समाये।
बिन सतगुरू शरणी आये, कोई ना बच पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन अंग आत्म भरमाये ।।

क कामातुर में जागें सभी, संत इस में सोये ।
जिस में सोवें जीव यह, सतगुरू जागे होये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, कामातुर भक्ति ना कर पाये ।।

518 सतगुरू दर्शन को जायें, टूटे गहरी नींद ।
नींद ही रात्री जीव की, सार नाम सूं टूटे नींद ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही छुड़ावें ग़फलत की नींद ।।

519 माया नींद तज प्यारे, मोत खड़ी सर आन।
सार नाम का सिमरन कर, सतगुरू को ले जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन महिमां अति महान ।।

क राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोये ।
जो सुख बीच सत्संग के, सो निज घर ना होय ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन संतन सत्संग सुख कहां से होये ।।

520 संत बिन सच्ची प्रीति ना होई, सार नाम बिन मुक्ति ना होई ।
बिन सतगुरू–नाव सूं नाहीं पार, साहिब ऐसी बनत बनाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन नाव जग पार ले जाई ।।

521 अंतिम समय सुरति जहां लागी, तांहि पायो वास।
जीव सुरति मन माया में, कैसे मिटे जन्म मरन की फांस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तृष्णा सूं ना कटे काल की फांस ।।

क जाको सुरत, लाग रही जहवां ।
कहें कबीर, पहुंचाऊं तहवां ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जहां आसा तहां वासा ।।

522 कहुं नगर की डौरी, तो सूक्ष्म है झीन ।
सुरति निरति से जाय, सोई है परवीन ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांसा सम तो साधक परवीन।।

नोट :– निजधाम (मूलधाम) की ओर ले जाने वाली शरीर से उपर की डौर अति सूक्ष्म एवम झीनी है उसे केवल सुरति निरति को मिलाकर चेतन सुरति से ही पकड़ा जा सकता है।

523 बंक नाल दुई राह, एक सम राखिये ।
चढ़ो सुश्मिना घाट, अभी रस चाखिये ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, स्वांसा सम बंकनाल पार।।

नोट :– हमारी नासिका के दोनों तरफ के इंगला पिंगला से होकर बंकनाल के दो रास्ते हैं, इन दोनों को सम कर सुश्मिना द्वार खोलकर उपर चढ़ना पड़ता है तभी तो अमृत रस मिलता है !

524 रूप नाल की डौरि, निरंझन है वास ।
सुरति रहे बिलमाय, मिलावत है श्वांस ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति साधे तो मोक्ष।।

नोट :– ईंगला पिंगला सम होने पर निरति के शक्ति प्रहार से सुश्मिना खुलने पर धीर अनहद धुनें निरंकार रूप में उलझा देती हैं। इन अनहद की प्यारी सुरमई धुनों को ही योगी ध्यानी परमात्मां मान कर अनहद में डूब जाते हैं और पार नहीं पाते !

525 जब मैं था तब सतगुरू नहीं, साहिब आये तो मैं नांहि ।
सब अंधियारा मिट गया, पाया प्रकाश अंदर मांहि ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन चानन माया द्वंद मिटाहि ।।

क जब मैं था तब साहिब नांहि, अब साहिब हैं मैं नांहि।
प्रेम गलि अति सांकरी, ता में दो नां समाहिं।
ये भेद कबीर जी देते हैं, प्रेम में साहिब समाहिं।।

526 सुरति पसार चहुं ओर है, सुरति मूल निजधाम।
जीव माया भ्रम पड़ा, भूल बैठा निजधाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया भ्रम सूं मिले ना मोक्ष धाम ।।

क कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूंढे बन मांहि ।
ऐसे घट घट साहिब हैं, मूरख जानत नांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन साहिबन कोई घट नांहि ।।

527 मन माया आत्म भरमाया, माया मरे ना जीव।
बिन मान अभिमान तजे, कभी ना मिलें पीव।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान तजें तो मिलें पीव ।।

क माया मुई ना मन मुआ, मरि मरि गया शरीर ।
आशा तृष्णा ना मुई, कह गये साहिब कबीर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, आशा तृष्णा ही माया शरीर ।।

528 मन तरंग अति बल भारी, लूट लियो ये जीव।
निज को जाने बिना, छूट ना पायो कबहु जीव।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग नचावे जीव ।।

529 सब्द विदेहि पाई के, सब्द मांहि बसे सुरति।
अब सतगुरू रंग पाई के, निजधाम चले सुरति।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू साधक रमें ईक सुरति ।।

क बोल बोलें सुरति सूं, बैठे ठौर संभारी ।
कहें साहिब तां दास को, कबहु ना मिले सुरति ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू फंसी जग में सुरति ।।

530 सतगुरू सूं सार सब्द जे लीजिए, तन मन का दीजिए दान ।
बहुत सोये बह गये, राखि संग अभिमान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द मिटावे मान अभिमान ।।

531 सतगुरू की आज्ञा ले आवि, सतगुरू की आज्ञा ले जाये ।
कहें वे नाम सो संत हैं, ताका आवागमन मिट जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी जन्म मरन कट जाये ।।

532 पारस लोहा कंचन करे, पारस निज रहे पारस आन ।
सतगुरू बृहंगा मत, बृहंगा मत सूं सतगुरू करें आप समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, परमहंस जीव करें हंसा समान।।

क सतगुरू पारस में अन्तरो, जानत हैं सब संत ।
पारस लोहा कंचन करे, सतगुरू करि लें महंत ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू महिमां अनंत ।।

533 कौटिन जन्म का माया मल, जीव रहा है ढोये।
बिन सतगुरू सुरति जल के, जीव ना निर्मल होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति माया मल धोये।।

क कुमति कीच चौला भरा, सतगुरू ज्ञान जल होये ।
जन्म जन्म की मैल को, पल छिन डारे धोये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सुरति माया मल धुल जाये ।।

534 गुरू को जानें सूरमा, सब धारें जो भी वे दें।
तेरा हित सतगुरू जानें, श्रद्धा सूं समर्पण कर दें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू भव सूं पार कर दें।।

क गुरू कुम्हार शिष्य कुम्भ है, घढ़ी घढ़ी काढें खोट ।
अन्तर हाथ सहारा दे, बाहिर मारे चौट ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संत वचन देवें सुरति ओट ।।

535 अच्छे बुरे से जग भरा, माया उलझे सब कोये।
वोहि नर उझला भयो, जो सतगुरू शरणी होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत शरणी सुरति चेतन होये।।

क सतगुरू समान दाता नहीं, याचक साधक समान ।
तीन लोक की संपदा, सो संतन दीन्हीं दान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संत शरणागत अति महान ।।

536 गुरू शिष्य दोनों एक, ईक सुरति में समाऐं।
संग रहें या दूर हों, ईक दूजे में सुरति दे पटाऐं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं साहिबन जा समाऐं।।

क जो संत बसें सागर पार में, सुरति दें पटाए ।
एक पल बिसरे नहीं, पल आवे पल जाए ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति में सतगुरू लें बसाऐ ।।

537 सतगुरू चाहे कहीं रहें, दूर कौस लख करोड़ ।
साधक ईक पल बिसरे नांहि, सुरति सूं पकड़ी संतन डौर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं ही पकड़ें संतन छौर ।।

क लख कौस जो संत बसें, दीजे सुरति पटाए ।
सब्द तुरि अस्वार है, छिन आवे छिन जाए ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति सूं साहिब संग पाऐं ।।

538 सतगुरू तारनहार है, उनकी ले तूं ओट।
सतगुरू कृपा जब बरसे, तो मिटे माया खोट।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तरना है तो ले सतगुरू ओट।।

क सतगुरू सिर पर राखिए, चलिए आज्ञा मांहि ।
कहें साहिब तां दास को, तीन लोक डर नांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी त्रिलोकि कट जाहिं ।।

539 सतगुरू बिन सुरति ना जागहि, सतगुरू बिन मिले ना मोक्ष ।
सतगुरू बिन लखें ना नाम, सतगुरू बिन मिटे ना दोष ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही काटें मिथ्या दोष ।।

540 संत सुरति गति चन्द्रमां, सेवक ज्युं चकौर ।
हर पल सतगुरू निरखें, ध्यान संत चरणन ओर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति रहे सदा सतगुरू ओर ।।

541 सतगुरू करनी कार हैं, रख भरोसा सतगुरू ओट।
जन्म जन्म का लेखा कटे है, सुरति सूं साहिबन ओट।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत शरणी ही साहिबन ओट।।

क सतगुरू शरणगति छाड़ी के, करे भरोसा और ।
सुख सम्पति की क्या कहें, नहीं नर्क में ठौर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति सूं मिले सत की ठौर ।।

542 सतगुरू छवि आज्ञा चक्र खड़ी, भेद भाव कछु नांहि ।
चरणन पर प्रणाम करि, मोक्ष पद मिली जाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आज्ञा चक्र सतगुरू दरस मोक्षदाई ।।

543 संत सत्संग अति सुखदाई, सुरति चेतन हो जाई।
सतगुरू शरणी समर्पण करि, कष्ट क्लेश मिट जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत सुरति सूं मोक्ष मिल जाई।।

क सुरति समागम प्रेम सुख, पूर्ण भक्ति विशवास ।
संतन सेवा ते पाये, संतन सुरति निवास ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संतन सेवा में जागे विश्वास ।।

544 जाकि जैसी प्रवृति, ताका तैसा व्योवहार।
कामी क्रौधी यमलोक में, संतन शरणी मोक्ष द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेतन सुरति बने मोक्ष आधार।।

क जल परमाने माछली, कुल परमाने शुद्धि ।
जो को जेसा संत मिला, ताको तैसी बुद्धि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पूर्ण संत सूं पावें सुबुद्धि ।।

545 जैसी प्रीति कुटुम्भ की, तैसी संतन सूं होए ।
कहें साहिब तां दास का, पल्ला ना पकड़े कोए ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन शरणी बिरला जाये कोए ।।

546 सात द्वीप नौ खंड, फैला सूर्य चन्द्र प्रकाश।
परमहंस जब प्रकटें, फैले अनंत कौटि प्रकाश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, परमहंस आनंद प्रकाश।।

क सब धरती कागज़ करूं, लेखनी सब बनराये ।
सात समुंद्र की मसि करूं, गुरू गुण लिखा ना जाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, गुरू गुण ब्खाया ना जाये ।।

547 मै मेरी अहम अभिमान, जीव को खा जायें।
जीव आशा तृष्णा ना तजे, यम प्रेत उसे खायें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान अभिमान दुर्गति कराये।।

क अंह अग्नि निशि पल जरै, संतन सूं चाहे मान ।
ताको जग न्योता दिया, बनो हमार मेहमान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन संतन छूटे ना मान ।।

548 अक्षर ज्ञान जग मांहि, जो पढ़े करे अभिमान।
मौलवी पंडित ज्ञानी पाई, सब फंसे पढ़ पौथी ज्ञान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अक्षर ज्ञान महां माया ले जान।।

क पंडित पढ़ि गुणि लाखों मुऐ, संतन बिन नांहि ज्ञान ।
ज्ञान बिना नांहि मुक्ति है, सार सब्द प्रमाण ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सब्द पंडित वाचक जान ।।

549 सतगुरू सुरति में बसें, बिसरे नांहि ईक पल।
सतगुरू संग में भव तारें, छूटें गहरे माया तल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू पल में काटें माया जाल।।

क दर्शन मूलम सतगुरू रूपम, पूजा मूलम सतगुरू पादकम ।
ध्यान मूल सतगुरू सब्द है, मोक्ष मूलम संतन सेवा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, गुरू शरणी पूर्ण मोक्ष धाम ।।

550 औंकार ज्योति निरंझन सोहम सत्त ररंकार, पंच शब्द निरंकार ।
योगी यति सिद्ध ज्ञानी ध्यानी ध्यावें, पावें सुन्न दरबार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द निरंकार सरकार।।

क प्रथम पूर्ण पुरूष पुरातन, पांच शब्द उच्चारा ।
सोहम सत्त ज्योति निरंझन, कहिए ररंकार औंकारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पंच शब्द त्रिलोकि पसारा ।।

551 शब्द सूं निरंझन प्रकटे, शब्द सूं पंच तत्व धरती भयो।
पंच शब्द सूं जीव काया प्रकटी, सब्द माया ही जीव भरमायो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं निरंकार माया भयो।।

क शब्दे धरति शब्द आकाश, शब्दे शब्द भया प्रकाश ।
सकल सृष्टि है शब्द के पाछे, नानक शब्द घट घट आछे ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, शब्दे उपझा त्रिलोकि प्रकाश ।।

552 सतगुरू पूर्ण करे उजियारा, मिटावे मन माया अंधियारा।
जन्म जन्म के भटके जीव, संतन शरणी आवे तो उतरे पारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत शरणी जो आवे सो पारा।।

क सार नाम सतगुरू सूं पावे, नाम डौर गहि लोक सिधावे ।
सार सब्द विदेह स्वरूपा, निःअक्षर वह सब्द अनूपा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द है त्रिलोकि तारनहार।।

553 मनवा करे सदा मनभावन, मन हर ली आत्म सुरति।
आत्म सत्ता अति बल भारी, निज भूली बनी लाचारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन वश आत्म सुरति न्यारी।।

क बाजीगर का बांदरा, ऐसे जीव मन साथ ।
ना ना नाच नचाए के, राखे अपने हाथ ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, आत्म सुरति मन तरंग साथ ।।

554 सतगुरू शरणी वोहि आये, जाके जागे पूर्ण भाग।
बिरला ही माया तज पाये, जाके अंदर साहिब मिलन की आग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन कृपा जगावे पिव मिलन की आस।।

प सतगुरू सम और नहीं कौ रक्षक, कुल कुटुम्भ सब जानो भक्षक ।
तां ते सतगुरू को कभी ना छोड़ो, कनक कामिनी सूं मन मोड़ो ।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, माया फंद सुरति सूं तोड़ो।।

555 मन तरंग जग जीव बहे, पंडित गुरू ज्ञानी ध्यानी बहे।
बिन संतन सब्द नैया चढ़े, मायाधारी कष्ट सहे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग जीव बहे।।

प जियते मरना भला है, नांहि भला बैराग़ ।
नांहि भला बैराग़, अस्त्र बिन करे लड़ाई ।
आठ पहर की मार, चूक से ठौर ना पाई ।
ये भेद पल्टु साहिब जी देते हैं, बैराग़ी मोक्ष ना पाई ।।

556 सतगुरू संगति तजि, जीव फिरे यम द्वार।
जो जन संतन शरणी आवे, वोहि काल सूं पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत शरणी साहिब दरबार।।

र सतगुरू सब्द उलंघि के, जो कोई शिष्य जाये ।
जहां जाये तहां काल है, कहे साहिब समझाये ।
ये भेद रे दास जी देते हैं, सतगुरू ही यम फंद छुड़ाये ।।

557 संतन समान कोई है नांहि, सतगुरू साहिब जान।
सतगुरू प्रेम सुरति बरसे, तीनों ही ईक समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत मत करे आप समान।।

तह सतगुरू साहिब दोऊ खड़े, काके लागूं पांव ।
बलिहारी सतगुरू आपने, सत्तपुरूष दियो मिलाए ।
ये भेद तुलसीदास जी देते हैं, सतगुरू ही आन मुक्त कराऐ ।।

558 जात पात छोटा बड़ा, मोहिनी माया रचयो बड़ा प्रपंच ।
ज्ञानी अज्ञानी को मान खाये, जो सब ते बचे सो संत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत काटें माया प्रपंच।।

क जब लग नाता जाति का, तब लग मुक्ति ना होए ।
नाता तोड़ सतगुरू भजें, मुक्त कहवें सोए ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी ईक प्रेम ही होये ।।

559 सतगुरू सब्द धार लो, सुरति सूं हर बार।
संतन कृपा जो जन पाली, त्रिलोकि सूं हों पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू कृपा उतारे पार।।

क सतगुरू मार तानि के, सब्द सुरंग बाण ।
मेरा मारा फिर जिये, तो हाथ ना गहुं कमान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं चेतन प्राण ।।

560 शब्द ज्ञान सूं दूर, संतन सुरति सत ज्ञान।
संत काटे ज्ञान डौरी, सुरति सूं संग ले चलें निजधाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संगति में निजधाम।।

क पुष्प वास से पातला, वायु से अति झीन ।
पानी से उतावला, दोस्त कबीरा कीन ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिबन गुण सतगुरू करें ब्खान ।।

561 वाणी लेखन वो ना समावे, साहिब महिमां गुणगान।
सतगुरू साहिबन रूप हैं, सब्द सूं देवें साहिबन महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू में बसें साहिबन आन।।

क पिंड ब्रह्माण्ड और वेद कितेब, पांच तत्व के पारा ।
सतलोक जहं पुरूष विदेही, वह साहिब करतारा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, त्रिलोकि पार साहिबन दरबारा ।।

562 सब्द सुरति सदा रहें, सिमरन में प्रकटें संत।
सतगुरू सिमरन में दरसें, सिमरन महिमां अनंत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सिमरन में साहिब सुरति अनंत।।

क जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के मांहि ।
साहिब जानत संत जन, सुमिरन सम कुछ नांहि ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द सुमिरन बिन मुक्ति नांहि ।।

563 सार रस निज औषधि, काटे कौटिन जन्म के माया द्वंद।
सार सुरति रस पीयो, मोक्ष मिले कटे आवागमण फंद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द औषधि काटे माया फंद।।

क सत्य नाम निज औषधि, सतगुरू देई बताये ।
औषद्धि खाय अरू पथ रहे, वा को काल ना खाये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार औषधि काल घाव भर जाये ।।

564 सतगुरू संग करें, सुरति का चढ़े साहिबन रंग।
महां काल तृष्णा छूटे, साहिब मिले सतगुरू रंग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब सतगुरू मूल सुरति अंग ।।

न नानक जो निशि दिन भजे, रूप राम तेहि जान ।
कहें कबीर सुमिरन किये, साहिब मांहि समाये ।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, निरालंभ राम साहिब कहाये ।।

565 सतगुरू समान कोई दाता नांहि, जो देवे नाम दात महान।
सतगुरू सुरति साहिब मिलावे, सतगुरू जी कौटि कौटि प्रणाम।
ये भेद समर्पित गुरूमुख देते हैं, 'वे नाम' जी कौटि कौटि प्रणाम।।

566 दो तन का तो प्रेम ना, ये तो काम वासना माया रे।
प्रेम तो सुरति धार है, जीते जी मरे तांहि प्रेम उपझे रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया तजे तो प्रेम प्रकटे रे।।

567 प्रेम जीवन है नांहि, ये तो छे तन पार।
जीवत मरना जब आ गया, तब रहता प्रेम प्यार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम उपझे तो मोक्ष द्वार।।

क सतगुरू को कीजे दण्डवत, कौटि कौटि प्रणाम ।
कीट ना जाने भृंग को, सतगुरू करलें आप समान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू चरणन पाओ पद निर्वाण ।।

568 तीन कमियां तीनों स्वर्ग में, भय है तन तजने का।
मोत पल पल देती पैगाम, छूटे ना भय तन तजने का।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तीनों लोक भय साथ तन तजने का।।

569 स्वर्ग में आगे उन्नति का, कोई साधन ना।
मृत्यु लोक कर्म फल के, भोग स्थान बिन कुछ ना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्वर्ग लोक में कोई उन्नति ना।।

570 जैसे ईर्ष्या इस संसार में, तैसे स्वर्ग में जान।
पहले स्वर्ग का दूसरे से, दूसरा तीसरे से ईर्ष्या जान।
तीन लोक सुख कोई ना, इस बात को पूर्ण ले जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तीन लोक में ईर्ष्या तूं जान।।

571 जो लोक जो काल सतावे, ताको सब जग ध्यान लगावे।
निरंकार जाहि वेद बखाना, सोहि काल कोई मर्म ना जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार भ्रम तूं ना जाना।।

572 साहिबन अमर लोक दूर मत जान, पर सिलसिली गैल पहचान।
सुरति का चलना कठिन, किसी और की बात मत मान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अमर लोक की महिमां ले तूं जान।।

ध धर्म दास कहें, हे स्वामी गुप्त भक्ति को मोहे समझायो।
आप ये भक्ति कहां से लाई, सो भेद मोहे समझायो।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सहज सत्त भक्ति दे समझायो।।

ध तुमरि भक्ति कोन विधि पावें, धर्म दास साधक महान।
भक्ति कहिजै कोन प्रकारा, ताको स्वामी कहो बखान।
ये बात धर्म दास जी कहते हैं, किस को कैसे करें बखान।।

क कहें साहिब सुनो मम वाणी, भक्ति सार नाम कहुं बखानी।
आगे भक्ति भये बहु भारी, करो भक्ति पर भक्ति ना जानी।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सत भक्ति जग ना जानी।।

क सत भक्ति जगत में न्यारी, जाको कैसे जाने संसारी।
ताको सात योगेश्वर नांहि पायो, जीव सब भूले संसारी।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सत भक्ति की महिमां न्यारी।।

क शिव सनकादिक कोई ना जाने, ऐसा बिन सतगुरू ना जाने।
साड शिव आगे नांहि आवें, तीन लोक प्रभुता उठ जावे।
ये भेद कबीर जी देते हैं, ठौर हमारी कोई क्युं कर पावे।।

क निजघर गये बहुरि ना आवे, तीन लोक क्लेश मिट जावे।
केतिक ब्रह्मा होय होय गाऊं, तीन लोक त्रिदेव निरंकार गुण गावें।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सोहि पुरूष जगत में बिरला गुण गावे।।

573 मेरा भेद निरंझन पारा, जाका हंसा अंश अवतारा।
वहां का भेद कोई बिरला जाने, ये जग भूला जग तारन हारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सच्ची दात सूं जानो जग तारनहारा।।

574 तीन लोक भय स्थाना, अमर लोक ईक निर्भय स्थाना।
जग में जीव विषयों में फंसे, विषय भोग करें काल लोक स्थाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कोई कोई पावे निजघर स्थाना।।

575 जो कोई सार नाम गुण गावे, ताका आवागमण मिट जावे।
सतलोक में निजघर जाने, मात–गर्भ में कभी ना आवें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सूं आवागमण चक्र मिट जावे।।

576 ज्ञान मर्म का भेद बताओ, डूबती नैया पार लगाओ।
रावण को तुम ज्ञानी जानो, चार वेद का ज्ञाता जानो।
कामातुर में खोया ज्ञान को, जीव हारा उसे जानो।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, शब्द ज्ञान मन ईन्द्री जानो।।

577 मन माया का भेद ना जाना, निज को भगवन सम माना।
लक्ष्मण को राजनीति शिक्षा दीनी, विषय विकार मन निति मानो।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, कैसे मन छूटे सच्वी निति जानो।।

578 ऋषि मुणियों ने शक्तियां पाक, हिंसा क्रूरता चहुं ओर फैलाई।
मोह माया का बंधन संग में, क्रोध की अग्नि मिट नांहि पाई।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार सब्द सूं बात बन जाई।।

क अवधू अक्षर हूं सो न्यारा, अक्षर हूं सो न्यारा।
जो तुम पवन गगन चढ़ावो करो गुफा में वासा।
गगन पवना दोनों विनसें, कह गयो तुम्हारा।
गगना मध्ये ज्योति झलकै, पानी मध्ये तारा।
घटि गे नीर विनसि गे तारा, निकर गयो केहि द्वारा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निकर गयो केहि द्वारा।।

क मेरूदण्ड पर डारि दुलैची, जोगिन तारी लाय।
सोई सुमरे पर खाक उड़ानी, कच्चा योग कमाया।
ईंगला विनशे पिंगला विनशे, विनशै सुषमण नाड़ी।
जब उनमुणि की तारी टूटे, तब कहां रही तुम्हारी।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सब्द बिन अवगति तुम्हारी।।

क अद्वैत वैराग कठिन है भाई, अटके मुणिवर योगि।
अक्षर लौं की गम्स बतावै, सौ है मुक्ति विरोगी।
कह अरू अकह दोऊ ते न्यारा, सत्त असत्त के पारा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सब्द ना कोई होता पारा।।

क दस अवतार निरंझन कीने, वश कीन्हो संसारा।
रक्षक भक्षक होय के, सबहों का किया संहारा।
सिद्ध साधु पंच मोऐ, खर अक्षर था ध्याया।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निरंकार रक्षक भक्षक रूप है धारा।।

क सिद्ध साधु सब पंच मोऐ, खर के पड़े झमेरे।
निःअक्षर जाने बिन, छूटें ना काल के फेरे।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निःअक्षर सूं छूटें काल के फेरे।।

क औंकार जन्म मरन दियो, केवल कर्ता मन जान।
सांचा सब्द अमृत बाण है, सतगुरू सूं लो पहचान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू जग में हैं महान।।

क जागृति देह आकार है, उकर सपना भास।
तेजस मकार जानिये, तुरिया ब्रह्म प्रकाश।
ये भेद कबीर जी देते हैं, तुरिया अवस्था में ब्रह्म वास।।

क इन सबहि से भिन्न है, निःअक्षर नाम सरूप।
धर्म दास सुरति सूं सिमर के, पहुंचा लोक अनूप।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निःअक्षर सूं पहुंचो निज लोक अनूप।।

क धरण आकाश से बाहिर, सुमिर निःअक्षर सार।
होत धुनि अति सुन्दर, सत्य लोक विस्तार।
धरण आकाश से बाहिर, सुरत कमल विस्तार।
तहां ते सुरति लागे वही, सब्द में रहे मुक्त द्वार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द सूं मुक्ति द्वार।।

क निराधार आधार है, नामे रहा समाये।
अनंत सूर्य प्रकाश है, जब देखोगे जाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, नाम सूं पार उतरा जाये।।

क निजधाम में पांच तत्व तीन गुण ना, ऐसा सब्द विदेह।
वहां जाओगे जब तुम, सुद्ध ना रहे यह देह।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निजधाम की महिमां सब्द विदेह।।

क सार सब्द को जो गाहेगा, सोहि उतरे पार।
सतगुरू जीव को दान दे, नाम लखावे सार।
पिण्ड ब्रह्माण्ड के पार है, सांचा देस हमार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सब्द सूं उतरो पार।।

क सार सब्द जो कोई गाहे, लेहे तहां विश्राम।
सतगुरू का दर्शन करे, सुरत कमल विश्राम।
सतगुरू संग हंसा करे, ले चलें निजधाम।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू ले चलें राह निजधाम।।

क ध्याण मूलम गुरू रूपम, पूजा मूलम गुरू पदकम।
मंत्र मूलम गुरू वाक्यम, मोक्ष मूलम गुरू कृपा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, गुरू कृपा सूं पाओ मोक्ष द्वार।।

क गुरू गुरू कहे सकल संसारा, गुरू सोई जो तत्व विचारा।
बहुत गुरू हैं अस जग मांहि, हरे द्रव्य दुख कछु नांहि।
ये भेद साहिब जी देते हैं, गुरू महिमां बिन कुछ नांहि।।

579 गुरू सुरति गुरू देव समाना, जैसे भाव वैसा फल पाना।
भूत भविष्य में ध्यान ना देना, इस पल रह मोक्ष को पाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, इस पल रहना हंसा हो जाना।।

580 माया मोह भ्रम के बादल, इस पल रह भेद पा जायेगा।
पांच पच्चिस करि वश अपने, सुरति सूं पार हो जाएगा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, इस पल रह पार हो जाएगा।।

581 जब तक सत्त सब्द नहीं पासा, काल जाल संग साथ।
सतगुरू सूं अमृत दात को पाले, हर पल सतगुरू साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द में साहिबन वास।।

582 संत बड़े परमार्थी, शीतल इनके अंग।
तपल बजाये ओरन की, देके अपना रंग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी पाओ सुरति रंग।।

583 बलिहारी सतगुरू अपने, घड़ी घड़ी सो सो बार।
मानुष से साहिब किया, करत ना लागी बार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बलिहारी तारनहार।।

क चिड़ी चौंच भर ले गई, नदी ना घटयो नीर।
दान दिये धन ना घटे, कह गये साहिब कबीर।
ये भेद कबीर जी देते हैं, दान सूं उपझे धीर।।

584 बहुत गुरू हैं इस जग मांहि, मन सूं ही मन छुड़ाना चाहें।
बिन पूर्ण सतगुरू शरणी जाये, कोटिन यत्न करि मन छूट ना पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू सुरति मन तजा ना जाये।।

585 छल कपट पाप कारण है, धर्म क्षेत्र दोषण का शिकार।
धर्म बुरा है नांहि, सच्ची भक्ति हुई शिकार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, धर्म विकार सूं बचे ना संसार।।

586 तंत्र मंत्र सब झूठ है, प्यारो मत भरमों कोये।
सार नाम जाने बिना, कागा हंसा ना होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सूं जीव मुक्त होये।।

587 अजर पुरूष एकै रहे, अजर लोक अस्थान।
ताको जानें सतगुरू सूं, सतगुरू चरणन ध्याण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष की महिमां महान।।

588 अनुभव ज्ञान प्रगट जब होई, आत्म राम चीन्हें है सोई।
घट घट राम बसे है भाई, बिन ज्ञान नहीं देत दिखाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर घट मांहि निरालम्भ राम समाई।।

589 पुरूष दया जब होवे सहाई, सत्तलोक में जा समाई।
सार नाम जपै भड़भागी, सुरति रहे सतगुरू चरणन लागी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति बिन कोई कभी ना जागी।।

क राम कृष्ण से कौ बड़ा, तिन्हु भी गुरू कीन।
तीन लोक के नायका, गुरू आगे अधीन।
ये भेद कबीर जी देते हैं, गाओ गुरू महिमां गुण गान।।

590 राम कृष्ण से कौ बड़ा, गुरू सम्मान में वो खड़े।
बिन पूर्ण सतगुरू शरणी, कोई ना जग सूं तरे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी सूं जीव तरे।।

591 जिन के सपनेहू क्रौध डर, कबहु ना होत प्रवेश।
मधुर वचन कहि प्रीति युक्त, सतगुरू देत उपदेश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मधुर भण्डार सतगुरू उपदेश।।

592 जो नांहि नाम मुक्ति को पाते, माला डारी जगत बहुरि आवे।
सुने नाम अरू करे ध्याण, छाड़ पाखण्ड सतगुरू ध्यावें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संग ले चले पार।।

593 अलख नाम घट भीतर देखो, सुरति में सतगुरू रहे समाई।
घट घट राम बसे हैं भाई, सुरति बिन देत नांहि दिखाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति में साहिबन समाई।।

594 तीर्थ गये दोऊ जना, चित चंचल मन चोर।
एको पाप ना काटिया, दस मन लाये और।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चित चंचल तरंग हर ओर।।

595 तीर्थ गयो क्या भया, मन की मैल ना जाये।
पाप तो धुल पाये ना, और भरि ले आये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन की तरंग बह जाये।।

596 सतगुरू अमृत दात है दीनी, काल जाल सूं बचा लीना।
कागा पलट हंसा कर दीना, ऐसा नाम साहिब मोहे दीना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू अमृत दात सूं हंसा कीना।।

597 माला फेरत युग भया, फिरा ना सुरति फेर।
मन कर मनका छोड़ कर, सुरति मनका फेर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति की माला तूं फेर।।

598 भक्ति भक्ति सब जगत बखाना, भक्ति भेद कोई बिरला जाना।
आगे भगत भये भव सारी, करि भक्ति मुक्ति भेद ना जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भक्ति भेद कोई बिरला जाना।।

599 शिव साधन की यह गति, शिव हैं भव के रूप।
बिन समझे जगत सब, पड़े भ्रम के कूप।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, इस भक्ति सूं नांहि पूर्ण मुक्ति अनूप ।।

600 नरक वास में आन पड़े, ऐसी शिव भक्ति की मोज।
कहें साहिब विचार के, जन्म मरण की ना मिटे खोज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन भक्ति सूं स्वर्ग नरक मोज।।

क साहिब जी खड़े बाजार में, मागें सब की खैर ।
ना काहु से दोस्ती, ना किसी से बैर।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सब हैं अपने कोई नांहि गैर।।

601 वे नाम खड़े बाज़ार में, बाटें दात की खैर।
सबहै धन मोह पड़े, कोई बिरला ही पाये दात की खैर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मोह तजे बिन कैसे पाये खैर।।

602 सब जग तामस भक्ति में पड़ा, मागे अपनी खैर।
पड़ोसी का वैभव खटक रहा, ताके धन की नांहि खैर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सभी मागें निज की खैर।।

603 द्रौपद ने भक्ति करि, द्रोणाचार्य वध के लिये।
काला ईल्म भक्ति इसे जानो, पर दुखन के लिये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग छूटन का करो उपाये।।

604 सत्तोगुणि विष्णु जी का भगत, हर जीव की रक्षा करे।
शांत मन शांत विचार, सब का भला करे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बैकुण्ठ पाये फिर जग लोट आये।।

605 रजोगुणि ब्रह्मा की भक्ति, तमोगुणि शिव भगत कहावे।
इन दोनों में मुक्ति नांहि, फिर भगत कैसे कहलावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आनंद कहां से आवे।।

606 सगुण भक्ति करे संसारा, निर्गुण योगेश्वर अनुसारा।
इन दोनों के पार बताया, मेरे चित ऐको नहीं आया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सर्गुण निर्गुण अटके सुन्नाधार।।

607 सर्गुण निर्गुण ऐको जानों, इन दोनों में भेद नांहि।
जिस को पकड़ो निरंकार ध्यायो, मोक्ष पद का भेद नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सर्गुण निर्गुण निरंझन जानो।।

608 पीलो रंग है धरती का, मीठो इसका स्वाद।
लाल रंग है अग्नि का, तीखो इसका स्वाद।
श्वेत रंग है जल का, खारो इसका स्वाद।
नीलो रंग है वायु का, खट्टो इसका स्वाद।
कालो रंग है आकाश का, फीको इसका स्वाद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, रंग बिरंगी त्रिलोकि महान।।

609 सतपुरूष सोलहं शब्द, सुरति सूं विचारे।
सोलहं शब्द पुत्र उत्पन्न हुये, पांचवा पुत्र निरंझन प्यारे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शब्द सूं प्रगटे निरंझन प्यारे।।

610 मन नाम निरंझन जान, पंच तत्व तन किया उत्पन्न।
आत्म मन का वस्त्र ओड़ा, ले इसे तूं जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन मन तूं एको जान।।

611 परमात्म भगवान अलख निरंझन, कायर क्रिम जान।
परमेश्वर ईश्वर हरि हर, आदि इनके नाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन भरमायो अनेकों नाम।।

612 निरंझन सत्तहर युगन तक, एकाग्र चित हो ध्याण करा।
एक पग़ पे खड़े होकर, साहिब को प्रसन्न करा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, साहिबन को प्रसन्न करा।।

613 तप से खुश होकर सतपुरूष सूं, मानसरोवर राज मिला।
फिर तप सूं तीन लोक राज, आद्यशक्ति संग हंसा परिवार मिला।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निरंकार करे त्रिलोकि राज ।।

क गुरू किया है देह का, सतगुरू चीन्हा नांहि।
भव सागर के जाल में, फिर फिर गोता खाई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन सतगुरू छूटे ना यम द्वार।।

614 तीन लोक से बिन पसारा, ऐसा हंसा देस हमारा।
हंसा अंश है साहिबन का, अमरलोक साहिबन न्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अमरलोक का भेद दे देते हैं ।।

615 भक्ति कठिन सहल मत जानो, बुढ़ापे में होये नांहि।
बालपन और जवानी में ही, कष्ट क्लेश में नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भक्ति पनपे बालपन मांहि।।

616 ब्रह्मण्ड और परमात्मां, दोनों की खोज बड़ी।
कोई एक में कोई दूजे में, जवानी में बात बनी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुख में सुमिरो सुरति बनी।।

617 सब को सब्द सुनाऊं, जो आवे नाम प्यास।
सार सब्द हमारा सत्य है, सतपुरूष का वास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सतपुरूष का वासा।।

618 हर पल तड़प रहे, सतगुरू दर्शन को।
सुरति चरणन में, रात में हों या दिन को।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तड़प ही दिलावे सतगुरू दिदार।।

619 सुशिमन खुले, किट किट की आवे आवाज़।
ध्याण सूं सुने ध्वणि, सुरति सूं सुरत आवाज़।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद नाद गरजे दिन रात।।

620 दस पवन का मेल ही, तन खाली हो जाये।
सुरति के दण्ड सूं, मन पवन घिर जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पवन ही सुरति से जा मिलाये।।

621 श्वांसा सुरति संग, धीरे धीरे उठे ऊपर की ओर।
मकर तार पर ध्याण रख, मन का उल्टा फेर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, श्वांसा स्थिर तो सुरति हो संग।।

622 सुरति हटे, श्वांसा पुनः नाभी वास।
फिर फिर यत्न करे, आज्ञा चक्र सतगुरू पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं ही पाओ साहिबन पास।।

623 धर और अधर के मध्य, सब्द सुरति एक होय।
मकर तार ये बन जाये, मन गया तन गया अब जीवित मरना होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति चेतन हो तो जीवित मरना होये।।

624 जिसे कहते प्राण हम, पवन में हमारी आत्म।
श्वांसा तो तन लेत है, प्राण बिन आत्म।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म अजर अमर बिन प्राण।।

625 अपान उदान प्राण समान, नाग किरीकल देवदत्त धनंजय।
जम्हाई सर्वतन व्याम, जिसे कहते हैं प्राण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्राणों की महिमां ले जान।।

626 अपान वायु गुदा में वासा, मल को बाहर करे।
उदान वायु कलेजे में वासा, डकार सूं निकास करे।
अपान उपर आने नहीं देता, गंदी वायु सूं दूर करे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, वायु तन को शुद्ध करे।।

627 ह्रदय में प्राण वायु का वासा, ह्रदय को धड़कन दे।
जोड़ों में समान वायु का वासा, कर्म करने में बल दे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शरीर में वायु का महत्व देते हैं।।

628 तालु में वासा वायु नाग, नींद लेने में सहायक।
नाक में किरकिल वायु वासा, सबको भिन्न रखने में सहायक।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पुष्ठ रखने में शुद्ध वायु सहायक।।

629 पलकों में रहती वायु देवदत्त, उठने बैठने में सहायक हो।
भुजाओं में वासा वायु धनंजय का, शक्ति में सहायक हो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तन भीतर वायु कार्य महान।।

630 आराम करने का ईशारा जो करे, जम्हाई वायु कहलाऐ।
तन फूलने से रोकने का कार्य करे, सर्वतन वायु कहलाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तन संतुलन वायु बनाऐ।।

631 स्वांसा मध्य से, आत्म नाभी में आवे।
स्वांसा मध्य से सुश्मिना में, फिर दसम द्वार जाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म सुरति सूं पकड़ी जाए।।

632 स्वांसा सार शरीर का, शुन्य से उठे नाभी में आवे।
हाथ पांव इसके नांहि, सुरति सूं पकड़ी जावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सांसा का महत्व जानें।।

क सुरति के दण्ड से, ले मन पवन को घेर।
फेर उल्टा हो गया, धर अधर विच सुरति धरे।
वो संत निर्भय हुआ, जन्म मरन के भ्रम सूं दूर।
ये भेद साहिब जी देते हैं, चेतन सुरति सूं निर्भय बनो।।

633 त्रिकुटि मध्य बसे निरंझन, मूंदा दसवां द्वार।
उसके उपर मकर तार है, चढ़ो सम्हार सम्हार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन मूंदा सतगुरू द्वार।।

634 सतगुरू धारा निर्मल बहे, यामे काया धोई ले।
साहिबन कहत सुनो भई साधो, तबहि निर्मल होई ले।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति निर्मल धारा।।

क साहिब का घर दूर प्यारो, तहां सिलसिली गैल।
पाओं ना पड़े पपील का, पंडित लादे बैल।
ये भेद साहिब जी देते हैं, साहिबन घर अति दूर प्यारो।।

635 साहिबन घर अति दूर प्यारो, अति निकट अति पास।
संसारी जग माया ना छोड़े, सार सुरति सूं साहिबन पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति में साहिबन वास।।

र मेरा तेरा मनवा प्यारो, कैसे इक होई रे।
मैं कहता अखियन की देखी, तूं कहता कागद की लेखी।
ये भेद रे दास जी देते हैं, सुरति सूं बने सब बात।।

636 संसारी और साधक का मनवा, कैसे ईक होई रे।
संसारी को माया भावे, साधक की माया सूं दूरी रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया जाल संसार सूं कभी ना छूटे रे।।

637 मैं कहत सुरझावनहारी, तूं राख्यो उरझाई रे।
मैं कहता जागत रहिऐ, तूं रहता है सोई रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे कोई ना उतरे पार।।

638 मैं कहता सिमरन में रहियो, तूं जाता है मोहि रे।
जुगन जुगन समझावत हारा, कहा ना मानत कोई रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सिमरन की याद दे देते हैं।।

639 सतगुरू धारा निर्मल बहे, तिस में करो स्नान।
कहत साहिब जी सुनो भाई साधो, जन्म जन्म की माया उतरे आन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू धारा सूं निर्मल कर देते हैं।।

640 सतगुरू बांह कोई पकड़े नांहि, कैसे हों भवसागर पार।
भक्ति सूं किसे कोई काम ना, माला सूं चाहता पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ना उतरे पार।।

641 अपराधी व्यवसायिक राजनीतिक, भक्ति सूं कौसों दूर।
हानी लाभ में धुन में रहें, संतों सूं कौसों दूर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मायावी जन रहें संतों सूं दूर।।

642 ये कलयुग आयो अबहै, सतगुरू ना माने कोई।
कामी क्रौधी मसकरा, इनकी ही पूजा होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कलयुग में झूठ की पूजा होये।।

643 कक्का काना कांचरा, इनका राज चहुं ओर।
सत्य को कोई जाने ना, झूठ छाया चहुं ओर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कलयुग का साया चहुं ओर।।

644 जीवित पित्र ना माने कोई, मुए का सराध करि हो।
पित्तर भी बूपरे कुछ क्युं पावहि, कौआ कूकर खावहो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पित्तर भी रूठे किस का करें सराध।।

645 कंकर पत्थर जोड़ी के, मस्जिद लेई बनाई।
निज की मस्जिद जानी नहीं, जहां रहत खुदाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, परम सत्ता का भेद दें बताई।।

क कंकर पत्थर जोड़ के मस्जिद लियो बना।
मुल्ला बांग देत है, बहरा हुआ खुदा ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, घट भीतर रहत खुदा।।

646 दिन भर रोज़ा रहत है, रात को भोजन गाय।
यह कैसी है बंदगी, खून से खून बनाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तन ही तन को ले खाये।।

647 जीते जी का कोई मान ना, मोये पे करे विलाप।
यह जग कामी स्वार्थ का मारा, जीते जी दे संताप।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीते जी ही करें सब भक्ति काम।।

648 दिन को रोजा करत है, रात को प्राणी खाये।
हर जीव में खुदा समाया है, कभी ना बख्शा जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव हत्या ना बख्शी जाये।।

649 जो जन जीव को खात हैं, ताको लागे घात।
युगन युगन अति कष्ट पात हैं, कोई ना देवे साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज कष्टों का भेद दे देते हैं।।

650 जीव हत्या है जीवन घात, प्रेत योनि ले जाये।
खुदा अल्लाह के सजदे करे, हत्या न बख्शी जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हत्या का फल देत बतायें।।

651 कर कुर्बानी जीव की, जहाद करे जग मांई।
कुर्बान कर काम क्रौध को, जीव काहे मारि खाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जहाद से अवगत करा दिया भाई।।

652 मांसाहारी मधुमति, निरा निशाचर जान।
अपना पराया ये ना जाने, दूजों का करे हान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निशाचर मांसाहारी ले तूं जान।।

653 मांसाहारी मानवा, जीव स्वाद ले ले खाये।
लख खुदा को सजदे करे, हत्या कभु ना छुट पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव स्वाद सूं हम्हें लें बचाये।।

654 दिन को रोजा करें, रात को जीव मारीये खायें।
खुदा तो जीवों में बसे, खुदा ही को मार खुदा रजायें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खुदा का राज़ दें बताये ।।

655 काबा जाके हज करि, जग में हाजी कहलाई।
बिन जीव मारे हज ना होये, तां कयामत दोजख तूं पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, दोजख से बचो रे भाई।।

क हत्या कभी ना मिटती, चाहे लख करें उपाये।
जिसका गला आज तूं काटहि, वो गला काटि कल तोहे।
ये भेद कबीर जी देते हैं, हत्या कर्म फल नियम दें बताये।।

क मरते मरते जग मोआ, मरन ना जाना कोये।
ऐसी मरनी कोई ना मरा, बहुरि ना मरना होये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जीते जी मरना ना जाने कोये।।

656 ईष्टों को बलि देत है, बड़ा भगत कहलाये।
प्रेत ईष्ट ईक सम जानत है, कभु चैन ना पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बलि गुनाह अति भारी ये समझाये।।

657 देव जीवन भर देत हैं, कभु ना अनहित चाहें।
राक्षस वृति मानवा, निज गुनाह देवों पे डालना चाहें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, राक्षस वृति सूं आगाह करावें।।

658 देव तो देवनहारे हैं, बिन श्रद्धा कबहु कछु ना लेत।
मानव तृष्णा मिटती नांहि, तबहु मरि मरि जन्म लेत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तृष्णा सूं ही आवागमन होत ।।

659 कोई स्वर्ग नरक ना भाई, तेरी कर्म कमाई तोहे भरमाई।
छोड़ दे निरह जीव को सताना, हत्यारा तो जन्म जन्म दुख पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब जीवों में साहिब समाई।।

660 सत्य कमाई शाकाहारी भौज, भक्ति में हो उत्थान।
मदिरा पीवे मांस खावे, प्रेत वृति में रहे ध्यान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भोजन ही तय करे पथ निर्माण।।

661 मरने से क्युं डरत है, मरने सूं कष्टों का अंत होत।
मरने से सुख उपझत है, काहे विलाप करि रोत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीवत मरना ही असल जीवन होत।।

662 खंडर में भूत बसत हैं, मृत्यु नव काया देत।
जब काया खंडर भई, आत्म नया जन्म लेत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मृत्यु ही जन्म का संदेश।।

663 मांसाहारी व शाकाहारी, भौज सागर के दौ तीर।
मांसाहारी की संवेदना मर जाई, शाकाहारी सदैव धारे धीर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शुद्ध संस्कार हीन सदैव अधीर।।

664 जीव हत्या गुनाह अति भारी, संवेदना मरी मरी जाए।
संवेदना मरि तो मानवता गई, फिर मनुष्य मनुष्य को मारी खाए।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संवेदनशील ही मानव कहलाए।।

665 संवेदना ही प्रेम प्रीत उपझाए, सम भाव सभी में लाए।
बिन संवेदना काम क्रौध का वासा, तृष्णा बड़ती जाए।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम भाव संवेदना सूं ही आए।।

666 भक्ति सूं प्रेम उपझत है, प्रेम में साहिब समाई।
प्रेम मिटने का नाम है, प्रेमी मिटे तो प्रीत आई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, समर्पण सूं ही सतगुरू आन मिलाई।।

667 काया है कुछ काल बिताने को, सदा के लिए थोड़े है भाई।
किराए का मकान है काया, पुश्तैनी जागीर थोड़े है भाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दिलायें अमर जागीर मेरे भाई।।

668 मायावी माया की चाह करत हैं, माया ही में मरि जाई।
अनमोल जन्म पाई के, कौड़ी मोल व्यर्थ दे गंवाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू माया सूं ना छुट पाई।।

669 बिन सतगुरू कृपा के, फिर बूंद भव मांहि।
भव सागर की त्रास में, सतगुरू आ पकड़े बांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बिन कोई अपना नांहि।।

क पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़।
ताते से चक्की भलि, पीस खाये संसार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, हरि भक्ति सूं ना हो भवसागर पार ।।

670 भक्ति होय नांहि नाचे गाये, भक्ति होय नांहि घंटी बजाई।
भक्ति होय नांहि मूर्ति पूजा, पाहन सेवे क्या तोहे सुझाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ये भक्ति सर्गुण ही कहलाई।।

671 विगल विगल गावें अरू रोवे, क्षण ईक परम जन्म को खोवे।
ऐसे साहिब मानत नांहि, ये सब काल रूप परछाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सहज भक्ति भेद जान मेरे भाई।।

672 दान दियो धन ना घटे, जे मन में नांहि मान।
सतगुरू कृपा सूं, करो प्रेम दो दान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू दान अति अभिमान।।

673 मांगन मरन से बुरा है, सर पर चढ़ता भार।
बार बार जग आओगे, लुटाने सर का भार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मांग ही जन्म मरन आधार।।

674 आये हैं तो जाऐंगे, नेता धनी रंक फकीर।
उनकी संगत मत करो, जिन नांहि खाया प्रेम का तीर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम तीर बिन ना मिले पीव।।

675 भक्ति सूं कोई काम ना, काल सूं नांहि लड़ाई।
पेट कारण मूर्ख आई पड़ा, पीढ़ी सहित नरक जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल भक्ति घौर पीड़ा दे भाई।।

676 गर्भ द्वार महां नरक है, बार बार लेता धार।
पार लगन की चाहत नांहि, सतगुरू सूं सुरति लेई फेर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति बिन कोई ना उतरे पार।।

677 जस जो कर्म करे संसारा, तस भुगते चौरासी धारा।
मनुष्य जन्म बड़े तप सूं होई, बिन सतगुरू ना छूटे धारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ना उतरे पारा।।

678 बिन नाम नांहि छूटे संसारा, काल का भेद ना जाने संसारा।
नरक वास नांहि छूटे भाई, संत की नाव सूं पार संसारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जो चढ़े नाम जहाज सोहि उतरे पारा।।

679 संत चाह से पार हैं, चाह से कछु लेन ना देन।
सुरति में हर पल जी रहा, कल और कल सूं लेन ना देन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तृष्णा रहित ही ईस पल में रहन।।

680 पांच चक्र का तार लगावें, मेरू दण्ड छेदी घर आवें।
खोलो गांठी पवन सूं छूटें, योगी योग भेद को पावें।
मकर तार होवे त्रिकुटि आवें, वहां बैठ के ध्यान लगावें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मकर तार सूं सुरति समझावें।।

681 देखें उपर को उजियारा, योगी मग्न रहे मतवारा।
काया चक्र भेद में भाखा, अब सुनो अगम लखांऊ राखा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काया चक्र भेद दे देते हैं।।

682 सिद्ध साध त्रिदेव आदि, ले पंच शब्द में अटके।
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मूंह लटके।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निर्गुण भक्ति में वे भटके।।

683 हरि हरि ब्रह्मा का नांऊ, रज गुण व्यापक सबनी रमता।
जीव कहे ब्रह्मा सब करता, ब्रह्मा मांहि जीता और मरता।
ब्रह्मा को पूजे सकल संसारा, भौग भौग जीता और मरता।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार भक्ति सूं ना छूटे यम द्वारा।।

684 पढ़ पढ़ विद्या जग भरमावे, भक्ति पदार्थ कैसे पाई।
पोथी पाठ पढ़े दिन राती, सब जीव लियो भरमाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पोथी पाठ से सबहै भरमाई।।

685 जब जब भरम निर्भय नांहि, मरी मरी जात भरम के मांहि।
औरन को सब शिक्षा देहि, ताते मिले ना संत स्नेही।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन संतन भ्रम मिटे नांहि।।

686 पाप पुण्य का लेखा करहि, बिन सतगुरू चौरासी फसही।
ये सब कर्ता ब्रह्मा जानो, फिर फिर काल के जाल फसही।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार को ब्रह्मा जानो।।

687 पुणि पुणि नरक वासा पड़े, ऐसी निरंझन मौज।
कहे साहिब विचार के, मिटे ना यम की फौज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चौरासी ही निरंझन मौज।।

क जप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाये।
सुरत समानी सब्द में, वाको काल ना खाये।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सब्द सूं उतरो भव पार।।

क धुंधकार आदि का मेला, नांहि गुरू नांहि चेला।
तब का तो हम भौग उपासा, तब का फिरूं अकेला।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निरंकार महिमां गाते हैं।।

क जो भूजे सो भावरा, क्या है उम्र हमारी।
असंख्य युग प्रलय होई, तब के हम ब्रह्मचारी।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निरंझन गुण बता देते हैं ।।

क नांहि बूढ़ा नांहि बालक, नांहि भाट भिखारी।
कहें साहिब सुन गोरख, यह उम्र हमारी।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निरंकार उम्र भेद दे देते हैं।।

688 चल हंसा सतलोक, छोड़ ये संसारा।
यह संसार काल है राजा, कर्म जाल पसारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज संग सतलोक ले लेते हैं।।

689 चल हंसा निज देसा, जहां बसे परमपुरूष प्यारा।
ये त्रिलोकि कैद है तेरी, सतलोक तेरा घर द्वारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक का पता दे देते हैं।।

690 आत्म अमर देस का वासी, अमर देस है प्यारा।
जहां नांहि प्रलयः की छाया, सतपुरूष का देस प्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अमर देस की महिमां अपरम्पारा।।

क दिल का मैहरमी कोई ना मिलया, जो मिलया सो ग़रजी।
कहें साहिब आकाश फटा है, क्युं कर सीये दरजी।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन विध नाम गज गरजी।।

क मान को मिटाने से ही, सतगुरू प्यार मिलता है।
दाना ख़ाक में मिलकर, गुले गुलज़ार होता है।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मन मिटे जीवन गुलज़ार होता है।।

691 आशा तृष्णा आने से, प्रेम की डौर टूट जाती है।
जितनी चाह माया में बड़ती, उतना प्रेम सूं दूर हो जाती है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन तृष्णा तजे प्रीत नहीं बड़ पाती है।।

692 सुर नर मुणि सबहै भरमाये, माया ने लिया चहुं ओर से घेर।
स्वर्ग नरक सुन्न लोक भौगे, फिर पायो जन्म मरन का फेर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार भक्ति से ना छूटे ये फेर।।

693 मन दाता मन भरमाता, मन देवता मन रंक।
मन की तार सतगुरू सूं टूटे, जब सार नाम का संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम सूं छूटे मन तरंग।।

694 मन ही सरूपी देव निरंझन, पल पल रहा भरमाई।
हंसा तूं अमर लोक का, पड़ा काल वश आई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल जाल की व्यथा दें बताई।।

क मन के मते ना चलिये, मन के मते अनेक।
जो मन पे असवार है, ऐसा साधक कोई एक।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, मन पे सवार बिरला कोई एक।।

695 ये संसार काल का फांस, बिन सार नाम ना कटे क्लेशा।
पूर्ण सतगुरू जे मिल जाऐं, पल में कटे क्लेशा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही काटें काल क्लेशा।।

695 वे नाम देत पुकार हैं, किस को दूं पुकार।
एक भी जागा ना मिले, जिसे करूं मैं पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कोई ना सुने संतन पुकार।।

696 वे नाम खड़ा बाज़ार में, माया सूं छुड़ावन हार।
सब को वह पुकार रहा, पर सबहै जाऐं यम द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कोई ना छोड़े माया की लार।।

697 काल का जीव माने नांहि, मैं कौटिन करि उपाये।
मैं खींचू सतलोक को, वह काल के गीत गाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव माया में ही बहा जाये।।

698 जीव आत्मां केवल मनुष्य योनि में, मोक्ष पा निज घर जाये।
सतगुरू सूं सतनाम को पाकर, सत लोक को जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणागत भव पार हो जाय।।

699 मैं सृजुं मैं ही मारूं, कर्मों का फल खिलाऊं।
मैं जल थल नभ में रमि रहुं, मोर निरंझन कहाऊं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन ही सर्वकालेश्वर कहाऊं।।

700 मैं ही शुभ अशुभ, पुण्य पाप का सृजक हूं।
मैं ही तीर्थ व्रत, यज्ञ तप कर्म काण्ड निर्माता हूं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन ही कर्ता पुरख कहाऊं।।

701 मैं ही कर्म फल बैकुण्ठ, स्वर्ग नरक प्रदाता हूं।
मैं ही मन निरंझन, कर्म फल संचय स्त्रोत बन जाता हूं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन ही निरंझन जानो।।

702 मैं ही सप्त आकाश, सप्त सागर मझधार हूं।
मैं ही रचनाकार मैं ही प्रलय, महांप्रलयः आधार हूं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन तीन लोक का आधार हूं।।

703 मैं ही साकार, मैं ही निराकार बन जाता हूं।
मैं ही सोर्य मंडलों में, ज्योति रूप दिखलाता हूं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन तीन लोक प्रकाश हैं।।

704 मैं ही योगी त्रिदेवा, महायोगेश्वर कहाऊं।
मैं ही मारूं मैं ही ऊभारूं, मुड़ मुड़ जन्म दिलाऊं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन ही जानो जन्म मरन पसार।।

705 मन जाता है तो जाने दे, गाहि राख शरीर।
उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग को ना होने दें सवार।।

क साहिबा मन पंछी भया, उड़ चला आकाश।
तहां से फिर गिर पड़ा, मन माया के पास।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मन खींच लाए माया तीर।।

क कहता हूं कहां जात हो, कहा लो मान हमार।
जिस का गला तूं काटि सो, फिर वो गला काटि तोहार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जीव हत्यारा जाए यम द्वार।।

न नानक घट परचै भई, सबहि घट पीरा।
सकल जगत के आत्म महबूब, साहिब कबीरा।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, साहिब कबीर की महिमां तूं जान।।

706 सत्तपुरूष परम पुरूष, अविनाषी पुरूष प्यारा।
ज्ञानी पुरूष जानो एको ही, साहिब पुरूष प्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंसा मूल साहिब सतपुरूष प्यारा।।

707 अलख निरंझन निराकार नारायण, निरंकार के नाम प्यारे।
निरंझन राम रहीम कादर करीम, औंकार परमेश्वर हरि नाम प्यारे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार ही के सबहै नाम प्यारे।।

क जग में चारों राम हैं, तीन राम व्योवहार ।
चोथा राम निज सार है, ताका करो विचार।
ये भेद साहिब जी देते हैं, चोथे राम का करो विचार।।

ि एक राम दशरथ घर डोला, एक राम घट घट बोला।
एक राम का सकल पसारा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, चोथे राम का करो विचारा।।

708 साकार राम दशरथ घर डोले, निराकार राम घट घट बोले।
बिंदु राम का सकल पसारा, निर्लम्भ राम सब तैं न्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, न्यारा राम ही सब से प्यारा।।

द दादू नाम साहिब का, जो कोई लेवे ओट।
उस को कबहु ना लगती, काल पुरूष की चोट।
ये भेद दादू जी देते हैं, संतन ओट सूं कटे काल पुरूष की चोट।।

709 संतो सबका साक्षी, मेरा प्यारा साहिब है।
ब्रह्मा विष्णु रूद्र ईश्वर ले, हर थां प्रकटाई है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खर अक्षर निःअक्षर दिये समझाई है।।

द जहां जहां दादू पग धरे, तहां काल का फंद।
सिर उपर साधे खड़ा, अजहु ना चेते अंद।
ये भेद दादू जी देते हैं, बिन चेते मिटे ना जन्म मरन द्वन्द।।

तह अलि मीन गज पतंग मृग, झरें ईक ही आंच।
तुलसी वे नर कैसे बचें, जिनके लागे पांच।
ये भेद तुलसीदास हाथरस जी देते हैं, काल की फौज ही देवे ये आंच।।

क माला लकड़ पूजा पत्थर, तीर्थ है सब पानी।
कहें साहिब सुनो भाई साधो, चारों वेद कहानी।
ये भेद साहिब जी देते हैं, चहुं वेद वाचें यही वाणी।।

क निर्गुण नाम निरंझन गाई, जिन सारी उत्पति बनाई।
निर्गुण जो भया आकाशा, ता से तीनों गुण प्रकटाई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निरंझन ही त्रिगुणि माया यह भाई।।

क पाप पुण्य रचि जीव फंसाया, जो जैसा करे तैसा फल पाई।
करे पाप तेहि नरक भुगताई, करे पुण्य तेहि स्वर्ग पठाई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, त्रिलोकि नियम भेद दें बताई।।

710 हर जीव चोरी हिंसा व्यभचार, काया से पाप कमाते।
गाली निंदा झूठ वचन, तन से पाप कमाते।
क्रोध ईर्ष्या मान कपट, मन सूं पाप जीव कमाते।
साहिब जी जीव पाप कमाता, तभी बार बार जग आते।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन वचन काया कर्म सूं अवगत कराते।।

711 चोदहं लोक शरीर में, पैर से जांघों तक सात।
जिन को कहते पाताल लोक, इनसे ऊपर भी हैं लोक सात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पिण्ड में ही ब्रह्मण्ड रहस्य दे देते हैं।।

712 अत्तल वित्तल सुत्तल तलात्तल, महांतल रसातल पाताल।
नाग देवों का वास तहां, बिन मनुष्य पाताल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सात पाताल का ज्ञान दे देते हैं।।

713 जांघों से ऊपर सात लोक, मुलाधार चक्र गुदा स्थान ।
पृथ्वी तत्व कहलाये, गणेश जी का जानों स्थान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर चक्र का भेद महान।।

714 सत्त शब्द से पैदा हुआ, स्वादिष्ठान चक्र ब्रह्म लोक स्थान।
ब्रह्मा सावित्री का वास तहां, लिंग ईन्द्री जल तत्व का स्थान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्वादिष्ठान चक्र ब्रह्म देव स्थान।।

715 औंकार शब्द से पैदा हुआ, नाभी चक्र विष्णू लोक स्थान।
विष्णू लक्ष्मी विराजें तहां, वायु तत्व स्थान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाभी चक्र में विष्णू स्थान।।

716 सोह्म शब्द से पैदा हुआ, ह्रदय चक्र स्थान।
शिव पार्वती का वासा तहां, शिव लोक स्थान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ह्रदय चक्र में शिव लोक स्थान।।

717 पांचवा चक्र कण्ठ स्थाना, जहां आद्य् शक्ति का वास।
नेत्र उपर भोहों बीच, आज्ञा चक्र दो दल कंवल आत्म वास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विशुद्ध चक्र में आद्य् शक्ति वास।।

718 सातवां चक्र सहस्त्रसार, निरंझन लोक सिंदूर स्थान।
पांचवा आकाश तत्व, रंरकार शब्द सूं उत्पति महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सहस्त्रसार में बसें निरंकार महान।।

719 सत्तर प्रकार की अनहद धुनें, उठती हैं हर पल।
अग्नि तत्व स्थान यह, ज्योति निरंझन ध्यान हर पल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद धुनों का ज्ञान दे देते हैं।।

720 सहस्त्रसार के आगे भी निरंकार निरंझन के, सात सुन्न लोक महान।
महां आकाशों का निर्माता, निरंकार को ही ले जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुन्न लोक का ज्ञान दे देते हैं।।

721 आकाश तत्व से आगे, सात लोकों को भी लो जान।
अचिंत सोहंग मूलसुरति अंकुर ईच्छा वाणी सहज, लोकों की महिमां लो जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुन्न लोकों का ज्ञान दे देते हैं।।

722 ईन सब लोकों से ऊपर, परम पुरूष सतलोक महान।
सुन्न से पांच असंख्य योजन ऊपर, अचिंत लोक लो जान।
तीन असंख्य योजन ऊपर, सोहंग लोक लो पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, महांसुन्न लोकों का ज्ञान दे देते हैं।।

723 सोहंग लोक से पांच असंख्य योजन ऊपर, सुरति लोक महान।
धरती पर चेतना आई वहां से, साहिब जी की चेतनता आई वहां से।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, महासुन्न सुरति लोक ज्ञान देते हैं।।

724 सुरति लोक तीन असंख्य योजन ऊपर, अंकुर लोक महान।
हर एक लोक की दूरी, साहिब जी किया बखान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, महांसुन्न अंकुर लोक का ज्ञान दे देते हैं।।

725 चिंता केवल सतनाम की, और ना चितावे वे नाम।
जो कुछ चितावें नाम बिन, सोई काल की फांस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम बिन ना कोई उतरे पार।।

726 महां कारण शरीर, अति प्यारा अति न्यारा।
मन अनुभूति शरीर, तीसरे तिल में प्रवेश प्यारा
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिकुटि का ज्ञान दे देते हैं।।

727 इस देह को योग द्वारा, भिन्न करने की शक्ति योगी रखते हैं।
इस तन में बैठे योगी, पूरे ब्रह्माण्ड का अनुभव कर लेते हैं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, योग की महिमां बता देते हैं।।

728 चोथा महां कारण शरीर तूं जान, इसमें ''मैं'' हूं।
देखो सुनो सुरति सूं बोलो चलो, देह बिन शरीर ''मैं'' हूं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चोथे शरीर का राज़ दे देते हैं।।

729 जैसे दही को मथ माखन बिन किया, शरीर देह सूं बिन जान।
अभी भी मन तीन प्रतिशत बाकी, इस अवस्था में निज की होत पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, योगेश्वर बिन देह के जान।।

730 पांचवा शरीर ज्ञान देही, इस में अहं ब्रह्मास्मि अवस्था जान।
विश्वामित्र वशिष्ठ मुनि राजा बलि, पाई अवस्था महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ज्ञान देही अवस्था का राज दे देते हैं।।

क खस खस के दाने में, शहर खुदा का बसता है।
दो नैनों के मध्य में, शाहरग इस का रस्ता है।
ये भेद साहिब जी देते हैं, भंवर गुफ़ा का ज्ञान दे देते हैं।।

731 खस खस के दाने में, निरंकार अदृष्य ही समाया है।
चेतन जीव ही तो, इस भेद को जान पाया है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार मन रूप हर थां समाया हैं।।

क रूह रकाने में ठहराये, सोई मुकुर में धसता है।
पर बिन मेहर मुर्शिद के तूं, नाहक इस में पड़ता है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शारीरिक सराय का भेद दे देते हैं।।

732 ज्ञानदेई हर एक, नर के भीतर जान।
इस अवस्था में साधक, तीन लोक मीन पपील चाल से पार जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ज्ञानदेहि सूं अवगत कराते हैं।।

733 शरीर शक्तियों से भर जाता है, जो कह दें वही हो जाता है।
कल्प सिद्धि रिद्धि मार्ग, सम्मोहन उच्चारण अवस्था आ जाती है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ज्ञानदेहि अपार शक्ति भण्डार हैं ।।

734 साधक सिद्धियां नौ निधियां, प्राप्त कर लेता है।
ज्ञान शरीर अदभुद शक्तियों से, महान अवस्था कर देता हैं
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सिद्धियों निधियों का ज्ञान दे देते हैं।।

735 छठि है विज्ञानदेहि, अति तीव्रगामी अवस्था तूं जान।
ध्यानी सुन्न तक यात्रा कर लें, मन अति कुन्द तूं जान।
मन दो प्रतिशत हो संग साथ, आत्म अति चेतन तूं जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विज्ञानदेहि अवस्था का ज्ञान बताते हैं।।

736 चट्टान पहाड़ विज्ञानदेहि, सूक्ष्मता सूं करती पार।
छे को पार कर, सतनाम पाने से पहुंचे अमरपुर द्वार।
सब हंसों का बसेरा तहां, पहुंचे अमरपुर द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विज्ञानदेहि सूं पाओ सतलोक द्वार।।

क मन ही निरंझन काल कराला, जीव रहा भरमाई।
हे हंसा तूं अमरलोक का, पड़ा काल वश आई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, हंसा निरंझन वश आत्म कहाई।।

737 निरंझन ही मन रूप समाया, आत्म निज रूप जान न पाये।
माया सम्मोहन फंसा ये आत्म, निज भूला फिर फिर जन्म पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन माया की कैद में सबै भरमाये।।

738 सात सुन्न सात ही कमल, सात सुरति स्थाना।
ईक्कीस ब्रह्माण्ड लोक, काल पुरूष ज्ञाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ईक्कीस लोक में काल पुरूष ही जान।।

739 प्रगटे प्रेम विवेक दल, कहें साहिबन समझाई।
उग्र ज्ञान अति बला, जोहि सुन मोहे डराई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, उग्र ज्ञान की सीमा दें बताई।।

740 कहें साहिब विवेक दल, अटल ज्ञान दल गाज़।
अब तो निर्मल होवे, गये मोह दल भाग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निर्मल रहने की प्रेरणा देते हैं।।

741 बिन विवेक परख ना पावे, झूठी आस लगी सूं ध्याई।
बिन विवेक ना चीन्हे सोई, काल दयाल दोऊ का सोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन विवेक तरे ना कोई।।

742 सतगुरू सार नाम जब देहि, काल जाल सूं छुड़ा लेवे।
बिन विवेक काल गुण गावे, बार बार मोह चक्र फसावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू काल सब्द से छुड़ा लेवे।।

743 सतगुरू सब्द ह्रदय धरा, सुरति में रहे दिन राती।
काल का फंद अब कहां, सुरति सतगुरू चरणन राखी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी बड़ा भड़भागी।।

744 प्यारो मोह सकल, व्याधिन को भूला।
भाई–जात उपजात, सकल जग सूला।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जात–उपजात निज को भूला।।

745 जात उपजात में, सकल जग भूला।
अपना पराया ही, दुख का मूला।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सबै है अपने कोई ना पराया।।

746 जात धर्म का सब ऐको, ऐसा समझो मेरे भाई।
ईक साहिब के अंश हैं प्यारे, सबै हंसा हैं ईक सूं आई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सबै जीवों में साहिब हैं समाई।।

747 प्यारो स्वर्ग पाताल मृत्यु मण्डल रचि, तीन लोक विस्तार।
हरि हर ब्रह्मा को प्रकटायो, तिन्हों दीना शरीर का भार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार ही ब्रह्मा जानो।।

748 प्यारो माया फांस फंसा जीव सब, आपे बना कारागार।
सतगुरू शरण में अमर लोक है, ताका मूंदा द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया तजते ही अमरलोक दरबार।।

749 काल दूत जग फिरे फरावे, मोह सैना की वृद्धी कराई।
जेत महातम जग मह होई, काल फंद जानहे सब कोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रशंसा ख्याति ही काल फंद है भाई।।

750 काल दूत अति विक्राले, कर्म फल फांस जीव फसावे।
आत्म निज आप को भूला, भ्रम वश अति कष्ट पावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल गति सूं कोई बच ना पावे।।

751 सबहि लुटे बिरले छूटे, ज्ञान गुरू जिन्ह दृढ़ गेह।
गुरू ज्ञान द्वीप समीप सतगुरू, भक्ति मार्ग तिन्हे लेह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू समीप छूटे सबै भ्रम नेह।।

752 काम क्रोध दोऊ गये, गये लोभ दल बाज।
दया क्षमा संतोष बल रहे, विवेक सो गाज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शीलवान सूं दूर घृणित सब काज।।

753 काम क्रोध लोभ सबै गये, मनवा रहे सतगुरू पास।
अब पाने को क्या रहा, सतगुरू साहिबन पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी मिटें सबै संताप।।

754 काम परवल अति भंयकर, सहादरूण काल हो।
सुर नर मुनि यक्ष किन्नर, सबहे कीन्हा बेहाल हो ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काम सूं योगी तपी यति सबै बेहाल।।

755 काम ज्वाला अति बलशाली, ऋषि मुनि योगी तपी सबै किया बेहाल।
ये जग काम रोग का मारा, काम मृग तृष्णा सूं बेहाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कामी निज दुर्गति सूं बेहाल।।

756 कहें साहिब तूं बसा, महां भ्रम के देस।
ईस देस का निरंकार है राजा, बिन सतगुरू ये देस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी सूं छूटे ये देस।।

757 काल का जीव सुनता नांहि, मैं कोटिन कहुं समझाये।
मैं खींचत सतलोक को, ये बंधा यमपुर को जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सोया जीव यम पुर ही जाये।।

758 प्यारो बृंहगी शब्द कीट जो माना, वरण फेर अपन कर जाई।
कोई कोई कीट परम सुखदाई, प्रथम आवाज गहे चित लाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बृहंगा शब्द कीट आप जैसा करे भाई।।

759 कोई दूजे कोई तीजे माने, तन मन रहित शब्द हित जाई।
बृहंगी शब्द कीट ना गाहि, तो पुनिः कीट ही रह जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बृहंगा मत्त की पहचान कराई।।

760 प्यारो सतगुरू सब्द निश्चय सत्य माने, बृहंगी मत्त तब पाया जाई।
तजि सब आसा सब्द वासा, कागा पलट हंस कहलाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द सिमरो चित्त लाई।।

761 प्यारो पहले दाता शिष्य भया, जिन तन मन अरपयो शीश।
पीछे दाता सतगुरू भया, जिन नाम दियो बखशीश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, समर्पण सूं ही मिले नाम आशीष।।

762 कोटिन कर्म पल में कटे, ज्युं आवे सतगुरू ओट।
सार नाम की दात पा, कभी ना पड़े काल की चोट।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम सूं कटे प्रालब्ध की चोट।।

763 सतगुरू मिलन सूं, बात बन जात।
सतगुरू सुरति आत्म बाण, सहज हो जात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति बाण सूं साधक सहज हो जात।।

764 सहज है मार्ग हमारा, सतगुरू हथ कमाण।
काम क्रोध गया मोह माया हटि, विकार ने खाया बाण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन से छुड़ावे सतगुरू बाण।।

765 सुरति करो मम साहिबा, हम हैं भव जल मांह।
आप ही हम बह जाऐंगे, जे ना पकड़ी बांह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं पावें निजघर राह।।

क कुछ ना किया ना करि सका, ना करने योग शरीर।
जो कुछ किया साहिब किया, भयो कबीर कबीर।
ये भेद साहिब कबीर देते हैं, साहिब कृपा सूं मिलें कबीर।।

766 ना कुछ करता ना करि सके, आत्म बिन शरीर।
शरीर तो निज को काया समझे, तांहि पड़ा अधीर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म भूला निज सुरति तीर।।

767 बोले ज्ञानी शब्द विचारि, छूटे चौरासी की धारी।
छूटे पांच पच्चिस गुण तीनों, ऐसा सब्द पुरूष दीनी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द सब चिंता जग दीनी।।

768 कहें वे नाम सोच विचारि, तज मानव त्रिलोकि सारी।
बिन तजे पार ना होई, सतगुरू शरणी पार उतारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू फंसी आत्म बेचारी।।

769 जहां तहां जग भरमावे, ज्ञान संधि कहुं रहनी ना वासा।
एक सब्द की टेक तूं आसा, सबै भरमाये चौरासी फांसा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं ही निजघर वासा।।

770 नाम जपे अरू सुरति लाई, मिले कर्म लागे नांहि काई।
सब्द मणि होये सब्द सरूपा, निष्चय न्यारा रूप हंसा पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सुरति सूं हंस हो जाई।।

771 साधु संत हम देखी रीति, प्रलय परे सकल जग ज्योति।
साधु संत ऋषि मुनि रीति, करें सबै निरंकार सूं प्रीति।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब जग भावे निरंकार की रीती।।

772 साधु संत सिद्ध और ज्ञानी, ज्ञान अहम ने सब जग बांधा।
कर्मण बांधे सब साध ज्ञानी, सुर नर मुनि सकल जग बांधा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुर नर मुनि सबै कर्मण बांधा।।

773 सतगुरू आज्ञा ले आवहि, सतगुरू आज्ञा ले जावही।
ऐसे समर्पित दास को, महाकाल डर नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू आज्ञा ही सब कुछ जग मांहि।।

774 मुझे है काम सतगुरू से, जग रूठे तो रूठन दे।
मैनें अनमोल रत्न है पाया, मुझे जग को बतावन दे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार दात की महिमां गावन दे।।

775 मेरी करनी सतगुरू शरणी, जग रूठे तो रूठन दे।
शीष दिये सतगुरू मिले, इस पल 'मैं' मेरी तजने दे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी सूं चौरासी कटने दे।।

776 वे नाम आवाज देत हैं, इस जग के हर प्राणी को।
तुम सब अमर लोक सूं आए, उसी देश के हंसा प्यारे हो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज रूप का पता दे देते हैं।।

777 सतगुरू को कीजिए दण्डवत, कोटि कोटि प्रणाम।
कीट ना जाने भृंग को, कर ले आप समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां गाते हैं।।

ध भृंगा मत होए जिन्ही पासा, सोई सत्य सतगुरू धर्मदासा।
भृंगा मत ही पार लगावे, सतगुरू चरणन सुरति दासा।
ये भेद धर्मदास जी देते हैं, सतगुरू महिमां का गुणगान करते हैं।।

778 नाम होये तो निजघर ले जाये, नहीं तो ये मन बांध नचाऐ।
धर्म कर्म कछु काम ना आये, काल जाल हर जीव नचाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल भ्रम सूं आगहा कराते हैं।।

779 सतनाम निज औषधि, खरि नियत सूं खांये।
औषध खाऐ अरूपद रहे, ताकि वेदन जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सच्ची नियत सूं जग वेदना जाये।।

780 जगत की नज़र में भगत गया, भगत की नज़र में जगत गया।
इक पकड़े इक भागे, दोनों का संग गया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भगत जागन सूं जगत छुट जाये।।

781 क्षण सुमरे क्षण बिसरे, ये तो सुमिरन नांहि।
आठ पहर सुरति रमे, सुमिरन कहावे सोहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति रहियो साधक सोहि।।

क मन जाता है जाने दे, गाहे रख शरीर।
उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन आत्म कुछ ना करे शरीर।।

782 मन जाता है जाने दे, मन तरंग में मत बह।
मन ही चौरासी जाल है, अहम तज सुरति में रह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अहम तजे बिन मन ना जाई।।

783 कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी मारा।
गृहस्थ छोड़ भये सन्यासी, तांऊ ना पात पारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सहज भक्ति कोई ना उतरे पारा।।

784 जपी तपी सन्यासी, घौर तपी काया लाचार।
स्वर्ग भोग फिर जग आये, मिले ना मोक्ष द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द ना मिले साहिब दरबार।।

785 ऋषि मुनि योगि यति, तप करें अति भारी।
मन तरंग सूं छुट ना पायें, क्रौध करें अति भारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार फौज है अति भारी।।

क सुरति संभले काज है, तूं मत भ्रम भुलाये।
मन सयाद मनसां लहर, बहत कतहु ना जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन लहर सुरति सूं ही तजि जाये।।

786 सुरतिवान के काज सब, सिमरन ही कहलायें।
खाय पिये उठे बैठे, साहिबन समर्पित हो जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पल पल सिमरन सूं जागा जाये।।

787 ये संसार फूल सुमेर का, चौंच लगे पछताना है।
ये संसार झाड़ और झाखड़, आग लगे जरि जाना है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द काल जाल समाना है।।

788 ये जीवन फूले गुब्बारे सा, बस कुछ पल ही में फट जाना है।
'मैं' मेरी तूं तज ऐ मानव, सबै यहीं छोड़ जाना है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कुछ भी साथ ना जाना हैं।।

क सुरति फंसी संसार में, तांते पड़ गयो दूर।
सुरति बांध स्थिर कर, आठों पहर हजूर।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सुरति स्थिर तो पाओ हजूर।।

789 हर जीव जग में, आप को आप बहायो।
जैसे स्वान कांच मंदिल में, भरमत भौंकि परयो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जैसी करनी वैसा ही पायो।।

790 स्वार्थी मानव स्वार्थ में, कर्म कियो अति भारी।
प्रालब्ध में जब कष्ट मिलें, खुद ही ढोये बोझ भारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन स्वार्थ छोड़े होये ना निजघर तैयारी।।

क जैसे नाहर कूप में, अपने प्रतिमा देख परयो।
वैसे ही गज फटिक सिला में, दसनन आनि अरयो।
ये भेद कबीर जी देते हैं, भ्रम अहम ही जग सारा परयो।।

791 मरकट मुटि स्वाद नहीं बिछरे, घर घर नटत फिरी।
कहें साहिब नलिनी के सुगना, तोहि केवन पकरो।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निज स्वार्थ में ही जग रहयो।।

792 अपने रिश्ते नातों में, सुरति फंसी फंसी जाये।
सुरति संभाल स्थिर कर, कोई ना अपना साहिबन सिवाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मोह बंधन से स्थिर सुरति ही छुड़ाये।।

793 प्यारो बिन सतगुरू, नर फिरता भूल भुलाना।
कहें साहिब खोजत फिरत, ना मिलत ठिकाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू ना मिले मोक्ष ठिकाना।।

794 जिस का पीजिये दूध, तिस को कहे गाये।
जितना खिलाओगे, चुगना वापिस पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सेवा कभहु व्यर्थ ना जाये।।

795 जिसका दूध पीजिये, उस का दर्जा 'मां'।
दूध का कर्ज ना उतरे, सदा रहियो सेवा मा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मां ही जग में है महां।।

796 गाय का दूध अति श्रेष्ठ, सबै को बलिष्ठ करे।
बच्चा बूढ़ा और बाला, सभी को निरोग करे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गाय महिमां का बखान करें।।

797 आत्म संग सब की गठरि, लाल है प्यारो।
सतगुरू सूं सब्द को पाकर, हों माला माल प्यारो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, लाल गठरि सुं सबै माला माल प्यारो।।

798 आत्म सब जीव बसत है, बिन आत्म सब मरघट।
सतगुरू शरणी जाये बिन, जीवना तेरा मरघट।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब शरणी बिन छूटे ना मरघट।।

799 प्यारो ऐसो बड़ाई सब्द, जैसे चुम्भक भाय।
बिन सब्द नहीं उभरे, कैता करो उपाय।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति बिन पार ना उतरा जाये।।

800 संतो शब्दे सब्द बखाना प्यारो, अक्षर सूं निःअक्षर जाना।
शब्द फांस फंसा हर कोई, सब्द किन विरला पहचाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शब्द फांस सब्द ही काटे।।

801 ज्ञानी योगी पंडित सबहि, सब्द में अरू ज्ञाना।
पंच सब्द पंच मुद्रा, काया पंच ठिकाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच शब्द मुद्रा में जीव उलझा जाना।।

802 अनहद की धुन भंवर गुफा में, अति घनघौर मचाया है।
बाजे बजें अनेक भांति के, सुनि के मन ललचाया है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद धुनों ने जीव भरमाया है।।

803 प्यारो रस गगन गुफा में, अजर अमृत झरै।
बिन बाजा झंकार उठे जहं, समझी परे जब ध्यान धरे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद सुने जब भंवर गुफा ध्यान करे।।

804 अनहद नाद गगन चढ़ गरजा, तब रस भया अमिया।
सुशिमन शुन्य महल नभ, आया अजर आ किया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भंवर गुफा में अमृत मुख मांहि।।

805 अनहद की धुन प्यारी साधो, अनहद की धुन प्यारे।
आसन पदम लगा कर, कर से मूंद कान की बारी रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निराकार की अनहद धुन प्यारी रे।।

806 झीनी धुन में सुरति लगाओ, होत नाद झंकारी रे।
पहले पहल रिल मिल बाजे, पीछे न्यारी न्यारी रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद धुन प्यारी रे।।

807 घंटा शंख बंसुरि वीणा, ताल मृदंग न्यारी रे।
दिन दिन सुनत नाद जद बिकसे, काया कंपत शरीरा रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद नाद से नाचे शरीरा रे।।

808 अनहद धुन घनघौर प्यारी, यहीं नहीं रमी जाना रे।
अनहद धुन तो निरंकार है, हमें तो सतलोक जाना रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद धुन सूं पार जाना रे।।

809 सोहि सतगुरू मोहे भावे, जो नयन अलख लखावे।
डोलत डिगे ना बोलत बिसरे, जब उपदेश दृढ़वे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू ना जागा जावे।।

810 प्राण पुण्य क्रिया से न्यारा, सहज समाधि सिखावे।
द्वार ना रूंधें पवन ना रोके, नांहि अनहद उरझावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कर्म काण्ड से आगे की राह बतावें।।

811 कर्म काण्ड प्रालब्ध सूं पारा, ऐसा सहज पथ न्यारा।
कोई बिरला ही ईस पथ पे आवे, पाये सतगुरू द्वारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कोई बिरला पाये सहज भक्ति पथ न्यारा।।

812 सतगुरू शरणी काटे, त्रिलोकि कर्म जाल पसारा।
बिन सतगुरू कोई नाम ना पावे, नाम बिन न कटे जग पसारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी सूं मिले मोक्ष द्वारा।।

813 बिन पूर्ण भाग जागे, मिले ना सतगुरू ओट।
सतगुरू तारनहार हैं, काटें कर्म फांस की चोट।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू मेहर सूं ही मिले ओट।।

814 भाई त्रिकुटि महल में अब, जहा औंकार है ।
आगे मार्ग कठिन, सो अगम अपार है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, औंकार सूं आगे ही सत्य भक्ति मार्ग है।।

815 प्यारो तहां अनहद की, घनघौर होत झंकार है।
साहिबा लागी रहें सिद्ध साध, ना पावत पार हैं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अनहद की झंकार से होत ना कोई पार है।।

816 प्यारो निःअक्षर सब्द का भेद, पूर्ण हंस कोई पाई है।
कहें साहिब सो हंसा हो जाये, निजघर जा पाई है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं आत्म हंस बन जाई है।।

817 ईंगला पिंगला सुश्मिना भूजें, आपे अलख लखावे।
उसके उपर सांचा सतगुरू, सत्त सब्द सुरति सूं आवे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही अलख जगावें ।।

818 चकमक पत्थर रहत ईक संग, उठत नहीं चिंगारी।
जब तक सार नाम की दात नांहि, तब तक रहे संसारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द ना छूटे माया न्यारी।।

819 सकल पसारा मेट कर, सुरति पवना कर ईक।
ऊंची तानो सुरति को, तहां देखो पुरूष अलेख।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सबै झंझट तज जा निज देस।।

820 ईंगला विनशें पिंगला विनशें, विनशें सुश्मिन नाड़ी।
जब उनमुनि की तारी टूटे, तब कहां राह तुम्हारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंच मुद्राओं सूं ना मिले मोक्ष की सवारी।।

821 सुरत कमल सतगुरू का वासा, वह ही सतगुरू देसा।
अष्टम चक्र सुरति सूं जाओ, पाओ सतगुरू साहिबन देसा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरत कमल ही साहिबन सतगुरू वासा।।

822 कहें साहिब किसे समझाऊं, सब जग अंधा।
ईक दुई होये उसे समझाऊं, सबै भूले करें पिटुवा का धंधा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सहज पथ न चले इस जग का ये बंदा।।

823 तन घर सुखिया कोई ना जग में, जो देखो सो दुखिया।
बांटे बांट सब कोई दुखिया, निःअक्षर दात मिले तो सुखिया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन दात सबै जग दुखिया।।

824 कामी कुरता तीस दिन, अंदर होये उदास।
कामी नर कुरता सदा, छे ऋतु बारहां मास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ईन्द्री पसार रोक ले सब सुख तेरे पास।।

825 अष्टकमल मनिपुर चक्र, विष्णु लक्ष्मी वास।
दादरा कमल अनहद चक्र, शिव जी जानो वास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार चक्रों का करावें आभास।।

826 विशुद्धि चक्र वाणी द्वार, आद्यशक्ति का वास।
दो दल कमल आज्ञा चक्र, आत्म का है वास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार चक्रों का करावें आभास।।

827 सहस्त्रसार चक्र में निरंकार वासा, सुरत कमल सतगुरू का वासा।
सुरति सूं सतगुरू संग जाओ, पल में पाओ साहिबन वासा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं पाओ अमरलोक वासा।।

828 सात कमल जाने सब कोई, अष्टम कमल बिन मुक्ति नां होई।
बिन सतगुरू कौ भेद बतावे, नाम प्रताप जो गाहे जाई ।
साहिब जी काया तें जो बाहिर होई, मुक्ति दात पावे जन सोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अष्टम कमल सतगुरू पार कराई।।

829 साहिब सो कर क्या करे, सुरति संभाल और जाग।
सतपुरूष संग सूं बिछड़ा, वाहि के संग लाग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब सूं बिछड़ा साहिब संग लाग।।

830 हर एक को बिसर गई सुध निजघर की, महिमां अपनी जानी हो।
निरंकार निर्गुण है माया, हर एक को नाच नचाई हो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चर्म दृष्टि कुल्फा दे चौरासी भरमाई हो।।

831 सदा आनंद होवत वा घर में, कभु ना होत उदासा।
सार नाम की दात पास जब, पाओ निज देस वासा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निजघर में ही सदा आनंद का वासा ।।

832 प्यारो हंसो जीवरा अंश, सतपुरूष का आहि।
उस देस का आदि अंत भेद, कोई बिरला पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव को मूल का पता दें बताई।।

833 प्यारो – बांसुरी सुख ना रैणी सुख, ना सपने मांहि।
साहिबा बिछुड़त सतपुरूष सूं, ना सुख धूप ना छांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष बिछुड़न सूं दुख जग मांहि।।

834 प्यारो सतलोक अमर है धामा, तहां वह पुरूष निःअक्षर नामा।
तीन लोक हंस उड़ाना, चौथा लोक हंस निज धामा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निजलोक ही है हंस धामा।।

835 कहें साहिब सुनो हो दामिनी, छोड़ो कल की आस।
अमृत भोजन हंसा पावे, बैठी सतपुरूष पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन बरसावें सब्द अमृत रस आभास।।

836 सुनो भाई हंस साथियो, छोड़ो माया चोला संग साथ।
सतगुरू संग निज सुरति जगाओ, उसी पल हंसा संग साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति छुड़ाये माया संग साथ।।

837 चकवी बिछड़ी सांझ की, आन मिले प्रभात।
जो जीव बिछड़े सतपुरूष सूं, दिवस मिले नांहि रात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पीह बिछोड़ा तड़प बिसरत नहीं जात।।

838 चांद सूं प्रीति चकौर की, आंख नहीं झपकाये।
सतगुरू सुरति सूं ऐसे जुड़ें, हर थां वही दरशायें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ऐसी प्रीत सूं पीह रिझायें।।

839 प्यारो – सांझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हां रोये।
चल चकवी वा देस को, जहां रैन ना होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब मिलन ऐसे फिर बिछड़न ना होये ।।

840 प्यारो – सुरति ले हंसा जग आयो, सुरति में ही रचयो संसारा।
सुरति का ही खेल ये सारा, मन सुरति उरझावन हारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ऐ हंसा मन को ना होने दे सवारा।।

841 मन तरंग के वेग में, हंसा सुरति बहि जाऐ।
सुरति संभाल स्थिर कर, मन तरंग कट जाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्थिर सुरति सूं मन तरंग जाऐ।।

842 ध्यान ही सुरति, ध्यान ही वेद शास्त्र कहत हैं।
ध्यान सूं मोक्ष दात मिलत है, ध्यान ही हर संत कहत है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ध्यान ही भक्ति का आधार है।।

843 पल पल सुरति में, रहना सीखो प्यारे।
सुरति हटि दुर्घटना घटि, सुरति ले तूं जान प्यारे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति का महत्व अति है प्यारे।।

844 सुरति सांसा ले रही, तन जाने निज रूप।
सुरति आत्म अंग है, तन का नांहि रूप।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म ही है सुरति स्वरूप।।

845 सुरति स्वांसा उपर फैंको, सुरति निरति ईक होये।
सुरति फंसी संसार में, कबहु ना न्यारी होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति ईक होये भवजल पार होये।।

846 स्वांस सुरति के मध्य में, कभी ना न्यारा होत।
बिन सार सब्द सुरति, जीव पार ना होत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण चेतन सुरति सूं जीव पार होत।।

847 सुरति निरति मन पवन को पलटें, गंगा जमुना के घाट आयें।
कहें साहिब सो संत निर्भय हुआ, जो जन्म मरन का भ्रम मिटाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति निरति ईक होते ही मन मान मिट जाये।।

848 सुरति निरति ईक कर, सब भ्रम मिट जाये।
आत्म मन सूं भिन्न हुई, जीव निर्भय हो जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति निरति ईक होते ही तृष्णा छुट जाये।।

849 सुरति फंसी संसार में, तां सूं दुख क्लेश।
सुरति बांध स्थिर कर, तांहि मिटे दुख क्लेश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सुरति जागे कभु ना मिटें क्लेश।।

850 सात सुरति का सकल पसारा, सात सुरति से कछु नांहि न्यारा।
पहली सुरति अमी कहावे, आनंद दे करे न्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अमी सुरति ही दिलावे आनंद सारा।।

851 आत्म सुरति आनंदमयी है, ईच्छा का कछु लेन न देन।
सुरति में मन रम गया, बाहर से कुछ लेन न देन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति रमते ही निजघर की राह लेन ।।

852 प्यारो–दूजी सुरति मूल सुरति कहाये, एकाग्रता इसका काम।
सब जीवों में इसका वासा, एकाग्रता सूं बनें सब काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मूलसुरति एकाग्र करे ध्यायें साहिब नाम।।

853 हर अवस्था में संग मूल सुरति का, चाहे सुशुप्ति में जाओ।
सतलोक में जाओ वापिस आओ, मूल सुरति को संग ही पाओ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मूल सुरति सूं ही निजघर पाओ।।

854 इस आत्म का मूंह नांहि, सुरति सूं बोले चारों ओर।
इस आत्म के कान नांहि, सुरति सूं सुने हर ओर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मूल सुरति पसार हर ओर।।

855 जहां जाओ मूल सुरति संग साथ, ऐसा इसका साथ।
ब्रह्मण्ड में जाओ तो भी साथ, स्वर्ग में जाये संग साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ब्रह्मण्ड सैल कराये मूल सुरति हो साथ।।

856 तीसरी सुरति चमक सुरति है भाई, अंग अंग को चेतन करे।
इन्द्रियों को क्रियाशील करे, आंख हाथ पांव चेतन करे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चमक सुरति काया चेतन करे।।

857 चमक सुरति क्रियाशील है, सजक और होश में लाये।
तन का रोम रोम चेतन करे, तन गया तो काम ना आये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन चमक सुरति काया काम ना आये।।

858 चोथी सुरति शुन्य सुरति मेरे भाई, अंतःकरन ध्यान रमाऐ।
निज नजदीकी बनाये, शांत खामोश बनाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन शुन्य सुरति सूं शांत ना हो पाऐ ।।

859 पांचवी सुरति निश्चय सुरति है भाई, निर्णायक सुरति कहाऐ।
शुभ अशुभ का भेद बताऐ, अच्छे बुरे का ज्ञान बताऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निश्यच सुरति ही अनुभव कराये ।।

860 छटि सुरति ठांय ठांय सुरति, रस चाखे सुरति कहलाऐ।
स्वाद का अनुभव कराऐ, ज्ञान इन्द्रियां चेतन कर जाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ठांय ठांय सुरति ही इन्द्रियां भटकाऐ।।

861 सप्तम सुरति ह्रदय के मांहि, ह्रदय से कुछ न्यारा नांहि।
सात सुरति का खेल है सारा, तन का कुछ काम नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सप्तम सुरति ह्रदय करे कछु नांहि।।

862 हित अनहित, पशु पक्षिन जाना।
आत्म आत्म में, भेद ना जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सबै आत्म एको समाना।।

ब्र स्थूल ईन्द्री मजे से बहुत ऊपर, धुनों का आनंद।
पर ये सब आंनद नांहि, मजा है कहते ब्रह्मानंद।
ये भेद ब्रह्मानंद जी देते हैं, स्थूल ईन्द्रियों से परे आनंद।।

र प्यारो–देह धैर का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोये।
ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूर्ख भुगतत रोये।
ये भेद साहिब जी देते हैं, देह धैर के दण्ड से बचे ना कोये।।

क साहिबन अंश जीव अविनाषी, चेतन अमल सहज सुख रासी।
सो माया वश भयो गुसाई, बांधयों जीव मरकट को नाई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, साहिबन अंश जगत भरमाई।।

क हंसा तूं तो सबल था, अटपट तेरी चाल।
रंग बिरंग में खो गया, अब फिरत बेहाल।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सबल हंसा जगत में हुआ बेहाल।।

863 हंसा तो सबल था, माया में रंगा रमा आत्म।
प्रालब्ध सूं उलझा पड़ा, हर पल छाया मातम।
ये भेद साहिब जी देते हैं, काल फंस सूं छूटे ना आत्म।।

क प्यारो–बहु बंधन ते बांध्या, ईक बेचारा जीव।
जीव बेचारा क्या करे, जे ना छुड़ावे पीव।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू छूटे ना जीव।।

864 पुत्र स्त्री के मोह में, मरि मरि जावे जीव।
आशा तृष्णा में डूबा मरे, कबहु तरे ना जीव।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग नातों से छूटे ना जीव।।

865 ना आशा मरि ना तृष्णा मरि, मर मर गया शरीर।
जग माया में रमा रहे, आत्म कष्ट भोगे संग शरीर।
ये भेद साहिब जी देते हैं, आत्म भ्रमित हो दुख भौगे शरीर।।

866 आशा छूटि ना तृष्णा गई, जम जम मरे शरीर।
सैंचित कर्म हैं अब भोगे, अब के भोगे अगम शरीर।
ये भेद साहिब जी देते हैं, आशा तृष्णा देवें आत्म शरीर।।

867 जीव पड़ा बहु लूट में, आत्म का कछु लेन न देन।
आत्म जीव का संग करे, भुगते लेन और देन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंसा निर्लेप कर्म सूं कछु ना लेन।।

868 प्यारो–कोठी बंगला कारों की, कमी नहीं जिनके पास में।
वह भी तो कहत हैं, बड़े दुख हैं जग संसार में।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव दुखिया सब संसार में।।

क प्यारो–तन का सुखिया कोई ना देखा, जो देखा सो दुखिया।
बांटे बांट सब कोई दुखिया, क्या तपसी क्या वैरागी।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सबै जीव इस जग दुखिया।।

869 सबै जीव माया में रमे, माया सुख भ्रम देवे पर हैं सबै दुखिया।
निज स्वार्थ में जीव पड़ा, खुद सुख चाहे करे औरों को दुखिया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया भ्रमित स्वार्थी चाहें सबै दुखिया।।

870 जीव पड़ा बहु लूट में, बटोरे माया दो दो हाथ।
माया संग ना जाएगी, जाएगा खाली हाथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि में किसी के ना भरें हाथ।।

871 कच्चे कुम्भ ना पानी ठहरे, चाहे लख करो उपाऐ।
बिन सार सब्द की दात के, कोई अमरपुर ना जाऐ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन दात कोई निजघर पहुंच ना पाए।।

872 इन्द्री स्वाद के कारणे, नर कीन्हे बहुत उपाऐ।
ये सब कर्म मन के जानो, आत्म निर्लेप रह जाऐ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, भ्रम वश आत्म की चल ना पाऐ।।

873 सबल हंसा माया वश, निज रूप आत्म बनाऐ।
आत्म सुरति जब जागे, फिर आत्म हंस हो जाऐ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सुरति संभले जीव हंस हो जाऐ।।

874 कई युगन से सुरति फंसी, मन माया के तार।
बिन सतगुरू पतवार के, कोई ना लगावे पार।
ये भेद साहिब जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू तरावन हार।।

875 भाई ईन्द्री पसारा रोक ले, सब कुछ तेरे पास।
तूं तो आत्म रूप है, सब समर्थ तेरे पास।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, निज जानो सब कुछ पास।।

876 ईन्द्री पसारा मिल जीव है घेरा, बिन परिचय भया ना यम चेरा।
ईन्द्री स्वाद भौगन जग आया, भौग भौग मिल घेरा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रालब्ध सूं घिरा जीव लाचारा।।

877 नो द्वारे संसार सब, दसवें योगी तपी साध।
एक दश खिड़की बनी, जानत संत सुझान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, एकादश खिड़की से जाऐं संत सुझान।।

878 दसवें द्वार से जीव जब जाई, स्वर्ग लोक में वासा पाई।
ग्यांरवें द्वार से प्राण निकासा, जा अमरलोक वासा पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, दशम ग्यांरवें द्वार का पता दें बताई।।

879 दसवें द्वारे से जीव जब जाई, स्वर्ग लोक में वासा पाई।
कर्म प्रालब्ध क्षिन्न जब होई, राजा बन जग में आई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, दशम द्वार सूं अल्प मुक्ति ही मेरे भाई।।

880 ग्यांरवें द्वार से प्राण निकासा, सतलोक में वासा पाई।
आवागमण प्यारे तेरा कट जाई, बहुरि ना जन्म मरन मेरे भाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण मोक्ष साहिब सूं ही मिल पाई ।।

881 संतो सबै शब्दे शब्द बखाना, कोई सब्द ना जाना।
शब्द फांस फंसा सब कोई, सब्द नहीं पहचाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शब्द सब्द में अंतर कोई ना पहचाना।।

882 संतो शब्दे ज्ञान उपझे अभिमाना, छुड़ावे सतगुरू द्वारा।
सब्द ज्ञान जो जन पावे, सतगुरू शरणी जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू द्वार कोई बिरला ही पाना।।

883 अक्का नाम निःअक्षर है भाई, तुम निःअक्षर रहो समाई।
निःअक्षर करे निबेरा, कहे साहिब सोहि जन मेरा भाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर ही तेरा निबेरा करे भाई।।

884 सब्द विदेह करो उच्चारा, ताहि पीछे त्रिलोकि न्यारा।
सब्द ही नाम लोक कहावे भाई, निःअक्षर में रहे समाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द ही में निजधाम समाई।।

885 विदेह सब्द अदभुद प्रकाशा, परम पुरूष का उसमें वासा।
अमर लोक ताहि का नामा, निःअक्षर सब्द में सतनाम वासा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तजे तो बने सतगुरू दासा।।

886 सत सब्द का परिचय होई, तब ही सतलोक पहुंचे सोई।
सतनाम सतगुरू सूं पाई, तब हंसा सतलोक जा पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द परिचय सतलोक पहुंचाई।।

क मूल नाम है अजर शरीरा, तन मन से गह संत कबीरा।
जो गाहे धर्म दास कबीरा, खो जाऐ सुख सागर तीरा।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, संत कबीर है अजर अमर शरीरा।।

887 शब्द सूं माया धारी शरीरा, सब्द सूं अजर अमर शरीरा।
ईक देह का कष्ट अति भारी, दूसरा छुड़ाऐ कष्ट बंधन पीरा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं ही पाऐं आनंदमय शरीरा।।

888 माया मन की मोहिणी, जीव को मोह मोह कर सताऐ।
जीव बेचारा क्या करे, प्रबल मन तरंग में बह जाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग सूं कोई बिरला बच पाऐ।।

889 तेरा मेरा मन प्यारो, कबहु ईक ना होई रे।
मैं कहुं निज अनुभव प्यारे, तूं कहे सुनि सुनाई रे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज अनुभव से पार करावें रे।।

क मेरा तेरा मनवा प्यारो, कैसे इक होई रे।
मैं कहता अखियन की देखी, तूं कहत कागद की लेखी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू चदरिया ओढ़ प्यारे।।

890 पकड़ो तो तुम हो, छोड़ो तो तुम हो प्यारे।
जागे तो ही मिटे, मन मान अब ना रहा प्यारे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मूल सब्द को स्वांस में डाल रे।।

891 अब ना रहुं इस तन में, नां तीन लोक में प्यारे।
अब जाई बसुं निजघर में, अमरपुर हंसालोक प्यारे।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जीते जी मर मोक्ष पा प्यारे।।

892 संसारी साधक का मनवा प्यारो, कैसे ईकमिक होई रे।
संसारी छोड़े ना माया प्यारी, साधक संसार छोड़न की तैयारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया तजो तो निर्मल होवो।।

893 स्वार्थ सिद्धि सबै भक्ति करें, ये तो भक्ति ना होई।
तन मिटे मन मिटे, तभी तो भक्ति होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया तजो तो भक्ति होई।।

894 खर में फंसा हर जीव जगत का, अक्षर में योगी साध ।
निःअक्षर सतगुरू सूं मिलता, तां सूं उतरो पार ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सार सब्द सूं उतरो पार।।

895 अक्षर भेद मूल ना जाना, खर सूं है संसार।
निःअक्षर मोक्ष दात है, करे भव सागर सूं पार ।
यह भेद साहिब जी देते हैं, बिन यत्न सब्द सुरति करे पार।।

क कलयुग जीवों का कल्याण करत है, विवेक ज्ञान सुरति योग ।
प्रेम आत्म सुरति जानो, जागे कबीर संग साध ।
ये भेद सतगुरू देते हैं, तीन ढंग सूं जीव उतरे पार ।।

896 बिन कीचड़ तुम कमल ना जानो, तां सूं प्रकटे प्रेम।
अमर लोक बिन प्रेम नांहि, नांहि प्रेम बिन नाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम ही सुरति नाम।।

क बैठे कबीर अमर जहाज में, पल में गये समुंद्र तीर ।
हर जग जीव जगत का प्यारो, कहे कबीर कबीर ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, नाम जहाज चढ़ो तो उतरो पार ।।

897 प्रेम ही पूर्ण सार नाम, निजधाम फूलों की वास।
तुम तो कली ही रह गये, कैसे प्रकटे वास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन प्रेम ना प्रकटे वास।।

क सत्य नाम कबीर है, अमर उसे लो मान ।
तीन लोक वासा नांहि, चोथे लोक का लो जान ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, त्रिलोकि पार हंसा लोक महान।।

898 खर अक्षर सूं काल ना छूटे, जन्म मरन का जाल ।
निःअक्षर अमर सब्द को पाओ, भव सागर सूं पार ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर सूं भव सागर पार ।।

899 परमहंस कबीर संत सम्राट हैं, सतलोक अमरपुर वास।
नाम सुमिरत अमृत रस चाखो, बुझे हर हंसा की प्यास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सिमरन सूं निजघर वास ।।

900 तेरे अंदर जगमग हो, कचरा राख बने।
प्रेम उपझे सार नाम सूं, प्रेम महां जोत बने।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम सुरति जगे तो बात बने।।

क जैसे बादल गगन में तरते, चारों ओर बिन हथ पांव ।
ऐसे संत सम्राट कबीर हैं, जित देखो तित पाओ ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतलोक सुरति हर थां पाओ ।।

901 प्रेम जोत सार नाम सूं, प्रेम जोत बन जाये।
सार नाम सुरति में धारें, पूर्ण मोक्ष मिल जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति पार लगाये।।

क साहिब–सतपुरूष कबीर प्यारे, देह में कबहु नां होये।
सब्द सरूपी रूप धरत हैं, हर घट व्यापक सोये ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सब्द में साहिबन समाये ।।

902 मेरे साहिबन जो तुम ध्याओ, सोहि मैं भी गाऊं ।
तुमरी सुरति सार सब्द में, कर्म धर्म तज ध्याऊं ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सुरति से पाऊँ ।।

903 दर्शन केवल पूर्ण संतन के, सुमिरन को सच्चा नाम ।
सार सब्द सूं सुरति जागे, पाओ पद निर्वाण ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि सूं पार सार सुरति नाम ।।

904 श्रद्धा रसरी प्रीत की, सुरति इसका पांव ।
जो चले इस पांव से, जा पहुंचे निज गांव ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं पहुंचो निज गांव ।।

905 प्रेम छुड़ावे मन जाल सूं, प्रेम जगावे ध्यान ।
संत प्रेम संदेस ले आवें, प्रेम सूं सब्द ध्यान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रीत प्रेम सुरति सूं ध्यान ।।

906 मन की वृति संकल्प है, निर्णय बुद्धि का काम।
तीत में याद की शक्ति, क्रिया करन अहंकार का काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन क्रिया मान वासना काम।।

907 प्रेम पुजारी जो बने, सतगुरू चरणन ध्यान।
सुरति में हर पल संग रहे, जा पहुंचे निज धाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी में निजधाम ।।

908 सुरति प्राण, सब्द एक करो, दस पवन चलें संग साथ ।
सुरति उपझे मन संग छूटा, खुलता अष्ट्म द्वार सुरति संग साथ ।।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं संतन सदा साथ ।।

909 प्रेम सागर में समा कर, महां सागर हो जायें।
बिन ढूबे पार हों कैसे, ढूबें तो पार हो जायें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेमी प्रेम में खो जायें।।

क सार नाम बड़ राम सूं, तारे लाखों जीव ।
तीन राम सूं निरंकार है, चोथे राम सूं पार ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, त्रिलोकि पार चौथा दरबार ।।

910 सतगुरू महिमां अपरम्पार है, सदा रहयो शरणाई।
बिन सतगुरू शरणी के, कोई ना तर पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू पार लगाई।।

क सतगुरू महिमां अपरम्पार है, मत करो चतुराई।
छल कपट विनाष करे, रहे अंधा या हो कोढ़ी।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू निंदा सूं यम अति सताई ।।

911 त्रिलोकि माया जाल है, कोई जाने ना निज रूप।
बिन सत्त कोई जान ना पावे, हंसा है निज रूप।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर जीव बसे हंसा अनूप ।।

912 सतगुरू सब्द सुरति लागी, मन–चतुराई वश जान।
सतनाम सतगुरू जब देत है, आशा–तृष्णा–बुद्धि वश जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतसुरति सूं मन वश जान ।।

913 बड़–भाग मनुष्य तब पाया, सत्त धर्म हुई पहचान।
सत्तगुरू सत सुरति सूं, आत्म की होत पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं निज ले जान ।।

914 संस्कार पशु पक्षी भी जानत, मनुष्य की क्या बात।
जन्म एक नहीं जन्म अनेकों, बिन सार सब्द बने ना बात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मनुष्य ही समझे ना ये बात ।।

915 हर थां सार सब्द का वासा, सुरति सूं कोई बिरला पाता।
सतगुरू शरणी जो है आता, सार सब्द की दात है पाता।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं भव पार हो जाता।।

क सब घट साहिबन वास, खाली घट ना कोय।
बलिहारी वो घट है, जा में साहिबन प्रकट होयें।
ये भेद कबीर जी देते हैं, खाली हो तो साहिब प्रकट होयें ।।

916 जब सुरति सब्द सूं जाग गई, मन माया का छूटा संग।
अब साहिबन घट में प्रकट हुए, सुरति सब्द सूं संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं सदा सतगुरू संग ।।

917 अब साहिब सतपुरूष, स्वंय भगत हो उठे।
जब ध्यान में निमग्न, ईक नृत्य गीत उठे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ध्यान सुरति सूं गीत उठे ।।

918 सार सब्द, चहुं लोक का है मूल केन्द्र।
वेज्ञानिक ना जाने भेद, सुरति है मूल केन्द्र।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि सत्ता सुरति है केन्द्र ।।

919 सार सब्द चार लोक का, मूल केन्द्र सच्चा भेद।
सुरति निरति मेल सूं केन्द्र, विज्ञानी कैसे जाने भेद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू बिन मिले ना भेद ।।

920 अदृष्य सब कुछ देखते, अंदर की आंख का काम।
पाप पुण्य भी देखते, यह सभी है मन का काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म सुरति सूं करे मन काम ।।

921 काम क्रोध मन का खेल है, आत्म भरमी जाने ना।
छल कपट मन की रीत है, आत्म का ये काम ना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म बिन मन कुछ करे ना।।

922 सगुण निर्गुण एको जानो, जाकि भक्ति करे संसारा।
सगुण भक्ति करे मानवा, निर्गुण योगेश्वर अनुसारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सगुण निर्गुण देवे निरंकार द्वारा।।

923 जे जे दृष्यम ते ते अनित्यम, जे जे अदृष्यम ते ते नित्यम।
भौतिक जगत निरंकार पसारा, सार सब्द सुरति सदा नित्यम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जगत अनित्यम हंसलोक नित्यम ।।

924 शब्द ही सगुण शब्द ही निर्गुण, शब्द ही वेद बखाना।
शब्द ही पुनिः काया के भीतर, कर बैठा अस्थाना।
जो जाकि उपासना कीनी, उसका कहुं ठिकाना ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शब्द सूं मिले ना मूल ठिकाना।।

925 त्रेता से पहले राम भक्ति नां, द्वापर से पहले कृष्ण भक्ति नांहि।
सगुण–निर्गुण निरंकार समायो, तिन सूं पूर्ण मुक्ति नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू पूर्ण मुक्ति नांहि।।

926 जहां भौग तहां विनाषा, आलस्य प्रमाद भी वासा।
मच्छ मलीन कुबुद्धि उपझे, रहे मलीन प्रेतों का वासा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मच्छ मलीन सदा प्रेत वासा।।

927 सब्द की दात जग सूं न्यारी, परमहंस से जा लेह।
लिखी ना जाऐ पढ़ी ना जाऐ, वह तो सब्द विदेह।
सब्द कहें तो शब्द नांहि, शब्द हुआ तो माया नेह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, परमहंस सूं सब्द दात लेह।।

928 मन काया और माया, त्रिलोकि के हैं अंग।
सोया जीव जन्मों से, भटके मन तरंग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पंडित ज्ञानी बहे मन तरंग।।

क कबीर काया अथः, तीन लोक का भेद।
कोई ना जाने भेद, बिन सत्तगुरू मिले ना भेद।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू सूं पावें भेद।।

929 काल निरंझन मन रूप है, जग लियो भरमाई।
जीव को मन माया है भाई, सतगुरू आन छुड़ाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही मन सूं पार लगाई।।

क मन ही सरूपी देव निरंझन, तो ही रहा भरमाई।
प्यारे हंसा तूं अमर लोक का, पड़ा काल वश आई।
ये भेद कबीर जी देते हैं, काल निरंझन सबै दियो भरमाई।।

930 प्यारो हम क्या हैं, खोज इसकी आवश्यक है भाई।
क्या हम काया माया हैं, या कोई ओर मूल हैं भाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर जीव में हंसा समाई।।

क सब घट मेरा सांईया, खाली घट ना कोये।
बलिहारी वह घट हो, जा घट प्रगटन होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खाली घट में साहिबन जा समायें।।

931 हर जीव में आत्म वास है, जीव जाने नांहि।
लाखों जन्म से सोया पड़ा, मन से छूटे नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे तूं कहिं का नांहि।।

क ज्युं तिल मांहि तेल है, ज्युं चकमक में आग।
तेरा सांई तुझ में बसे, जाग सके तो जाग।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संत शरण जगाये विरह प्रेम विराग।।

932 मन तरंग आत्म भरमावे, तन मन जाना निज रूप।
लाखों जन्म का जोड़ है, आत्म भूली निज रूप।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति दे निज रूप ।।

933 इस तन भीतर सात समुन्दर, ताहि में ना दिया नारा।
इस तन भीतर सूरज चंदा, याहि में नो लख तारा।
इस तन भीतर सोना चांदी, याहि में लगत बजारा।
इस तन भीतर हीरे मोती, याहि में परख़न हारा।
इस तन भीतर देवी देवा, याहि में ठाकुर द्वारा।
इस तन भीतर शिव विष्णु ब्रह्मा, सनकादि अपारा।
इस तन भीतर तीन लोक हैं, याहि में सृजन–हारा।
तीन लोक का मन ही राजा, याहि सृजन–हारा।
चोथे लोक का भेद जो जानें, वह ही सतगुरू प्यारा।
परमहंस वे नाम भेद ये देवें, सतगुरू रूप साहिब प्यारा।।

934 सत्तगुरू महिमां अपार है, मत करो चतुराई।
छल चालाकी विनाष करे, रहे सदा शदाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां अति गुणदाई।।

935 काम क्रोध मद् लोभ, मन के अंग तूं जान।
काया तन काया मन काया अंतःकरण, जान एक समान।
आत्म का इन सूं लेन देन ना, बस इतना ले जान।
ये सब सतगुरू सूं होत है, सार सब्द का जब हो ज्ञान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सूं पाओ सब्द महान।।

936 कर्म धर्म सब झूठ हैं, मन तरंग तूं जान।
सतनाम जाने बिना, निज की ना होत पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत सुरति ही निज पहचान।।

937 मस्तिक मन का मंत्री, सुश्मिना में करा स्थान।
पल पल तरंगें भेजता, आत्म की तोड़ी कमान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन वश आत्म महान।।

938 ईच्छा शक्ति हो जीव की, करती आस को पार।
नाव तो केवल साधन है, ईच्छा सूं होत पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ईच्छा शक्ति सूं मिले संतन द्वार।।

939 सुरति को जग सूं दूर कर, सुरत कमल में करो ध्यान।
हर पल साहिबन संग हैं, सुरति सूं मन की टूटे कमान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं आत्म बने हंसा महान।।

940 कहना सुनना देखना, अक्षर के अंग तूं जान।
गुप्त निःअक्षर सब्द देखिये, अंतरदृष्टि् समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर सब्द महान।।

941 असंभूत ब्रह्म निःअक्षर रूपा, माया ब्रह्मण्ड प्रकट नांहि।
जग संभूत ब्रह्म है जानत, अक्षर–बिंदु निःअक्षर नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पराभक्ति सब्द महान।।

942 कागा पलट हंसा कर दीना, नाम सब्द पुरूष दियो दान।
वे नाम को अमर दात है दीनी, आत्म को हंसा कर दीन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पुरूष सब्द सूं परम हंस महान।।

943 सतलोक ज्ञान सभी जन को, बतला दिया साहिबन प्यारे ने।
जो जाग गये सो पायेंगे, सतगुरू संग निजघर जायेंगे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणागत पद निर्वाण पायेंगे।।

944 सार नाम चौथे लोक का, मूल केन्द्र ले जान।
दर्शन केवल पूर्ण संत के, सुमिरन को सांचा नाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पूर्ण संत देवें सार दात महान।।

945 सतगुरू सीढ़ी सूं उतरे, सब्द सूं छूटा संग।
ताको काल घसीटया, अमरलोक सूं छूटा संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव छूटे जब सब्द पाओ संग।।

946 सतगुरू साहिबन ऐको जानो, दोनों ईक सुरति प्रवाह।
साहिबन सतगुरू रूप धारो, मोक्ष सब्द सूं दें जीव को मुक्ति राह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू देवें मोक्ष पथ राह।।

क कबीरा ऐको जानिये, तो जाना जान सब–जान।
कबीरा एक ना जानया, तो सब जाना जान अजान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, चौथे लोक की महिमां महान।।

947 सतगुरू आज्ञा शिरोधारी, सतगुरू सांचा हितकारी।
कहे वे नाम तां दास को, निजलोक ले जाहि।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सतगुरू आवागमण छुड़ाहि।।

948 चकौर चांद को देखे, बिन झपके नैन।
सब्द सूं प्रीति ऐसे करो, छूटें जग के बैन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू छुड़ावें जग बैन।।

949 पल पल में जीव मुआ, निज को जाने ना कोये।
निज रूप को जो जाने, सतगुरू प्रेमी होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दें निज रूप बतायें।।

क मरते मरते जग मुआ, मरन ना जाने कोये।
ऐसी मरनी ना मरा, बहुरि ना मरना होये।
यह भेद कबीर जी देते हैं, मन छूटे तो आवागमण ना होये।।

950 सतलोक आत्म चेतन है, चरणों में धरो ध्यान।
उनमें धुन लगने से, चेतन हों आत्म प्राण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू चरणी सतलोक समान।।

951 जब जीव को सब प्यारे लगते, आत्म को जागा जान।
तूं उसे देख और सुन, उसे ही ले तूं जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जागा जीव संत समान।।

952 धुन का ही जग खेल है प्यारे, धुन से दुख महान।
धुन को प्रेम का रूप दे डालो, आनंद की वर्षा महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम धुन अति महान।।

953 रोना हसना खेल है मन का, आत्म का काम नांहि।
आत्म केवल प्रेम की ज्योति, बिन प्रेम मोक्ष नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म बिन प्रेम नांहि।।

954 फनि सूं मणि ज्यूं बिछड़े, जल सूं बिछड़े मीन।
ऐसी प्रीति जब सतगुरू सूं, मोक्ष की बाजे बीण।
जब आत्म हंसा हो गई, फिर आत्म ना होत मलीन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू प्रीति सुरति बाण।।

955 विरह प्रेम बाण जाको लागे, जीव पल में जागा जान।
लख कहे समझावे सतगुरू, मूर्ख नांहि लेता मान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू शरणी सबै मलिछ जान।।

956 सब्द बिन सुरति अंधि, सहज पथ राह पाये ना कोई।
सब्द हमारा तूं भी सब्दे, सब्दे सुरति पाये कोई कोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति पाये बिरला कोई।।

957 नीह तत्व भेद गुप्त है प्यारो, पांच तीन से बाहर।
सार नाम निज सब्द है प्यारो, शेष सब कुछ छाछ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द सब छाछ।।

958 तप साधना काम नां आवे, केवल नाम आधार।
नाम प्रेम है दुर्लभ प्यारो, यही तो मोक्ष आधार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू प्रेम मोक्ष आधार।।

959 जीव की सुरति माया समाई, तभी रहयो भरमाई।
मन माया वश आत्म सुरति, सुरति को जानो भाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति संभाल मेरे भाई।।

960 सतगुरू सुरति को पाते ही, तन मन की टूटे लगाम।
बिसरे भूख प्यास तन को, सुरति किया बाण का काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत सुरति सूं टूटे मन कमान।।

961 कागा पलट हंसा कर दीना, नाम पुरूष दिया दान।
वे नाम को अनमोल दात है दीनी, आत्म का करे कल्याण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू करें जीव कल्याण।।

962 कांटे पत्ते फूल उगते, बिन कांटे गुलाब कहां।
मन आत्म खेल जग अंदर, निःअक्षर बिन अक्षर ज्ञान कहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू सत ज्ञान कहां।।

963 खर अक्षर सूं सतगुरू महिमां, निःअक्षर दात महान।
निःअक्षर मूल दात प्यारे, खर अक्षर का काम कहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खर अक्षर फंसा सारा जहां।।

964 बुरा जगत में कोई ना मिलया, मुझ सूं बुरा कहां।
माला का हर फूल है प्यारा, बिन जोड़े माला कहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन प्रेम प्रीत भक्ति कहां।।

965 ये जग है ईक माला समान, ईक सूं आये अनेक यहां।
मन माया जाल त्रिलोकि, सतगुरू सुरति हर थां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं चेतन जहां।।

966 लोचन चातक समान कर, स्वाति बूंद पर ध्यान।
सब्द शब्द को काटता, खर अक्षर सूं टूटा ध्यान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द अति महान।।

967 सब्दे भरोसा सब्दे आस, सब्दे प्रकटें सदगुरू आप।
सुरति निरति जोड़ सूं, आत्म पावे साहिबन साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू साहिबन सब्द संग साथ।।

968 श्वांस श्वांस में ध्यान कर, सब्द सुरति संग ।
जो कुछ प्रकटे सो अभी, सतगुरू पल पल संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ध्यान सुरति सूं सतगुरू संग।।

969 जानो जीव तब ही जागा जग, जब प्रेम वैराग सुरति संग।
सतगुरू चरणन सुरति रहे, सदा प्रेम जोत का संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति प्रेम रंग।।

970 सत्त असत्त असली नकली, खर अक्षर के भेद।
खर अक्षर मन के अंग हैं, निःअक्षर सुरति भेद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर मिटावे खर अक्षर भेद।।

971 विवेक ना जागे मन ना भागे, सार नाम का बाण महान।
भव सागर सूं कबहु ना तरे, जब तक ना नाम हथ कमान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम की महिमां अति महान।।

972 सतगुरू सब्द कमान है, सुरति करे बाण का काम।
तूं प्रेम की जोत जलाये रख, मन की टूटे कमान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द तोड़े मन कमान।।

973 मोरे साहिब सतगुरू प्यारे, दीन बंधु वे अन्तरयामी।
खर अक्षर का भेद मिटाई, निःअक्षर में सुरति समाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सबै भेद मिटाई।।

974 निर्थक जान जग जीव सब, जे जन संग नांहि प्रीत।
वैराग प्रेम का अंग है, प्रेम सूं ही त्याग और प्रीत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, वैराग प्रेम ही सच्ची प्रीत।।

975 प्रेम सुमिरन सूं जागता, मन माया का छूटे संग।
सतगुरू साहिब अब संग हैं, सुरति निरति का हुआ संग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुमिरन सूं हों सतगुरू संग।।

976 नाम सब्द सूं पाया रंग अपार, साधक हुआ हंसा अवतार।
मान सरोवर जा मोती पावे, मन माया की टूटे पतवार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सब्द सूं जीव भव पार।।

977 सतगुरू कीर्तन (सत्संग) उत्तम, सतगुरू संग निजघर।
सतगुरू साहिबन रूप हैं, उन संग जाओ निजघर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी पाओ निजघर।।

978 ये ग्रंथ सब सुनें सुनावें, सांची प्रेम भक्ति की राह।
जो ज्ञानी सो बूझे ज्ञान, प्रेम रस को पाने की चाह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भक्ति ही सच्ची प्रेम राह।।

979 आनंद सागर ये ग्रंथ है, सतलोक ज्ञान भंडार।
सुनत पढ़त अमर पद पावे, कहें साहिबन विचार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आनंद सागर ही सतलोक व्यवहार।।

980 जिन सब्द सत्त है जानिया, ता का मिटे पाखंड विनाष।
बिन सत्त सब्द पहुंचें नांहि, सत्तलोक निजघर देस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत सब्द सूं पाओ निज देस।।

981 निःअक्षर निज पावही, मिटी है सकल अंदेस।
निःअक्षर सब्द जाने बिना, घट ही में परदेस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द ही निज देस।।

982 ज्ञान रूप कहे सो कहिये, ज्ञान भेद किस को कहें।
बिन सतगुरू कौ भेद बतावे, किह विध मन संशय जावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू निज भेद बतावे।।

983 बह्म भेद जाने नांहि, बहुत करे अभिमान।
जिन भेद है जानेया, उन सूं छूटा मान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द छूटे ना मान अभिमान।।

984 मृत्यु लोक में पाखंड है धर्मा, जीव रहे सदा भरमाया।
सतगुरू आ ज्ञान सुनाया, ता से जीव का भ्रम मिटाया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू आन भ्रम मिटाया।।

985 काल को जीव तजे नांहि, मन माया और मान।
पाखंड जाके ह्रदय बसे, मान में तजे प्राण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सच्चे लोक को ले तूं जान।।

986 झुकेगी जागी आत्मां, जिस का बह गया मान।
अकड़ मुर्दे की पहचान है, जिस में नांहि प्राण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सच्चे लोक को ले तूं जान।।

987 साहिब जी की उल्टि वाणी, बरसे कम्बल भीगे पानी।
मन मान जिन का गया, सेवा सुमिरन मीठो वाणी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सांचे लोक की सुरति वाणी।।

988 थोथा चना बाजे घना, गर्जनहार बरसे नांहि।
ओछे घर आया तीतर, बाहर राखे के भीतर।
चूहे को मिली कत्तर, रण राण राह हो गया।
नीचे को जो उतरा, अकड़ के है चल रहा।
जिस फल मीठो है पाया, सो झुकना सीख गया।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेमी तजना सीख गया।।

989 बिन जान परख सतगुरू ना कीजे, जग में धोखा महान।
बिन छाने जल मत पीजे, जिसमें किटाणु महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सांचे लोक को ले तूं जान।।

990 झुकता वही जीव जग अंदर, जो कुछ जागा है।
सतगुरू को जान लिया तो, अब शेष क्या पाना है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निजघर निजसंग ले लेते हैं।।

991 बड़ो वंश रावण का, बड़ो ही वंश धृतराष्ट्र।
अभिमान में सब डूब मरें, छोटे बड़े ईक साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भक्ति कर्म ही जावें साथ।।

क बड़ा वंश कबीर का, उपझयो पूत कमाल।
साहिब का सिमरन छोड़ी के, घर ले आये माल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं हर जीव माला माल।।

992 बड़े बड़े सम्राट जग में, जिन का ना नामो निशां।
अकड़ घमंड सब खा गया, गये सबै दोजख मां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, घमंडी का कोई ठौर नां।।

क कबीर संत सम्राट हैं, उनसा संत कहां महान।
चार लोक का पूर्ण ज्ञान दिया, चोथे लोक की महिमां महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सच्चे लोक को ले तूं जान।।

993 कच्चे घड़े में जल ना ठहरे, पक्के में ही ठहर पाये।
सतगुरू सार सुरति बिन, यमलोक सूं छूट ना पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति पार लगाये।।

क जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर जल नांहि समान।
फूटा कुंभ जल में जल समाना, याहि ज्ञान महान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सच्चे लोक को ले तूं जान।।

994 काशी काबा एक से, एक से जान राम रहीम।
ईक लोक सूं हम सब आये, तहां नांहि राम रहीम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार माया है राम रहीम।।

995 साहिब गागर में सागर भरते, मूर्ख जानत ना।
देखन में छोटे दिखें, बाण की धार को जानत ना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निजघर ले तूं जान।।

996 मुरली की तान में तूं ही तूं, तूं ही है अज़ानों में।
पर भेद ये अक्षर का, निःअक्षर तो केवल सुरतियों में।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन सुरति निःअक्षर में।।

997 दुनियां ऐसी भांवरो, पंच तत्व में ध्यान लगाऐ।
निज अंदर नहीं झांकती, जहां पल में ही मिल जाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निजघर निजसंग ले जाऐं।।

998 बाहिर के मंदिर सब झूठ हैं, अंदर के पट खोल।
वहीं मिलता वह आप है, सुरति निरति का खेल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू करावें सुरति निरति मेल।।

999 अच्छे दिन अब पाछे गये, सतगुरू से की ना प्रीत।
अब दुख ही दुख में घिर गया, किस से मांगे भीख।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुख में ही करो सतगुरू प्रीत।।

क अब अच्छे दिन पाछे गये, किया ना सतगुरू हेत।
अब पछताऐ क्या होत है, जब पंखी चुग गये खेत।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू का पाओ तुम भेद।।

1000 काल गर्भ में जीव जब, चेतन सुरति रहती निज संग।
साहिबन सुरति संग मिलयो, जग में रंगयो माया रंग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग जीव बहे मन तरंग।।

क प्यारे वह दिन याद कर, पग़ उपर तल शीष।
माया लोक में आई के, बिसर गया निज देस।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया भ्रम में भूला निज अतीत।।

1001 सुरति मूल ठिकाना, त्रिलोकि पिण्ड ब्रह्मण्ड सूं पार।
सतगुरू जोहरी भेद बतावे, वेद क्तेव शास्त्र सूं पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणागत तीन लोक सूं पार।।

क भारी कहुं तो बहुत डरूं, हल्का कहुं तो झूठ।
मैं तो जानूं सत्तपुरूष को, बोलूं तो हो जाऐ झूठ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, त्रिलोकि रचना माया झूठ।।

1002 दीठा है पर किसे कहुं, कहुं तो कौ पछताऐ।
जैसे हैं तैसे रहें, हर्ष हर्ष गुण गाएं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिब महिमां कहि ना जाये।।

1003 देखा है तो कहना नहीं, बड़ा छोटा महान कहलाऐ।
सुने पर सुझवे नांहि, खर–अक्षर से कहा ना जाऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति में साहिबन समाऐं।।

1004 जो पकड़े सो चाले नांहि, चले सो पकड़े नांहि।
यह बात आत्म सुरति की, खर अक्षर की बात नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई समझे नांहि।।

क कबीर एक ना जानिया, बहु जाने क्या होये।
एकहि तो सब होत है, सबते एक ना होये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू कृपा पाये कोये कोये।।

ख सुख के संगी स्वार्थी, दुख में रहते दूर।
कहे कबीर, महारथी दुख सुख सदा हजूर।
ये भेद कबीर जी देते हैं, हर पल सुरति बसे सतगुरू हजूर।।

1005 पुरूष रचन ते नारी है, नारी रचन ते पुरूष।
पुरूष पुरूष जो रचा, ते बिरला संसार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बृहंगा मत करे आप समान।।

1006 सतगुरू मेरा सुरत कमल में, चेला सुरति निरति मांहि।
सब्द सुरति लीन है, अब बिछरत कबहु नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेला रहे सतगुरू सुरति समाहि।।

1007 अक्षर भेद नां जानहि, खर में सब संसार।
निःअक्षर सतगुरू सूं पावहि, मिटे काल संसार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर सब्द सूं त्रिलोकि पार।।

1008 निःअक्षर दात बिरला जाने, सार सब्द ईक बाण।
सुरति डौर सूक्ष्म जानों, सुरति निरति संग प्राण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति सूं पाओ निर्वाण।।

क कबीरा सोकर क्या करे, ऊठ और ऊठ कर जाग।
जा के संग से बिछड़ा, वही के संग जा लाग।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निज पहचानें तो जागें भाग।।

1009 जीव बिसरा निज हंसा रूप, माया में उलझा जाये।
जब तक ना पावे सांचा सतगुरू, कौन उसे छुड़ाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू भव पार लगाये।।

क तुम को बिसरि सुद्ध निजघर की, सत्तगुरू को पा और जाग।
जिन के संग सूं बिछड़ा, वे ही के संग लाग।
ये भेद वे कबीर जी देते हैं, सब्द सिमरे तो जागें भाग।।

1010 निरंकार निरगुण है माया, जा के पीछे नर रहा भाग।
आंखों पर माया का चश्मा देकर, सुख के लिए रहा भाग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव ना जागे यही दुर्भाग्य।।

1011 सत्तयुग सतसुकृत, त्रेता में मुनिन्द नाम धरायो।
द्वापर करूणामय नाम कहायो, कलियुग कबीर नाम धरायो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कबीर नाम पार करायो।।

क युगन–युगन हम यहां चले आऐ, जो चीन्हा तहं लोक पठाऐ।
काशी वट सरोवर भीतर, तहां जुलाहा पाऐ।
ये भेद वे कबीर जी देते हैं, संत जीव तारने जग में आये।।

1012 गृह उझाड़ ईक सम देखो, भाव मिटाओ दूजा।
आंख ना मूंदो द्वार ना रोको, साहिब बिन दिखे ना दूजा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई तारे ना दूजा।।

क सोहि ज्ञानी पुरूष, सत्तगुरू परमहंस कबीर।
रज विरज सूं पैदा नहीं, श्वांसा नांहि शरीर।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पंच तत्व से बाहिर साहिब कबीर।।

1013 सहज लोक तक काल है देसा, यह भी जानो पराया देसा।
आगे अमरलोक है भाई, परमपुरूष का सांचा देसा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तीन लोक पार है साहिबन देसा।।

द साहिब कर्ता आप हैं, दूजा नांहि कोए।
दादू पूर्ण जगत को, भक्ति भेद दिया सोए।
ये भेद दिया दादू जी प्यारे ने, सतगुरू साहिब दिया मोहे।।

द दादू नाम कबीर का, जो कोई लेवे ओट।
ता को कभी ना लागसी, काल पुरूष की चोट।
ये भेद दिया दादू जी प्यारे ने, नाम मिटावे यम की चोट।।

द दादू बैठी जहाज पर, गये समुन्दर तीर।
जल में मच्छी जी रहे, कहे कबीर कबीर।
ये भेद दिया दादू जी प्यारे ने, प्रथम सतगुरू भयो साहिब कबीर।।

न अव्वल संत कबीर हैं, दूजे रामानंद।
ता से भक्ति प्रकट भई, सात द्वीप नौ खण्ड।
ये भेद दिया नानक प्यारे ने, कबीर सतभक्ति प्रारम्भ।।

र स्वामी जो तुम गाओ सो हौं गाऊं, तुमरा ज्ञान विचारूं।
कहे रे–दास सुन हो स्वामी, मर्म कर्म सब छोडूं।
ये भेद रविदास जी देते हैं, सतगुरू तुझे ध्याऊँ विचारूं।।

ध बाजा बाजे रहित का, पड़ा नगर में शौर।
सत्तगुरू ख़सम कबीर हैं, नजर आवें हर ओर।
ये भेद धर्मदास जी देते हैं, हर थां साहिब कबीर कबीर।।

ना पानी ते पैदा नहीं, श्वासा नांहि शरीर।
अन्न आहार कर्ता नांहि, ता को नाम कबीर।
ये भेद संत नाभा भाई जी देते हैं, पंच तत्व सूं बाहिर कबीर।।

ना वाणी अरब खरब लो, ग्रन्थ लो कौटि हज़ार।
कर्ता पुरूष कबीर है, नाभे किया प्रचार।
ये भेद नाभा भाई जी देते हैं, कबीर ही प्रकटायो सब्द कबीर।।

1014 उठाओ पर्दा और देख लो, मुर्दा मत लो जान।
संसार ना उनको जान सका, वे तो प्रेम हंस निजधाम ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष ही तो परमहंस निजधाम।।

1015 सतपुरूष मुझे समझाया, जीव जगाओ सब्द चिताई।
गुप्त वस्तु मुझे है दीनी, नाम विदेह सूं लो जगाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष की महिमां लो गाई।।

1016 वेद हमार भेद है, हम वेदन के मांहि।
जिन भेद में मैं बसुं, वेद वो जानत नांहि।
ये भेद परमहंस जी देते हैं, सतपुरूष महिमां वेदन जानत नांहि।।

1017 काल ही जानो अलख निरंझन, चारों वेदन गायो ज्ञान।
यही मत में सब जग उलझा, पाप पुण्य कर्मण ज्ञान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंकार ही कर्म काण्ड ज्ञान।।

1018 किसी युग में कोई जग ना आया, जैसी महिमां लिए कबीर।
लोई उनकी भक्ति जानी, भक्ति कमान का तीर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष की महिमां संतन दरबार।।

1019 सब्द जा सुरति समावे, निर्भय साधक कहावे।
तज दे धरती आकाश जो, सतगुरू सुरति जा समावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द में साहिबन समावें।।

क साहिब कबीर अमरपुर वासी, हंसा लोक निजधाम।
ज्ञानी पुरूष नाम सतपुरूष दीन, चार लोक का ज्ञान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, चौथे लोक का दें ज्ञान।।

1020 सार नाम मुक्ति शिला, आसन अचल जमावें।
सदा आनंदित दुख सूं न्यारा, जीवित मोक्ष दिलावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम आनंदित करावे।।

क खर–अक्षर सूं सतगुरू जानो, निःअक्षर दात वहां।
निःअक्षर मूल दात को पाओ, क्षर–अक्षर संग छूटे तहां।
ये भेद दिया वे नाम जी प्यारे ने, निःअक्षर जहां संत तहां।।

1021 खर–अक्षर सूं सतगुरू जानो, मोक्ष दात वहां।
निःअक्षर दात सूं बंधन छूटे, चौरासी कटे तहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर दात सूं छूटे जहां।।

1022 बुरा जगत में नज़र ना आया, मुझसे बुरा कोई।
माली को सब बाग प्यारा, फूलों की सुगंध में बुरा कोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब में साहिब बुरा ना कोई।।

1023 धुन का ही जग खेल प्यारे, धुन से दुख होत महान।
तुम धुन को अंतरमुखि करो, अमृत वर्षा होत महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ध्यान धुन की महिमां ले जान।।

1024 रोना हंसना खेल है मन का, आत्म का खेल ये नांहि।
आत्म तो है प्रेम की ज्योति, बिन जाने मोक्ष नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तजे बिन मोक्ष नांहि।।

1025 कहना सुनना देखना, अक्षर के अंग तूं जान।
गुप्त निःअक्षर सुमरिए, सुरति बने अमृत समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द ही साहिबन मान।।

1026 असंभूत ब्रह्म निःअक्षर रूपा, माया ब्रह्मांड तब प्रकटे नांहि।
तीन लोक संभूत ब्रह्म हैं, अक्षर बिन्दु निःअक्षर नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, खर अक्षर चौथा लोक नांहि।।

1027 प्रेम बाण जाको लग जाऐ, वह पल में जागा जान।
लख कहें सुझावें सतगुरू, मूर्ख नांहि लेता मान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बाण अति महान।।

1028 सतगुरू सुरति पाते ही, तन मन की टूटे लगाम।
बिसरे भूख प्यास तन की, सतगुरू सुरति बाण समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू तोड़े माया कमाण।।

1029 कांटे पत्ते फूल ऊगते, बिन कांटों गुलाब कहां।
खर–अक्षर खेल जग अंदर, निःअक्षर बिन उद्धार कहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू मोक्ष कहां।।

1030 अक्षर शब्द सूं सतगुरू महिमां, निःअक्षर सब्द वहां।
निःअक्षर अमर दात प्यारे, खर–अक्षर का काम कहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द की महिमां अति महां।।

1031 खर–अक्षर सूं सतगुरू महिमां, सतगुरू रूप निःअक्षर वहां।
सतगुरू अमृत दात है प्यारे, साहिबन सतगुरू रूप तहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू अमृत दात कहां।।

1032 ये जग पूर्ण माला समान है, एक सूं अनेक जहां।
मन माया का जाल है फैला, बिन सतगुरू छूटे कहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू ना छूटे काल जहां।।

1033 फनी सूं मणि ज्युं बिछरे, जल सूं बिछरे मीन।
ऐसी प्रीत जब सतगुरू सूं, आत्म ना होत मलीन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू निर्मल निष्चल कर दीन।।

1034 सतगुरू सोहि पूरा न्यारो, जो जीवित मोक्ष दिलाये।
उठत बैठत कबहु ना छूटे, ऐसी ताड़ी लगाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू पार कराये।।

क जिन डूंढा तिन पाईया, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन डूबे नपे न गहरे पानी पैठ।

1035 अनहद धुन सुरति दसवें द्वार में, निरंकार जानन की राह।
आत्म तत्व की सुरति योग सूं, अमरपुर जाने की राह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं पावें मोक्ष राह।।

1036 बिन सतगुरू भक्ति ना पावें, भ्रम जले संसारा।
कहे वे नाम सुनो भाई साधो, मानो कहा हमारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बिन कोई ना पार उतारा।।

क हस्ती चाहे ज्ञान को, सहज दलोचा डार।
स्वान रूप संसार है, भौंकन दे झक मार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मृत्यु लोक जीव मरे बारम्बार।।

ख कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकटिया हाथ ।
जो घर जलाए अपना, चले हमारे साथ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया तजे बिन मिले ना सतगुरू साथ।।

ग मांगन मरन समान है, मत कोई मांगें भीख।
मांगन ते मरना भला, ये सतगुरू की सीख।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू देवें सांची सीख।।

1037 आए थे भजन सतनाम को, औरन लगे क्यास ।
नर जग में जागे नांहि, बिन दुख कुछ नहीं पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे बुझे ना प्यास।।

1038 मरी जाऊं मांगू नांहि, अपने तन के काज।
परमार्थ के कारने, मोहे ना आवे लाज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब मोक्ष पा जायें यही मेरा काज।।

1039 खाये पकाये लुटाऐ के, करि ले अपना काम।
चलती बिरिया रे नरा, संग ना चले छदाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया ही कराये छल कपट काम।।

1040 खाये पकाये लुटाई ले, ये मनवा निज मान।
लेना हो सो लेई ले, वही गयो जो दान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मनवा तज दे तूं मान।।

1041 जो सतपुरूष को जानसी, तिस का सतगुरू नाम।
आठों पहर सुरति में, सतगुरू महिमां महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं करें सतगुरू गुणगान।।

क राम कृष्ण से कौ बड़ा, तिनहुं तो भी गुरू कीन।
तीन लोक के नायका, गुरू आगे अधीन।
ये भेद कबीर जी देते हैं, रहो सदा सतगुरू आज्ञा अधीन।।

1042 जगत में सब स्वार्थी लौभी, पूर्ण सतगुरू हितकारी।
जग माया ले डूबे, केवल सतगुरू तारनहारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू पे जाऊं बलिहारी।।

क सतगुरू समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह।
बिलगाये बिलगे नहीं, एक रूप दो देह।
ये भेद कबीर जी देते हैं, शिष्य में बसे गुरू नेह।।

क बाहिर काया दिखलाईये, अंदर जपिये राम।
कहा महोला खलक सौं, परि हों धनी सूं काम।
ये भेद कबीर जी देते हैं, छोड़ मन भावन काम।।

क अपने पहरे जागिये, नां परि रहिये सोय।
ना जाने छिन एक में, किस का पहरा होये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मनवा मृत्यु निष्चित तोये।।

क एक राम को जानि कर, दूजा दे बहाये।
तीर्थ व्रत जप तप नांहि, सतगुरू चरणी समाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जग तजे तो सतगुरू पाये।।

क मान बड़ाई जगत में, कूकर की पहचान।
प्यार किये मुख चाटिये, बैर किये तन हान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जग भ्रम तूं पहचान।।

क बड़ा बड़ाई ना करे, बड़ा नां बोलें बोल।
हीरा मुख से नां कहे, लाख टका मेरो मोल।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द मिले बिन मोल।।

क मोह फंद सब फंदिया, कोये ना सके निवार।
कोई साधु जन पारखी, बिरला तत्व विचार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, कोई बिरला ही जाये पार।।

क अष्टम सिद्धी नव निधी लो, सब ही मोह की खान।
त्याग मोह की वासना, कहे कबीर सुजान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, ऋद्धि सिद्धि सबै माया जान।।

क दिवस गवाया खाये कर, रात गवाई सोये।
हीरा जन्म अनमोल है, कौड़ी बदले जाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बीता समय लौट ना आये।।

क पढ़ी गुणि सीखा सभी, मिटा नां संशय मूल।
कहे कबीर का से कहुं, ये सब दुख का मूल।
ये भेद कबीर जी देते हैं, शब्द ज्ञान संशय का मूल।।

क कबीर लहर समुंदर की, केते आवे जाहि ।
बलिहारी वा दास को, उलटे समावे वाहि।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू भव पार कराहि।।

1043 विचार मन तूफान है, नाम सुमिरन मन की मोत।
नाम प्राप्ति शांति की उपाधि, कारण मन की मोत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया भ्रम ही है मोत।।

1044 ये मन लोभी लालची, आत्म गति जान।
भजन सूं दूर भागता, दुख देने में आन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, लालची सदा भूखा जान।।

1045 निःअक्षर संभूत ब्रह्मा, मूल स्त्रोत लो जान।
मूल शक्ति पिण्ड ब्रह्मण्ड के पार, सतपुरूष निजधाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तीन लोक पार निजधाम।।

1046 हंसात्म–बीज उपर ओर पार है, परम पुरूष निज अंश।
जो इस परिधि को लांगता, जन्म मरन उत्पति का नाश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द करे मन माया नाश।।

1047 बीज काल लोक से पार, मूल स्त्रोत परमपुरूष ले जान।
माया काल गति के वश में, बावन अक्षर में लें जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बावन अक्षर काल निरंझन जान।।

1048 सत्य लोक अमर है धामा, तहां परमपुरूष निःअक्षर नाम।
तीन लोक हंसा नहीं तेरा, चोथा लोक है हंस स्थान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चोथे लोक की महिमां महान।।

1049 अंत काल आकाश भी, मूल स्त्रोत निःअक्षर ब्रह्म में जा समाये।
अंसभूत ब्रह्म ही निःअक्षर ब्रह्मा में, सब आन समाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रलय उपरांत अहोरात्रि आये।।

1050 योजन सतांरहां चौकड़ी महा युग, संभूत ब्रह्मं निरंझन।
असंभूत ब्रह्म अविनाषी में, सब हो जात है लीन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीव जग काम विषयों में लीन।।

1051 असंख्य नाम जपे संसारा, मूल नाम बिरला कोई कोई।
मूल नाम सतगुरू दान दीन्हीं, पावे बड़भागी कोई कोई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति समावे कोई कोई।।

क असंख्य नाम संसार में, तिन ते मुक्त नां होये।
मूल नाम जो गुप्त है, पूर्ण सतगुरू सूं पावो सोये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं मुक्ति होये।।

1052 निःअक्षर भेद सतपुरूष पासा, बिन मिले ना पावे कोये।
अगम अगोचर सोहि जानिये, सतगुरू कृपा जो पावे कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू मन पार लगाये सोये।।

1053 तीन गुण और चार युग, काल फन फैलाये।
बिन सतगुरू शरणी आये, काल सभी को खाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू काल सूं ले छुड़ाये।।

क सतयुग–सत त्रेता–तप, द्वापर पूजा चार।
कलियुग केवल नाम आधारा, सुमिर सुमिर भव पार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जो नाम सिमरे सो पार।।

1054 जहां पंच तत्व नांहि, वहां प्रलय कैसी।
काया नांहि मन भी नांहि, तहां प्रलय कैसी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया और प्रलय एक जैसी।।

क कोटि जन्म का पथ था, सतगुरू पल में दियो पहुंचाये।
नाम की महिमां कोई जाने ना, मन छूटे पार हो जाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू नाम भ्रम मिटाये।।

1055 सुमिरन में संग साथ साहिब का, मन की टूटे तार।
संतन में ज्युं रम रहा, जैसे निरति श्वांसा तार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुमिरन बने सुरति धार।।

1056 संतन में साहिबन सुरति, उन्हीं में नाम का वास।
मन माया सब बह गया, मन का छूटा वास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन में साहिब सुरति वास।।

1057 आवे ना जावे मरे ना जन्में, सोई निज पीव हमार।
ना कोई जननी ना कोई जन्मा, ना कोई सृजनहार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म जन्म मरन सूं पार।।

1058 साध ना सिद्ध मुणि ना तपसी, ना कोई करत ऊचारा।
ना पर दर्शन चार वर्ण में, नां आश्रम व्यवहारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सुरति सत व्यवहारा।।

1059 ना त्रिदेवा सोहंम शक्ति, निरंकार सूं पारा।
सब्द अतीत अचल अविनाषी, खर अक्षर सूं न्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द तीन लोक सूं न्यारा।।

1060 जोति स्वरूप निरंझन तहां नांहि, नांहि ओम औंकारा।
ध्वनि ना गगन पवन ना पानी, ना रवि चंद्र ना तारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चौथा लोक अति है प्यारा।।

1061 है प्रगट पर दिसत नांहि, सतगुरू परमहंस प्यारा।
कहे साहिब घट में आप, परखे परखन हारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, परमहंस ही है साहिबन प्यारा।।

1062 जीव स्वंय को तन है माने, यही है उसकी भूल।
आत्म को स्वंय भिन्न है मानता, यही भंयकर भूल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे रहयो धूल का फूल।।

क निःअक्षर पार ना पावे कोई, निःअक्षर भेद अनामी।
कहिये अगम अगोचर सोई, कोई बिरला भेद ले जानी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर महिमां जीव ना जानी।।

1063 सतनाम जग से न्यारा, मुख से कहा ना जाई।
आदि नाम की अदभुत महिमां, सुत नित मिले बात बन जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतनाम सूं बात बन जाई।।

1064 बाणी प्रकटे मन मुख सूं, वोहि काल का जाल।
तीन लोक परे जो सब्द है, सोहि सतगुरू पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मोक्ष सब्द संतन पास।।

क अविगत नाम पुरूष का कहिये, जाने भेद कोई कोई।
अविगत नाम कोई पार ना पावे, हंस लोक कहलाई।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सब्द भेद जाने बिरला कोई।।

1065 जो खोजी बन सब्द का, धन्य सतगुरू सोये।
साहिब जी पकड़े साहिब को, पार लगाये सोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी पार लगाये।।

क जबहि नाम ह्रदय धरा, भयो पाप का नाश।
जैसे चिंगी आग की, पड़ी पुराने घास।
ये भेद कबीर जी देते हैं, नाम सिमरन सूं काल का नाश।।

1066 सतगुरू में सुरति लगाओ, सार नाम में सदा समाये।
जो निराधार आधार है, सुरति में रहे समाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति सूं धन्य होयें।।

क यही बड़ाई सब्द की, जैसे चुंभक लोह प्रीत।
बिन सब्द कोई पार ना, संतन की ये सीख।
ये भेद कबीर जी देते हैं, नाम सब्द सूं करो प्रीत।।

1067 सतगुरू नाम सुमरिये, पूर्ण मुक्ति दात।
प्यारो सब्द ना छोड़िये, ये परमपुरूष की दात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द ही पूर्ण मोक्ष दात।।

1068 नाम रत्न धन पाई के, सुरति सूं रखो संभाल।
भूल कर मत खोलना, यही मुक्ति का द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गुप्त नाम ही मोक्ष द्वार।।

1069 नाम जपत दरिद्री कोढ़ी भला, खाने को ना अन्नदान।
कंचन कामिणी छोड़ दे, जहां ना होत सतगुरू मान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां अति महान।।

1070 जैसे माया मन रमे, तैसे निरालंभ राम रमाये।
तारा मंडल भेद के, निजधाम अमरपुर जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरालंभ राम सतलोक में पायें।।

1071 सब्द रत्न अनमोल है, मत जाना इसे भूल।
पूर्ण सतगुरू सूं पाविये, ये मूल दात अनमोल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द रत्न है बेमोल।।

1072 सतपुरूष सूं वे नाम ने, अनमोल दात है पाई।
तीन लोक सूं पार हैं, जिन बिरले दात ये पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार दात है अनमोल है भाई।।

1073 सतपुरूष वे नाम को, दी दात अनमोल।
निजधाम सूं उतर कर, दिये दरस अनमोल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति का मोल ना तोल।।

1074 सतगुरू सतपुरूष तो एक हैं, निःअक्षर सब्द महान।
सब्द सुरति में डाल कर, पाओ मोक्ष का दान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द दान अति महान।।

1075 सतगुरू उपदेश पर, जो ना धरता ध्यान।
सो जन मन माया सूं, बड़ाता मान अभिमान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू उपदेश छुड़ावे अभिमान।।

द अरबों साल सूं हंसा बिछड़े, अपने प्रीतम सूं ।
पल पल पुकार देत साहिब जी, मिल अपने प्रीतम सूं।
ये भेद देवी दयाल जी देते हैं, जाग साहिब पुकार सुरति सूं।।

1076 तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमाए कोए।
सार नाम की दात बिन, कागा हंस ना होए।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सूं जीव हंसा होए।।

1077 खोजी होए सब्द का, जाईए संतन पास।
अपनी होमा त्याग कर, पल में साहिबन पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, होमा त्यागो तो साहिबन पास।।

1078 काल अंदर बाहर फिरे, ये आंखे देख ना पांए।
सार नाम की दात बिन, काल सूं बच ना पांए।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम सूं काल फांस कट जाए।।

1079 चिंता निःअक्षर नाम की, ओर ना चितावे दास।
जो कुछ चितावे नाम बिन, सोहि काल की फांस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन नामे फसें यम की फांस।।

1080 सब्द पाए सुरति राखे, सो पहुंचे दरबार।
कहें साहिब तहां देखिए, परम पुरूष हमार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सुरति बसें साहिब हमार।।

1081 नाम जपत कुष्टि भला, चून चून गिरे जो चाम।
कंचन करे देहि, बिन नाम के ही काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सिमरन सुरति साहिब का नाम।।

1082 सतगुरू नाम सुमिरते, पापी तरे अनेक।
कहें साहिब ना छोड़िये, मूल नाम की टेक।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू की लो तुम ओट।।

1083 सार नाम धन पाई के, गठरि बंद ना खोल।
नांहि आर नांहि पार वे, नांहि ग्राहक नांहि मोल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम बड़ा अनमोल।।

1084 जैसे माया मन रमे, वैसे सुरति नाम।
तारा मंडल छोड़ि के, पाओ अमरपुर धाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरत नाम सूं पाओ निजधाम।।

1085 नाम जपत दरिद्री भला, टूटी घर की छान।
कंचन मंदिर जारि दे, जहां ना सतगुरू नाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू मिले ना नाम।।

क चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोए।
दो पाटन के बीच में, साबित बचा ना कोए।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया भ्रम सूं बचा ना कोए।।

1086 धन रहे ना योवन रहे, रहे ना गंद ना ठांव।
साहिबा जग में जस रहें, कर दें किसी का काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जागो तो जानो नाम।।

1087 कामी कुढ़ता निस दिन, अंदर होए उदास।
कामी नर कुढ़ता रहे, छे ऋतु बारहां मास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कामी वृत्तियां झकड़ें बारहां मास।।

1088 तन मन लज्जा ना रहे, काम बाण उर साल।
एक काम सब वश किए, सुर नर मुणि बेहाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काम वश सबै होये बेहाल।।

1089 भाग भोगे भाग उपझे, उगते बचा ना कोए।
कहें साहिब भगत जो बचे, भक्त कहावे सोए।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन तरंग बचे सोहि भक्त होए।।

1090 काम क्रोध मद् लोभ की, जब लग घट में खान।
साहिब मूर्ख पंडिता, दोनों एक समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तज काम क्रोध अभिमान।।

1091 बूंद खिरि नर नारि की, जैसे आत्म घात।
अज्ञानी माने नांहि, यही बात उत्पात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बूंद की तूं कर संभाल।।

1092 मान बड़ाई खोई कर, खाक में मिलना जान।
सार नाम सामक बने, सतगुरू की कर पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम की महिमां महान।।

1093 सब को पूर्ण मान दें, निज को छोटा जान।
छोटा हो सब कुछ मिले, भृंगा मत्त ले जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज की कर पहचान।।

1094 मन की पहचान आवश्यक, आत्म को करता घात।
मन को आत्म वश करे, सार नाम सूं बने ये बात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम सूं बने बात।।

1095 मन खसम मुआ तो भला हुआ, सिर का भार गया।
सतगुरू दीन दयाल जी, तुमरी कृपा सूं मन मुआ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम सूं मन मुआ।।

1096 नाम परवाना जिन जिन पाया, मन माया सूं पार।
सतगुरू आप अवतार लियो, सार सब्द सूं पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम ले चले भव पार।।

1097 चौरासी का राजा है मन, निरंकार भगवान।
किसी को पार ना होने दे, मन ही है भगवान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल पुरूष को ले तूं जान।।

प सतगुरू बंदी छोर कहावे, सब्द सूं ले चले पार।
ज्ञान ध्यान जानत नांहि, सतगुरू दासन के दास।
ये भेद पल्टु जी देते हैं, पल्टु देत भेद ये ख़ास।।

1098 नींद निशानी मोत की, उठ साहिबा जाग।
और रसायन छोड़ी के, नाम रसायन लाग।
ये भेद साहिब जी देते हैं, पूर्ण जागें तेरे भाग ।।

1099 एक नाम को जानि कर, दूजा देह बहाऐ।
तीर्थ व्रत जप तप नांहि, सतगुरू चरण समाऐ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सार नाम में साहिबन समाऐ।।

1100 सतपुरूष मोहि समझाया, जीव जगाओ सब्द चिताई ।
गुप्त वस्तु मुझे है दीनी, नाम विदेह सूं लोह जगाई।
ये भेद दिया वे नाम प्यारे ने, नाम का दान जीव तराई।।

1101 जो साधक विश्वास राखे, सतगुरू चरणन में ध्यान।
उसके ईक्कहतर वंश मैं तारूं, नाम की डोरी अति महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, श्रद्धा विश्वास सतगुरू ध्यान।।

1102 मैं बार बार जतलाता हूं, उस वस्तु की महिमां गाता हूं ।
चार लोक की दात को पाकर, सेवक बन के रहता हूं ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शरणागत सतलोक ले जाता हूं।।

1103 ज्ञान कथें अरू जोति दृढावे, जोति स्वरूप मर्म नांहि पावे।
जोति स्वरूप निरंझन राई, जिन सकल सृष्टि् भरमाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तीन लोक काल भरमाई।।

1104 सतपुरूष का मर्म ना जाना, झूठ ज्ञान सबही लिपटाना।
सत्य पुरूष सतगुरू सूं पावें, सत्य नाम में जा समावें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द में ही साहिबन समाई।।

1105 पुरूष शक्ति जब सुरति समावे, तब ना सके काल भरमाई।
मुक्त सब्द कोई बिरला जाने, पूर्ण समर्पण सतगुरू सूं पाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति दात सतगुरू सूं पाई।।

1106 सार नाम तीन लोक सूं न्यारा, चोथे लोक में वासा।
ये सत्य पुरूष की दात प्यारी, अमर लोक निवासा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति अमरपुर वासा।।

1107 निज के दर्शन के लिए, दर्पण करे सब काम।
सतपुरूष दर्शन के लिए, सतगुरू दर्पण ले जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही साहिबन तूं जान।।

1108 सतपुरूष को आरसी, संतन करि देह।
लख जो चाहो पुरूष को, इन्हीं में लख देह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत ही साहिबन देह।।

1109 पारस में और संतन में, बड़ो ही अंतर जान।
वह लोहा कंचन करे, सतगुरू करें आप समान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां अति महान।।

1110 तीन लोक में सतगुरू बिन, कोई मोक्ष ना देवे दान।
उनकी सुरति में सतपुरूष वासा, करें वो सारे काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भृंगा मत करे संत समान।।

1111 कलि में नर, आंख नाक कान मुख सूं लेत स्वाद।
दुखन के ये अंग हैं सारे, उन्हीं से लेता स्वाद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भृंगा मत छुड़ाये ईन्द्री स्वाद।।

1112 मन बुद्धि चित अहंकार, द्वार पिण्ड के अंधकार में जीव बेहाल।
जो नांहि करना सो करे, जो कर्ण करे सो बेहाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि माया सूं जीव हैं बेहाल।।

1113 पुरूष शक्ति जब आन समावे, काल ना सके भरमाई ।
मुक्त सब्द कोई बिरला जाने, पूर्ण कर्म सूं सतगुरू पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भृंगा मत सूं सतगुरू में समाई।।

1114 आदि नाम तीन लोक सूं न्यारा, अमर सजीव सार और नित्य।
आदि नाम सतपुरूष कहाऐ, जा सूं रचना अमरलोक जो नित्य।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन लोक सदा है नित्य।।

1115 सार नाम सूं अमर लोक है, इसी नाम सूं आत्म हंसा।
जो पकड़े नाम की डौरि, सोहि आत्म हंसा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम छुड़ावे काल सूं हंसा।।

1116 वे नाम लाए साहिब संदेसा, नाम दात सूं चलो अमरपुर देसा।
सार नाम संतन पासा, पाओ दात चलो निज देसा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दात ही निजदेसा।।

1117 भोग ज्ञान तप सब काल पसारा, यज्ञ दान सबै काल समाई।
सब्द सूं हंसा निरखई, मन माया नाम सूं जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द महिमां सुरति सूं ले गाई।।

1118 सतनाम निज औषधि, खरि नित्य से खाऐ।
औषधि खाए नित्य पथ रहे, ताकि वेदन जाऐ ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द औषधि सब वेदन जाऐ।।

1119 पुरूष नाम गहो मेरे भाई, ताते हंसा लोक सिधाई।
आदि नाम है जीव रखवारा, ताते मोक्ष दात को पाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नाम सिमरे तो सतलोक सिधाई।।

1120 आदि नाम जो ध्यान लगाई, तब हंसा सतलोक जा पाई।
ऐसा लोक साहिब का प्यारो, सदा आनंद में ही रम जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द की महिमां सुरति सूं गाई।।

1121 निज लोक में जो कोई जावे, भव सागर सूं हो गयो पारा।
सार सुरति संत साधक को देवें, हुआ अगम का दरिया पारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द दात सूं त्रिलोकि पारा।।

1122 दासी बन चरणन निहारूं, प्रभु सुरति की तृष्णा मिटाऊं।
चरण टेकि प्रभु विनवों तोहे, सतगुरू दर्स में साहिब पाऊं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत चरण सत आनंद पाऊं।।

1123 अज्ञान आवरण आत्म पर डाला, आत्म निज तन रूप भरमाई।
आत्म प्राण रूप में, सब पिण्ड जा समाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब भ्रम माया काया समाई।।

1124 इन्द्री द्वार झरोखा नाना, तहं बैठे देवा थाना जमाई।
इन्द्री सुखन ना ज्ञान सुहाई, विषय भोग पर प्रीति सदाई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, इन्द्री झरोखे मन लार टपकाई।।

1125 मन का कहना मान कर, आत्म तन को जाने निज रूप ।
आत्म को प्रलोभन दिया, अति आनंद बसे तन रूप।
ये भेद सतगुरू जी देते हैं, चतुराई जानो मन रूप।।

1126 हर जीव पड़ा बहु लूट में, ना कुछ देन ना लेन।
मन को कोई देख ना पावे, ना ना नाच नचावे।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मन की कर पहचान।।

1127 हंसा तूं तो सबल था, अटपट तेरी चाल।
रंग कुरंग में रंग गया, अब क्युं फिरत बेहाल।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन आत्म मन बेहाल।।

1128 मन जाता है जाने दे, गाहे रख शरीर।
उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर।
ये भेद साहिब जी देते हैं, आत्म बिन मन बेकार।।

1129 माया रूप रसरी सूं आत्म बंधी, ये सब मन का काम।
पूर्ण सतगुरू आन छुड़ावें, सार नाम करें सब काम।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मन जानों बनें सब काम।।

1130 बिन शीष का मृग है, चहुं दरि चरने जाये।
बांधि लगाओ गुरू ज्ञान सूं, रखो तत्व समाऐ।
नाम होए तो माथ निवावे, ना तो ये जग बांध नचाऐ।।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मन जानो सब काम बनाऐ।।

1131 सिद्ध साधक योगि यति, सुन्न सूं आगे जा ना पाऐं।
जाएं निरंझन माहि समाऐं, आगे का कोई भेद ना पाऐं।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सतलोक की महिमां बिरले जन पाऐं।।

न नानक एक सुमरिये, जल थल रहा समाऐ।
दूजा काहे सुमरिये, जो जमे ते मर जाऐ।
ये भेद नानक जी देते हैं, सब्द ही मृत्यु लोक छुड़ाऐ।।

1132 सुरति निरति मन पवन ईक, सो पहुंचाऊं वहां।
जाकि सुरति लागी जहां, साहिब उसे पहुंचाएं तहां।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति का खेल महां।।

क सब की गठरि लाल है, कोई नांहि कंगाल।
जो जाने इस भेद को, उस सूं छूटे काल।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निज सुरति जानो कमाल।।

1133 या घट भीतर बाग बगीचा, या में ही सींचनहारा।
या घट भीतर बिजुरि चमके, या ही में होए उजियारा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, ब्रह्मण्ड सारा सकल शरीरा।।

1134 या घट भीतर अनहद गरजे, बरसे अमृत धारा।
या घट भीतर सात समुन्दर, या ही में नदियां नारा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, अंदर बाहिर एको नज़ारा।।

1135 मन की तरंग सब्द सूं मारो, या ही भजन लो जान।
आदत बुरी सुधार लो, भजन हो गया बस जान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मन की तरंग तूं जान।।

1136 आया तूं कहां से, और कहां है जाना।
इतना सा बस विचार ले, तो हो गया भजन।
ये भेद सतगुरू जी देते हैं, मन की तरंग तूं जान।।

क हर तन विषय वासना सूं, भरा पड़ा है।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, रूई लपेटि आग है।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निज को भुला आत्म है।।

1137 जिन के हित परलोक बिगाड़ा, अंतकाल कोई नांहि साथ।
हर पल निज का भजन चले, सुरति निरति साथ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, तन मन दोष में आत्म साथ।।

क सतगुरू बड़े गोविंद सूं, सुरति में ले विचार।
हरि सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सुरति सूं करो व्योवहार।।

1138 बहुत गुरू हैं इस जग मांहि, हरे द्रव्य दुख कछु नांहि।
तां ते प्रथम परिक्षा कीजै, पीछे सतगुरू शरणी जाहि।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन श्रद्धा विश्वास नांहि।।

1139 सतगुरू के लक्ष्ण जान लो, सुनो आत्म सुरति संग।
प्रथम वेद शास्त्र को जाना, दूजा सब्द निःअक्षर ज्ञान।
ये भेद सतगुरू जी देते हैं, निःअक्षर सब्द महान।।

1140 हंसा आकाश से बाहर, सुमिरे निःअक्षर सार।
तित नाद अति आनंदित, सतलोक विस्तार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक आनंद सार।।

क सतगुरू साधक सतपुरूष मिल, कीनी भक्ति विवेक।
तीन मिल त्रिधारा बनी, आगे जल धारा एक।
ये भेद साहिब जी देते हैं, प्रेमी होये कोई एक।।

1141 जिसका गुरू है अधर में, चेला कहां को जाऐ।
अंधे अंधा पेलिया, दोनों कूप पर आऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत सतगुरू भेद बताऐ।।

1142 जिस का गुरू है गृहि, सो चेला गृहि होये।
कीच कीच के धोवते, मैल ना उतरे कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू मैल ना उतरे कोये।।

1143 सतलोक ज्ञान सभी जग हेतु, सतसंग दिया सतगुरू प्यारे ने।
जो जाग गया सो पाऐगा, सतगुरू संग निजघर जाऐगा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कोई जागा ही निजघर जाऐगा।।

1144 सांचा सतगुरू आत्मनिष्ट हो, जानें तत्व ज्ञान का भेद।
शंकाओं का निवारन करे, सार सब्द का ही भेद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू देवें सुरति भेद।।

1145 सतपुरूष मोहे आन समझायो, सुरति जगायो सब्द समझाई ।
गुप्त वस्तु वे नाम ने पाई, नाम विदेह सूं जीव पार हो जाई ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विदेह नाम सुरति में लियो समाई।।

1146 अमर लोक में जो कोई जावे, भव सागर सूं हो गयो पार।
सार सुरति संत साधक को देवे, अगम का दरिया हो गयो पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत सुरति सूं अग़म दरिया पार।।

1147 सतगुरू महिमां श्रेष्ठ है, सतगुणि विष्णु देव।
सतगुरू सूं सत सुरति भहे, दे अग़म का भेद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू दें सतसुरति भेद।।

1148 सतनाम की दात जो पावे, तरें उत्तम मध्यम नीच।
जैसी मति तैसि गति, सुन संतन की लेवें सीख।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन ही मिलावें निज पीव।।

1149 कोई रजोगुण कोई तमोगुण, कोई सतगुण रहा बीज।
ये तीनों कर्म बंधन में बांधते, सार नाम का लो सच्चा बीज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सहज मार्ग में सब्द ही बीज।।

1150 नाम सुमिर ले अमृत वाणी, छोड़ चतुराई मूर्ख प्राणी।
वेद कतेव कछु काम ना आवें, सतगुरू महिमां ले जान प्राणी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां जाने तो ज्ञानी।।

1151 जैसे कर्म जीव जग करता, तैसा ही तन पाता।
जैसी माली कलम लगावे, वैसा ही फल फूल उपझता।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द ही कर्म से छुड़ाता।।

1152 भव सागर अति की वर्षा ना करे, अति में दुख महान।
पल पल गोता खात जीव, फिर फिर होता घात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू की महिमां जान।।

1153 भांति भांति के जीव, चौरासी लख योनि करते वास।
बिलग बिलग कर जीवन कटे, यहि तो काल की फांस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल भ्रम सूं मिले ना मुक्ति आस।।

न धन्य साहिब जो परम संत ज्ञानी, अमर भेद भाषी निज वाणी।
नानक साहिब के संशय मिटे, जब साहिब की महिमां जानी।
ये भेद नानक जी देते हैं, साहिब की महिमां जानो सब प्राणी।।

1154 सब्द पुरूष नौका जग आई, खेवट सतगुरू जी महाराज।
पुरूष सब्द सुमरियो सुरति सूं, भवजल पार उतारें महाराज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द बाण सूं छूटे मन राज।।

1155 खस खस दाने के अंदर, सतपुरूष का वासा जान ।
सुरति ईक तरंग समान है, वहीं सूं रस्ता जान।
ये भेद परमहंस वे नाम जी देते हैं, सतगुरू महिमां महान।।

न धर्म राई दरि कागद फारे, नानक जी देई समझाई।
सतगुरू बात कोई ना काटे, जो देवें पा जाई।
ये भेद नानक जी देते हैं, सतगुरू बाण आवागमन छुड़ाई।।

प शमां रोशनी कोन छाने, पल्टु साहिब की गति जानो रे भाई।
साहिब की गति साहिब ही जाने, विच में मत रहो मेरे भाई।
ये भेद पल्टु जी देते हैं, सतगुरू सब्द में ही रहो समाई।।

ध सतपुरूष जन जानिऐ, सतगुरू तिस का नाव।
धर्मदास तहां वास हमारा, काल का वहां नांहि नाव।
ये भेद धर्मदास जी देते हैं, सतगुरू लाये सुरति नाव।।

क जोहि खोजत कल्पी मेरे भाई, घटही मांहि सो मूरे।
सुरत सब्द प्राण में डालो, आत्म में वासा मूरे।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, हर जीव में सुरति वासा रे।।

क खोजि होए तुरंत मिल जाऊं, ईक पल की तलाश में।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, मैं सब स्वासों की श्वांस में ।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, साहिबन बसें हर श्वांस में।।

1156 संगत कीजै पूर्ण संत की, कभी ना निष्फल होऐ।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होऐ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत संगति ही सुरति जगाऐ।।

1157 ईक लोह पूजा में राखत, ईक घर बधिक परो।
यह दुविधा पारस नांहि जानत, कंचन करत खरो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पारस संतन भेद ना करो।।

1158 सब्द बिन है सुरति अंधि, राह ना पावे कोये।
सब्द हमारा तूं भी सब्दे, सतगुरू सूं पावे बिरला कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सूं सुरति चेतन होये।।

क सतगुरू भूखा भाव का, धन का भूखा नांहि।
धन का भूखा जीव है, सो सतगुरू नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन संग मन माया नांहि।।

1159 जैसी चाल संसार की, वैसी सतगुरू नांहि।
संसार मन माया वश पड़ा, सतगुरू बिन प्रेम कुछ नांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू माया छूटे नांहि।।

1160 बहता पानी निर्मला, बंधा गंदा हो जाये।
सतगुरू रमता भला, रिश्ता नाता खो जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, घृत घाति सूं पतन होये।।

1161 बंद पानी निर्मला, जो टूक गहरा होये।
सतगुरू जन बैठे भले, जो आए पार हो जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन शरण ही पार कराये।।

1162 पढ़ा सुना सीखा सभी, मिटा ना संसे मूल।
क्षर अक्षर मन साथ है, तांहि दुख का मूल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर मोक्ष का मूल।।

1163 तेरे अंदर वासा राम, पर देखा ना जाऐ।
वाको तब ही देखिए, जब सब्द में सुरति समाऐ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, अंदर के बादल लें मिटाऐ।।

क साहिब जी संगत सतगुरू की, जो गंधी का बास।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तो भी बास सुबास।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संतन की महिमां मीठी गंध बास।।

1164 सत्य नंगा–कढ़वा सहनता से बाहिर, कैसे सुने संसार।
अंधविश्वास रूढ़िता–कट्टरता, सत्त की नां पकड़े तार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू जग दुख भंडार।।

1165 सांच कहुं तो मारन आवे, झूठ जग पतियाये।
जग की हां में हां भरी, फूला फूला घर जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर एक को राह दिखायें।।

1166 सब वन तो चंदन नांहि, शूरा के दल नांहि।
सब सागर मोती नांहि, यूं सतगुरू जग मांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू भक्ति नांहि।।

1167 मान बड़ाई जगत में, कूकर की पहचान।
प्यार किए मुख चाटई, वैर किए तन हान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, माया का खेल अभिमान।।

1168 मैं जाऊँ साहिब सूं मिलूं, मोहे सुरति मीठी आस।
हरि विच डारे अंतरा, मन माया ईक साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन माया छुड़ाये साहिबन साथ।।

1169 मोह फंद सब फंदिया, कोई ना सके निवार।
सांचा सतगुरू पारखी, ईक पल में करता पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू करें भव पार।।

1170 चोथे राम को जान कर, सब भ्रम दें बहाऐ।
तीर्थ जप तप व्रत छोड़ि कर, सतगुरू शरणी जाऐं।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सुरति पार लगाऐ।।

1171 हरिद्वार काशी द्वारिका, हरि द्वार जगन्नाथ।
सतगुरू संग सार नाम बिन, कछु ना आवे हाथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द दुख ना छोड़ें साथ।।

1172 वे नाम संगत संत की, कटें दुख क्लेश।
मन माया को काटी दे, मिटें सब राग द्वेष।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, वे नाम शरणी मिटें सब क्लेश।।

1173 साहिब कृपा बिन सतगुरू कहां, सतगुरू कृपा बिन कैसा ज्ञान।
मन छूटे दोनों एक हैं, जीव पल में जागा जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म सुरति एको जान।।

1174 कथनी थोथी जगत में, करनी उत्तम सार।
कहें साहिब करनी भली, ता से भवजल पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत करनी सूं भवजल पार।।

1175 चाहे अकास पताल जा, फोड़ि जाहु ब्रह्माण्ड ।
कहें साहिब मिटे नांहि, देह धरे का दण्ड।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, कर्म बंधन ही काल दण्ड।।

1176 जल में बसे कमोदिनी, चंदा बसे अकास।
जा को जा से प्रेम है, सो ताहि के पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत बुझायें जन्मों की प्यास।।

1177 जहां प्रेम तहां नेम नांहि, तहां ना बुद्धि व्योवहार।
प्रेम मग्न जब सुरति भई, कौन गिने तिथि वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर पल में प्रेम व्योवहार।।

1178 अधिक स्नेहि मच्छ, दूजा अल्प स्नेह।
जबहि जल ते बिछरे, तबहि त्यागे देह।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जीवित मरे तो प्रकटे नेह।।

1179 प्रेम बिकता मैं सुना, माथा सौट हाथ।
पूछत बिलम ना कीजिऐ, तत छिन दीजे काट।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम में छेः तन दीजे त्याग।।

1180 सत शब्द सो उन्मुनि मुद्रा, सोहि आकाश स्नेही।
तामें झिलमिल जोत दिखावे, जाना जनक विदेही।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, उन्मुनि पंचम मुद्रा ज्ञाता जनक विदेही।।

1181 हर हंसा सतलोक में, अति व्यस्त पूर्ण सुरतिवाण।
हर लोक की ख़बर राखे, हर प्राणी की पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हंसा सुरति आलोकिक जान।।

क रंरकार सूं खेचरी मुद्रा, दसवां द्वार ठिकाना।
ब्रह्मा विष्णू महेश्वर देवा, रंरकार को जाना।
ये भेद कबीर जी देते हैं, दसवें द्वार तक ध्याण लगाना।।

1182 सोहि सतगुरू मोहे भावे, जो नैनन अलख लखावे।
डोलत डिगे ना बोलत बिसरे, जब उपदेश दृढ़ावे।
द्वार नां रूंधे पवन ना रोके, नांहि अनहद उरझावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मुद्रा भेद पहचान करावे।।

1183 सुश्मिना ध्यान का माध्यम, लक्ष्य इसे मत तुम जानो।
जब ईंगला विनसे पिंगला विनसे, विनसे सुश्मिन नाड़ी।
जब उन्मनि तारि टूट जावे, तब कह रही तुम्हारी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मुद्राओं से आगे की करो तैयारी।।

1184 यह संसार सुमेर का, चौंच लागे पछताना है।
यह संसार झाड़ और झाखड़, आग लगे जरि जाना है।
छोड़ मनवा सबै जग, रहना नहीं ये देस बेगाना है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भव सागर ही पार जाना है।।

क कस्तूरी कुंडल बसे, मृग खोजे बन मांहि।
ऐसे घट घट सांईया, मूर्ख जानत नांहि।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन मै तजे साहिब आवत नांहि।।

1185 जहां सुरति लागहि, सार नाम रहे समाये।
निराधार आधार है, सुरति में रहो समाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन सुरति रहो समाये।।

क सुरति फंसी संसार में, तां से जन्म मरन जंझाल।
सुरति बांध स्थिर कर, तां मिले सतगुरू दीन दयाल।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू काटें आवागमन जंझाल ।।

1186 अनंत ज्योति प्रकाश है, जब तुम देखो जाये।
ईक सी ऋतु हर दम, विहंगम चाल चली जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विहंगम चाल सूं निजघर जायें।।

क बहु वचन ते बांधेया, ईक बेचारा जीव।
जीव बैचारा क्या करे, जो ना छुड़ावे पीव।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू पावें ना पीव।।

1187 जैसे स्वान कांच मंदिल मां, भरमत भूंकि परयों।
जैसे नाहर–कूप में, अपनी प्रतिमां देख परयो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन भ्रम जाल सुरति भरमायो।।

1188 चौथा सामर्थ लोक है, ताका करो विचार।
कोई नहीं तुमसे पूछता, बिन ऊपझे खपे विचार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चौथे लोक सतसुरति व्योवहार।।

क जैसे ही गज फटिक सिला सों, दसनन आनि अरयो।
मरकट मुठि स्वाद नांहि बिछरे, घर घर भटत फिरयो।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मोह वश जीव जम जम मरयो।।

1189 बिन सतगुरू, नर फिरत भुलाना।
खोजत फिरत, ना मिलत ठिकाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बिन मृत्यु लोक ठिकाना।।

1190 केहर सुत ईक आन गडरिया, पाल पोस के किया सयाना।
करत कलोल फिरत अंजियन संग, आपन मरन उन्हूं ना जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, क्रूर काल भ्रम जीव ना जाना।।

1191 मृगपति और जंगल से आयो, तांहि देख वो बहुत डराना।
मृगपति प्रालब्ध संग आयो, पाल पोस कर कियो सयाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म भरमी जीव ना जाना।।

1192 मृगपति और जंगल से आयो, पकड़ भेद ताहि दियो समझाई ।
सतगुरू नर को भेद बतावें, आत्म पड़ी मन कैद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू मिटावें मन माया कैद।।

1193 सभी की रक्षा धर्म हमारा, गाय को जान महान।
जिस का दूध जीव है पीता, उसे जान मां समान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, दूध की महिमां जान।।

1194 हर नर जग में भटक गया है, सतगुरू भेद देहि समझाना।
हर नर की गठरी लालो लाल है, फिर कैसे कंगाल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन जागे जीव कंगाल।।

1195 सुरत निरत पर ध्यान दो, भीतर सुरति समाये।
सब करनी सतपुरूष की, सुरति रहे ठहराये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति ही साहिबन मिलाये।।

1196 जहां प्रेम तहां नेम नांहि, ना लगन मुहूर्त विचार।
मीन जल ते बिछरते, देह त्याग देत बिन विचार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम की रीत बिन विचार।।

1197 नाम रसायन प्रेम रस, पीवत साधक महान।
साहिबन पीवन दुर्लभ है, मांगे शीष का दान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, नाम की महिमां जान।।

1198 वैराग सुरति में रचि रहे, प्रेम की जोत जगाए।
सार सब्द प्रेम रस ईक, मिले मुक्ति का दान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सब्द की महिमां जान।।

1199 अमृत पावे प्रेम सूं, सतगुरू चरणन ध्यान।
वस्तु अगोचर पाई के, छे तन कर तूं पार।
ये भेद साहिब जी देते हैं, संत संगति करे छः तन पार।।

1200 ये तत वह तत एक है, ईक प्राण दुई गात।
अपनी सुरति सूं जानिए, मेरी सुरति की बात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू वाणी साहिबन बात।।

1201 नीहः तत्व भेद है गुप्त, तीन पांच से न्यार।
नीहः तत्वी हंसा बने, जाये साहिबन द्वार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गुप्त सब्द साहिबन सरकार।।

क कबीर हम गुरू रस पिया, बाकि रही ना छाक।
पाका कलश कुम्हार का, बहुरि ना चढ़सी चाक।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू बिन मिले ना फांक।।

1202 अमृत वाणी सतगुरू तेरी, सुनी सुनी होत निहाल।
अनहद हमार आरम्भ है, अमरपुर में विश्राम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संग करे निहाल।।

1203 मन बुद्धि चित पहुंचे नांहि, सुरत सब्द महान।
धन धन सतगुरू प्यारे, प्रेम की दी पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज की कर पहचान।।

1204 जहां जहां बुद्धि का वास है, तहां तहां माया तूं जान।
ईन्द्री मन का ही अंग है, सुरत सब्द ले तूं जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन सूं दुख महान।।

1205 तीनों बंध सूं बात बने, सुरति सूं ले काम।
प्यारे सुरत समाधि बात, सरे ना ईक वी काम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं ले काम।।

1206 नांहि सजन नांहि सजनी, सुरति करे सब काम।
सार सब्द में ध्यान जब, पल में प्रकटे आन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम की महिमां महान।।

1207 चलो सखी निज देस हमारे, जहां दिवस नां रात।
चांद सूरज तहां नां दिखें, तो भी नां हो रात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अमर लोक में नांहि दिन और रात।।

1208 पाप पुण्य तहां नां कोई, मन माया नांहि काम।
नांहि सजन नांहि सजनी, हंसा रूप सब जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतलोक की महिमां ले तूं जान।।

1209 जहां जहां डोलो अंदर बाहिर, सो सतगुरू परिक्रमां जान।
साहिब हैं सतपुरूष सरूपा, सतगुरू महिमां ले जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं ले काम।।

1210 जो जो करो सुरति संग में, सो सब सतगुरू सेव।
जो सेवो तब करो दण्डवत, यही है सतगुरू सेव।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जो करि सोहि सतगुरू सेव।।

1211 सुरति सूं बोलो जग में, सुरति सूं ध्यायो नाम।
लो सुमिरन इसे जान तुम, खान पीन बना लो ध्यान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति की महिमां महान।।

1212 सुरति की महिमां तुम जानो, सहज अवस्था लाना काम।
सहज अवस्था जब तुम धारो, वासनाओं की टूटे कमान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, वासनाओं का रहा ना काम।।

1213 आत्म आपे ही राम है, मन माया करि अधीन।
नाम की दात पास तेरे, सतगुरू कृपा निधान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन माया की दें पहचान।।

1214 सार सब्द टकसार है, बीजक या को नाम ।
सतगुरू कृपा सूं परख भई, वचन साहिबन मान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द में करो ध्यान।।

1215 परख बिन परिचय नांहि, बिन सत्संग ना ज्ञान।
दुविधा तजो निर्भय रहो, सोई संत सुझान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन सत्संग कोई जागा ना जान।।

1216 नीर क्षीर निर्णय करे, हंस लक्ष्य सहि दान।
ईक समान जब सब दिखें, सो पारखि लो जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बन पारखि हंस रूप पहचान।।

1217 देह मान अभिमान तजे, निर अंहकारी जो जन होये।
वर्ण कर्म कुल जाति तजे, हंस नि–न्यारो होये।
से भेद साहिब जी देते हैं, जात धर्म सूं पार हंसा होये।।

1218 कर्म धर्म विलास देह का, प्यारो करो विचार।
सेवा सुमिरन सुरति सूं, निज जानन का करो विचार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सब्द सदा करो विचार।।

1219 अवगत की गति कहु ना जानि, एक जीव कित कहु बखानी।
जो मुख होये जीब दस लखा, तो कोई आये महंति भाखा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन महिमां जीव ना भाखी।।

क कहहि कबीर पुकार के, ई ले ऊ व्योवहार।
मूल नाम जाने बिना, जीव हंसा ना होये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मूल नाम सूं जीव मोक्ष पाये।।

1220 अवगति की गति का कहो, जाका गांव ना ठाव।
गुण बिहुना परवना, सुरति सूं लीजिये नाव।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मोक्ष सागर सब्द सुरति नाव।।

1221 कुल मर्यादा खोई के, जीवत मुआ नांहि कोये।
देखत जो नांहि देखया, अदृष्य कहावै सोये।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मर्यादा खोई सो जागा होये।।

1222 बंदी जगावे ते फल पावे, जोड़ें सतगुरू सूं तार।
जागा वोहि जागा जानिये, निस दिन हर पल सुमिरे सार।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सार सुरति सूं जोड़ो तार।।

1223 दासा ताको जानिये, जाकि सुरति पूर्ण दास।
सुरति सूं सब कर्म करे, मिटे काल की फांस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति मिटावे मन की फांस।।

क अमृत वस्तु जाने नांहि, कर्म धर्म में ध्यान होये।
कहें साहिब कामो नांहि, जे जीवित मरन ना होये।
ये भेद साहिब जी देते हैं, छे तन तजो तो हंसा होये।।

1224 विरह में डूबी भार ना ले सके, कहे सखियन सो रोये।
ज्युं ज्युं भीजे कामरी, त्युं त्युं भारि होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन नामे ना हल्का कोये।।

1225 ये जग गहरी नींद में, अंध सबै कोये।
कहा कोई ना मानें प्यारे, काल भेद नां जाने कोये।
ये भेद साहिब जी देते हैं, काल ने बांधा सब कोये।।

1226 सुमिरन करो सतनाम का, छोड़ूं दुख सुख आस।
ये जग सोया है पड़ा, करे ना संतन साथ।
ये भेद साहिब जी देते हैं, कल पर मत राखो आस।।

1227 अदभुद पंथ वर्णन नांहि जाई, भूला नाम भूली भगताई।
सतगुरू सब्द सूं चित हर जाई, नांहि तो काल संग ले जाई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, अमर दात लो पाई।।

1228 संशय सूं भरा शरीर, संगहि खेले जुआरि।
ऐसा घायल बापुरा, जीव जीवहि मारे झारि।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन जागे मरो झरि।।

1229 सतगुरू बांटें नाम का प्याला, कोई प्रेमी ही पाये।
बिन 'मै मेरी' अहम तजे, कोई ना सतगुरू शरणी पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, समर्पण सूं सतगुरू शरणी पायें।।

क प्रेम प्याला जो पिये, शीष दच्छिना देय।
लोभी शीष ना दे सके, नाम प्रेम का लेय।
ये भेद कबीर जी देते हैं, प्रेम नाम सुरति सूं लेय।।

1230 जो है जाको भावता, पल पल दर्शन पायें।
तन मन सुरति सूं पिये, वह ही सतगुरू कहाये।
ये भेद साहिब जी देते हैं, विरह का दर्द सुरति कहाये।।

1231 आगि आंचि सहना सुगम, सुगम खांडे की धार।
नेह विरह एक रस, महा कठिन वाणी कटार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विरह दर्द बाण सूं पार।।

1232 प्रीत पुरानी ना होत है, जो पूर्ण सतगुरू सूं लाग।
सो बरसों जल में रहे, पत्थर ना छोड़े आग।
ये भेद सतगुरू देते हैं, हंसा है प्रेम की आग।।

1233 प्रीति झूठी संसार में, नाना विधि की सोये।
उत्तम प्रीति सो जानिये, सतगुरू संग जे होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही विरह प्रेम प्रीत जगाये।।

1234 प्रेम पथ में पग धरे, पल पल मन भरमाये।
सपने मोह व्यापे नांहि, काल का ग्रास बन जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम व्यापे बात बन जाये।।

1235 सजन स्नेहि बहुत रे, सुख में मिलें अनेक।
विपति पड़े दुख बांटिये, सो लाखन में एक।
ये भेद साहिब जी देते हैं, विपत्ति में साथी कोई एक।।

1236 छिनहि चढ़े छिन ही उतरे, सो तो प्रेम नां होये।
औधन घट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोये।
ये भेद साहिब जी देते हैं, प्रेम सुरति सूं होये।।

क जब मैं था तब सतगुरू नांहि, अब वे हैं मैं नांहि।
प्रेम गलि अति सांकरी, तां में दो नां समाहि।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सूं पावें प्रेम महान।।

1237 ये तो घट है प्रेम का, खाला का घर नांहि।
शीष उतारे मुई धारे, तब पैठ घर मांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, समर्पण बिन प्रेम नांहि।।

1238 जीव उठ सतगुरू शरणी लाग, तो जागें तेरे भाग।
लाखों जन्मों से सोया पड़ा, सतगुरू जगावें भाग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सत सुरति में साधक हों बाग बाग।।

क गोता मार सिंधु में, मोती लाये पैठ।
वे क्या मोती पायेंगे, जो रहे किनारे बैठ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, डूबो तो पाओ पैठ।।

1239 साहिब के दरबार में, कमी काहु की नांहि।
बंदा मोज नां पावहि, चूक चकारि मांहि।
ये भेद साहिब जी देते हैं, लोभी कामी रहें जग मांहि।।

1240 शीलवंत सुर ज्ञान मत्त, अति उद्‌ार चित होये।
लज्जावान अति निछलता, कोमल हृदय सोहे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, शीलवंत सम ना कोये।।

1241 आत्म सुरति ताको दीजे, सांचा सेवक होये।
सिर ऊपर काल जाल सहे, तऊ संग ना दूजा कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सम सेवक ना होये।।

1242 अनराते सुख सोवना, रातों नींद ना आये।
ज्यों जल छूटी मछरी, तड़फत रैन बिछाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम की महिमां जगायें ।।

1243 सेवक स्वामी एकमत, मत में मत मिली जाये।
चतुराई रीझै नांहि, रीझै सुरति सूं भाये।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू साहिब में रहे समाये।।

1244 गुरूमुख सतगुरू चितवन रहे, जैसे मणिहि भुजंग।
कहे साहिबन बिसरै नांहि, ये गुरू मुख को अंग।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, गुरूमुख साहिबन अंग।।

1245 फल कारण सेवा करें, निस दिन जांचें संत।
कहें साहिब सेवक नांहि, उसका बुरा है अंत।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सेवक की सेवा में आंत।।

1246 प्यारो जानो सतगुरू प्रेम वश, क्या पास क्या दूर।
जाकी सुरति जा सूं बसे, सो सदा हुजूर हुजूर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं साहिबन हुजूर।।

1247 सतगुरू आज्ञा माने नांहि, चाले अटपटि चाल।
प्रेम भक्ति दोनों गये, काल का देख कमाल।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू आज्ञा में कमाल।।

क सतगुरू आज्ञा उलांगि के, जो सेवक कहुं जाये।
जहां जाय तहां काल है, कहे कबीर समझाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू आज्ञा में आयें और जायें।।

1248 ज्ञानी अभिमानी नांहि, सब काहु का हेत।
सत्यवान परमार्थी, आदर भाव प्रेम सहित।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू ही करे जीव का हेत।

म सत्त की नाव खेवेटिया सतगुरू, भवसागर तरि आयो।
मीरा के सतगुरू संत रविदासा, हिरख हिरख जस गायो।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सार सुरति संतन की नाव।।

1249 पांव कोस भर गांव साहिब का, वह ही सब हंसों का गांव।
वहां से आये वहीं है जाना, जागें तो पा लो गांव ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पहचान करो निज गांव।।

1250 सतगुरू बिन कोई ना चलावे, प्यारे सत्त की नाव।
सतनाम सब्द जहाज है, बैठो उतरो निज गांव।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द है सत्त की नाव।।

न नानक नाम जहाज है, चड़े सो उतरे पार ।
जो श्रद्धा कर सेव दे, सतगुरू पार उतारन हार।
ये भेद नानक जी देते हैं, बिन नामें ना उतरें पार।।

ग़ दास गरीब कहे, सुनो संतो, सब्द गुरू चित चेला रे।
तुम सुनियो संत सुजान प्यारे, सतगुरू देत हैं हेला रे।
ये भेद ग़रीब दास जी देते हैं, सतगुरू देत पल पल पुकार रे।।

ग़ सतगुरू सब एको प्यारो, सब्द सतगुरू सब्द ही चेला रे।
अंदर गुरू बाहिर चेला, मांगे गुड़ धरा ढेला रे।
ये भेद ग़रीब दास जी देते हैं, जैसे गुरूआ वैसे भयो चेला रे।।

ग़ सब्द निरंतर ते मन लागा, मलीन वासना दे त्यागा।
उठत बैठत कबहु ना टूटे, ऐसी तारी सुरति सूं लागा।
ये भेद ग़रीब दास जी देते हैं, सब्द बाण सूं मन दे त्यागा।।

1251 ना खुमारी सुरति में, चढ़ी रहे दिन राती।
ज्युं ज्युं सब्द सुरति में चले, त्युं त्युं प्रीति लागी।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, नाम ही सिमरूं दिन राती।।

1252 सतगुरू तुमरे भीतर बैठा, जे आशा तृष्णा दे त्याग।
साहिब भी तेरे स्वांस स्वांस में, जब सुरति सब्द में लाग।
ये भेद साहिब जी देते हैं, साहिबन स्वांस स्वांस में वास।।

1253 युग युग से नाविक जग आते है, प्यारे प्यारे घाट बनाते हैं।
जो डूबन को तैयार खड़े, संग डूब के पार हो जाते हैं।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मिटने से हंसा बनाते हैं।।

1254 वह तुझ में रहता है प्यारे, तूं भी तो उस में रहता है।
तूं भूला प्रेम की रीत प्यारे, तभी तो दूर ही रहता है।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, जागो तो सदा संग रहता है ।।

1255 साहिब गर्व ना कीजिये, रंक ना हंसिये कोये।
अजहुं नाव समुंद्र में, नां जानो कब क्या होये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब ही इक समान होये।।

1256 मन काला सर्प शरीर में, पल पल सबै खा जाई।
बिरला कोई कोई बचहि है, जो सतगुरू शरणी जाई।
ये भेद 'वै हूं' जी देते हैं, बिन जागे मन नांहि जाई।।

1257 तीन लोक संशय पड़ा, जाने ना मन का राज।
मान बड़ाई ना तजे, कैसे जाने मुक्ति का राज।
ये भेद 'वै हूं' जी देते हैं, मन पहचान ही जीवन का राज।।

1258 मन माया की कौठड़ी, तन संशय का कोट।
विष हर मंतर माने नांहि, काल सर्प की चोट।
ये भेद 'वै हूं' जी देते हैं, सार नाम की ले लो ओट।।

1259 मानुष ते बड़ पापिया, निःअक्षर सब्द ना लेता दान।
बार बार सतगुरू आवाज़ दे, पर सोया जीव ना धरे ध्यान।
ये भेद 'वै हूं' जी देते हैं, मन की सेना अति बलवान।।

1260 मानुष बेचारा क्या करे, मन के वश शरीर।
आत्म मन के वश पड़ी, क्या कर सकता शरीर।
ये भेद 'वै हूं' जी देते हैं, सार नाम सूं जागे कोई वीर।।

1261 मानुष जन्म दुर्लभ भयो, बहुरि ना दूजी बार।
पक्का फल जो गिर पड़ा, कबहुं ना लागे डार।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मानव देह मिले ना बारम्बार।।

1262 एक कहो तो है नांहि, दोय कहुं तो गारि।
है जैसा रहे तैसा, कहिन साहिब विचारि।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निज जाने बिन सब गारि।।

1263 एक ते अनंत भयो, अनंत एक सूं आयो।
परिचय भाई जब एक ते, सब अंतता एक में समायो।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, एक सूं सब हैं आयो।।

1264 एक सब्द साहिब सतगुरू का, ताका अनंत विचार।
थके मुणि–जन पंडिता, वेद ना पावें पार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार नाम जहाज सूं उतरो पार।।

1265 मन के वश सभी पड़े, सब के वश नांहि।
जीव की ईक ना चले, बिन सब्द मन वश नांहि।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार सब्द बिन कोई छूटे नांहि।।

1266 बलिहारी वा दूध की, जा सूं निकरे घीव।
अंधी सखी साहिब की, चरि वेद को जीव।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिन सब्द मिले ना पीव।।

1267 काल गति देख के, नैनन दिये हैं रोये।
बिन जाने सार सब्द, काल सूं बचा ना कोये।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार सब्द सूं भव पार होये।।

क चलती चक्की देख के, कबीरा दिया है रोये।
दुई पाटन के बीच में, साबुत बचा ना कोये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, कल और कल है काल सोये।।

1268 बलिहारी सतपुरूष की, जो प्यारा परखन हार।
मोह दीन्ही खांड की, खारि बूझें ग्ंवार।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सतपुरूष की महिमां अपरम्पार।।

1269 जीवित मरना जब आ जाये, अमृत स्वाद मिलता रे।
जो मृत्यु से डर रहा पल पल, उसे अंधकार मिलता रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मृत्यु सूं मत डर कहा मान हमार।।

1270 स्वंय को मिटाये बिना, उसे पाया जा नांहि सकता।
बिन इस पल में रहने के, स्वंय को मिटाया नहीं जा सकता।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम बिन संताप ना मिटता।।

1271 संगीत लक्ष्य है जीव का, संगीत पैदा होने दो।
बिन पूर्ण सतगुरू संगीत नांहि, सार सब्द की दात आने दो।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं सत्य संगीत आने दो।।

1272 जो तुम हो, वह पहले थे और आगे भी होना है।
दात सतपुरूष की पालो, जे सागर पार होना है ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार जहाज सूं पार होना है ।।

1273 निज–पूर्ण सौंप दो सतगुरू को, माया मन छुट जाता हैं।
ये तेरे अपने नहीं मन की दोलत है, तेरा अपना तो तेरे पास रहता है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज अपनों संग भव पार होना है।।

1274 है जिस में आत्म–आनंद दिखता, वह आनंद नहीं हो सकता।
जब तुम नहीं होते, निज रूप आत्म–आनंद होता।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्मं–आनंद में परम–आनंद।।

1275 'वे हूं' जी भेद ये देते हैं, निज सूं ही भव पार होना है।
सतगुरू शरणी में ही रह के, भव सूं पार होना है।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आनंद सूं आत्म पहचान है।।

1276 जा की कोई मांग नहीं बाकी, उसी में आन बसता है।
हर पल देखता तुझको, खाली हो तो बसता है।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सार नाम सूं बनती बात है।।

1277 जा घर वासा सर्प का, सो घर संत ना होये।
सकल संपदा ले गये, विष भरि लागा सोये।
ये भेद ' वे हूं' जी देते हैं, जहां विष तहां अमृत ना होये।।

1278 आपा तजे हरि भजे, नख सिख तजे विकार।
सब जीवों से निर वैर रहे, साधु मता है सार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, प्रेम बिन जग ना सार।।

1279 पूछा पाछी के कारणे, सब जग रहा भुलान।
निपक्ष होई के सतगुरू भजें, सोई साधक महान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, साहिब की महिमां महान।।

1280 बड़े गये बड़ाई में, रोम रोम अहंकार।
सतगुरू के परिचय बिन, चारों वर्ण चमार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मान बड़ाई तज डार।।

1281 माया तजे क्या गया, ये मान तजा नांहि जाये।
जेहि मन ऋषिवर ठगे, सो मन जग भरमाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मन ही सबै उरझाये।।

क ये मन सबै ठगे, ये मन तजा ना जाये।
ये मन मुनिवर ठगे, ये मान सभी को खाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मन तजो तो पार हो जायें।।

1282 नाम स्नेहि हंसा बने, पकड़े सतगुरू डौर।
निरखो सतनाम सुरति सूं, चल निजघर की ओर।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, निज नाम सुरति सूं चलें मोक्ष की ओर।।

क जेहि मार्ग गये पंडिता, तेहि मार्ग गये पीर।
ऊंची घाटी नाम की, तेहि चढ़ गये साहिब कबीर।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार नाम सूं उतरो पार।।

क जेहि मार्ग सनकादि गयो, गयो ब्रह्मा विष्णु महेश।
कहे कबीर सो मार्ग थकिया, मैं काहि कहुं उपदेश।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार सब्द सूं कटे क्लेश।।

क जेहि वन सिंघ ना संचरे, पक्षी नांहि उड़ि जाये ।
सो वन कबीर नांहि छोड़िया, सुन्न समाधि लगाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, ऐकांत में ध्यान लगाये।।

1283 जैसो लाठी पानी पे, वार नांहि कर पाये।
ऐसा ह्रदय मूर्ख का, सब्द पकड़ ना पाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, जागा ही सब्द पाये।।

1284 जैसो लागी और को, तैसी निबहे छोर।
कौड़ी कौड़ी जोरि के, कीन्ही लख करोर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम बांटो चहुं ओर ।।

1285 जो घर रहे सर्प का, ता घर सतगुरू ना होये।
सकल जीव डरे रहें, विष हर लागे सोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई पार ना होये।।

1286 जो जन चीन्हे सार नाम रस, दुख ना उपझे कोये।
अनुभव भाज से परखिये, दुख सुख भेद ना कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जानो सब में एको सोये।।

1287 सतगुरू की मर्यादा ना धरई, लख चौरासी कुण्ड में पर जानी।
सतगुरू सब्द ना सुने अज्ञानी, भव सागर डूबे अभिमानी।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू बिन जग डूबे अभिमानी।।

1288 सतगुरू को दिखावे मान अभिमाना, व्यास वचन पड़ नर्क निधाना।
सतगुरू सूं जो पावें अमृतनामा, मिले उसे निजधामा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द निजधामा।।

1289 सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये सोये।
कहें साहिब सेवा बिन, सेवक कबहुं नां होये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सेवक सेवा सूं मोक्ष पा जाये।।

1290 संतन ज्ञान मेटि मत थोपो, तीन लोक सड़ें वे पापी।
संतन मेटि बखानत आपा, धरति मार मरंत तहि पाप।
ये भेद साहिब जी देते हैं, संतन आज्ञा सूं मिटें सब संताप।।

क गंग यमुना बदिरा समेते, जग त्राये धाम हैं तेते।
सेवे फल मिले ना तेतो, सतगुरू सेवा में पावे फल तेतो।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू चरणन फल तेतो।।

क कोटि तीर्थ भ्रम भ्रम आवे, सो फल संतन चरणन पावें।
उनकी शरण दात को पावें, भव सागर तर जावें।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी सुरति दात पावें।।

क नाम वंत बहुते मिले, ज्ञान वंत अनेक।
कहे साहिब धर्म दास सूं, सतगुरू वंत कोई एक।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू सेव सूं पावो एक।।

न नानक जो गुरू सेवे आपना, होऊं तिस बलिहारी जाऊं।
वाको काल जाल ना घेरे, निर्मल हो निजघर को जाऊं।
ये भेद नानक जी देते हैं, गुरू सेवक पर बलिहारी जाऊं।।

1291 सतगुरू सेव बिन दुंध अंधेरा, सतगुरू सेव बिन काल का घेरा।
सतगुरू सेव बिन प्रेम वहिना, दिन दिन मोह होय भ्रम दूना।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सेव बिन मिटे ना मन घेरा।।

1292 सतगुरू सेव बिन कौन तरे, भव सागर से बाहिर डौरी।
सतगुरू सेव बिन कछु नांहि सरि है, महां अंध कूप में परि।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सेव बिन दुख अति भारी।।

1293 सतगुरू सेव सूं कटें दुख संताप, जन्म जन्म के मिटे पाप।
सतगुरू सेव सदा चित दीजै, जीवन जन्म सफल करि लीजै।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, बिन सतगुरू बने ना बात।।

क शीष उतारे मुई धारे, वापर राखे पांव।
कहें साहिब धर्म दास सूं, ऐसा होय तो आंव।
ये भेद कबीर जी देते हैं, अंदर खाली हो तो आंव।।

1294 सतपुरूष सुख जो कोई पाई, गूंगा होय ना सो कुछ कहाई।
जल में पड़त जल हो जाई, ताकि खबर काहे को आई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम महां प्रेम जो जाई।।

1295 भेड़ा चाल सकल संसारा, नर पामर को यह व्योवहारा।
सब कोई कहे ये मेरा धर्मा, मेरा गुरू कथे ये कर्मा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, मान सूं जला संसारा ।।

1296 कर्म धर्म कछु काम ना आवे, बुधवंत जो करे विचारा।
चले अंध के पीछे अंधा, बिन विचार करे सोहि धंधा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, अंधे जग का अंधा धंधा।।

क दुर्लभ को ना सताईये, जाकि मोटी हाये।
बिन सांस की फूंकनी, लोह देत पिघलाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मान सभी को खाये।।

क सुरति संभाल काज है, तूं मत भरम भुलाये।
मन सयाल मनसा लहर, बहत कतहुं ना जाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति को मन भरमाये।।

1297 बिन जाने जो नर गुरू कराई, सो नांहि भव सागर तराई।
परख निरख सुरति सूं होती, भव सागर तर जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सब्द हंसा दे बनाई।।

क बिन पग चले, सुने बिन काना।
कर विधि कर्म, करे विधि नाना।
अन्न रहित, सकल रस भोगी।
बिन वाणी, वकता बड़ भोगी।
तन बिन परस, नैन बिन दरसे।
गाहे ज्ञान, सब शेखि विरोखे।
यह विधि सब, आलोकिक करनी।
महिमां जाई, कंचन विधि वरनी।
सुनो कबीर की गुप्त वाणी।।

क नांहि शीतल है चंद्रमां, हिम नांहि शीतल होये।
कबीरा शीतल संत जन, नाम स्नेही सोये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, शील वंत जानो सोये।।

1298 नाम वंत जग में मिलें, ध्यान वंत ना कोये।
जाका गुरू सांचा, पार तराये सोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन पूर्ण सतगुरू उतरे ना पार कोये।।

1299 जिस क्षण सूं नाम दात का दान लिया, जुड़ गई नाड़ी ज्ञान की ।
हर साधक हंसा बना, प्यारो जानो महिमां सतगुरू सांचे नाम की।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, महिमां जानो सार नाम महान की।।

क निरालंभ राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोये।
जो सुख साधु संतन संग में, सो निज धाम ना होये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संतन संग की महिमां महान होये।।

1300 सतगुरू निरालंभ राम दोनों खड़े, काके लागूं चरणी।
सदके सतगुरू अपने, अमृत सब्द दियो साहिबन शरणी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर नाम पाओ संतन शरणी।।

1301 सबके लिये सब प्यारे नांहि, अपने लिये लगते प्यारे।
आत्म के लिये सबहि प्यारे, आत्म सुरति सूं सबै प्यारे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म की महिमां अति न्यारी।।

1302 जैसे कस्तूरी गंध मृग नाभि, खोजत मूड़ फिरे चौगाना।
वैसे व्याकुल होय मनहि मन सींचे, यह गंध कहुं कहां समाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चंचल मन का चहुं ओर ठिकाना।।

1303 सतगुरू प्रताप निज रूप दिखानो, सो आनंद नांहि जात बखाना।
कहें साहिब सुनो भाई साधो, उल्टि कौ आप में आप समाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग सूं उल्टे जा आप समाना।।

1304 सत सब्द की सुरति सूं, छूटे मन तरंग क्लेश।
जाको ह्रदय सब्द बसा, तिन पाया निज देस।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, संतन सब्द में ही निज देस।।

क सुरति के दण्ड से घेर मन पवन, फेर उल्टा चले।
धर और अधर विच ध्याण लावे, कहें संत वो निर्भय हुआ।
भव सागर तज पार हुआ, जन्म मरन सूं मुक्त हुआ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सूं जीव मन मुक्त हुआ।।

1305 पांच सब्द काल सरूपा, ताके आगे नाम अनूपा।
साहिब भक्ति आधार, अमृत सब्द सत्त–नाम अनूपा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अमृत सब्द है नाम अनूठा।।

1306 साधना सुरति सूं प्राण ऊपर उठें, तन नांहि पर है निज रूप आभास।
प्राणों संग साथ सुन्न में भी आभास, अपना आप नष्ट होत आभास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान मिटे तो होत आभास।।

1307 आपा खोवे आप को चीन्हें, तब चढ़े सुरति परवान।
निज रूप में आ गया, निज की हुई पहचान।
मन मान ये बह गया, अब हुई निज पहचान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान मिटे तो होत निज पहचान।।

1308 चेतन सत्ता हंसा कहावे, मैं हूं अनुभव है मान।
मन मान जब दोनों गये, अब केवल हंसा जान।
ये भेद वै हूं जी देते हैं, साहिबन अंश हंसा जान।।

1309 जड़ चेतन है ग्रंथी पड़ गई, यद्यपि छूटत कठिनाई।
आत्म तत्व से पल पल दूर है, पाखण्ड छूटे कठिनाई।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू मिलें तो पाखण्ड छूटे भाई ।।

1310 जड़ चेतन की उरझि गांठ, ये तो सुरझत नहीं सुरझाई।
बिन सतगुरू साहिब कृपा के, कबहु सुरझत नहीं सुरझाई।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू कृपा सूं सब काम सुलझ जाई।।

1311 तीर्थ व्रत आचार विधि, जप तप आदि उपझाई।
ज्युं ज्युं करन यत्न छूटन को, त्युं त्युं होत दृढ़ताई।
ये भेद वे हूं जी देते है, आपे ही आप को बांध्यो जग आई।।

1312 कहें साहिब नलनी के सुगन, तोहि कवने पकरो।
पामर भेद ना जाने भक्ति, नाचे मौज करे।
ये जग मिठा अगला किन दीठा, भक्ति मूर्ख हो करे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जागा ही कोई भक्ति करे।।

1313 सुर दुर्लभ मानव तन पाया, श्रुति पुराण सद ग्रन्थन गाया।
साधन धाम मोक्ष का द्वारा, जोहि ना पाय परलोक संवारा।
सुध कर हंसा संत चले निज देस, दुखी रह गयो संसारा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन संतन असहाय संसारा।।

1314 जमना मरना, असहनिय कष्ट पीड़ा का कारण।
पावें नर्क से अधिक पीड़ा, बारम्बार जन्म का कारण।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सुध कर हंसा माया आवागमण का कारण।।

1315 कौन कौन सुख तीन लोक में, माया लियो भरमाये।
ये दुख का असीम सागर है, मोह लिया भरमाये।
देवता भी ना सके पा, मन ने लिया भरमाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन लिया सबै भरमाये।।

1316 कौटिन जन्म का संताप था, सतगुरू पल में दियो मिटाये।
गुण ना देखे अवगुण ना देखे, निज हंसा दियो बनाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू ही साहिबन महिमां गायें।।

क भृंगा सब्द हो जेहि पासा, सोहि जानो सतगुरू धर्म दासा।
चरणों में सर रख दें, पल में साहिबन पासा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू संग साहिबन वासा।।

1317 सतगुरू को कीजिये दण्डवत, कौटि कौटि प्रणाम।
कीट ना जानें भृंग को, सतगुरू करें आप समान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सतगुरू महिमां जान।।

क सब धरति कागत करूं, लेखनि सब बनराये।
सात समुंद की मसि करूं, सतगुरू गुण लिखा ना जाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, साहिब महिमां भाखी ना जाये।।

1318 सोई रूप निःतत्व है, नाम ताहि कर सार ।
देह नाम तो सब जपे, नाम विदेह हमार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विदेह नाम की महिमां अपार।।

1319 चिंता तो सब हंसा तारन की, और कुछ ना चिंता दास की।
दिन रात महिमां गाऊं साहिबन की, बांटू दात निजधाम की।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार दात दर्शाये महिमां निजधाम की।।

1320 साहिबा, जो विदेह नाम की महिमां जानी।
ऐसी दुनियां भई दिवानी, भक्ति भाव नांहि भूजे जी।
कोई आवे है दुख का मारा, हम पर कृपा कीजै जी।
कोई आवे तो दौलत मांगे, भेद रूपैया लीजै जी।
कोई करवावे ब्याह सगाई, सुनत गुसांई रीझै जी।
सांच का कोई ग्राहक नांहि, झूठे जगत–पति जै जी।
कहिन साहिब सुनो भाई साधो, अंधों का क्या कीजै जी।
पूर्ण सतगुरू सूं, सतगुरू ही मांग लीजै जी।
तो शेष सब, अपने आप आ जाएगा जी।
त्रिलोकि माया सूं, तूं पार हो जायेगा जी।
ये भेद दिया, परमहंस वे नाम प्यारे ने जी।

क चिंता तो सार नाम की, और ना चितावे दास।
जो कुछ सार नाम बिन, सोई काल की फांस।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सार नाम सूं उतारो माया फांस।।

1321 पल्ले खर्च ना बांधते, जो देवें सो खाये।
सतगुरू ताके पीछे फिरे, मत भूखा रह जाये।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, इस पल में साहिबन पायें।।

क सतगुरू समान दाता नांहि, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की संपदा, सो सतगुरू दीन्हीं दान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू महिमां तूं जान।।

1322 सुरति समावे सार नाम में, सब जग सोवत होये।
अंदर की आंख सूं दर्शन करें, अंदर में सब सोये।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार सुरति सोये जीव जगाये।।

क चाह मिटी चिंता मिटी, मनवा बे परवाह।
वह ही सब सह रहा, जिस की नहीं चाह।
ये भेद कबीर जी देते हैं, लोभ मोह की त्यागो चाह।।

1323 आदि नाम निज मंत्र है, और मंत्र दे सब छोर।
कहे साहिब सार नाम बिन, जल जल मरा शरीर।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार नाम ही तजाये माया पीर।।

तह एक सुरति लाखों तमन्ना, उसपे भी और हवस लिए।
फिर ठिकाना है कहां, उसको बिठाने के लिए।
ये भेद तुलसीदास (हाथरस) जी देते हैं, जग तजो सुरति के लिए ।

क बहु बंधन से बांधेया, ईक बैचारा जीव।
जीव बैचारा क्या करे, जे ना छुड़ावे पीव।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू जागें ना जीव।।

1324 जड़ चेतन है ग्रंथी पड़ गई, यद्यपि मिथ्या छूटत कठिनाई।
जड़ चेतन की उरझि गांठ, ये तो सुरझत नहीं सुरझाई।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, आत्म मन वश जा भरमाई।।

1325 सगुर्ण जाल में फंसा संसारा, मन माया का खेल ये सारा।
वे नाम सेवक सतगुरून के, जिनमें पायो सतपुरूष प्यारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मान जाये जागे सच्चा प्यारा।।

1326 सुनो जग प्यारो बात हमारी, तुम नांहि तीन लोक के वासी।
यम प्रवेशा जहां सपने नांहि, निज तां के हम हंसा वासी।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, तीन लोक तजो चलो देस अविनासी।।

1327 जब तक ना मिले सतगुरू सांचा, तब तक बने ना बात।
चाह चिंता आशा तृष्णा जब ही मिटे, अमर सब्द दात जब पास।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, चिंता नहीं जब अमर सब्द हो पास।।

1328 काली कम्बली रंग ना चढ़े, कौटिन करो उपाये।
सच्चे नाम बिन मन कचरा ना मिटे, लख करो उपाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन नामे ना तरे चाहे लख करो उपाये।।

1329 मांगे मिलता नांहि, सुरति सूं देख खड़ा दास बन साथ।
वह तो प्रेम पुजारी सदा, सब कुछ सतगुरू हाथ।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, उस को पता हर बात।। स

1330 बिन मांगे सब कुछ मिलता, जब हो सतगुरू पर विशवास।
वह तो देवनहार है सदा, तेरी जग पे आस।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू आस सूं मिटे जग आस।।

1331 घर में रहूं तो भक्ति करूं, ना कर करूं वैराग।
वैरागी हो बंधन करे, ताका बड़ा आभाग।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिन सब्द कैसा वैराग।।

1332 निर्मल सतगुरू नाम सूं, निर्मल साधक जान।
कोयला उझला ना हो सके, व्यर्थ सौ मन साबुन जान।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, साधक निर्मल सज्जन सुजान।।

1333 समर्पण हो सतगुरू स्नेही, सतगुरू निर्मल शांत सुजान।
बिन सतगुरू कृपा निर्मल नांहि, सार सब्द में धरो ध्यान।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार सब्द महान।।

1334 तीर्थ व्रत करि जग मुआ, शीतल जल में श्नान।
सतनाम जाने बिना, निज घर में ना स्थान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सत्य नाम की महिमां महान ।।

1335 साहिब जो जेता आत्मां, तेता जान सालिग्राम।
आत्मवान को पूजिये, नांहि पाहन सूं काम।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतपुरूष अंश की महिमां जान।।

1336 हर कण में साहिबन वास है, प्रेम का बाण महान।
सेवा प्रेम करूणा आदर, प्रेम के अंग तूं जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म की महिमां महान।।

1337 पाहन का ही देहरा, पाहन का ही देवा।
पूजनहारा अंधा सोया, क्युं करि माने सेवा।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, अंधे का भाग अंधियारा होया।।

1338 ऊंचा पानी ना टिक सके, नीचे ही ठहरायें।
नीचा होय सो भरि पियो, ऊंचा प्यासा जाये।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, फल आवे तो झुक जाये।।

1339 सहज मिले सो दूध है, मांगी मिले सो नीर।
अशिष्टता पूर्वक पाना नीर का, रक्त समान उसे जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अतिथि का कर सम्मान।।

1340 अन्न मांग उत्तम कहा, माध्यम मांग कर लें।
कहें साहिब निकृष्ट सूं, मांग कर कछु ना लें।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, साधक बिन मांगे सब पा लें।।

1341 फल कारण सेवा करे, निस दिन जांचे राम।
कहें साहिबन सेव नांहि, चाहे चौगुणा दाम।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिन मांगे ले लो नाम।।

1342 साहिब के दरबार में, कमी काहु की नांहि।
बंदा मौज ना पावही, चूक चाकरी मांहि।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, दुख निज भूल के मांहि।।

1343 नौं कदम बनावे खुद मंजिल हैं, उनमें ही मान महान।
प्रेम पग की बात करो, सार नाम की महिमां महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बिन बनें ना काम।।

क मुक्ति संत नांहि चाहते, नांहि पदार्थ चार।
नांहि पदार्थ चार प्यारो, मुक्ति संतन की चेरि।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, संत ही कांटें काल की बेरि।।

1344 मुक्ति संत नहीं चाहते, नांहि चाहें जग सूं मान।
उनकी सुरति प्रेम मांहि, सुरति सूं लेवें साहिब सतनाम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति सूं ध्यावें सार नाम।।

क साहिब खड़े बाज़ार में, मागें सब की खैर।
ना काहु से दोस्ती, नां किसी से बैर।
ये भेद कबीर जी देते हैं, नाम की बांटें खैर।।

1345 वे नाम खड़े जग बाज़ार में, बांटें नाम की दात।
सोया जग लेवे नांहि, जो लेवे सो जग सूं पार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, शरणार्थी को करें भव पार।।

1346 जीव मन भक्ति ना त्यागे, मुड़ मुड़ जाये यम द्वार।
जा ने पाई सतगुरू शरणी, छूटा जन्म मरन जंझाल।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू काटें त्रिलोकि जाल।।

क अठवन पठवन दृष्टि ना लागे, उल्टे तहि घर खाई।
जादू यंत्र युक्ति ना लागे, शब्द के ढाई बाण।
ये भेद साहिब जी देते हैं, वैर विरोध से घर जल जाई।।

1347 सार सब्द शुद्ध दात है, मेरा मत है भृंगा मत।
सार सब्द सुरति में धारो, काल का छूटे पथ।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, चलो सत के पथ।।

1348 तूं नाम सुमर तर जायेगा, नांहि तो लख जन्म पछताये।
जो नाम जहाज को पाते हैं, पल में सतगुरू के हो जायें।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिछड़ों को सतगुरू आन मिलायें।।

1349 सतगुरू पूर्ण साहिब हैं, सतपुरूष उनको जान।
बिन सतगुरू शरणी के, जीप भरमी ले जान।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू महिमां अति महान।।

क सतगुरू मानुष कर माने, चरणामृत को पान।
वे नर नरके जाऐंगे, जन्म जन्म होये स्वान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू शरणी महान।।

क सतगुरू आज्ञा ले आवहि, सतगुरू आज्ञा ले जाही।
कहें साहिब तां दास को, तीन लोक डर नांहि।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू आज्ञा मांहि।।

1350 सतगुरू आज्ञा में रहें, सतगुरू तारनहार।
कहें वे नाम ऐसे गुरूमुख का, सतगुरू करें उद्धार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू तारन हार।।

नोट – भक्ति को साहिब जी ने तीन भागों में वर्णित किया है :–

1 सगुण भक्ति – वर्णात्मिक शब्द
2 निर्गुण भक्ति – धुणात्मक शब्द
3 परा भक्ति – मुक्तात्मिक सब्द (निःअक्षर सब्द)

निःअक्षर सब्द :– जो पढ़ा, लिखा व बोला नहीं जा सकता।

प सुन्न गगन में सब्द उठत हैं, सो सब बोल में आवें।
निःसब्दी वह बोले नांहि, सो संत सब्द कहावें।
ये भेद पल्टु जी देते हैं, निःअक्षर सब्द साहिब समावे।।

1351 अक्का नाम, कैसे कौ जानी।
लिखा ना जाये, पढ़े ना वाणी।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, अक्का नाम सतपुरूष जानी।।

1352 कलयुगी साधु कहे, सबै हम जाना।
झूठा शब्द, मुख करि बखाना।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिरला ही साहिबन जाना।।

1353 जिन अंदर विष अमृत, रहत ईक संगा भाई।
काया गढ़ जीतो मेरे भाई, ये सब विष काल सूं आई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म सुरति सतलोक सूं आई।।

1354 जग की रीति देखो न्यारी, साधो गुरू अनेक।
पेट मान के कारणे करें गुरूआई, उतरे पार ना एक।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग रीति सूं पार ना कोई एक।।

1355 भक्ति साहिब की अति बारीक, बिन शीष सौंपे नांहि पाई।
नाचना गाना ताल पीटना, खेल रांडिया भक्ति नांहि भाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम भक्ति जानो मेरे भाई।।

1356 निंदा निंदा सब कहें, निंदा ना जाने कोये।
मान का ये अंग है, मुझ सूं बड़ा निंदक ना कोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन मान सूं निज लें छुड़ाये।।

1357 पारस सुरति सतपुरूष दात, संतन संग कमाण।
भृंगा मता तांहि आवे, जे सतपुरूष सब्द महान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पारस सुरति महान।।

1358 पतिव्रता मैली भलो, काली कूहड़ कुरूप ।
पतिव्रता के रूप पर, वारूं कोटि स्वरूप ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, प्रेम रूप महान।।

1359 जग सोया ईक संग रहे, आशिक रहन अलग।
जागा सोयों संग कैसे रहे, सच्ची राह अलग।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, विरह प्रेम सूं जाग।।

1360 सतगुरू को कीजै दण्डवत, कोटि कोटि प्रणाम।
कीट ना जाने भृंग को, सतगुरू करें आप समान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, भृंगामत ही सच्चा जान।।

क सात द्वीप नव खण्ड में, सतगुरू सूं बड़ा ना कोये।
करता करे ना करि सके, सतगुरू करे सो होये।
सब धरति कागद करूं, लेखनी सब बन राये।
सात समुंद मसि करूं, सतगुरू गुण लिखा ना जाये।
कबीर जी की महिमां कहि, लिखी ना जाये।।

1361 सात द्वीप नौं खण्ड में, तारणहार ना कोये।
सतगुरू चरणन जो रजे, सोहि पार जा होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिलोकि सूं पार सबै होये।।

1362 अंध जग सांच ना पा सके, झूठ में रहे समाये।
जग में नर सब मर चुके, किस को लूं समझाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ये नर पार कैसे जायें।।

क जा का गुरू अधर में, चेला भया निरंध।
अंधे को अंधा मिला, दोनों कूप परंत।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू मिटावे जग द्वन्द।।

1363 नर मोह में अंधा भयो, बिन दात सब अंध।
बिन सतगुरू मिटे नांहि, जग मोह का द्वन्द।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू मिटावें द्वन्द।।

1364 बहुत गुरू हैं इस जग मांहि, हरें दुख कोऊ का नांहि।
ताते प्रथम परिक्षा कीजै, ता पीछे गुरू दीक्षा लीजै।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, गुरू की कर पहचान लीजै।।

1365 भक्ति स्वतंत्र सकल गुण खानी, बिन सतगुरू ना पावत प्राणी।
प्रेम दया क्षमा विवेक, विरह वैराग भक्ति के बाण।
ये भेद सतगुरू जी देते हैं, प्रेम भक्ति का प्राण।।

1366 क्या हुआ वेदों के पढ़ने से, पाया ना जो भेद।
आत्म जाने बिना, ज्ञानी कोई कहलावे नांहि बिन जाने भेद।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज का जानो तुम भेद।।

1367 जगत भगत में वैर है, चारों युग प्रमाण।
चारों युग प्रमाण, वैर यूं मूल भलाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग तजन में जीव भलाई।।

1368 पाप पुण्य में वैर, अग्नि और पानी वैर।
संतन यहि विचार, निज स्वार्थ ही मूल वैर ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्वार्थ तजते ही पाओ खैर।।

1369 शिव भक्ति जो करे, ऋद्धियां सिद्धियां भरे भण्डार।
मरने पर भक्त जन पावें, कैलाश पर्वत वास संग रास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, तहां ना पावें पूर्ण मोक्ष निवास।।

1370 शिव साधना की ये गति, शिव है भाव का रूप।
बिन समझे जग सबै, परे भ्रम के कूप ।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू दर्शन ही सच्चा रूप।।

1371 नरक वास में पुनिः पड़े, ऐसे शिव की मौज।
कहें साहिब विचार के, मिटे ना यम की फौज।
ये भेद साहिब जी देते हैं, सच्ची भक्ति की कर लो खोज।।

1372 हरि हरि नाम विष्णु का होई, विष्णु विष्णु भजे सब कोये।
विष्णु ही को कर्ता बतावे, कहो जीव कैसे फल सूं बच पावे।
ये भेद साहिब जी देते हैं, विष्णु भक्ति बैकुण्ठ ही ले जावे।।

नोट :– निर्गुण भक्ति की पांच मुद्राएं, साहिब वे नाम जी लिखते हैं :–

1373 मन माया निरंकार द्वारा, कोई ना पाया पारा।
बिन सतगुरू शरणी जाये, छूटे ना मृत्यु लोक संसारा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू छुड़ाये त्रिलोकि पसारा।।

क प्रथम पूर्ण पुरूष पुरातन, पांच शब्द उच्चारा ।
सोहं सत ज्योति निरंझन, कहहें ररंकार औंकारा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निरंकार की महिमां गाये संसारा।।

1374 निरंकार भेद वै हूं जी देते हैं, सब वेदों का सार।
पूर्ण मोक्ष सूं काम ना, है जन्म मरन निज सार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निरंकार भंक्ति सूं मिले ना मोक्ष द्वार।।

1375 ज्योति निरंझन चाचरी मुद्रा, सो है नैनन मध्य मांहि।
ताहि को जाना गोरख योगी, महा तेज है ताहि।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, ब्रह्मचर्य जीवन जहां योगी तहां।।

1376 योग ध्यान में धीरता आवे, महां तेज को पाएं।
जहां भौग तहां योग विनाष, धीरता को खा जाए।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सहज मार्ग सूं निजघर जाएं।।

1377 शब्द ही सर्गुण शब्द ही निर्गुण, शब्द ही वेद बखाना।
शब्द ही पुनिः काया के भीतर, कर बैठा अस्थाना।
जो जाकि उपासना कीना, उसका वही ठिकाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सर्गुण निर्गुण देव लोक ठिकाना।।

1378 सत्त सब्द मूल मंत्र है, चिंता देवे मार।
निःअक्षर ही ये मंत्र है, सब्द मुक्ति सार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सब्द सूं उतरो भव पार।।

क शब्द औंकार भूचरि मुद्रा, त्रिकुटि है अस्थान।
व्यासदेव ताको पहचाना, चांद सूर्य सो जान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, भूचरि मुद्रा का दें ज्ञान।।

1379 व्यास देव करें ध्यान आज्ञा चक्र में, नैनों में दीदार प्यारा।
ध्यान ही वेद शास्त्र कहत हैं, ध्यान सूं मिले निरंकार प्यारा।
ये भेद साहिब जी देते हैं, नैनों में मिले निरंझन प्यारा।।

1380 शिव गोरख सो पार ना पाए, और किस की बात।
कर दीदार नैनन महल में, ध्यान वेदों की बात।
ये भेद साहिब जी देते हैं, अंदर ध्यान की बात।।

1381 आज्ञा चक्र के ध्यान से, सभी द्वार खुल जाएं।
ये सब मान का खेल प्यारे, आत्म जाग ना पाए।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सूं बात बन जाए।।

1382 इंगला विनसे पिंगला विनसे, विनसे सुश्मिन नाड़ी।
कहें साहिब सुनो हे गोरख, कहां लगाई हो ताड़ी।
मृत्यु नाश करे सब नाड़ी, तब कहां लगाई हो ताड़ी।
कहें साहिब सुनो मेरे प्यारो, सुरत कमल लगाई हो ताड़ी।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू लोक महिमां अति प्यारी।।

1383 दुर्लभ मानुष जन्म है प्यारे, मिले ना बारम्बार।
पूर्ण सतगुरू शरणी जाके, सार सब्द सूं पार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, भव पार का राज़ सतगुरू द्वार।।

ग गोरख पूछे साहिब जी सूं, कबतै भयो वैरागी।
अति काल से ध्यान मुद्रा में, साहिब जी कबतै भयो वैरागी।

साहिब जी उतर हैं देते :–

क हमरी आदि अंत सुधि लागी, नाथ जी हम तब से भये वैरागी।
जबका तो हम योग उपासा, तब का हूं वैरागी।
धुंधुंकार आदि को मेला, नाहीं गुरू नाहीं चेला।
जब का हम योग उपासा, तब से फिरूं अकेला।
ये भेद कबीर जी देते हैं, वैराग योग सूं भरमाये गुरू चेला।।

1384 बार बार जन्म क्यूं पायो, मृत्यु मिले हर बार।
निरंकार अति सतायो, जीव रोवे ज़ारो ज़ार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, त्रिलोकि में दुख बेशुमार।।

1385 मानुष जन्म अति दुर्लभ प्यारे, मिले ना अगली बार।
तरूवर ज्युं पात्ति झाड़े, बहुरि ना लागे डार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, मानुष जन्म ही पूर्ण मोक्ष आधार।।

1386 मन माया तो एक हैं, माया मनहि समाई।
तीन लोक संशय पड़ी, काहे कहुं समझाई।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निजघर कैसे जाई।।

1387 चल मानव छोड़ कर, त्रिलोकि माया जाल।
बिन सतगुरू शरणी पाये, छूटे ना जंझाल।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू ही काटें माया जाल।।

क चल हंसा सतलोक को, छोड़ो ये संसारा।
ये संसार काल है राजा, कर्मन जाल पसारा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, छोड़ दे काल पसारा।।

1388 तुम को बिसरी सुध निजघर की, महिमां अपनी भुलाई।
चर्म दृष्टि का कुलवा देके, चौरासी तोहे भरमाई।
ये भेद साहिब जी देते हैं, निज पहचान दें कराई ।।

1389 पतझड़ तरूवर पात्ति झाड़े, दूर चली उड़ जाई ।
अब की बार चूक गये तो, चौरासी में रह जाई।
ये भेद वै हूं जी देते हैं, समय रहते घर ले जाई।।

1390 जिस सुरति में साहिबन वासा, वोहि शहनशाह।
जाकि सुरति ईच्छाओं से भरी, कैसे बने वो शाह।
ये भेद वै हूं जी देते हैं, जो जन तृष्णा त्यागे वोहि शहनशाह।।

क सतगुरू समान दाता नांहि, याचक समान शिष्य।
तीन लोक की संपदा, गुरू को दी जो दान।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन मांग सतगुरू करलें आप समान।।

1391 सतगुरू समान दाता नांहि, याचक सारा संसार।
जग माया की मांग ना करना, तांहि उतरे पार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिन मांगें करावें पार।।

1392 जो पल्ले खर्च ना बांधते, साहिबन देवें सो खाएं।
साहिबन हर पल संग रहें, मत भूखा रह जाए।
ये भेद साहिब जी देते हैं, बिन मांगे साधक सब पाए।।

क चिंता तो सतनाम की, और ना चितवे दास।
जाकि सुरति नाम बिन, सोहि काल के फांस।
ये भेद कबीर जी देते हैं, नाम ही काटे काल की फांस।।

क चाह मिटी चिंता मिटी, साधक बे परवाह।
वो ही प्यारा साधक है, जिसकी मिटी हर चाह।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन ईच्छा सुरति सतगुरू चरणन चाह।।

1393 आशा तृष्णा जाहि तजि, सतगुरू सुरति जा समाऐ।
सतगुरू सूं जब प्रीत लागे, हंसा बन निजघर जाऐ।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू प्रीति सूं पार जाऐं।।

त तुलसी जग में दोऊ बड़े, ईक नाम ईक दाम।
नाम मिलावे पीव से, दाम करे जग काम।
ये भेद तुलसीदास जी देते हैं, नाम सूं बनें सब काम।।

1394 साहिब भक्ति जो कोई करे, भव ते छूटे जन्म ना होई।
निःअक्षर जो जन भजते, सोहि पार तर जाई।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निःअक्षर सूं पार तर जाई।।

क जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाए।
सुरति समानी सब्द में, वाको काल ना खाए।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सुरति की महिमां ले गाऐं।।

1395 जपा मरे अजपा मरे, राजा रंक सबै मर जाऐं।
जाकि सुरति सतगुरू लागै, त्रिलौकि सूं तर जाऐं।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सुरति सूं भव पार कर जाऐं ।।

क भक्ति स्वतंत्र, सकल गुण खानी।
बिन सत्संग, ना पावत प्राणी।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू संगत सूं तरें सब प्राणी।।

1396 सतगुरू भक्ति, सकल गुण खान।
सतगुरू कृपा सूं, सकल ज्ञान जान।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू सूं पाओ चहुं लोक ज्ञान।।

1397 बहुत गुरू हैं इस जग मांहि, सगुण शब्द का देवें दान।
सगुण शब्द सूं स्वर्ग मिले, मिले ना पूर्ण निरवान।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सगुण शब्द से ना कोई पाए निरवान।।

क सुर नर मुणि सब को ठगें, मन ही लिया अवतार।
जो कोई याते बचे, तीन लोक सूं न्यार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मूल सब्द करे मन सूं पार।।

1398 सुर नर मुणि को माया ठगे, चहुं ओर माया का पसार।
जो पूर्ण सतगुरू शरणी आये, वोहि उतरे भवजल पार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू शरणी सूं उतरो पार।।

क बाजीगर का बांदरा, ऐसा जीव मन साथ।
नाना नाच नचाईके, राखे अपने हाथ।
ये भेद कबीर जी देते हैं, आत्म पड़ी मन हाथ।।

1399 बाजीगर का बांदरा, दिखावे रंगबिरंगे नाच।
आत्म भूली निजरूप अपना, मन नचावे माया का नाच।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, मन वश आत्म करे माया नाच।।

1400 साहिबा ये मन लालची, समझे नांहि ग्वार।
भजन करन को आलसी, खाने को तैयार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, मन की व्यथा नां समझे ग्वार।।

1401 मन मुरीद संसार है, गुरू मुरीद कोई साध।
जो माने गुरू वचन को, ताका मता अगाध।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू शरणी साधक साध।।

1402 मनवा तो पंछी भया, उड़ी चला आकास।
उपर होते गिर पड़ा, फिर माया के पास।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, मन माया सूं जीव बेहाल।।

1403 मोटी माया सब तजें, झीनी तजी ना जाये।
पीर पैगम्बर औलिया, झीनी सब को खाये।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, मान काम क्रोध तजा ना जाये।।

1404 सतगुरू को साधक विष दे, जो गांठी हो दाम।
पूत पिता को मारसी, ये सबै माया के काम।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, लोभ लालच सबै मन के काम।।

1405 पंच तत्व के महल में, आत्म बंधे सकल संसार।
अपने बल छूटे नांहि, छुड़ावें सतगुरू छुड़ावन हार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, माया बंधन सूं करावें सतगुरू पार।।

1406 मन तो माया उपझे, माया त्रिगुण रूप।
पांच तत्व के महल में, बांधे सकल सरूप।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, तीन लोक तन मन माया रूप।।

क कोटि नाम संसार में, तिन ते मुक्ति नां होये।
मूल नाम जो गुप्त है, जाने बिरला कोये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मूल नाम सूं मुक्त दें कराये।।

ख मूल नाम है सब का भेदा, पावे जीव होये हंसा।
गुप्त प्रगट हम तुमसे भाखा, पिण्ड ब्रह्मण्ड के उपर राखा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, चोथे लोक की महिमां सतगुरू भाखा।।

ग मुक्त होय, सतलोक सदावे।
बहुरि ना हंसा, भवजल आवे।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू हंसा सतलोक सदावे।।

1407 पंच शब्द और पांचो मुद्रा, सोई निश्चय मान।
आगे पूर्ण पुरूष पुरातन, उसकी खबर ना जान।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, पंच शब्द से परे का भेद अति महान।।

1408 सिद्ध साधु त्रिदेवादि ले, पांच शब्द में अटके।
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मूंह लटके।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, पंच शब्द में योगी अटके।।

1409 चोथे लोक अस्थाना, भेद इसका कोई बिरला जाना।
जाके पास सार सब्द ज्ञाना, वोहि पाये सतलोक ठिकाना।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिन दात ना पायें निजघर पुराना।।

1410 हंसा बन निज लोक चलें, गगन गुफा में अजर झरे।
बिन बाजा झनकार उठे, समझि पर जब ध्यान धरे।
बिन तानत्रल यहां कमल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केलि करे।
बिन चंदा उजियारो बरसे, जहां तहां हंसा नज़र परे।
दसवें द्वार तारी लागी, अलख पुरूष जहां ध्यान धरे।
पर इसके आगे सतलोक, साहिब सतपुरूष वास करें।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, साहिबन संग जा वास करें।।

1411 परम पुरूष घट अगम अगोचर तार है, अगम तार से आगे।
उसके आगे कोन बतावे, सभी सब्द में पावें।
इसके आगे का भेद हमारा, जानेगा जानन हारा कोई।
कहे साहिब जानेगा सोई, जापर कृपा सतगुरू होई।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, पुरूष को जाने सतगुरू प्यारा कोई।।

1412 शब्द कहुं तो शब्दे नांहि, शब्दे हुआ तो माया मांहि।
सतलोक सब्द विदेई, जो प्रगटे सुरति के मांहि।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, आत्म हंसा सब्द के मांहि।।

नोट :– नाग भगवान अपनी पहचान देते हैं :–

1413 मैं सिरजऊं मैं मारऊं मैं जारऊं, बार बार जग में लाऊं।
जल थल नभ में रम रहा, मैंह निरझंन कहाऊं।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निरंकार की पहचान तोहे कराऊँ।।

1414 मैं ही मन मायारूप, तीन लोक में समाया हूं।
मैं ही आद्यशक्ति का पति, शरीरों का रचियता हूं।
मैं ही त्रिदेवों का पिता, आराध्य भी मैं हूं।
मैं ही वायु ध्वनि, वेद में शब्द औंकार हूं।
मैं ही वेदों में परमेश्वर, पंच तत्व आधार हूं।
मैं ही मन मैं ही माया, सृष्टि से परे ररंकार हूं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, निरंकार की महिमां ले जान तूं।।

1415 मैं ही साकार में, निराकार में विद्यमान हूं।
मैं ही आलोकिक ज्योतिसरूप, सौर मंडल में व्याप्त हूं।
मैं ही सप्त आकाश में, मैं ही सप्त सागर पाताल हूं।
मैं ही सृष्टि रचना, लघु प्रलय महाप्रलय आधार हूं।
मैं ही सकल सृजनहारा, सृष्टि् का करतार हूं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, निरंकार का महाविस्तार बतलाता हूं।।

1416 मैं ही सुन्न मण्डलों से परे, घनघौर अंधकार हूं।
मैं ही आत्म शक्ति का बंधन, जीवों में कर्म विधान हूं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, कर्म बंधन की फांस बतलाता हूं।।

1417 मैं ही माया संग सरीरों में, आत्म वरण और ज्ञान हूं।
मैं ही जीव आत्मांओं का गुण, अवगुण की पहचान हूं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, गुण अवगुण की पहचान दे देता हूं।।

1418 मैं ही हूं शुभ अशुभ, पाप पुण्य का सृजक हूं।
मैं ही तीर्थ व्रत यज्ञ जप तप, कर्म निर्माता हूं।
मैं ही धर्म अधर्म जीवन में, कर्मों का विख्याता हूं।
मैं ही बैकुण्ठ और स्वर्ग, नर्क कर्मफल प्रदाता हूं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, पाप पुण्य फल पहचान कराता हूं।।

1419 मैं ही त्रिकुटि मध्य बसा, दसवें द्वार विराजत हूं।
मैं ही एकादश अधर द्वार, सतगुरू ध्यान में बाधक हूं।
मैं ही मन, आत्म मोक्ष में भ्रम प्रदाता हूं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, निरंकार उद्देष्य राज़ बतलाता हूं।।

नोट :– लघु प्रलय के दृष्टांत सतगुरू श्री वे नाम परमहंस जी बताते हैं :

1420 लघु प्रलय जब आती है, छोटी छोटी घटनायें घटती हैं।
चारों ओर महामारियां फैलें, लाखों जीव मर जाते हैं।
रोग ग्रस्त गृहस्थी हो जाते, पवन पानी अशुद्ध हो जाते हैं।
महाकाल का रूप तो देखो, जीव भंयकर मोत को पाते हैं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, लघु प्रलय व्यथा बताते हैं।।

नोट :– प्रलय के दृष्टांत सतगुरू श्री वे नाम परमहंस जी बताते हैं :–

1421 प्रलय काल आगमन में, पृथ्वी नष्ट हो जाती हैं।
सात समुंद्र लहरें उठतीं, चहुं ओर भर आती हैं।
ये लहरें पृथ्वी को निजसंग लेकर, महां विनाष ले आती हैं।
जीवन पल में करें ये नष्ट, पृथ्वी जल जा समाती है।
सूर्य चंद नक्षत्र तारे, प्रलय में ना नष्ट होते हैं।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, प्रलय के दृष्टांत बताते हैं ।।

नोट :– महां प्रलय के दृष्टांत सतगुरू श्री वे नाम परमहंस जी बताते हैं :

1422 चारों तत्व पृथ्वी जल वायु अग्नि, महां प्रलय में होते नष्ट।
केवल आकाश तत्व है रहता, देवी देव निरंकार ना होते नष्ट।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, महां प्रलय में पंचो तत्व हों नष्ट।।

नोट :– विराट प्रलय के दृष्टांत सतगुरू श्री वे नाम परमहंस जी बताते हैं :–

1423 विराट प्रलय निगल रही, पंच तत्व भी हो जाते नष्ट।
चार गये महा प्रलय में, अब आकाश भी होता नष्ट।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, काल पुरूष होवे ना नष्ट।।

1424 विराट प्रलय में, आकाश तत्व है जब जाता।
सातवें आकाश तक, तीन भी नष्ट हो जाता।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, आद्यशक्ति त्रिदेव निरंकार रह जाता।।

1425 त्रिकुटि उपर दसवां द्वार, सुन्न में वासा निरंझन आप।
सातों महां सुन्न से नीचे, सुन्न में आप ही आप।
पुनः पुनः सृष्टि् का सिरजन हारा, काल पुरूष है आप।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, तीन लोक रचियता आप ही आप।।

1426 सहज पुरूष तक जेतक भाखा, ये रचना प्रलय तक राखा।
आगे अक्षय लोक है भाई, आदि पुरूष यहां आप रहाई।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, निरंझन तेहि राखे भरमाई।।

क हे हंसा तूं अमर लोक का, पड़ा काल वश आई।
तीन पांच पच्चीस का पिंझरा, जा तोहि रहा भरमाई।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मन है राजा जग दिया भरमाई।।

1427 हंसा निरंकार वश पड़ी, मन रूप करावे काज।
भेद ना देवे हंसों को, हंसों पर करता राज।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, सतपुरूष का ना देवे राज।।

1428 काल निरंझन सृष्टि् का, परम पुरूष भगवान।
मन माया काल का रूपा, हंसों का बना भगवान।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, तीन लोक का राजा प्रधान।।

1429 मन माया तो एक हैं, माया मन सूं आई।
तीन लोक इन दो का राज़ है, हंसा गया भरमाई।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, मन लिया हंसा भरमाई।।

1430 सोहंग से वायु सत्त से पृथ्वी, ज्योति निरंझन से अग्नि प्रकटाई।
ररंकार से आकाश प्रकटा, औंकार से जल तत्व प्रकटाई।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, पंच तत्व सूं हंसा भरमाई।।

1431 छटे योगेश्वर गोरख नाथ हैं, चाचरी मुद्रा में ध्यान लगाये।
नैनन मध्य ध्यान रोक कर, ज्योति निरंझन में सुरति रमाये।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, गोरख नैनन मध्य निरंझन पायो।।

1432 व्यास देव भूचरी मुद्रा सूं, आज्ञा चक्र में ध्यान लगायो।
औंकार शब्द का ध्यान लगाया, जल तत्व सिद्ध कर स्वर्ग पायो।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, औंकार शब्द त्रिलोक की सैल करायो।।

1433 शुक्रदेव अगोचरि मुद्रा सूं, शब्द धुन भंवर गुफा में ध्यान लगायो।
सोहंग शब्द अनहद् ध्वणि सुनी, शब्द लोक में वासा पायो।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, साधक एंकात धर धुन में ध्यान लगायो।।

1434 राजा जनक विदेही उनमुनि मुद्रा सूं, सहशास्त्र चक्र में ध्यान लगाओ।
सत्त शब्द का सिमरन करके, विदेही बन देव लोक सूं पार हो जाओ।
ये भेद साहिब वै हूं जी देते हैं, विदेही बन सुन्न लोक को पाओ।।

1435 ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा खेचरी मुद्रा सूं, ररंकार शब्द ध्यान लगायो।
पवन उत्पन्न कर पवन योगी कहायो, त्रिलोकि में स्वतंत्र आयो जायो।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, त्रिदेव ब्रह्मण्ड में स्वतंत्र आयो जायो।।

1436 सातों योगेश्वर निरंकार प्यारे, वे हूं जी योगेश्वर पद था पायो।
वे हूं जी दशंम द्वार सूं निकल कर, सकल ब्रह्माण्ड सैल करि आयो।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, ब्रह्मण्ड सैल निरंकार सत्ता में पायो।।

1437 निरंकार भक्ति में, सर्वोत्तम स्थान था पायो।
निरंकार ने वे नाम को, सतपुरूष को सौंप निज फर्ज निभायो।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निरंकार निस्वार्थ भगतों संतन शरणी पहुंचायो।।

1438 सगुण निर्गुण भक्ति सूं, कुछ सुख जीवात्मां पा जाये।
चार प्रकार की मुक्तियों से, त्रिलोकि में ही रह जाये।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निरंकार भक्ति सूं आवागमण ना छुट पाये।।

1439 जो मानुष शुभ कर्म करे, किसी को कष्ट ना देत।
दान पुण्य कर्म में लागे, श्रद्धा कर्म काण्ड करे निज हेत।
पित्र लोक अधिकारी बन, हज़ारों वर्ष अति सुख लेत।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, कर्मयोगी पित्रलोक सुख लेत।।

1440 जो मानुष शुभ कर्म करे, मांस शराब नशे सूं कोसों दूर।
आजीवन ईक देवी देव की, करें उपासना श्रद्धा भरपूर।
देव लोक में स्थान पायो, सालोक्य लोक मुक्ति द्वार।
कर्मों का फल भुगताई कर, फिर लोट आये काल द्वार।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, देवी देव गमन ज्ञान अल्प मुक्ति द्वार।।

1441 स्वर्ग लोक तीन प्रकारा, नीचे मध्यम और ऊपारा।
नीचे सुख सोहे मध्यम मन भावन, अति सुख ऊपारा।
स्वर्ग नरक में कईं धाम, चेतन मूर्तियां देवें सुख अपारा।
ये भेद साहिब वे हूं जी देते हैं, ये सुख हैं मन माया आधार।।

1442 प्रशन साधक का, उत्तर ईष्ट सूं मिले उसी पल।
स्वर्ग समान मंदिर आयें, संसार में सुनें बात उसी पल।
बात बने जब साधक अंदर, ध्याण सूं पाओ उत्तर उसी पल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, ईष्ट रूप में निरंकार सुने उसी पल।।

1443 सतगुरू साहिब दोऊ खड़े, काको करूं प्रणाम।
सदके जाऊं सतगुरू अपने, जिन साहिब मिलायो आन।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर पल करो सतगुरू प्रणाम।।

क सतगुरू साहिब दोनों खड़े, काके लागूं पांव।
बलिहारी सतगुरू अपने, जिन साहिब दियो मिलाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जिन साहिबन दियो मिलाये।।

1444 सतगुरू सतपुरूष अरू शिष्य मिल, सुरति हो गई ईक।
तीनों मिल त्रिवेणी बनी, फिर ईक की ईक।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, त्रिवेणी बने तो धारा ईक।।

1445 जब लग नाता जात का, तब लग भक्ति ना होये।
नाता तोड़ सतगुरू भजें, भक्ति कहावे सोये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संग प्रीत लगायें।।

1446 स्वादिष्ट भोजन करो ग्रहण, नरम बिस्तर पे सोना ले जान।
सतगुरू चरणी ध्यान, कम खाना गुरू चरणन विश्राम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, स्वाद तज सतगुरू चरणी दो ध्यान।।

1447 कम खाना गुरू चरणी ध्यान, सतगुरू शरणी विश्राम।
गुरू चरणी यम द्वार छूट जायेगा, निज घर विश्राम।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू चरणों में ही निज धाम।।

1448 सत्य वही जो विनषत नांहि, सतगुरू यही उपदेश।
जो पावे इस दात को, माने सतगुरू उपदेश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सूं जीवों को संदेश।।

1449 चिड़िया चौंच भर पी गई, सरवर ना घटयो नीर।
सोया मानव दान करे, घेरे अहम जंजीर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू दात अहम जंजीर।।

1450 मांगन सूं मरना भला, मांगो ना जग सूं भीख।
सतगुरू सूं दात को मांग लो, यही संतन की सीख।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जग भीख ना देवे रीझ।।

1451 सतगुरू सा दानी नांहि, दोनों हाथ सूं दे लुटाये।
सोया मानुष जाने नांहि, जागे तो दात ये पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सोया जीव कभु दात ना पाये।।

1452 संत कोटि बैठे जहां, हंसों का अमर देस।
सार सब्द में जो रत्ते, सो अनंत में एक।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संत सानिध्य ही अमर देस।।

1453 सुरति एकाग्र करो, ध्यान आत्म में दो डाल।
मन गया माया गयी, आत्म रही बिन काल।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द आत्म है बेहाल।।

1454 आत्म देव चेतन्य सभी में, सुरति बिखरी बने ना बात।
मन का हमला आत्म पर, तभी बने ना बात।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चेतन सुरति ही बनाये सब बात।।

क मांगन मरन समान है, मत मांगो कोइ भीख।
मांगन से मरना भला, यही संतों की सीख।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मांग ही काल जाल की भीख।।

ख मर जाऊं मांगू नांहि, अपने तन के काज।
परमार्थ के कारणे, मोहे ना आवे लाज।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन स्वार्थ करो सब काज।।

क मांसाहारी मानवा, राक्षस बिन कोई ओर ना जान।
उनका संग हंसा कैसे करें, जो स्वयं ही दुखन की खान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मांसा हारी मानवा पायें दुख की खान।।

1455 बहुत गुरू हैं इस जग मांहि, मन सूं ही मन छुड़ाना चाहें।
बिन पूर्ण सतगुरू शरणी जाये, कोटिन यत्न करि मन छूट ना पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू सुरति मन तजा ना जाये।।

1456 छल कपट पाप कारण है, धर्म क्षेत्र दोषण का शिकार।
धर्म बुरा है नांहि, सच्ची भक्ति हुई शिकार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, धर्म विकार सूं बचे ना संसार।।

1457 तंत्र मंत्र सब झूठ है, प्यारो मत भरमों कोये।
सार नाम जाने बिना, कागा हंसा ना होये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सब्द सूं जीव मुक्त होये।।

1458 अजर पुरूष एकै रहे, अजर लोक अस्थान।
ताको जानें सतगुरू सूं, सतगुरू चरणन ध्याण।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतपुरूष की महिमां महान।।

1459 अनुभव ज्ञान प्रगट जब होई, आत्म राम चीन्हें है सोई।
घट घट राम बसे है भाई, बिन ज्ञान नहीं देत दिखाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, हर घट मांहि निरालम्भ राम समाई।।

1460 पुरूष दया जब होवे सहाई, सत्तलोक में जा समाई।
सार नाम जपै भड़भागी, सुरति रहे सतगुरू चरणन लागी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति बिन कोई कभी ना जागी।।

क राम कृष्ण से कौ बड़ा, तिन्हु भी गुरू कीन।
तीन लोक के नायका, गुरू आगे अधीन।
ये भेद कबीर जी देते हैं, गाओ गुरू महिमां गुण गान।।

1461 राम कृष्ण से कौ बड़ा, गुरू सम्मान में वो खड़े।
बिन पूर्ण सतगुरू शरणी, कोई ना जग सूं तरे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू शरणी सूं जीव तरे।।

1462 जिन के सपनेहू क्रौध डर, कबहु ना होत प्रवेश।
मधुर वचन कहि प्रीति युक्त, सतगुरू देत उपदेश।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मधुर भण्डार सतगुरू उपदेश।।

1463 जो नांहि नाम मुक्ति को पाते, माला डारी जगत बहुरि आवे।
सुने नाम अरू करे ध्याण, छाड़ पाखण्ड सतगुरू ध्यावें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू संग ले चले पार।।

1464 अलख नाम घट भीतर देखो, सुरति में सतगुरू रहे समाई।
घट घट राम बसे हैं भाई, सुरति बिन देत नांहि दिखाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति में साहिबन समाई।।

1465 तीर्थ गये दोऊ जना, चित चंचल मन चोर।
एको पाप ना काटिया, दस मन लाये और।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, चित चंचल तरंग हर ओर।।

1466 तीर्थ गयो क्या भया, मन की मैल ना जाये।
पाप तो धुल पाये ना, और भरि ले आये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन की तरंग बह जाये।।

1467 सतगुरू अमृत दात है दीनी, काल जाल सूं बचा लीना।
कागा पलट हंसा कर दीना, ऐसा नाम साहिब मोहे दीना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू अमृत दात सूं हंसा कीना।।

1468 भक्ति भक्ति सब जगत बखाना, भक्ति भेद कोई बिरला जाना।
आगे भगत भये भव सारी, करि भक्ति मुक्ति भेद ना जाना।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, भक्ति भेद कोई बिरला जाना।।

1469 शिव साधन की यह गति, शिव हैं भव के रूप।
बिन समझे जगत सब, पड़े भ्रम के कूप।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, इस भक्ति सूं नांहि पूर्ण मुक्ति अनूप ।।

1470 नरक वास में आन पड़े, ऐसी शिव भक्ति की मोज।
कहें साहिब विचार के, जन्म मरण की ना मिटे खोज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन भक्ति सूं स्वर्ग नरक मोज।।

क साहिब जी खड़े बाजार में, मागें सब की खैर ।
ना काहु से दोस्ती, ना किसी से बैर।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सब हैं अपने कोई नांहि गैर।।

1471 कहें साहिब जिनके सदगुरू पूर्ण , जन्म मरन का कष्ट हरें।
धन्य भाग अटल साहिबो के, नाम बिन नर भटकि मरे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ना तरे।।

1472 औगुण मेरे साहिब जी, बख्शो गरीब निवाज।
जे मैं पूत कपूत हूं, तोहि प्यारे को लाज।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू हाथ साधक काज।।

1473 सुरति करो मम सांईया, हम हैं भव जल मांहि।
आप ही हम बह जायेंगे, जे नहीं पकरो बांहि।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू पार लगाहिं।।

1474 सुनो साहिबा विनती मेरी, तुम ही दीन दयाल।
पतित उधारण सांईया, तुमरि नज़र निहाल।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, शरणागति सबै निहाल।।

क एक मन्द मैं मोह बस, कटिल ह्रदय अज्ञान।
मत (प्रभु) साहिबा मोहि बिसारहु, दीन बन्धु भगवान (सतपुरूष)।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सुरति महिमां ही महान।।

1475 क्या मुख लै विनती करूं, लाज आवत है मोहि।
तुम देखत औगुण करूं, कैसे भावौं तोहि।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, मैं औगुण धारी बख़्शो तुम मोहि।।

क भक्ति दान मोहे दीजिये, गुरू देवन के देव।
और नहीं कछु चाहिये, निस दिन तेरी सेव।
ये भेद कबीर जी देते हैं, माया मिटे तो पाऊँ सतगुरू सेव।।

क मैं अपराधी जन्म जन्म का, नख शिख भरा विकार।
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो सम्भार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, शरणागत की साहिब करें सम्भार।।

क सतगुरू केवट आप बन आये, करि भवसागर सूं पारी।
साधक हंसा करि देत हो, हरी व्याधा सारी।
ये भेद कबीर जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू भव पार दे उतारी।।

क सतगुरू से मांग यही, मोही गरीबी ही देहु।
दूर बड़प्पन कीजिये, नन्हा ही करी लेहु।
ये भेद कबीर जी देते हैं, दीन बने तो सब पाई लेहु।।

क शरणागत विश्वास सत्य, भक्ति का प्रमाण तूं जान।
शरणागत अति बड़ा, भक्ति गुण से निज को पार तूं जान।
ये भेद कबीर जी देते हैं, संपूर्ण समर्पण सूं भव पार ले जान।।

क सतगुरू को सत्य व सत्य नाम, सूर्य रूप में साक्षात देख।
आरती कर साहिब ही जान, निज को हंसा पल में देख।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू में ही साहिब तूं देख।।

क अभय ज्ञान, आत्म कल्याण प्राप्ति के लिए।
वन्दना आरती सूं ही, मिलता फल के लिए।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जगत ज्ञान केवल फल के लिए।।

1476 परम पुरूष के परम पद, अचल पद सतगुरू चरणों में अर्पित होकर।
सार सुरति की दात सूं, मोक्ष प्राप्ति भाव लिए आरती कर।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, साहिब दात सूं ही त्रिलोकि पार कर।।

1477 सब गुणों का गुण शरणागति, ज्ञान स्वयं आ जायेगा।
हर भक्ति आप आ जायेगी, समस्त पापों का नाश हो जायेगा।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू शरणागत ही मोक्ष पायेगा।।

1478 शरणागति होने से सब गुण आवें, ज्ञान भक्ति सेहि माहि समावें।
सकल पाप ता के जरि जावें, जो सतगुरू की शरण में आवें।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, पाप संताप सब सतगुरू ही मिटावें।।

1479 सतगुरू दात को पाकर, सेवा भाव सत्य का विचार कीजै।
सतगुरू से सुरति जोड़ लीजै, सत्य असत्य विचार मत कीजै।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू शरणी ही पूर्ण समर्पण कीजै।।

क प्यारो दुर्बल न सताइये, जाकी मोटी ह्‌ाय।
बिन सांस की फूंकनी, लोहा देत गलाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मान अभिमान सभी को खाये।।

क बिन विचारे गुरू करे, सो पीछे पछताये।
हर गुरू गुरू होता नहीं, सत को रहा कोन बताये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, निरख परख गुरू शरणी जाये।।

क प्यारो हरि कृपा तब जानिये, दे मानुष अवतार।
सतगुरू कृपा तब जानिये, छुड़ावे तीन लोक संसार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, हरि भ्रम सूं सतगुरू करायें पार।।

क हरि कृपा जो होये तो, नहीं होय तो नांहि।
कहैं साहिब सतगुरू कृपा बिना, सकल बुद्धि बह जांहि।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू कृपा बिन कोई ना मोक्ष पावहि।।

क सतगुरू भक्ति अति कठिन है, ज्यों खाँडे की धार।
बिन सांच पहुंचे नहीं, महां कठिन व्यवहार।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू भक्ति सूं भव सागर पार।।

त–ह तीन लोक मन सतावै, ब्रह्मा विष्णु शिव पार ना पाये।
सतपुरूष 'वे नाम' जगाया, जीव उभारन निजधाम सूं दात ले आये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू सब्द काल फंद सूं छुड़ाये।।

तुलसी साहिब हाथरस वाले कहते हैं :–

त–ह खेचरी भूचरि साधै सोई, और अगोचरि उनमुनि जोई।
उनमुनि बसै आकास के मांहि, जोगी बास करे तेहि ठांहि।
ये जोगी मति कहा पसारा, संतमता पुनि इनसे न्यारा।
जोगी पांचों मुद्रा साधै, इंड़ा पिंगला सुखमनि बांधै।
ये भेद साहिब तुलसी जी देते हैं, पंच मुद्रा निरंकार ठिकाना।।

त–ह सतगुरू समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह।
बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो देह।
ये भेद साहिब तुलसी जी देते हैं, सब्द सुरति सूं गुरू शिष्य ईक देह।।

त–ह प्यारो सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप।
ये भेद साहिब तुलसी जी देते हैं, झूठे के कटें ना संताप।।

त–ह प्यारो पर–नारी पैनी छुरी, मत कोई लाओ अंग।
रावण के दस सिर गये, पर–नारी के संग।
ये भेद साहिब तुलसी जी देते हैं, कामातुर का छूटे सत्य विवेक संग।।

गरीब दास जी कहते हैं :—

ग अरस कुरस नूर दरस, तेज पुञ्ज को देखा।
कोटि मानु सांच मानु, रोम रोम में देखा।
ये भेद साहिब गरीब जी देते हैं, रोम रोम की महिमां देखी।।

ग तहां सब्द अखण्ड होत दिन राती, न कोई पूजा न कोई बाती।
ऐसे सच को मैनें, सत्य को देख सत्य को जाना।
ये भेद साहिब गरीब जी देते हैं, सब्द सुरति सूं सत्य असत्य जाना।।

ग़ प्यारो जो सतपुरूष सतलोक रहाई, तिन को सब कोई चीन्हीं भाई।
सार नाम बिन दुखि तीनों देवा, जिन की गण गन्धर्व करें सेवा।
ये भेद साहिब ग़रीब जी देते हैं, सार नाम बिन त्रिलोकि दुखदाई।।

ग़ भव तारन समर्थ सतगुरू प्यारा, ताको नहीं पहचाने संसारा।
योगेश्वर वह गति नहीं पाई, सिद्ध साधक की कौन चलाई।
ये भेद साहिब ग़रीब जी देते हैं, बिन सब्द निरंकार जग भरमाई।।

ग़ सर्गुण भक्ति है जग की, निर्गुण लखै ना कोये।
सर्गुण निर्गुण दोई मिटै, भक्ति रहित घर होये।।
ये भेद साहिब ग़रीब जी देते हैं, सर्गुण निर्गुण से परे सत्य भक्ति होये।।

क प्यारो बाजीगर का बांदरा, ऐसे जीव मन साथ।
नाना नाच नचाये के, राखे अपने हाथ।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, मन का न छूटे साथ।।

क जग के देव सब निरंकार अधीना, बचे सोई जिन नाम को चीन्हां।
सुन धर्मन सब कहो संदेशा, तुम को होय ना भव क्लेशा।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, नाम चीन्हें तो मिटे भव बंधन क्लेशा।।

क कर्म फल ये देही है, सार सब्द बिन छूटे नांहि।
जड़ चेतन में ग्रंथि पड़ गई, यद्यपि छूटत नांहि।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, आत्म निज बांध्या मन नांहि।।

क धर्मदास सुन संत सुजाना, निर्गुण सों अब करो बखाना।
निर्गुण नाम निरंझन भाई, जिन सारी उत्पति बनाई।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, निरंकार काल नगरी दीयो रचाई।।

क निर्गुण सों ज्युं भया औंकारा, तासों तीनों गुण विस्तारा।
निर्गुण सो मन भया प्रचंडा, ताको बास सकल ब्रह्मण्डा।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, निर्गुण सूं त्रिलोकि पसारा।।

क प्यारो भक्ति करो भरमो नाहीं, सोई भक्ति प्रमाण।
पूर्ण सतगुरू सुं अमृत दात पाकर, निज की करो पहचान।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतगुरू दात की महिमां अति महान।।

क प्यारो इसके आगे भेद हमारा, जानेगा कोई जानन हारा।
कहें साहिब जानेगा सोई, जा पर कृपा सदगुरू की होई।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतगुरू जैसा और नांहि कोई।।

क कहें साहिब जन गायके, सुनो जगत ये ज्ञान।
नीचे बसत त्रिलोकी, उपर सतगुरू नाम।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतगुरू की महिमां है महान।।

क सत्य सब्द सतपुरूष ही जानो, नाम बिना सब झूठ बखानो।
निर्गुण सर्गुण ते नाम प्यारा, जो चीन्हे सो हंस हमारा।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सब्द सुरति आत्म करे हंसा न्यारा।।

क सतगुरू मारा तानि के, सब्द सुरंग बाण।
मेरा मारा फिर जिये, तब हाथ ना गहुं कमान।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतगुरू सब्द छुड़ावे मान अभिमान।।

क जो देता सार नाम की दात, उसे ही सतगुरू जान।
सतपुरूष जिन है जानया, ताहि को सतगुरू मान।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतगुरू ही देवे विदेह दात दान।।

क काग पलट हंसा कर दीना, ऐसा पुरूष नाम मोह दीना।
अकाह नाम लिखा न जाई पढ़ा ना जाई, सुरति में रहे समाई।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन सदगुरू कोई नाम ना पाई।।

क मुक्ति मुक्ति सब जगत बखाना, मुक्ति भेद कोई बिरला जाना।
मुक्ति भेद जानेगा सोई, जाका सदगुरू सांचा होई।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सांचा सतगुरू ही मुक्ति पथ ले जाई।।

गुरू नानक देव जी कहते हैं :–

न पांच तत्व का तन रचयो, जानत संत सुजान।
इस में कुछ सांचो नहीं, नानक सांची मान।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, त्रिलोकि रचना माया ही जान।।

न साहिब की महिमां लिखी ना जाये, पढ़ी ना जाये।
नहीं उपझे नहीं विनसे कबहु, नांहि आवे नांहि जाये।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, साहिब महिमां सतगुरू बताये।।

न जिस का पीजिये दूध, तिस को कहिये माये।
उसकी महिमां महान है, उसकी सेवा में लग जायें।
ये भेद बाबा नानक जी देते हैं, मात्र ऋण सेवा सूं चुकायें।।

1480 प्यारो सार नाम बिना पावे नहीं, भव सागर का पार।
सदगुरू शरणी जाये के, नाम दात सूं कर भव सागर पार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन नामे कोई ना उतरे पार।।

1481 मन ही सरूपी देव निरंझन, तोहि रहा भरमाई।
प्यारे हंसा तूं अमर लोक का, पढ़ा निरंकार वश आई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल निरंझन सबै भरमाई।।

1482 गण गंधर्व ऋषि मुनि अरू देवा, सब मिली लाग निरंझन सेवा।
तीन लोक का आप है दाता, सेवा सूं जन्म मरन का मेवा।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काल सेवा देवे कर्म फल मेवा।।

1483 ब्रह्म जी उत्पति करन को, विष्णु जी करें पालन संसार।
शिव जो संहार हैं कर्ता, तेतीस कौटि देवी देव परिवार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सबै देव निरंकार परिवार।।5

पल्टु साहिब जी कहते हैं :–

प सुन्न गगन में सब्द उठत है, सो सब बोल में आवै।
निःसब्दी वह बोले नांहि, सो सत सब्द कहावै।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, सुरति में सत्त सब्द समावै।।

प भजन अखंडित लागई ले, जैसे तेल की धार।
पल्टुदास दंडवत करो, तेहि साहिबा बारम्बार।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, सतगुरू शरणी साहिब सरकार।।

प बूझि विचारी सतगुरू कीजिए, जो कर्म काण्ड से न्यारा।
कर्म बंध हति दूरि है, बुडहु विच मंझधारा।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, कर्म बंध से छूटे ना यम द्वारा।।

प ज्यों कंचन त्यों कांच है, अस्तुति सो निंदा।
सत्रु मित्र दोउ एक है, मुरदा नहीं जिंदा।।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, जग में ना कोई चंगा नांहि मंदा।।

प जोग भोग जिनके नहीं, नहीं संग्रह त्यागी।
बंद मीष एको नांहि, सत्त सब्द के दाग़ी।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, सत्त सब्द का बन वैरागी।।

प पाप पुण्य जिनके नांहि, नांहि गर्मी पाला।
पल्टु जीवन मुक्त ते, साहिबन के लाला।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, संतन शरण साहिब रखवाला।।

प सुरति डौर अमृत भरे, जहं कूप उधर मुख।
उल्टे कमल ही गगन में, तब मिले परम सुख।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, बिन सत सुरती दुख ही दुख।।

प गगन की धुणि जो आनाई, सोई गुरू मेरा।
वह मेरा सरताज है, मैं वाका चेहरा।
यह भेद पल्टु साहिब देते हैं, अनहद धुण भरमाये गुरू चेरा।।

प ये संसार नासक है भाई, जीव का नास ना होई।
पल्टु दास जगत सब भूला, भेद ना जाने कोई।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, आत्म अजर अमर होई।।

प जिन्होंने सब्द विचारिया, तिन तुच्छ लागे संसार।
वो आये पड़े सत्संग में, सब डारी दिहा सर भार।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं, सार सब्द उतारे पार।।

प पिया से मान न कीजै रजनी, सजनी हठ तजि दीजे।
जो तूं पिया को चाहे प्यारी, सतसंगति भजि लीजे।
ये भेद साहिब पल्टु जी देते हैं,मान तज सब्द भजि लीजै।।

दरिया साहिब कहते हैं :–

द दरिया सूरज अगिया, नैन खुला भरपूर।
जीवे अंधे देखा नहीं, उनसे साहिब दूर।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, अपने उर पाओ साहिब नूर।।

द दरिया सूरज अगिया, चहुं दिस भया उजास।
नाम प्रकासै देह में, तौ सकल भरम का नास।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, सबै भ्रम छुड़ावे सुरति प्रकास।।

द जन्म अकारथ नाम बिन, भावै जान अजान।
जन्म मरन जम काल की, मिटे ना खैंचा तान।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, बिन नामे जीवन व्यर्थ ही जान।।

द दरिया कांचे दूध का, बानो से बन जाय।
दूध फाट कांजो भई, तहं गुण कहां समाय।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, बिन जागे माया तजि ना जाये।।

द पंथ जगत में, निज निज गुण गावें।
सब का सार बताकर, सतगुरू मार्ग लावें।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, सतगुरू ही आन तरावे।।

द प्यारो, नौ द्वारे संसार सब, दसवें योगी साध।
एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजान।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, दशम द्वारा जाने बिरला संत प्यारा।।

द सुर दुर्लभ मानव तन पाया, श्रुति पुराण सद ग्रंथन गाया।
साधन धाम मोक्ष का द्वारा, जेहि ना पाया परलोक संवारा।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, बिन नामे जीव भटकें यम द्वारा।।

द हाड मांस की देह मम, तां पर ऐसी प्रीति।
तासुं आदि जो राम प्रीति, अवश्य मिटहु भव भीति।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, छोड़ देह मान कर नाम सूं प्रीती।।

द प्यारो गांठि दाम न बांधई, नारी से नहीं नेह।
साहिबा ऐसे संत को, दास चरणों की खेह।
ये भेद दरिया साहिब जी देते हैं, संतन चरण प्रीति छुड़ाये जग नेह।।

द सुख में सुमिरन ना किया, दुख में हर पल याद।
कहैं साहिब तां दास को, कौन सुने फरियाद।
ये भेद दरिया जी देते हैं, सुख में सुने साहिब तेरी फरियाद।।

1484 कोठी बंगला कारों की, कमी नहीं जिनके पास में।
वो भी ये कहते हैं, हम बड़े दुखी संसार में।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जगत माया दुख ही का भण्डार।।

1485 माया ममता प्रीत मोह, फंसे योगी यति सब साथ।
मन सूं मन की भक्ति करके, मिले ना साहिबन साथ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू शरणी छूटे ना मन साथ।।

क प्यारो देह धरे का दंड है, भुगतत हैं सब कोय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूर्ख भुगते रोय।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतगुरू दंड सूं मुक्त कराये।।

क कहैं साहिब किसे समझाऊँ, सब जग अंधा।
ईक दुई होवे उन्हें समझाऊँ, सबहि भुलाना पिटवा का धंधा।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, माया कराया सब जग अंधा।।

क प्यारो तन घर सुखिया, कोई न देखा।
बाटे बाट सब कोई दुखिया, क्या तपसी क्या वैरागी।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, योगी यति मन तरंग सूं दुखिया।।

क साहिबा कलयुग आ गया, संत ना पूजे कोय।
कामी क्रौधी मसखरा, इनकी पूजा होय।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सत भक्ति को जाने ना कोय।।

क कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।
गृह छोड़ भये सन्यासी, कोउ ना पावत पारा।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू शरणी छूटे ना यम द्वारा।।

क साहिब एको जानिया, तो जाना सब जान।
प्यारो एक ना जानिया, तो जाना जान अजान।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, एक की महिमां अति महान।।

क क्या हुआ वेदों के पढ़ने से, जे ना पाया भेद को।
आत्म जाने बिना, ज्ञानी कोई कहलाता नहीं।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन आत्म जाने बूझे भेद नहीं।।

क प्यारो बंधे को बंधा मिला, गांठ छुड़ावे कौन।
अंधे को अंधा मिला, तो प्यारो राह बतावै कौन।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, मन सूं मन मिटावे कौन।।

क जाका गुरू है गीरही, चेला गिरही होय प्यारो।
कीच कीच के धोवते, दाग ना छूटे कोय प्यारो।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन संतन मन माया छूटे ना प्यारो।।

क नाम बिना मूर्ख सो कहिये, नाम बिना पापी सो लहिये।
नाम बिना सब विधि सो होना, नाम बिना ना छूटे काल।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन नामे छूटे ना माया जाल।।

साहिब जी के लुप्त होने पर, धर्म दास उदासी में कहते हैं :–

ध शोच ह्रदय रैन दिन, भोजन भवन ना भाव।
बड़े भाग्य सों मिले प्रभु, बिछुरे कबहुं मेटाव।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सतगुरू मिटावे सबै संताप।।

ध सत्य नाम है मोर आहार, भक्ति भजन सत्संग संहार।
बलिहारी सतगुरू आपने, घड़ी घड़ी सौ सौ बार।
मनुष्य से देवता किया, करत ना लागी बार।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सतगुरू महिमां अपरम्पार।।

ध हम निःईच्छ चाह कछु नांहि, केवल सदगुरू सेवा चाही।
संतन सेवा नहीं करि हैं, कहो सो जीव कौने विधि तरि है।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सतगुरू सेवा ही सर्वोपरि है।।

ध विनती एक करो प्रभु, कृपा करो जगदीश।
दो सेवक जो थे मिले, सो तो कहुं नहिं दीश।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू सांचा दीश।।

ध धर्म दास कहत लेहु जानि, हम वो एकै रूप हैं।
कहों सब्द परमान, वो हम में उन मांहि हम हैं।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, साधक सतगुरू ईक रूप हैं।।

ध साहिबा क्या करौ कित दर्शन पांऊ, बिन दर्शन मैं प्राण गवांऊ।
यह सब साहिबा आप की कृपा सूं होये, सार सब्द में सुरति लगाऊं।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सब्द सुरति सूं साहिब दर्शन पाऊं।।

ध कहहु साहिब मोहि समुझाई, कहं तब सदगुरू कित पायो।
साहिब कौन जाहि तुम ध्याओ, कहवां मुक्ति सुरति कित लाओ।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, बिन सतगुरू कुछ चित ना लाओ।।

ध यह काया है समरथ केरी, काया की गति काहु ना हेरी।
शिव गोरख से पच पच हारे, इस काया का भेद ना पाये।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, पूर्ण संत मिलें तो भेद बतायें।।

ध खेल ब्रह्माण्ड का पिण्ड में देखिया, जगत की भरमना दूर भागी।
बाहर भीतर एक आकाशवत्, सुष्मिना डौर तहां पलट लागी।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सतगुरू सुरति बिन जीव ना जागी।।

ध प्यारी यह काया है समरथ केरी, काया की गति काहू ना हेरी।
साहिबा काया अथाह है, कोई बिरला जाने भेद।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सत सुरति बिन काया राख की ढेरी।।

ध खेल ब्रह्माण्ड का पिण्ड में देखो, जो अंदर सो बाहिर देखो।
बिन सदगुरू यह भेद ना मिलता, सार नाम सुरति में डाल कर देखो।
ये भेद धर्म दास जी देते हैं, सतगुरू सब्द सूं भेद सब देखो।।

क प्यारे इस के आगे भेद हमारा, जानेगा कोई जाननहारा।
कहैं साहिब जानेगा वोहि, जापर कृपा सतगुरू की होई।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू तरे ना कोई।।

1486 सतगुरू देत पुकार हैं, सुरति सब्द महान।
आपा खोये निज को चीन्हे, तब पहुंचे निजधाम।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू सुरति निजधाम।।

1487 प्यारो कुछ करनी करो, पर सदगुरू चरणन ध्यान।
दोनों मिल जब एक हों, तभी मिले मोक्ष का दान।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सतगुरू शरणी निजधाम।।

क मैं अपराधी जन्म जन्म का, नख शिख भरा विकार।
सदगुरू दाता दुख भंजना, मेरी करो सम्हार।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, बिन गुरू होवे ना नैया पार।।

क चरणन धनी के पड़े रहो, धक्का धनी का खाये।
सदगुरू गरीब निवाज हैं, पल में पार लगाये।
ये भेद साहिब कबीर जी देते हैं, सतगुरू संगति पार कराये।।

क सत्य नाम निज औषधि, सतगुरू देई बताये।
औषध खाय अरू पथरहे, ताको वेदन जाये।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सत्त नाम सूं जीव तर जाये।।

क पाप कर्मों से है रहता, जिसका मन मलीन।
उसको सपने में भी, सतगुरू नज़र आता नहीं।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन माया तजे सतगुरू संग नहीं।।

क सदगुरू जैसा कोई दाता नहीं, भव पार कराते अपने साधक को।
वे अदा कर खुद खज़ाने से, छुड़ा लें अपने बंदे को।
ये भेद कबीर जी देते हैं, सतगुरू काटें भव बंधन को।।

1488 जीवन का सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, मोक्ष नैया पतवार सतगुरू हाथों में।।

1489 प्यारो ना सुख हाल में मजा है, ना दुख हाल में मज़ा है।
जिस हाल में सदगुरू राखें, उसी हाल में मज़ा है।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, बिन सतगुरू जग घोर सज़ा है।।

क सदगुरू दर्शन कर कर जीवां, रहुं चरणन में ही।
इन बिन भव निधि तरई ना कोई, रहो सुरति में ही।
ये भेद कबीर जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई ठौर नांहि।।

1490 इड़ा पिंगला सुष्मिन सम करे, अरध उरध विच ध्यान लगावे।
कहैं साहिब सो संत निर्भय हुआ, जो जन्म मरन का भेद पावे।
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सहज विधि सूं साहिबन दर्स पावें।।

क इड़ा पिंगला सुखमन बूझे, आपे अलख लखावे।
उसके उपर सांचा सतगुरू, अनहद सब्द सुरति समावे।
ये भेद कबीर जी देते हैं, अनहद पार साहिब दर्स को पावें।।

मीरां बाई सदगुरू के मिलन की प्रार्थना करती है और कहती है कि मैं हर समय आप के आने की प्रतीक्षा करती हूं :—

म ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूं, रोय रोय अखियां राती।
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुल रा न्यानी।
ये भेद संत मीरां जी दती हैं, सकल ये जग झूठी कहानी।।

म दोड़ कर जोड़या अरज़ करूं छूं, सुन लो मेरी बाती।
यो मन मेरो बड़ा हरामी, ज्यों मद मातो हाथी।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, मन तरंग बहें सब संगी साथी।।

म सतगुरू हाथ धरो सिर ऊपर, अंकुस दे समझाती।
पल पल पीव का रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाती।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, सतगुरू चरणन चित राती।।

म मेरी आरती मेटि गुसांई, आई मिलौ मोहिं सागी री।
मीरा व्याकुल अति अकलाणी, पिया की उमंग अति लागी री।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, बिरह बाण उर लागी री।।

म निस दिन पंथ निहारूं पीव को, पलक ना पल भरि लागी री।
पीव पीव मैं रटूं रात दिन, दूजो सुधि बुधि भागी री।।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, पीव लगन सुद्ध बुद्ध भागी रे।।

म राम मिलन के काज सखी, मेरे आरती उर जागी री।
तलफत तलफत कल ना परत है, बिरह बाण उर लागी री।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, विरह तड़प प्रेम बाण उर लागी री।।

म म्हारे जन्म मरण रा साथी, थांने नांहि बिसरूं दिन राती।
थां देखया बिन कलप न पड़त है, जानत मेरी छाती।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, बिन सतगुरू तड़पूं दिन राती।।

म मिलता जो ज्यों ही गुरू ज्ञानी, थारी सुरत देखि लुभाई।
मेरा नाम बेझि तुम लीज्यो, मैं हूं विरह दिवानी।
ये भेद संत मीरां जी देती हैं, विरह प्रेम प्रीत अनजानी।।

म रात दिवस कल नहीं परत है, जैसे मीन बिन पानी।
दरस बिन मोहि कछु ना सुहावे, तलफ तलफ मर जानी।
साहिब जी मीरां तो चरणन की चेरी, सुन लीजे सुखदानी।।

म जलो से प्रीत करि मछली ने, बिछरत प्राण तजे।
भृंगा को प्रीति लगी नादां से, सन्मुख सैल सहे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सत सुरति निष्फल प्राण गहे।।

म दीपक से प्रीत लगी पतंग की, वार फेर जिय देह।
मीरां की प्रीति लगी है संतों से, सतगुरू चरणां चित देह।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू चरण शरण समर्पण ये देह।।

म भर मारी रे बाणा मेरे सतगुरू, बिरह लगाये के।
पावन पंगा कानन बाहिरा, सूझत नांहि नैना के।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सब्द सुरति जग भूली नेह।।

म खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूं, मरम ना कोई जाना।
सतगुरू औषध ऐसी दीन्ही, रूप रूप भई चैना।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सुरति अंग अंग भये चैना।।

म सतगुरू जैसा वैद ना कोई, भूझो वेद पुराना।
मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, अमरलोक में रहना।
ये भेद मीरां जी देती हैं, रे दास जी का यही है कहना।।

म तुम बिछड़िया दुख पांऊ जी, मेरा मन नहीं मुरझाऊं जी।
मैं कोयल ज्यों कुरलाऊं जी, मेरा मन मांहि मुरझाऊं जी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सुरति सूं बात बन जाऐ जी।।

म मोहि बंधन बिरह सतावे जी, कहियां पार पावै जी।
ज्युं जल प्यासा मीना जी, तुम दरसन बिन खोना जी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सतगुरू व्यर्थ जीना जी।।

म ज्यों चकवी रैण न जी, वा अगो भाण सुहावै जी।
आ दिन कबै करोला जी, म्हारे आंगन पांव घरोला जी।
साहिब जी मीरां गुरू पद, रज की प्यासी जी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू चरण रज पा भव सागर तर जाओ जी।।

अर्थ :— सतगुरू देव जी आप से बिछड़ने के बाद मैनें अत्यंत कष्ट उठाये हैं, मैं अपने इन कष्टों का कैसे ब्खान करूं ? जैसे जल बिन मीन तड़पती है, जैसे चकवी रात में चकवे के बिछड़ने से दुखी होती है, उसी प्रकार, मैं अपने सतगुरू के दर्शन पाने के लिए व्याकुल हूं, हे सतगुरू मेरे जीवन में वह दिन कब आएगा, जब आप मेरी सुरति में वास करेंगे।

म जब से तुम बिछुड़े मोरे प्रभु जी, कबहु ना पायो चैन।
सब्द सुनत मेरी छातियां कपै, मीठे लगे तुम बैन।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब दर्स बिन दुखन लागे नैन ।।

म एक टकटकी पंथ निहारूं, भई छे मासी की रैन।
विरह व्यथा कासूं कहूं, सजनी बह गई करवत नैन।
मीरा रे प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू दर्स भीतर भयो चैन।।

अर्थ :— मीरा सतगुरू दर्शन की प्यासी मीरा अपनी विरह वेदना प्रकट करते हुए कहती हैं कि आप के वियोग में मुझे एक पल भी चैन नहीं मिलता, एक एक रात छेः छेः माह के समान बीतती है। आप के वियोग में मैं इस तरहं तड़प रही हूं, जैसे मेरे ह्रदय पर तीक्ष्ण तलवार चल रही है।

म री मेरे पार निकस गया, सतगुरू मारया तीर।
विरह भाल लागी उर अंतति, व्याकुल भया शरीर।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सब्द विरह विराग का तीर।।

म इत इत चित चले नहीं, कबहुं डारी प्रेम जंजीर।
के जाने मेरो प्रीतम प्यारो, और ना जापो पीर।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू बिन कोई दूजा ना पीर।।

म कहां करूं मेरे बस नहीं सजनी, नैन झरत दोऊ नीर।
मीरा कहे प्रभु तुम मिलियां बिन, प्राण धरत नहीं धीर।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू दर्स बिन नहीं धीर।।

मीरा जी कहती हैं कि हे सतपुरूष ! विरह की व्याकुलता मुझे सतगुरू से मिली है, मेरी सुरति प्रेम रूपी जंजीर से बंधकर मकर तार की तरहं हो गयी है, मेरी इस विरह वेदना को सतगुरू के सिवाय और कोई नहीं जान सकता। मेरे नेत्रों से अश्रवन धारा बह रही है, यह अश्रवन तभी बंद होंगे जब ये नैनन आप के दर्शन करेंगे।

म राम नाम (सतनाम) की निंदा ठाणे, कर्म अकर्म ही कुमावे।
राम नाम बिन मुक्ति ना पावे, फिर चौरासी को जावे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन नामें चौरासी भरमावे।।

म साध संगत में कबहुं ना जावे, मूर्ख जन्म गंवावै।
जब मीरां सतगुरू के चरणै, जीव परम पद पावै।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू चरण शरण मोक्ष पद पावै।।

म गली तो चारों बंद हुई, मैं सतगुरू सूं मिलूं कैसे।
ऊँची नीची राह लपटीली, पांव नहीं ठहराये।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू पाओ पथ सहज हो जाये।।

म सोच सोच परा धरूं जतन से, बार बार डिग जाये।
ऊंचा नीचा महल पिया का, रहा सूं चढ़या ना जाये।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सतगुरू भव तरा ना जाये।।

म पिया दूर पंथ निहारो झीणो, सुरत झकोला खाये।
कोस कोस पर पहरा बैठया, पैंड पैंड भरमाये ।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सत सुरति जगत भ्रम मिटाये।।

म यह बिधना कैसी रच दीनी, दूर बसायो न्यारो गांव।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर, सतगुरू देई बताया।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू संग पाओ मोक्ष धाम।।

म सतगुरू कृपा सों, मन की बिधना साध संगति मिटाये।
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरां, घर में लीनी लाये।
ये भेद मीरां जी देती हैं, पूर्ण सतगुरू मन तरंग मिटाये।।

म सदकै करों जो शरीर, जुगै जुगै वारणौं।
छाड़ी छाड़ी कुल लाज, साहिब तेरे कारणौं।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सीस सतगुरू चरणां धरौं।।

म मीरा रे प्रभु गिरधर नागर, दरसन दो म्हारे राम जी।
सुरत मेरी निज नाम से, सुरत कृपा सों जगो जी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सुरति ही चौथा राम जी।।

म याद करूं जब वेग पधारो, राखो पावनिया।
कृपा कीजो दर्शन दीजो, शरणे काजनिया।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिछुर न दूंगी पाय पलक में राखूं।।

म एक समय मानियन के धोके, हंसा चुगत जुवार।
सरवर छोड़ तलैया बैठे, पंख लपट रही गार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, निज भूला जीव सहे जग मार।।

मेरी आत्मा जो आपके धाम में आनंदमग्न थी, इस संसार में आने से मैली हो गई है। जैसे एक बार मोतियों के धोखे में हंस ने ज्वार चुग लिया था। साहिब जी मेरी हंस रूपी आत्मां मान सरोवर छोड़ कर सांसारिक माया जाल रूपी कीचड़ में आकर धंस गई है और ये हंस इस कीचड़ को छोड़ कर वापिस निज घर (अमरपुर) निजधाम जाने के लिए कोई यत्न नहीं कर रहा है।

म साहिब का घर दूर है रे, जैसी लगी खजूर।
चढ़े सो चाखे प्रेम रस, पड़े तो चकनाचूर।
ये भेद मीरां जी देती हैं, प्रेम सुरति सूं पाओ साहिबन नूर।।

म हाड चाम की देह बनी रे, नव लख नाड़ी दश कोर।
मोरे रे प्रभु गिरधर नागर, लगी मूल नाम सों डौर।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मूल नाम सूं टूटे माया देह की डौर।।

म भव सागर सब सूखि गयो है, फिकर नहीं मोहि तरनन की।
मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, आस बही गुरू सरनन की।
ये भेद मीरां जी देती हैं, पाओ नाम सुरति गुरू दरसन की।।

म नैनन बनज बसाऊं री, जो मैं साहिब पाऊं री।
इन नैनन मेरा साहिब बसत है, डरती पलक न नाऊं री।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सुरति संग भांवरी बन जाऊं री।।

म त्रिकुटि महल में बना है झरोखा, तहां में झांकी लगाऊं री।
सुन्न महल में सुरत जमाऊं, सुख की सेज बिछाऊं री।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब जी बार बार बलि जाऊं री।।

म ‘साहिब जी’ मैं तो, मूल नाम के रंग राती।
पंज रंग मेरा चोला रंग दे, मैं झुरमुट खेलन जाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मैं तो साहिबन के रंग राती।।

म चंदा जाऐगा सूरज जाऐगा, जाऐगा धरण अकासी।
पवन पानी दोनों ही जाऐंगे, अटल रहे साहिब अविनासी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मैं तो मूल राम के रंग राती।।

म सुरत निरत का दिवला संजो ले, सुरति की कर बाती।
प्रेम हटी का तेल बना ले, जग केर दिन राती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, जग माया केर दिन राती।।

म जिन के पिय परदेस बसत हैं, लिखी लिखी भेजें पाती।
मेरे पिय मो मांहि बसत हैं, कहुं ना आती जाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मैं तो मूल राम के रंग राती।।

म पीहर बसूं ना बसूं सास घर, सतगुरू सब्द संगाती।
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरां सतनाम में समाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सदा मूल नाम के रंग राती।।

म मैं तो तेरी सरण पड़ी रे सतगुरू, ज्यों जाने त्यों तार।
अड़सठ तीर्थ आयो भरमी भरमी, सुरति नहीं मानी हार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब सतगुरू ही तारन हार।।

म या जग में साहिब कोई नहीं अपना, सुनियो तारण हार।
मीरां दासी साहिब भरोसे, जम का फंद निवार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू जम का फंद निवार।।

म भाई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई ना जानी न्यारी बात।
मीरां कहे बीती सोई जाने, मरन जीवन तुम हाथ।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मरन जीवन सतगुरू तुमरे साथ।।

म अब क्यों रे मूर्ख मोडोरे, पंथी घनी दिन थोड़ो रे।
उगो रे सूरज पूर्व घर पुगो तो, दोड़ सके तो दोड़ो रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, अनमोल पल बीतें सतगुरू द्वार आओ रे।।

म घर चलो हिम्मत मत हारो, चिंता को पीछे छोड़ो रे।
नगर पहुंचया निर्भय होसी, बीच रमण को फोड़ो रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब मिलयो म्हाने नेड़ो रे ।।

म सतगुरू सब्द सब्द लखाया, मोहे पिया मिले ईक छिन में।
पिया मिले मोहि कृपा कीन्ही, दीदार दिखाया साहिब ने।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिबन दर्स सतगुरू सब्द में।।

म सतगुरू सब्द सुरति लखाया, ध्यान लगाया धुण सब्द में।
मीरा रे प्रभु होई दिवानी, मग्न भई सार सुरति में।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिबन दर्स सब्द सुरति में।।

म मानुष जन्म तुझको मिला, पाने भजने को मूल नाम।
प्यारे तूं सब कोल भूला, जीवन सारा खो दिया।
काल का खा कर बाण, काल का खा कर बाण।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सब्द मानुष जन्म व्यर्थ तूं जान।।

म मैं खड़ी हूं तेरी ईक झलक के लिए, चरणों में सदा रहने के लिए।
मेरे मन की खबर तुझे है प्यारे, मैं हर स्वांस लूं बस तेरे लिए।
ये भेद मीरां जी देती हैं, आठों पहर सुरति में बसुं तेरे लिए।।

म जब भी सुरति सूं तुझको आवाज दूं, आंखों में अश्वन बहें बस तुम्हारे लिए।
मेरी किश्ती भंवर में अटकी पड़ी, तूं तारे या डोबें हाथ तेरे पड़ी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, हर पल तुझ संग बीते शरणी आन पड़ी।।

म सोवां तो म्हाने नींद ना आवे, ऐ जागत डाना जंजाल।
बाई मीरां कहे प्रभु सतगुरू गुण, सतगुरू चरणी म्हारा ध्यान।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू संगति काटे जगत डाना जंजाल।।

म मैं तो दासी यारी जन्म जन्म की, थे साहिब सगुण।
कांई भात सूं करयो रूसणुं, क्युं दुख पावो छो मन।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सत्संग बिन मिटे ना मन।।

म कृपा करि मोहि दरसण दीजो, बीते दिवस घना।
मीरां रे प्रभु साहिब अविनासी, थारो ही नाम भणा।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब सुरति नाम में ही रमणा।।

संत मीरां जी कहती हैं :–
मुझे साहिब जी दर्शन दो स्वामी ! मुझे तुम्हारे ही नाम की ही लौ लगी है, मेरा ध्यान सदा सार नाम में ही रहता है।

म जागे म्हारा जग पति राई, हंसि बोलो क्युं नहीं।
साहिब थे छो जी हिरदा मांहि, पर खोलो क्युं नांहि।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू बिन सत भेद बतावे कोई नांहि।।

म तन मन सुरति संजोई, सीस चरणां धरूं।
जहां जहां देखूं म्हारो, साहिब जी जहां सेवा करूं।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब जी सुरति विच धारूं।।

म सदकै करूं जो सरीर, जुगै जुगै ईन चरणों।
छोड़ी छाड़ी कुल की लाज, साहिब जो तेरे कारणों।
ये भेद मीरां जी देती हैं, छोड़ी कुल लाज आन पड़ी सतगुरू चरणों।।

म खड़ी खड़ी राह में साहिब जी, सतगुरू पोंछे आया।
पियलो लिये हाज़िर खड़ी जी, दर्शन आन दायो।
ये भेद मीरां जी देती हैं, समर्पण सूं साहिबन सतगुरू पायो।।

म मीरा रे प्रभु गिरधर नागर, दरसन दो म्हारे राम।
सुरत निज नाम से लगी जो, आ मिलयो मेरे राम।
ये भेद मीरां जी देती हैं, नाम सुरति सूं पाओ निरालंभ राम।।

साहिब जी मेरी आत्मां जो आप के निजधाम में आनंदमई थी, इस काल के संसार में आने से पहले मैली हो गई है, जैसे एक बार मोतियों के धोखे में हंसा ने ज्वार चुगे थे और फिर वह हंसा वापिस निज घर ना जा पाया। मेरी हंस रूपी आत्मां मानसरोवर छोड़ कर इस सांसारिक माया जाल रूपी कीचड़ में आकर धंस गई है, आप ही

सतगुरू मुझे इस सांसारिक कीचड़ से निकाल सकते हैं और निजघर (अमर धाम) ले जा सकते हैं।

म सरवर सूके तरवर कुम्हलाये, हंसा चले उड़ा।
मीरां रे प्रभु कबरे मिलोगे, लंबी भुजा पसार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सतगुरू कटे ना माया लार।।

म अरज करों अबला कर जोरे, साहिबा तुम्हारी दास।
मीरां रे प्रभु साहिब सतगुरू जी, काटो जम की फांस।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सतगुरू कटे ना जम की फांस।।

म जप तप तीर्थ चार पदार्थ, सतगुरू चरणन में हो शामलिया।
प्रेम करिने मारे मंदिर पधारो, जात वरण चरणन में शामलिया।
ये भेद मीरां जी देती हैं, अपने ही उर सतगुरू साहिब पा लिया।।

म राम नाम सब्द को पा ले, नहीं ऐसा जन्म बारम्बार।
क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे, मानुसा जग अवतार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन नामे मानस जन्म बैकार।।

म बड़त पल पल घटत छिन छिन, जात ना लागै वार।
बिंछ के ज्यों पात टूटे, लगै नहीं पुनि डार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बीता काल लौटे नांहि बारम्बार।।

म भो सागर अति जोर कहिए, विषम अंडी धार।
राम नाम का बांध बेड़ा, उतर परले पार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, नाम बेड़ा उतारे भव पार।।

मनुष्य को (सतगुरू सब्द) नाम रूपी नौका से भवसागर पार करने की चेष्टा करनी चाहिए :–

म प्यारो सतगुरू संत ज्ञानी, चलत करत पुकार।
दास मीरां करत पुकार है, जीवन जग दिन चार।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू शरणी कर अपना उद्धार।।

म मनरवा जन्म पदार्थ पायो, ऐसी बहुर ना आती।
अब के मोरस ज्ञार विचारो, राम नाम मुख गाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, नाम जोत जले दिन राती।।

म सतगुरू मिलिया सुज पिछाणी, राम नाम मुख गाती।
साहिब पाया आदि अनादि, नातर भव में जाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू नाम सूं भव तर जाती।।

म सगुरा सुरा अमृत पीवे, निगुरा प्यासा जाती।
मगन भया मेरा मन सुख में, साहिब का गुण गाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिबन सुरति गहु दिन राती।।

म जब से सतगुरू दात है पाई, कहिं नहीं आती जाती।
मीरां कहे इक आस आप की, औरां सूं समुचाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सतगुरू मोहे चैन ना भाती।।

म सत्संग नो रस चाख प्राणी, तूं तो सत्संग नो रस चाख।
प्रथम लागे तीखो ना कड़वो, पाछी आंबा केरी शाख।
ये भेद मीरां जी देती हैं, गुरू सत्संग अमर प्रेम रस चाख।।

म और काया नो गर्व न कीजे, अंते थ्वानी छे खाख।
हस्ती ने छोड़ा माल खजाना, कोई ना जावे साथ।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सब्द सुरति संग जावे साथ।।

म सत्संग थी बे घड़ी मां मुक्ति, वेद पूरे छे साख।
बाई मीरां कहे साहिब को पा ले, सतगुरू चरणों चित राख।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सुरति आत्म करे भाख।।

थोड़े समय में मोक्ष प्राप्त करने का अनुपम साधन है सतगुरू सत्संग वेद शास्त्र भी यही कह रहे हैं। वह भी इसके साक्षी हैं :–

म मना तूं तो वृक्षन की लत ले, थारो काई करे जग।
काटन वाले सूं बैर नहीं है, नहीं सींचत का संग।
ये भेद मीरां जी देती हैं, हर घट आत्म साहिबन अंग।।

म जे कोई बावे कंकार पत्थर, उनको भी फल देह।
पवन चलावे इन्द्र झकोले, दुख सुख आपहि सेह।
ये भेद मीरां जी देती हैं, पूर्ण गुरू शरणागत दुख सबै हर लेह।।

म सीत गहाम तो शिर पर सहि है, पच्छिन को सुख देई रे।
आसन अचल मनसा नहीं डोले, तूं ध्यान धणी की धेइै रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सब्द सिमरण ध्यान सूं हर संताप जाई रे।।

म जे तूं चावे मोक्ष जीव को, सुरत सब्द की लेई रे।
जैसे चात्रग धन को रटत है, वैसे चरण चित धेई रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, भक्ति अमर रस लेई रे ।।

जिस तरहं पपीहा स्वाति नक्षत्र की बूंद को ही रटता रहता है, उसी प्रकार साधक को सुरति से सार नाम को जपना चाहिए।

म तलफ तलफ जीव जाये हमारो, कब रे मिले दीना नाथ।
भई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई ना जानी म्हारी बात।
नींदड़ली नहिं आवे सारी रात, किस विद्य् होय प्रभात।
ये भेद मीरां जी देती हैं, जीवन मरन निज साहिबन हाथ।।

म सार नाम सुरति सूं लीजै प्राणी, कौटिक पाप कटै रे।
जन्म जन्म के खत जो पुराने, नाम ही लेत फटै रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, नाम सुरति सूं प्रालब्ध लेखे मिटे रे।।

म सुरत सब्द अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे।
मीरां रे प्रभु साहिब अविनासी, तन मन तांहि पटै रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, नाम लेत मन माया पटै रे।।

म पंच रंग मेरा चोला रंग दे, मैं सुरति सूं झुरमुट खेलन जाती।
झुरमुट में मेरा साहिब मिलेगा, खोल आडम्भर गाती।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मीरा रंगी सतगुरू रंग राती।।

म जैसे हीरा हनत निहाई, तैसे हम शेरै बनो आई।
जैसे सोना मिलत सुहागा, वैसे हम शेरै दिल लागा।
ये भेद मीरां जी देती हैं, हमरे लागी कैसे छूटे सुरत प्रेम धागा।।

म मैं तो राज़ी भई मेरे मन में, मोहि पिया मिले ईक।
पिया मिलया मोहि कृपा कीन्ही, दीदार दिखाया छिन ईक।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू कृपा सूं दोनों हुऐ ईक मिक।।

म सतगुरू सब्द लखाया अंसरी, ध्यान लगाया धुण में।
मीरां रे प्रभु साहिब मिले रे, मग्न भई सार सुरति में।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब बसे सार सुरति धुण में।।

म अब तो मेरा मूल नाम, दूसरो ना कोई।
माता छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े सगे भाई।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मूल सुरति मूल ही में खोई।।

म सतगुरू संग बैठ बैठ, लोक लाज सब खोई।
संत देख दौड़ दौड़ आई, जगत देख रोई।
ये भेद मीरां जी देती हैं, जग व्यथा देख मैं रोई।।

म प्रेम आंसू डार डार कर, अमर बेल ली बोई।
मार्ग में तारग मिल गये, संत नाम दोई।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सत नाम मोहे देई।।

म संत आगे शीश मैं राखूं, नाम सुरति में होई।
अंत में से तंत काढयो, पीछे रही इक सोई।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सत नाम मोक्ष दात सोई।।

म राणे भेजया विष का प्याला, पीवत मस्त होई।
अब तो बात हर थां फैल गई, जानें सब कोई।
ये भेद मीरां जी देती हैं, मीरा अब हंसा होई।।

म अपमान मोह मान त्याग कर, आप को पाया मीरा ने।
मीरां कहे जग जाये है, यामें रहता अच्छा बुरा ना एक।
ये भेद मीरां जी देती हैं, अच्छा बुरा सबै काल खा जाई रे।।

म सुरत सुहागन नार कुंवारी, दासी क्यों रही।
युगों युगों से मीरा कुंआरी, सतपुरूष मिले ना कोये।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतपुरूष संग शादी रचाई रे।।

म सतगुरू मिलया नांहि, कुंवारी मीरां युं रही।
सतगुरू मिले बिन कैसे, सुहागिन बने बिन यूं रहे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू मिले तो आत्म सुहागन होये।।

म जब बाबुल दीयो ढाई जो रत्न धन, चार पदार्थ प्रेम रे।
गैणों म्हारे ज्ञान रत्न रे, परोयो हार सार नाम रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सार नाम हार श्रृंगार रे।।

म छोड़या छोड़ाया ममा मोसा, भुवा दस बनेड़ी।
छोड़ाया म्हारी सहेलियां रे, साथ गुरां आगे जा खड़ी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, जग रिश्ते छाड़ी सतगुरू द्वारे आन पड़ी।।

म अब म्हुं चढ़ गई ढोल बजाये, घर चली आपणे रे।
बजाये, घर चली आपणे रे।
भंवर गुफ़ा रे मांय, पुरूष एक सार है।
सत सत कहे मीरां दास, वही भव तार है।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सार सुरति मोक्ष आधार है।।

म मैं तो करसां जी प्रीत, लगाये संगत साधां री ।
सतगुरू साहिब तो एक हेरे, फूल बांस दो नायं री।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिब सतगुरू में समायं जी।।

म जन्म बड़ो घर पावियो, यूं आई बड़ा घर मांय।
मूंढ मूलकरी कोई जाने, यूं राज रीत ठुकराय।
ये भेद मीरां जी देती हैं, माया में रमयो माया भरमाय।।

म भक्ति बिना ठुकराई झूठी, माने नहीं सुहाय।
राजपाट सब धरिया रेसी, जलसी जंगल मांय।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन नामें जग जलि जलि जाये।।

म लोग दुनियां थारी निंदा करे, छे सारा सेर के मांय।
कुटुम्भ कबीला चारी हांसी ठाने, हिम मिल निंदा गाये।
ये भेद मीरां जी देती हैं, निंदक कबहु तर ना पाये।।

म निंदा म्हारी भले ही करजो, लेसी पलो बिछाये।
बिन साबुन और पानी के, सब ही मैल धुल जाये।
ये भेद मीरां जी देती हैं, निंदक सबै अवगुण आन छुड़ाये।।

म धन धन है मीरां बड़ भागन, साहिब हेत लगाये।
बार बार मैंह करूं विनती, दुष्ट रया पछताये।
ये भेद मीरां जी देती हैं, बिन सतगुरू रहयो पछताये।।

म बड़े घर की ताड़ी लागी रे, म्हारी सुरति उणारथ भागी रे।
कामना तृष्णा मर गई रे, मैं तो जाय मिलूं हंसा सूं रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं,। सत सुरति सतलोक ले जाये रे।।

म भाग हमारो जागियो रे, भयो समुंद्र सूं सीर।
अमृत प्याला छाड़िके, कुन पीवे कड़वा नीर।
ये भेद मीरां जी देती हैं, काल मोह छाड़ि पकड़ो साहिबन तीर।।

म सार नाम मेरे मन बसियो, रसियो नाम रिझाऊँ माया।
मैं मंद भागन कर्म अभागन, कीरत कैसे गांउ ऐ माय ।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सार दात गुण गाऊं रे माय।।

म मन को मार मंजू सतगुरू सूं, दुरमत दूर गमाऊं ए माया।
डंको नाम सुरत की डौरी, कड़ियां प्रेम चढ़ाऊं ए पाया।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू नाम काटे मन माया।।

म तन करूं ताल मन करूं ढफली, सोती सुरति जगाऊं ऐ माय।
निरत करूं मैं प्रीतम आगे, तो प्रीतम पद पाऊं ए माय।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सुरति निरति सूं पीव को रिझाऊं ऐ माय।।

म मो अबला पर कृपा करज्यो, गुण सतगुरू का गाऊं ए माय।
मीरां रे प्रभु साहिब प्यारो, रज चरणन की पाऊं ए मायं।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू चरणन रज मैं साहिब पाऊं।।

म बानो पहर कहा गरबायो, मुक्ति ना होसी खेलो।
बारानो प्रण सतगुरू उभारयो, सब्द सतपुरूष कारे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सतगुरू सब्द भव पार उतारे।।

म आगा घर पीछा मत ताको, बिन तन निज को देखयो रे।
मीरां ने अति भक्ति कमाई, ज़हर प्याला झेल्यो रे।
ये भेद मीरां जी देती हैं, सहज भक्ति सूं ज़हर अमृत होल्यो रे ।।

म साहिबा प्यारो अब, तोहो सूं लागो रे नेह।
लागी प्रीत जिन तोड़े रे बाला, औषधि कीजै नेह।
ये भेद मीरां जी देती हैं, साहिबन संग प्रीत प्रेम नेह।।

म जे हूं ऐसी जानती रे बाला, प्रीत किया दुख होये।
नगर ढंढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोय।
ये भेद मीरां जी देती हैं, जग प्रीत सूं अति दुख होय।।

म प्यारो तीन लोक में, मन ही विराजी।
तांहि न चीन्हत, पंडित योगी काजी।
ये भेद मीरां जी देती हैं, जगत में मन ही पंडित काजी।।

1491 जिवड़ा तूं तो अमरलोक का, पड़ो काल वश आई।
सार सब्द की दात को पा ले, पल में काल जाल कटि जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सब्द काल जाल भरमाई।।

1492 नाना पंथ जगत में, निज निज हरि गुण गावें।
सब का सार बता कर, सतगुरू दात को पावें।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द पल में लेख मिटावे।।

1493 दसवें द्वार से पार द्वारा, साहिब सतपुरूष का लोक।
ताका भेद वे नाम ने जाना, अमरपुर वह लोक।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अमरपुर सब हंसों का लोक।।

1494 नौं द्वार संसार है, दसवां योगी यति और ध्यानी।
अंदर की खिड़की जब खुले, निज को जाने ध्यानी।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, अब साहिब में सुरति समानी।।

1495 जग में आके हंसा भरमायो, मोती तज चुगत ज्वार।
आनंदमयी अमृत तजयो, आत्म रूप पा दुखी लाचार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, आत्म निज बंधी पड़ी काल की मार।।

क सुर दुर्लभ मानव तन पाया, श्रुति पुराण सद ग्रंथन गाया।
साधन धाम मोक्ष का द्वारा, जिनहि पाया परलोक संवारा।
ये भेद कबीर जी देते हैं, जिनहि पाया परलोक संवारा।।

1496 जग पूजे निरंकार ही, आत्मां अमर तूं जान।
जैसे कर्म करेगा मनवा, वैसा ही फल जान।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, नर प्रालब्ध बंधा आत्म मूल जान।।

क बिन रसरी सकल जग बंधया, मन का यह सब काम।
सतगुरू सूं दात को पाले, मन की छूटे लगाम।
ये भेद कबीर जी देते हैं,सार नाम करे सब काम।।

क कामी कुत्ता तीस दिन, नर छः ऋतु बारहं मास।
वासना भय का मूल है, प्रेम तो फूल की वास।
ये भेद कबीर जी देते हैं, प्रेम तो फूल की वास।।

क श्रृंगि ऋषि वन भीतर रहते, विषय विकार ना जाये।
पड़ी नारी भूप दशरथ ने, पकड़ अयोध्या आन।
ये भेद कबीर जी देते हैं, मोह माया धंसा जग आन।।

क पार्वती शिव पत्नि कहिये, तिन का मन क्यों डोले।
चकित हुए शिव देख मोहनी, हा हा कर के बोले।
ये भेद कबीर जी देते हैं, काम वासना में देव भी डौले।।

संत वाणी :–

1497 सोलह सहस उरवशी जाके, ताका मन बौ राजा।
गौतम ऋषि की नारी अहिल्या, ताहि देख ललान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नारी के रूप अनंत।।

1498 नारद मुणि से तपसी कहिये, कन्या हाथ दिखा।
भाग्यो रूप भूप श्री पति को, स्वंग बंदर को लायो।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोहिणी नार सबै भरमायो।।

1499 जमदाग्नि जाकी नारी रेनुका, जात जमुन जल मन।
मोही देख भूप की लीला, चकित भये दो नैन।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चंचल चित्त बसे त्रिया नैन।।

1500 एक ही नाल कंवल सुत ब्रह्मां, जग उपराज का।
कहें साहिब इक नाम भजन बिन, जीव विश्राम ना पावे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोहिणी रूप सबै भरमावे।।

1501 सुरति की आंख से देख, निज रूप प्यारे।
मित्र प्रेम भाव, विवेक ज्ञान वैराग्य आत्म गुण सत्त प्यारे।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सुरति प्रेम साहिबन अंश प्यारे।।

1502 पूर्ण सतगुरू सूं सत्य ले जान, सब गुण तेरे पास।
विषय विकार बह जायें, सार सब्द की दात जब पास।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मन मिटे जब सत सुरति संग पास।।

1503 तुम धन्य सदगुरू जीव रक्षक, काल जाल काट नाम है।
शुभ पंथ भक्ति दिदायउ, प्रभु अमर सुख के धाम है।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सब्द अमरपुर धाम।।

1504 एक देश है अमर अभेदा, ताका कोई न जाने भेदा।
ताका मरम नहिं जाना, जा से लाये सत्य नाम सब्द को भेदा।
साहिब जी, जा से लाये सत्य नाम सब्द को भेदा।

1505 हरि हर ब्रह्मा हैं बड़ देवा, तिनकी करे सकल जग सेवा।
वे जगकर्ता कर्म बनावे, वैसा फल जैसी जग सेवा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, श्रेष्ठ कर्म फल मेवा।।

1506 राय दिवान कहे अस बाता, गुरू के वचन झूठ नहीं जाता।
कहत दिवान तारी दोउ हाथा, गुरू के वचन सत्य धरूं माथा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, गुरू ईष्ट दर्श का दाता।।

1507 करो क्षमा सुनुरे गुरू राई, दास गुनाहहि देहु बहाई।
जस कहिहौ सोई हम करि हैं, वचन तुम्हारा सदा अनुसरि।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, गुरू चरणन सदा चित्त लाई

1508 कहा जीव करनी करै, कहां चलेगा चाल।
सतगुरू नाम प्रताप ते, कबहुं ना खावे माल।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, गुरू सेवा सूं मालामाल।।

1509 कहन सुनन की है नहीं, देख देखी नाय।
सार सब्द जो चीन्ही, सोई मिलेगा आये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, साहिब जी सोई मिलेगा आये।।

1510 साहिब जो सात शुन्य, सात ही कमल सात सुर्त स्थान।
ईक्कीस ब्रह्माण्ड लग, काल निरंझन से जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, त्रिलाकि दाता निरंझन जान।।

1511 मैं आया सतलोक से, जीव करन को पार।
सार सब्द सू न्यारा करों, ले जाऊँ जीव उस पार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' दात सिमरे सो पार।।

1512 दसों दिशा में लागी आग, कहें साहिब कहो जाईये भाग।
हर थां फैला मन राज, सतगुरू शरणी जागें भाग।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द मन मिटावे जगावे भाग।।

1513 साहिबा सुरति ही एक ध्यान है, भांवे जहां लगाये।
हर पल सतगुरू की भक्ति कर, विषयों से दूर हो जाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सेव से मन मिट जाये।।

1514 लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गयो, मैं भी हो गयो लाल।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द सूं साधक निहाल।।

1515 नैनों की कर कौठरी, पुतली पलंग बिछाये।
पलकों की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, प्रेम सब्द साहिबन आन मिलाये।।

1516 सदगुरू मोर रंगरेज, चुनरि मोरी रंग डारी रे।
शाही रंगाई के, दिया मजीठा रंग रे।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू प्रेम सुरति रंग रे।।

1517 सार नाम बिना सब नीच बखाना, जो पाये सो पार।
बिन पूर्ण सतगुरू ये दात ना, कबहु ना होवे पार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द उतारे पार।।

1518 प्यारे चेत सवेरे बांवरे, फिर पीछे पछताये।
तुझ को जाना दूर है, कहें साहिब समझाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं अमरपुर जायें।।

1519 सदगुरू मिलने से, झगड़ा खत्म हो गया।
न तो तन ही रहा, न तो मन ही रहा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, साहिब मिलने से झगड़ा खत्म हो गया।।

1520 साकार कहुं तो माया मांहि, निराकार कहुं आया नाहिं।
है जैसा तैसा ही रहे, कहें साहिब विचार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, हंसा सुरति मन माया पार।।

1521 कलि में केवल नाम अधारा, बिन सदगुरू नहीं पारा।
सार नाम ही नाम जहाज है, सुमिर सुमिर भव उतरो पारा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द उतारे पारा।।

1522 गुप्त नाम बिन सदगुरू नहीं पावे, पूरा सदगुरू सोई लखाई।
पूरा सदगुरू जब अमरपुर जावे, सतपुरूष सूं दात यह पाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द साहिबन समाई।।

1523 ब्रह्म राम ते नाम बड़, बरदायक वरदान।
राम चरित सत कोटि में, लिया महेश यह जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, पंच सब्द वरदानी महान।।

1524 पुरूष रचत ते नारी हैं, नारि रचत ते पुरूष।
पुरूषे पुरूषे जो रचा, सो बिरला संसार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, साहिब जी सो बिरला संसार।।

1525 गुरू सदगुरू में भेद है, गुरू सदगुरू में भाव।
सोई सदगुरू नित्य बंदिये, सब्द बतावे दाव।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू देवे मोक्ष दात।।

1526 जो पारस से परसा नहीं, इसे लोह ही जान।
जो पारस से परस गया, उसे सोना तूं ले जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू साधक करे आप समान।।

1527 दास वे नाम आया सतलोक से, लिये दात संग सार।
जो पावे सार सब्द ही दात को, करूं जगत से न्यार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द प्रेम रस सार।।

1528 शिष्य तो ऐसा चाहिए, सदगुरू को सर्वस्व देय।
सदगुरू भी ऐसा चाहिए, शिष्य से कछु ना लेह।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू साध दो रूप ईक देह।।

1529 प्यारो सुरति उसको देनी चाहिए, सुरतिवान कोई होई।
हिन्दू या मुसलमान, प्रेम प्यारा कोई होई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू कृपा पावे कोई कोई।।

1530 साहिब जो सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये।
कहैं साहिब सेवा बिना, सेवक बने ना कोये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, साहिब जी सेवक कबहु न होये।।

1531 प्यारे मुताले जो किया कुछ है, उसे सुरति सूं भुला।
अगर है शौक मिलने का, तो हर दम लौ लगाता जा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, बिन तड़प मिले ना प्यारा।।

1532 अभिमान वश जग भटके, कबहु ना उतरे पार।
'वे नाम' नन्हें होये रहो, पल में उतरो पार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू सेव उतारे भव पार।।

1533 दाता मेरा साहिबा, भिखारी सारी दुनियां।
पार लगावन वाला एक, पार जावन को न एक।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, ऐसी ही सारी दुनियां।।

1534 माला फेरत युग भया, फिरा ना सुरति फेर।
मन कर मनका छोड़ कर, सुरति मनका फेर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सुरति की माला तूं फेर।।

क प्यारी निंदा अस्तुति नांहि जिन, बैरी मोत समान।
कह नानक रे सुन मना, मुक्त तांहि को जान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, वैर द्वैष भक्ति में हान।।

1535 सांझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हां रोये।
चल चकवी वा देस को, जहां रैन ना होये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, हंसा लोक विछोह ना होये।।

1536 भव सागर है अगम अपारा, तां में डूब गयो संसार।
पार लगन को हर कोई चाहे, बिन सतगुरू कोई ना पावे पार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द सुरति लगावे पार।।

1537 मन ही रोये मन ही गाये, मन ही कर्म भरम उपझाये।
मन आत्म संग रहाये, आत्म मन को जान ना पाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, निरंकार मन सबै भरमाये।।

1538 सोना सज्जन साधुजन, टूटें जूझें सौ बार।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार का, एकै धका दरार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मन डुबोवे श्रद्धा प्रेम सूं पार।।

1539 स्वांस स्वांस सब्द सुमिर ले, व्यर्थ स्वांस ना खोये।
स्वांस स्वांस को सुमिरता, इस दिन मिलिये जाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, समर्पण सूं सतगुरू दरस पाये।।

1540 सतगुरू सब्द सुनाई के, आपन करि लीन्हा।
सतगुरू सब्द सुनाई के, पारस ही करि दीन्हा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू आप समान कर दीन्हा।।

1541 प्रेम तो उपझे आत्म सुरति सूं, विरह के आंसू बहत ।
सुरति सूं प्रीत जब हो जाये, स्वांसा में सुरति बहत ।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, अब हंसा निजघर रहत ।।

ध धर्मदास की विनती प्यारो, संतन मंह हेरा।
जाति वर्ण कुल त्यागि के, सतलोक बसेरा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, साहिबन सतलोक बसेरा।।

1542 सुन्न शिखर पर पिया का महल है, श्वेत ध्वज फहराये।
सब्द स्वरूपी पिया बसे तंह, सुरति झकोरा खाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सुरति में साहिब समाये।।

1543 लोक लाज कुल की मर्यादा से, मन बहुत सकुचाये।
जाये मिलूं पिया से पीहर में, प्रीत की रीत सुरीत दिखाये।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, श्रद्धा प्रेम से साहिबन रिझायें।।

1544 तीन ही लोक तहां एक नारी बनी, स्वर्ग अरूं मृत्यु पाताल मांहि।
चारहूं खान का जीव परवश पड़ा, नारी बिन दूसरी फंद नांहि।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सब्द संग तो कोई फंद नांहि।।

1545 काल का घट एक और भांति का, मोहिनी सुरत में एक समाना।
कहें साहिब कोई संत ही उभारे, सबै जीव नारी भरमाना।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सुरति करे एको समाना।।

1546 माया मोह ध्यान, काल का फंद सब जान।
हंसों का अमर देश प्यारा, करले सतगुरू चरण ध्यान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' का देश महान।।

1547 सतगुरू के संग साधु ही होत है, जगत के संग केवल जगत।
सतगुरू के संग आनंद मिलत है, जगत के संग दुख होत।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू संगति अमृत वर्षा होत।।

1548 सतगुरू संग ते परम पद पाईये, जगत के संग दुख अति भारी।
कहें साहिब संत पास मूल सब्द है, ले लो रे सब पुरूष और नारी।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द दे पार उतारी।।

1549 प्यारो झूठ सच का स्वर एक नहीं, पार जाने की ठान।
चीनी नमक एक समान होत हैं, गुण की कर पहचान।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, सतगुरू करावें निज पहचान।।

1550 मथुरा कासी जाये द्वारिका, अरसठ तीर्थ नहावे।
सतगुरू बिन सीधा नहीं कोई, फिर फिर गोता खावे।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, मन भक्ति सबै नाच नचावे।।

1551 चहुं दिस सूरा बहु खड़े, हाथ लिये हथियार।
रहि गये सबही देखते, काल सबै ले गयो मार।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, लोभी सहे काल की मार।।

1552 सब्द रूप होये सब्द स्नेहि, सतनाम की महिमां सोई।
बिन सतनाम ना संसै जाई, संसै मिटे बिन नांहि समाई।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, 'वे नाम' सब्द सूं अमरपुर जाई।।

1553 सब जग तजि जो होये न्यारा, सोई पावे सब्द हमारा।
सब गहे तज जग की आसा, निहचे के मानो धर्म दासा।
ये भेद 'वे हूं' जी देते हैं, अहम तजे मिले सतगुरू द्वारा।।

1554 काया ते आगे जो होई, ता में राखो सुरति समोई।
मूल सब्द का जाम जो अहई, ता को बूझे नांहि जग भाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' दात बिन जग भरमाई।।

1555 सतगुरू दया ते निःअक्षर पाई, निःअक्षर ते हंसा घर जाई।
अच्छर मूल सबन को होई, बिन अच्छर सब जाये बिगोई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन निःअक्षर दात माया भरमाई।।

1556 जैसी प्रीती कुटंभ सूं, सतगुरू सूं ऐसी होये ।
कहे साहिब तां दास को, पला न पकड़े कोये ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू प्रीति सूं मिथ्या मिट जाये ।।

द स्त्रवनां सब्द सुनाये के, मस्तक दीना हाथ।
सतगुरू दाता मुक्ति का, दरिया प्रेम दयाल।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दरिया काटें माया जंजाल।।

1557 कृपा कर चरणों लिया, मेटा सकल जंझाल।
अंतर थो बहु जन्म को, सतगुरू भगायो काल।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू काटे मन माया जाल।।

1558 दरिया सूरज उगिया, नैन खुले भरपूर।
जिन अंधे देखा नांहि, उनसे साहिबन दूर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सुरति जीव साहिबन सूं दूर।।

1559 सतगुरू बिन सधा ना कोई, फिर फिर गोता खाये।
चेतन मूर्ति जड़ को सेवे, अपना निज मूल गवाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू कबहु जीव ना जाग पाये।।

1560 देहाचार किया कहां कोई, भीतर है मन मैला।
जप तप संयम काया करनी, व्रत दान मन मैला।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मायाधारी भीतर से मैला कुचैला।।

1561 वक्ता होये होये कथा सुनावे, श्रोता सुन घर आवे।
ज्ञान ध्यान की समझ ना कोई, कह सुन जन्म गवावे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन सतगुरू मानव जन्म व्यर्थ जावे।।

साहिब जी धर्मदास से कहते हैं :–

क हो धर्मन जौ अस जीव होई, सदगुरू पार करे पुनिः सोई।
इतने बिन जिव रोकि ना राखा, छोरी बंध नाम तेहि भई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू तरा ना कोई।।

क लेखा मांगे यम फरमावै, तीन लोक ले डारा।
उपझत बिन सत्त जन्म गवायो, चौरासी की धारा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कर्म लेखा आवागमन पसारा।।

ध गगन मंडल में सतगुरू बोले, सुनि ले सब्द हमारा।
धर्मदास चरणन पर बिनवै, जानो अमृत सब्द प्यारा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विदेह सब्द जीव तारनहारा।।

दरिया साहिब जी कहते हैं :–

द चेतन मूरत जड़ को सेवे,बड़ा धूल मत गैला।
देह अचार किया कहा होई, भीतर है मन मैला।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, देह मान ही बड़ा झमेला।।

द प्यारी दुनियां भरम भुलाना मेरे भाई।
आत्म वासा सकल घट भीतर, जा की सुद्ध ना पाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जीव मन तरंग बहि जाई।।

द दरिया सुद्ध बुद्ध ज्ञान दे, सतगुरू किया सुजान।
सोता था बहु जन्म का, सतगुरू किया जगान।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां अति महान।।

द दरिया धन वे साधवा, रहे नाम लो लाये।
सत्य नाम बिन जीव, काल के जाल फंस जाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार नाम ही भव पार कराये।।

द दरिया बहरी साध का, तन पीला मन सुख।
रैन ना आवे नींदड़ी, दिवस ना लागे भूख।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, काम मधु कबहु ना पावे सुख।।

द दरिया नर तन पाये कर, किया जो भी काज।
राजा रंक दोनों तरे, जो चड़े नाम जहाज।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सार सुरति बनावे तेरे सब काज।।

द नाम जहाज बैठे नांहि, आन करे सिरहार।
दरिया निश्चय ही बहेंगे, चौरासी की धार।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, बिन दात कटे ना चौरासी धार।।

द साध स्वांग धारी जस आंतरा, जेता झूठ और सांच।
मौती मौती फेरे बहु, ईक कंचन ईक कांच।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निरंझन ही माया कंचन कांच।।

द दरिया साहिब कृपा करी, विरह दियो पठाये।
ये विरह मेरे साधको, सोता लिया जगाये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू आन जीव जगाये।।

द दरिया संगत साधु की, सहजे पलटे वंश।
कीट छांट मुक्ता चुगे, होये कागा से हंस।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निज घर जायें बन हंस।।

द दरिया सांचा सूरमा, सहे सब्द की चोट।
लागत ही भागे भ्रम, निकस जा सब खोट।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर स्वांस सब्द बिन खोट।।

द साध स्वांग जस आंतरा, जस कामी निस काम।
भेष रता ते भीख में, नाम रता ते नाम।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, श्वांस श्वांस सुरति में नाम।।

द साध स्वांग में आंतरा, जैसे दिवस और रात।
इनकी आसा जगत की, उनकी नाम सुहात।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू छुड़ावे जग आस।।

द संख योग पपील गति, बंधन पड़े बहु आये।
नावल लागे गिर पड़े, मंज़िल ना पहुंच पाये।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, पपील मीन मार्ग रहे भरमाये।।

द भक्ति सार विहंगम गति, यह ईच्छा तहं जाये।
साहिब सतगुरू रक्षा करे, विग्न ना व्यापे ताये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विंहगम चाल सू निजघर जायें।।

द दरिया सो सूरा नांहि, जिन देह करि चकचूर।
मन माया जित खड़ा रहे, मैं बलिहारी सूर।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, मन माया जाल है अति क्रूर।।

द दरिया सोता सकल जग, जागत नांहि कोये।
जागे में फिर जागना, जागा कहिये सोये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज को जानो सोये।।

द दरिया सुनी सो झूठ सब, आंखों देखी सांच।
दरिया देखी जानिये, यह कंचन यह कांच।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, चेतन सुरति दिखावे सांच।।

द दरिया मन रंझन कहे, सुखी होत सब कोये।
मीठे अवगुण उपझे, कड़वे से गुण होये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन ही सब बंधन होये।।

द हीरा लेकर जोहरी, गया गांवरे देस।
देख जिन कंकर कहा, भीतर परख ना लेस।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पारखी हीरे की परख कर लेत।।

द दरिया सब जग अंधरा, सूझे नांहि डगर।
औषधि है सत्संग में, सतगुरू बौवन हार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोक्ष बीज सतगुरू बौवन हार।।

द प्यारो उन संतन के साथ में, जीवड़ा पावे जक्ख।
जागे फिरे सोवे नांहि, जन दरिया बड़ा भाग।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, संत ही जीव जगावन हार।।

द संत योग नवदा भक्ति, ये सपने की रीत।
दरिया जागे गुरमुखि, तत नाम से प्रीत।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागा करे सब्द सूं प्रीत।।

द दरिया बिल्ली गुरू किया, उज्जल बगु को देख।
जैसे को तैसा मिला, जैसा जगत तैसा भेस।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जैसे को तैसा गुरू भेस।।

द साधु पुरूष देखी के, सुनो काहे नांहि कोये।
कानों सुनी सो झूठ सब, देखी सांचो होये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति बिन धोखा होये।।

द सोता था बहु जन्मों का, सतगुरू दिया जगाये।
जन दरिया गुरू सब्द सूं, सब दुख गये भुलाये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सुरति सूं सब दुख जायें।।

द दरिया गुरू गुरूवा मिला, कर्म किया सब रद्द।
झूठा मरम छुड़ाई कर, पकड़ाया सत सब्द।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत सब्द निज सार।।

द डूबत रहा भव सिंध में, लौभ मोह की धार।
दरिया सतगुरू तारू मिला, कर दिया पैले पार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू करें भव पार।।

द दरिया सतगुरू सब्द की, लागी चौट सठौर।
चंचल सूं निष्चल भयो, मिट गई मन की दौड़।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम सूं मिटे मन दौड़।।

द दरिया परसे साध को, तो उपझे सांची सीस।
जो कोई परसे भेस को, ताहि मंगावे भीख।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू देवें सांची सीस।।

द लख चौरासी भुगत कर, मानुष देहि पाई।
राम नाम ध्याया नांहि, तां चौरासी आई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम में राम है बिरला कोई पाई।

द दरिया लेने दात को, बिरला आवे कोये।
जो आवे तो परम पद, आवागमण ना होये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दात सुरति सुं जीव मुक्त होये।।

द दरिया नाम अगाद है, आत्म का आधार।
सिमरो तो सुख उपझे, सहज ही मिटे विकार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द मिटावे जग विकार।।

द दरिया नाम संभालता, देख किता गुण होये।
आवागमण दुख मिटे, निजघर वासा होये।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम सुरति सूं निजघर वासा पाये।।

संत साहिब रविदास (रे–दास) जी कहते हैं :–

रवि तोहो मोहो मोहो तोहो अंतरू कैसा, कनक कटिक जल तरंग जैसा।
जउपे हम पाप ना करता अहे अनंता, पतित पावन नाम कैसे हुंता।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम जात भेद काटता।

रवि तुरह जु नाइक आछहु अंतर जानो, पुत्र ते जनु जानी जै जन ते सुआमी।
सरीरू आराधे मोकउ विचारूं देहू, रविदास समदल समझावे कोउ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई दास कोउ।।

रवि मन रे दास उदास ताहि के, करता क्युं है भाई।
केवल करता ईक सहि सिर, सत राम तेहि ठाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरालम्भ राम सबनै थांई।।

रवि राम कहत सब जगत भुलाना, सो यह राम ना होई।
कर्म अकर्म करूणामय कैसो, करता नाव सूं होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम बड़ा राम सूं होई।।

रवि जा राम ही सबै जग जाने, भरम भले रे भाई।
आप आप ते कोई ना जाने, कहे किन सो जाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू कोई मोक्ष ना पाई।।

रवि सत तन लोभ पारस जीतै मन, गुना परन नांहि जाई।
अलख नाम जाको ठौर ना कतहु, क्युं ना कहो समाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सार दात मन मिट ना पाई।।

रवि सब में हरि है हरि में सब है, हरि अपनो निज जाना।
सखि नांहि और कोई दूसर, जानन हार सयाना।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, यहि मनरूप त्रिकुटि मध्य ठिकाना।।

रवि बाजिगर सो रचि रहा, बाजी का मर्म ना जाना।
बाजी झूठ सांच बाजीगर, जान मन पतियाना।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन ही बाजिगर आत्म भरमाना।।

रवि मन थिर होई तो कोई ना सूझै, जाने जाननहारा।
कहे रे दास विमल विवेक सुख, सहज सरूप संभालनहारा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरपुर हम सब हंसों का न्यारा।।

रवि चांद सुर नहीं रात दिवस नांहि, धरति आकास ना भाई।
कर्म अकर्म नां सुभ असुभ नांहि, का कहि देहु बड़ाई।
सीत वायु नांहि सरबत, काम कुटिल नांहि होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कहो साहिब सत सोई।।

रवि जोग ना भौग क्रिया नांहि जाके, धर्म–राज नांहि कोई।
नर हरि चंचल है मति मेरी, कैसे भक्ति तेरी होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हरि भक्ति आवागमन ना छुड़ाई।।

रवि निरंझन निराकार निर्लेपी, निरविकार सिर आवे।
काम कुटिलता ही कहि गावै, हर हर है ठावे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अमरपुर भेद कोई बिरला पावे।।

रवि गगन धुर धूप नांहि जाके, पवन पूर नांहि पाई।
गुण निर्गुण कहियत नांहि जाके, कहो तुम बात सोई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन भेद कोई बिरला पाई।।

रवि याहि से तुम जोग कहत हो, जब लग आस के फांसी।
छूटे तभी जब मिले एकहि, मन रे दास उदासी।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन मिलें तो मिटे उदासी।।

रवि नर हरि चंचल है मति मेरो, कैसे भक्ति करूं मैं तेरी।
तूं मोहि देखै हो, तोहि ना देखूं प्रीति परस्पर होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू प्रीति सूं मिलन होई।।

रवि सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहीं जाना।
गुण सब तोर मोर सब औगुण, कृत उपकार ना माना।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग सतगुरू महिमां ना जाना।।

रवि मैं तैं तोरि मोरि असमझि सौं, कैसे करि निस्तारा।
कह रे–दास करूण करूणामय, जै जै जगत उधारा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जे जागी तांहि होत निस्तारा।।

रवि राम बिन सराये गांठिन ना छूटे, जिन मूल नाम नहीं जाना।
काम क्रौध लोभ मद्य माया, इन पंचन मिली लिपटा जाना।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द सतगुरू सूं पाओ और जानो।।

रवि हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित, हम जोगी सन्यासी।
ज्ञानी गुणी सुर हम दाता, याहु कहे मति नासी।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जागा वही जा की मन मति नासी।।

रवि पढ़े लिखे कुछ समझी ना परई, जो लौ भाव ना दरसे।
लोहा हिरन होई धौं कैसे, जो पारस नहीं परसे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन संतन सुरति अमर रस ना बरसे।।

रवि पारस सुरति संतन संग आई, तां मे सतपुरूष का वासा।
बिन सार सुरति कोई ना जागे, मन खर अक्षर में वासा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सब्द छूटे ना मन परवासा।।

रवि कह रे दास और असमुझ सी, चली परे भ्रम मोरे।
एक आधार नाम नर हरि को, जीवन प्राण धन मोरे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं,, सार सब्द सुरति में मोरे।।

रवि जब राम नाम कहि गावेगा, तब भेद अभेद समावे।
जो सुख है – था रस के परसे, सौ सुख का कहि गवै।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख निरंकार रूप ही गावे।।

रवि गुरू प्रसाद भई अनुभौ मति, विष अमृत सम धावेगा।
कह रे दास मेटि आपा पर, तब वा ठौरहि पावेगा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निज जाने बिन ठौर ना पावेगा।।

रवि संतों अनन्य भक्ति ये नांहि, संतों अनन्य भक्ति ये नांहि।
जब लग सिरजत मन पांचो गुण, व्याप्त है या मन नांहि।
सोई आन अंतर कर हरि सौं, आप मार्ग को आनै।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दस ईन्द्री वश सब्द कराहि ।।

रवि काम क्रौध मद्य लोभ की, पल पल पूजा मानै।
सत्य स्नेह ईष्ट अंग लावे, तजे मान सुरति आनै।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सत सुरति मन सूं मुक्त करै।।

रवि हरिजन हरिहि ओर ना जाने, तजे आन तन त्यागी।
कहे रे दास सोहि जन निर्मल, निस दिन जो अनुरागी।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विराग बिन सत्त प्रेम ना जागी।।

रवि भक्ति ऐसी सुनहु रे भाई, आई भक्ति तब गई बड़ाई।
कहां भयो नाचे और गाये, कहां भयो तप कीन्ही।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चीन्हि सब पाई।।

रवि कहां भयो जे चरण पखारे, जौं लो तत्व ना चीन्हे।
कहां भयो जे मुंडु मुंडायो, कहां तीर्थ व्रत कीन्हे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, परम तत्व कोई बिरला चीन्हे।।

रवि कहे रे दास तेरी भक्ति दूरी है, भाग बड़े सो पावे।
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पपीलक है चुनि खावे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तजे अहम मन त्यागे।।

रवि ऐसी भक्ति ना होई रे भाई, ऐसी भक्ति ना होई रे भाई।
सार नाम बिन जो कुछ करिये, सो सब भरम कहाई।
राम मिलयो आपो गुण खोयो, ऋद्धि सिद्धि सबै गवाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, नाम दात बिन मन छूट ना पाई।।

रवि धर्म अधर्म मिटछ नांहि बंधन, ज़रा मरन भव नासा।
दृष्टि् अदृष्टि् गये अरू ज्ञाना, ईक मिक रे दासा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मान गया साहिब संग दासा।।

रवि सतयुग सत त्रेता तप करते, द्वापर पूजा आचार।
तिहुं जुगि तीनों दृष्टि्, कलि केवल नाम आधार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष महिमां अपार।।

रवि तोहि मोहि मोहि तोहि अंतर ऐसा, कनक कटिक जल तरंग जैसा।
मैं नर तुम ही अंतर्यामी, तुम स्वामी मैं दासा सुनिये जन यै स्वामी।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सांची दात के स्वामी।।

रवि आपा पर चीन्हे नांहि, औरन को उपदेस।
कहां ते तुम आये रे भाई, जाहुगे किस देस।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आया कहां से जाना कौ देस।।

रवि कहिये तो कहिये काहि कहिये, कहां कौन पाई।
रे दास अनाज है करि, रहियो सहज समाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निजघर सहजे सहजे पाई।।

रवि नाव छोड़ि दे डुंगे बसे, तौ दूना दुख सहे।
गुरू का सब्द अरू सुरति कुदालि, खोदत कोई रे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत सब्द सूं तरे रे।।

रवि अजामिल गज गांनका तारी, काटी कुंझर की पास रे।
ऐसी दुरमत मुक्त कियो, तो क्युं ना तरै रे दास रे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण सतगुरू मिले तो तरे रे।।

रवि पंच तत की ये रथ साज्यो, अरध उरध निवासा।
चरण कमल लिव लाई रहयो, गुण गावे रे दासा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू गुण गावे रे दासा।।

रवि करत एक जाये जग भुगता, सब घट सब विधि सोई।
कह रे दास भक्ति ईक उपझी, सहजे होई सो होई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सहजे सहजे निजघर जाई।।

र सौ क्या जाने पीर पराई, जाके दिल में दर्द ना आई।
दुखि दुहागिनी होई पिय होना, नेह निरति करि सेव ना कीना।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रीति बिन सेव ना कीना।।

र जो हम विमल हृद्‌य चित्त अंतर, दोष कोन पर धरी हौ।
कह रे दास प्रभु तुम दयाल हो, अबंध मुक्ति का करि हौ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निःअक्षर सब्द बिन ना तरि हौ।।

र कलयुग में मार्ग वही, जैसा मन का भाव।
ज्ञानी वही जो कामी क्रौधी, प्रचार प्रदर्शन बिन अनुभव।
ये भेद साहिब जी देते हैं, जगत गुरू बहें मन प्रभाव।।

र आज दिवस लेऊँ बलिहारा, मेरे घर आया राम का प्यारा।
करूं दण्डवत चरण पखारूं, तन मन धन उन ऊपर वारूं।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू सेव करि निज तारूं।।

रवि रैन गवाई सोई करि, दिवस गवायो खाई रे।
हीरा ये तन पाई करि, कौड़ी बदले जाई रे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मनुष्य जन्म अनमोल रे।।

रवि पिय बिन सेजई क्यों सुख सोऊँ, बिरह बिथा तन खाई।
मेटि दुहाग सुहागिन कीजै, अपने अंग लगई।
कह रे दास स्वामी क्यों बिछोहे, ईक पल जुग जाई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन बिन कैसे रहा जाई।।

र जो जन राम नाम रंग रते, और रंग ना सुहै हौ।
कह रे दास सुनो रे कृपा निधि, प्राण गये पछितै हौ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन नामे दुख पाये हौ।।

कबीर जी कहते हैं :– बस अभी इसी पल, इस देह में अब नहीं रह सकता, अर्थात मैं अब देह नहीं हूं।

क दसवें दारी लागी गई तारी, दूर गगन आवन भयो भारी।
चहुं दिसी बैठे चारी पहरिया, जागत मुसि गये मोर नागरिया।
कहे कबीर सुनहू रे लोई, भांनड़ धड़ण सवारण सोई।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, इसी पल में ही साहिबन पाई।।

क अव्वल संत कबीर हैं, दूजे हैं रामानंद ।
इनकी महिमां अनंत है, सार नाम का देत ज्ञान ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, संतन महिमां महान।।

1562 सतगुरू सूं दात है आती, तारे तीन लोक के जीव ।
आवागमण चक्र छूटे, आत्म पल में पावे पीव ।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू से करें प्रीत।।

1563 मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।
कहें साहिब सतगुरू पाईये, सुरति के परतीत ।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम सुरति सूं पाओ साहिब प्रीत।।

1564 करन करावन हार के, लाखों हाथ हैं प्यारे।
निज को कर्ता मत जान, कर्ता सतगुरू प्यारे।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं,

1565 जो ना कभी थी नांहि है, दुनियां सोयों को दिखाई दे रे।
ज़िन्दगी जो ना थी ना है, सोयो के लिये सुबह शाम हुई रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, जागो तो सब ईक ही रे।।
1566 जग जीवों की ये दुनियां रे, संतों को लागे सपना रे।
जाकी सुरति सतगुरू में, ताकि मिटे सब तृष्णा रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, साहिबन सतगुरू रूप रे।।

1567 मैं कहत सुरझावन हारी, तूं राख्यों उरझाई रे।
मैं कहत जागत रहियो, तूं रहता सोई रे।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निद्रा में अनमोल समय गंवाई रे।।

1568 केवल नाम निःअक्षर आई, निःअक्षर मे रहो समाई।
निःअक्षर सूं हंसा बन जाई, हंस बन सतलोक को जाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, निःअक्षर सुरति हंसा करे भाई।।

1569 निःअक्षर अजर अमर है भाई, साहिबन सुरति इसमें समाई।
सतगुरू सूं निःअक्षर नाम को पावें, सतगुरू जन्म मरन मिटाई।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सतगुरू बेड़ा पार करें मेरे भाई।।

1570 सतगुरू साहिबन रूप हैं, जो बांटें मोक्ष की दात।
सतगुरू सब्द सिमरन सूं प्यारो, पाओ साहिबन पास।
ये भेद वे नाम जी देते हैं, सब्द सिमरन सूं साहिबन पास।

1571 हंसा तो साहिब अंश हैं प्यारे, सब को साहिब मिलन की राह बताऊं।
निज को जानो सतपुरूष प्यारो, छोड़ो त्रिलोकि सतलोक ले जाऊं।
छोड़ो हंसो ये काल पसारा, निज देश चलो हंस लोक हमारा।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा देस सतलोक हमारा।।

इति श्री

सत्तगुरू सत्तनाम

सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी

वे नाम देत पुकार

1 'वे नाम' देत पुकार, चीन्ही तत्व भेद सार।
'वे नाम' सूं दात को पा लो, पल में होत भव पार।।

2 मूर्ख सब्द नांहि जानता, परमहँस सूं ना करता प्यार।
परमहँस बँधन काटते, पल में करते मन माया पार।।

3 'वे नाम' सुरति आँख देत, मिटे मन माया संताप।
पल मे चानन होत है, साहिबन दरशें आप।।

4 जब लग 'मै' और 'मेरी' संग में, पाये दुख क्लेश संताप।
जब से सतगुरू शरणी आया, भागा अहम रोग़ संताप।।

5 हानि लाभ का नांहि विचार, 'वे नाम' आज्ञा ले मान।
जो आवे 'वे नाम' शरणी, सुरति जागे बने हंसा महान।।

6 'वे नाम' जहाज सत्तपुरूष का, 'वे नाम' ही खेवनहार।
जो कोई आवे इस जहाज पर, 'वे नाम' ले चलें मोक्ष द्वार।।

7 तन आत्म का पिंझरा जान, मन वश इसे तूं जान।
'वे नाम' बंधन काटनहारा, उसकी बात ले मान।।

8 'वे नाम' आया निजधाम से, सब को कहत पुकार।
आओ चलें सतलोक को, 'वे नाम' करत पुकार।।